अरूप कुमार दत्त

असम के शूरवीर

लाचित बरफुकन

अनुवादक प्रदीप कुमार

असम के शूरवीर
लाचित बरफुकन

असम के शूरवीर
लाचित बरफुकन

अरूप कुमार दत्ता

अनुवादक
प्रदीप कुमार

असम प्रकाशन परिषद
गुवाहाटी-781021

ASOM KE SHOORVEER LACHIT BARPHUKAN

Life-sketch of Lachit Barphukan by Arup Kumar Dutta translated by Pradeep Kumar into Hindi, published by Pramod Kalita, Secretary, Publication Board Assam, Guwahati

First English Edition: Lachit Diwas, 24th November, 2023
First Hindi Edition: Lachit Diwas, 24th November, 2023
Second Print : June, 2024

ISBN 978-93-95542-76-0

₹ 490.00

website : www.publicationboardassam.com

Publisher : Pramod Kalita, Secretary, PBA
Translator : Pradeep Kumar
Editor : Pankaj Chatuvedi
Project In charge (Lachit Barphukan Project) : Aparajita Pujari

Typesetting : Muralidhar V. Rathod
Cover design : Sourish Mitra
Printed at Aurora Fine Arts, Bamunimaidam, Guwahati-21

प्रस्तावना

अहोम साम्राज्य 1228 ईस्वी में भारत के उत्तरपूर्वी हिस्से में उभरा जब चौलुंग सिउ-का-फा और उनके समर्पित अनुयायियों ने अपना राज्य स्थापित करने के लिए पटकाई पर्वतीय श्रेणी को पार करते हुए ब्रह्मपुत्र घाटी में प्रवेश किया। लगभग छह शताब्दियों के अपने उल्लेखनीय शासनकाल के दौरान, अहोमों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए उल्लेखनीय वीरता और समर्पण का प्रदर्शन किया। उन्होंने अनेक लड़ाइयां लड़ी और आक्रमणों को विफल किया। अपनी क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखने के दृढ़ प्रयास में अहोम राजवंश ने मुगल आक्रमणों को अनेक बार सफलतापूर्वक विफल कर दिया। अपने पूरे शासनकाल में अहोम स्वर्गदिवों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा में अटूट समर्पण और असाधारण साहस का प्रदर्शन किया। मुग़ल आक्रमण के प्रतिरोध की कहानी में जो महान व्यक्ति सामने आता है, वह ब्रह्मपुत्र नदी पर निर्णायक लड़ाइयों में से एक में प्रसिद्ध अहोम जनरल लाचित बरफुकन है।

24 नवंबर, 1622 को जन्मे लाचित बरफुकन मुगल-अहोम संघर्ष की पृष्ठभूमि के बीच परिपक्व हुए, यह ऐसी परिस्थिति थी जिसने उनके सैन्य कौशल को निखारा और उनमें अपने विरोधियों का मुकाबला करने का उल्लेखनीय साहस पैदा किया। उनकी रणनीतिक प्रतिभा और निडर नेतृत्व ने मुगलों पर महत्वपूर्ण जीत हासिल की, जिससे असम में उनकी प्रगति प्रभावी रूप से रुक गई। विशेष रूप से, 1671 ई. में
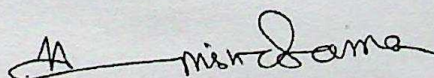
सरायघाट की निर्णायक लड़ाई के दौरान बहादुरी का प्रदर्शन अनुकरणीय है जहां उन्होंने बीमारी के बावजूद अपनी सेना को निर्देशित किया था। यह विजय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। सरायघाट की लड़ाई के दौरान मुगल सेना को वश में करने में लाचित बरफुकन की चतुराई ने आसन्न हार को शानदार जीत में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरायघाट की लड़ाई देश के इतिहास में महत्वमपूर्ण घटना थी क्योंकि इसने शाही मुगलों का विरोध करने में निर्णायक भूमिका निभाई थी। उस युद्ध ने संपूर्ण ब्रह्मपुत्र घाटी के सामूहिक मानस पर अमिट छाप छोड़ी। लाचित बरफुकन और उनके सैनिकों के नेतृत्व और साहस की कहानियाँ आज भी लोगों की कल्पना को प्रेरित करती रहती हैं।

लाचित बरफुकन मध्ययुगीन भारत के सबसे प्रतिष्ठित सैन्य रणनीतिकारों में से एक के रूप में उभरे, जो अपने पीछे ऐसी विरासत छोड़ गए जिससे समकालीन सैन्य नेता गुरिल्ला युद्ध की जटिलताओं से बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से उनके नेतृत्व में असमिया नौसेना ने जबरदस्त ताकत हासिल की और मुगलों की हार में निर्णायक कारक के रूप में उभरी। नौसैनिक युद्ध में मुगल सेनाओं को लुभाने और असमिया सेना की ताकतों में से एक का फायदा उठाने में लाचित बरफुकन की चतुराई ने उनकी सैन्य प्रतिभा को रेखांकित किया। इसके परिणामस्वरूप अंततः मुगलों पर विजय प्राप्त हुई। उन्होंने इस धारणा का उदाहरण प्रस्तुत किया कि सेना कमांडर को साहस, वीरता, धैर्य और रणनीतिक कौशल का उल्लेखनीय मिश्रण दिखाते हुए विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप रणनीति तैयार करनी चाहिए।

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि अरूप कुमार दत्ता की 'असम के ब्रेवहार्ट लाचित बरफुकन' पुस्तक ने हमें समृद्ध, प्रामाणिक और अच्छी तरह से विकसित ऐसा ऐतिहासिक विवरण प्रदान किया है, जिसका वह वास्तव में हकदार है। यह पुस्तक न केवल असम की समृद्ध और अनकही ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करती है, बल्कि यह भी बताती है कि कैसे लाचित बरफुकन की विरासत ने भावी पीढ़ी पर अपना प्रभाव डाला है। यह पुस्तक उत्कृष्ट व्यक्ति के असाधारण प्रसंगों की गाथा है जिसने देशभक्ति और राष्ट्रवाद की भावना को मूर्त रूप दिया। अहोम राजवंश के महत्वपूर्ण क्षणों का जीवंत वर्णन प्रदान करने के अलावा लेखक लाचित बरफुकन के बारे में अतिरिक्त जानकारी देने में भी गहराई तक गए हैं जो लंबे समय तक हमसे जुड़े रहे। यह पुस्तक इस

तथ्य की भी अत्यधिक स्पष्ट स्वीकृति है कि असम के शूरवीर लाचित बरफुकन के नेतृत्व में सरायघाट की लड़ाई मध्ययुगीन असम के इतिहास में निर्णायक घटना थी, जिसने तत्काल परिणाम के साथ-साथ आने वाली शताब्दियों के लिए भी स्थायी विरासत छोड़ी।

मुझे विश्वास है कि विभिन्न पृष्ठभूमियों के पाठकों को यह पुस्तक मनमोहक लगेगी और वे अपनी मातृभूमि के प्रति लाचित बरफुकन के अटूट जुनून और समर्पण से प्रेरित होंगे। मेरी कामना है कि उनकी कहानी पाठकों में समर्पण की भावना जगाए और इस महान राष्ट्र की प्रगति एवं लचीलेपन में उनके निरंतर योगदान को प्रोत्साहित करे।

(डॉ० हिमन्त बिशब शर्मा)
मुख्यमन्त्री, असम

दो शब्द

असम की भाषाओं और साहित्य के संवर्धन में योगदान देने की दृष्टि से वर्ष 1958 में स्थापित असम प्रकाशन परिषद राज्य के साथ-साथ राष्ट्र के साहित्यिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के विभिन्न दुर्लभ कार्यों के प्रकाशन पर ध्यान दे रही है। पुस्तक चयन समिति साहित्यिक और सामाजिक-सांस्कृतिक अनुसंधान पर चिंताओं और प्रभावों सहित विभिन्न क्षेत्रों की महत्वपूर्ण पुस्तकों के संग्रह, प्रकाशन, पुनर्मुद्रण और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, विभिन्न कोणों से सामाजिक-सांस्कृतिक विकास ने विभिन्न क्षेत्रों के शोधकर्ताओं की अधिक रुचि पैदा की है। इस वर्ष, असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा की अनुशंसा पर परिषद ने अरुप कुमार दत्ता की पुस्तक 'असम्स ब्रेवहार्ट लाचित बरफुकन' को प्रकाशित करने की पहल की है। असम के माननीय शिक्षा मंत्री और प्रकाशन परिषद असम के अध्यक्ष डॉ. रनोज पेगू ने स्वयं इस पूरी परियोजना की निगरानी की है। यह पुस्तक लाचित बरफुकन के चार सौ वर्ष के जन्मोत्सव के अवसर पर लाचित की वीरता और देशभक्ति को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने के लिए आरंभ मुख्यमंत्री की भव्य योजना का उत्पाद है। लाचित के साहस और बुद्धिमत्ता के कारण ही मध्यकाल में असम इस्लामी आक्रमण से मुक्त रहा। लेखक दत्ता ने इस पुस्तक में सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बल देते हुए लाचित बरफुकन का चित्रण किया है। असम सरकार ने लाचित बरफुकन के गौरव की स्मृति में कई योजनाएं चलाई और कदम उठाए हैं। माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व सरमा के

निर्देशानुसार प्रकाशन परिषद असम ने इस पुस्तक का संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्य शुरू किया है। यह अपनी तरह का पहला प्रयास है जहां असम के कथानक पर पुस्तक का भारत की अन्य सभी क्षेत्रीय भाषाओं में एक साथ अनुवाद किया जा रहा है। हम इस महान जिम्मेदारी को निभाने के लिए माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। अपनी बुद्धि और रचनात्मक क्षमताओं के उपयोग से इस परियोजना को पूरा करने के लिए लेखक अरूप कुमार दत्ता को भी हम धन्यवाद देते हैं। हम इस परियोजना की प्रभारी के रूप में सराहनीय कार्य के लिए अपराजिता पूजारी और इस पुस्तक के सभी अनुवादकों का भी आभार प्रकट करते हैं। आशा है कि यह पुस्तक विभिन्न क्षेत्रों के अनुसंधानकर्ताओं, शोधकर्ताओं और छात्रों को सच्चे देशभक्त नायक लाचित बरफुकन के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगी।

प्रमोद कलिता
सचिव
असम प्रकाशन परिषद

विषय सूची

परिचय

योद्धा-राजनेता मोमाई तमुली बोरबरुआ के पुत्र लाचित अदम्य साहस और राष्ट्रवादी भावना से ओतप्रोत थे। उन्हें अहोम राजा स्वर्गदेव चक्रध्वज सिंह ने सन् 1667 में बरफुकन के रूप में नियुक्त किया था।

लाचित के देशभक्ति के उत्साह और मातृभूमि के प्रति प्रेम ने उनकी अन्य सभी चिंताओं को ख़त्म कर दिया। कर्तव्य निभाने में बेपरवाही करने पर लाचित ने अपने संबंधी का सिर काटते हुए कहा था, "मेरे मामा मेरे लिए मेरी मातृभूमि से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं।" उनके ये शब्द आज भी सामूहिक असमिया मानस में अमिट रूप से अंकित हैं। उनकी निःस्वार्थ वीरता के कई कार्य, जैसे बीमारी में भी बिस्तर से उठकर लड़ाई में अपनी सेना का नेतृत्व करना, सिर पर खड़ी हार को जीत में बदलना, इत्यादि कारणों से असमिया लोककथाओं का हिस्सा बन गए हैं और इस क्षेत्र के युवाओं को प्रेरित करते रहे हैं।

ऐसे समय में जब असमिया समाज अस्तित्व के संकट से जूझ रहा था और यह पूरी संभावना थी कि उसे नष्ट होने से रोका नहीं जा सकता, ऐसे में लाचित बरफुकन दृढ़ता से अपने लोगों की रक्षा के लिए आगे आए थे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि असमिया लोग उन्हें उद्धारकर्ता के रूप में पूजते हैं और उन्हें 'महावीर' या बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया है।

लाचित ने अपनी अल्प सुसज्जित सेना के साथ ही ऐसी सेना के आक्रमण से अपनी मातृभूमि की रक्षा की थी जिसके पास बेहतर और बहुत अच्छी तरह प्रशिक्षित बल था, जिनके पास अधिक उन्नत हथियार और आयुध थे। आज लाचित के उस उल्लेखनीय पराक्रम का अध्ययन करने वाले सैन्य विशेषज्ञ इस राय से एकमत हैं कि लाचित मध्यकालीन भारत के महानतम सैन्य रणनीतिज्ञों में से एक थे और आधुनिक सैन्य नेतृत्व भी उनके द्वारा अपनाई गई रणनीति से सबक ले सकता है।

सैन्य रणनीतिकार लाचित बरफुकन से सीखने लायक एक मुख्य सबक यह है कि एक सेना कमांडर को किसी खास अवसर के लिए उपयुक्त विशिष्ट रणनीति अपनानी होती है। मुगल आक्रमणकारियों द्वारा हड़पे गए गौहाटी और निचले असम को वापस हासिल करने के लिए (अगस्त 1667 से नवंबर 1667), और फिर वापस ली गई भूमि का आक्रमणकारी सेना (फरवरी 1669 से मार्च 1671) से सफलतापूर्वक बचाव करने तक, उनके अभियान का पहला चरण बाद के अभियानों के दौरान अपनाई गई रणनीति से बिलकुल अलग था। यह तेज़ और उग्र आक्रमण था जिसने अप्रत्याशित और गति के तत्वों का पूरा फायदा उठाते हुए असावधान विरोधियों को पूरी तरह से परास्त कर दिया और उन्हें उस भूमि से बाहर खदेड़ दिया, जिस पर उन्होंने पहले अहोम साम्राज्य से बलपूर्वक छीनकर कब्ज़ा किया था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि लाचित की सेना को गौहाटी पर कब्ज़ा करने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण इटाखुली किले की लगभग दो महीने तक घेराबंदी करनी पड़ी, लेकिन जिस गति से वे किले तक पहुँचे, उससे आश्चर्यचकित मुगलों को ढाका से मदद बुलाने से रोक लगानी पड़ी।

जिस तरह से उन्होंने गौहाटी में अभेद्य प्रतीत होने वाले इटाखुली किले पर कब्जा किया, वो किसी शानदार कार्ययोजना से किसी भी तरह कम नहीं थी। पूरा समय लेते हुए, उन्होंने सबसे पहले किले और उसके भीतर की छावनी को अलग कर दिया और इसके चारों ओर तैनात सभी रक्षात्मक मुगल टुकड़ियों को एक-एक करके समाप्त कर दिया, जिससे उनकी सेनाएँ इसे चारों ओर से पूरी तरह से घेरने में सक्षम हो गईं। फिर, दो महीने की लंबी घेराबंदी के बाद, रात के अँधेरे में, उन्होंने कमांडो सैनिकों को चुपके से किले की दीवार पर चढ़ने और उसकी छतों पर लगी तोपों की बैरल में पानी डालकर उन्हें निष्क्रिय करने के लिए भेजा। इसके बाद हुए खतरनाक हमले में, मुग़ल रक्षक अपनी तोपों से

गोले नहीं दाग सके| उन पर जमीन से लाचित की तोपखाने के साथ-साथ ब्रह्मपुत्र के नदी-तट पर बँधे जहाजों पर लगी बंदूकों से बमबारी-गोलीबारी की गई, इस प्रकार मुगलों को कोई मौका नहीं मिला और उन्होंने कुछ ही घंटों में समर्पण कर दिया।

गौहाटी के नदी-बंदरगाह पर पुनः कब्जे से अपनी सेना को स्थापित करने के बाद, लाचित ने अनेक रक्षात्मक उपाय लागू करने शुरू कर दिए, ताकि उसे उखाड़ फेंकने के लिए भेजी गई विशाल मुगल सेना को आगे बढ़ने से रोका जा सके। तब, जाल में बैठी मकड़ी के धैर्य का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने इंतजार किया| अंततः मक्खी की तरह मुग़ल सेना उनके बिछाए जाल में घुस गई। इससे पता चलता है कि किसी भी सैन्य रणनीति के पहलू के रूप में धैर्य महत्पूर्ण गुण है। वह व्यक्ति जिसके प्रति उसकी निष्ठा थी, उस अहोम सम्राट के पास लाचित के समान धैर्य नहीं था, और उसने अपने जनरल को उसकी इच्छाओं के विरुद्ध, मुगल प्रतिद्वंद्वी पर पूर्वव्यापी हमला करने के लिए मजबूर किया, जिसके परिणामस्वरूप अलबोई में दुखद पराजय हुई, जो असमिया युद्ध के इतिहास में अपमानजनक स्थिति है।

ध्यातव्य है कि जब मुगल सेना असम की सीमा में घुसने वाली थी, तो लाचित ने पाया कि सीमांत चौकियों पर उनके सैनिक मुगलों पर हमला करने में ज्यादा सफल नहीं हो पा रहे, तो लाचित ने उन्हें पीछे हटने और गौहाटी की ओर धीमी गति से चलने का निर्देश दिया। "राम सिंह की तैनाती ने अहोम-मुगल संबंधों में नए चरण की शुरुआत की। असम के हिस्सों पर पुनः कब्ज़ा करने के पिछले आक्रामक युद्ध के विपरीत, वर्तमान युद्ध मूल रूप से कामरूप के पुनः प्राप्त किए गए क्षेत्र पर कब्ज़ा बनाए रखने के लिए रक्षात्मक युद्ध था...सीमांत चौकियों पर विरोध की निरर्थकता का एहसास करते हुए, उनके जनरल लाचित बरफुकन ने (i) उनके कब्जे से एक-एक करके क्षेत्रों को खाली कराने, और हाजो के पश्चिम के सभी क्षेत्रों को उनके भाग्य पर छोड़ने (ii) तथा गौहाटी और उसके आस-पास के रणनीतिक केंद्रों की रक्षा पर ध्यान केंद्रित करने की नई रणनीति अपनाई ताकि बेपरवाह मुगलों को अच्छी तरह से संरक्षित गौहाटी सेक्टर में लुभाया जा सके। यह आधुनिक युद्ध-कला में 'रणनीतिक वापसी' के अनुरूप है।" (1)

एक सैन्य नेता के रूप में विदेशी हमलावर से अपनी मातृभूमि की रक्षा करने की जिम्मेदारी के साथ, लाचित का दृढ़ विश्वास था कि

देश को सुरक्षित रखते हुए, अपनाए गए साधनों को उचित ठहराया जा सकता है, चाहे वे कितने ही अपमानजनक या गुप्त क्यों न लगें! शक्तिशाली मुगल सेना को आगे बढ़ने से रोकने के लिए उन्होंने जो अनगिनत और विविध हथकंडे अपनाए, वह दिमाग को चकरा देते हैं। जिस क्षेत्र की उन्हें रक्षा करनी थी, उसकी स्थलाकृति का अध्ययन करने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की और अच्छे प्रभाव के लिए अपने ज्ञान का उपयोग किया। सावधानी से चुने गए स्थानों पर मजबूत किलेबंदी करना, विशेष रूप से ब्रह्मपुत्र के पास जो हमेशा से आक्रमणकारियों के लिए राजमार्ग का काम करता रहा है। वस्तुतः, अहोम प्रधान मंत्री अटन बोरगोहैन के साथ, उन्होंने किलों और प्राचीरों का नेटवर्क बनाया जो बाद में राम सिंह के शक्तिशाली तोपखाने के लिए अभेद्य साबित होना था|

वह पूरी तैयारी के साथ अपनी सेना से कहते कि वह दुश्मन के सामने खुद को दिखाए और फिर भागने का नाटक करे, जिससे उन्हें घात लगाने के लिए अच्छी तरह से मजबूत जाल की ओर आकर्षित किया जा सके, या मुग़ल सैनिकों के दिलों में आतंक पैदा करने के लिए अहोम भूमि की बुरी प्रतिष्ठा का उपयोग कर अपने लोगों द्वारा रात को "कंकालों" के नृत्य के माध्यम से मुगलों के इस अंधविश्वास को और बढ़ाया कि असम जादू-टोना करने वालों की भूमि है। "रणनीतिक वापसी" के शुरुआती चरण के दौरान, जब भी उनके सैनिक रात में नदी के किनारों पर डेरा डालते थे, तो वे सैनिकों को निर्देश देते थे कि वे अपने शिविरों में केले के पेड़ों के तने लगाएं और प्रत्येक तने पर एक मशाल रखें, ताकि आगे बढ़ने वाले दुश्मन को गुमराह किया जा सके और उन्हें एक विशाल सेना के पीछे हटने का आभास हो! खुले मैदान में दुश्मन का सामना न करना, और इसके बजाय असमिया सैनिकों की छोटी-छोटी टुकड़ियों से मुगल छावनियों पर अचानक, आश्चर्यजनक हमले करने के बाद तुरंत रात के अँधेरे में गायब हो जाना, ये और गुरिल्ला युद्ध की अन्य रणनीतियों ने भले ही विशाल मुगल सेना को बहुत अधिक नुकसान न पहुँचाया हो, लेकिन उन्होंने सैनिकों के मनोबल को तोड़ने का काम किया। राम सिंह की "युद्ध संहिता" में रात में लड़ने की मनाही थी, इसलिए उन्होंने ऐसी रणनीति को "चोरों के मामले" कहा, लेकिन लाचित ने जवाब दिया कि ये शेर ही हैं जो रात में लड़ते हैं।

इतिहास से सबक सीखने और वर्तमान स्थिति में पहले ही चालें चलने की क्षमता, प्रतिभाशाली रणनीतिकार का एक और गुण है।

उदाहरण के तौर पर, लाचित ने असम पर मीर जुमला के आक्रमण (1662-63) से भी सीख ली। मुग़ल आक्रमणकारी ऊपरी असम में अहोम राजधानी गढ़गाँव तक पहुँचने में सफल हो गया था, लेकिन असमियों द्वारा दगा-जुद्दा (गुरिल्ला युद्ध) नीति अपनाई गयी जिससे वे उसे निष्कासित करने में सफल रहे। राजा राम सिंह के नेतृत्व में मुगल सेना से अपनी लड़ाई में लाचित ने इसी तरह की प्रभावी प्रहार करो और भागो (हिट-एंड-रन) रणनीति अपनाई।

इस रणनीति के अंग के रूप में, उन्होंने गौहाटी के आस-पास के इलाकों और घने हरे इलाकों में मौजूद विभिन्न जल निकायों का पूरा लाभ उठाया और उनका इस्तेमाल चुनिंदा स्थानों पर युद्ध नौकाओं और सैनिकों को छिपाने के लिए किया, जो दुश्मन पर नजदीक और पीछे से गुरिल्ला हमले कर सकते थे। किलों और प्राचीरों के निर्माण के अलावा, उन्होंने महान ब्रह्मपुत्र पर लकड़ी की बाड़ जैसे शानदार इंजीनियरिंग निर्माण भी किए, जो शक्तिशाली धाराओं का सामना कर सकती थी और दुश्मन के शस्त्रागार को बाधित कर सकती थी, साथ ही दोनों तटों पर मौजूद सेनाओं के बीच संचार बनाए रखने के लिए नदी पर नावों के अस्थायी पुल भी बनाए।

भारत में लड़ी गई कुछ लड़ाइयाँ उस जटिल लेकिन सफल रणनीति से मेल खा सकती हैं जो लाचित बरफुकन ने सरायघाट की लड़ाई से पहले और लड़ाई दौरान अपनाई थी! वास्तव में यह अफ़सोस की बात है कि लाचित जैसे महान नेता को असम के बाहर ज्यादा नहीं जाना जाता है, और भारतीय इतिहासकारों ने सरायघाट की महान लड़ाई की अनदेखी की, जिसने असम पर आधिपत्य स्थापित करने और अहोम साम्राज्य को अपने क्षेत्र में में लाने की औरंगजेब की महत्वाकांक्षा को करारा और निर्णायक झटका दिया।

इस पहलू का उल्लेख करते हुए, अग्रणी विद्वान-इतिहासकार डॉ. सूर्य कुमार भुइयाँ ने लिखा : "लाचित बरफुकन का नाम उनके अपने देश की सीमा से आगे नहीं बढ़ा है। लेकिन उनकी मातृभूमि असम में, उनकी देशभक्ति की स्मृति ने वही प्रेरणा दी है जो इंग्लैंड में लॉर्ड नेल्सन और वेलिंगटन; इटली में मैज़िनी, कैवूर और गैरीबाल्डी; राजपूताना में महाराणा प्रताप; और महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज से मिलती है... असम के महान नायक लाचित बरफुकन, शिवाजी महाराज के समकालीन थे और उन्हीं की तरह लाचित ने अपनी भूमि में मुगल साम्राज्यवाद की

प्रगति को रोक दिया। वास्तव में, असमिया नायक के महान प्रतिद्वंद्वी (यानी राजा राम सिंह) मराठा साम्राज्य-निर्माता के कार्यकाल में निर्णायक मोड़ के साथ घनिष्ठता से जुड़े व्यक्ति थे और असम में दुर्जेय सेना के मुखिया के रूप में उनकी उपस्थिति उस संबंध में उनके द्वारा निभाई गई भूमिका का परिणाम थी। इसके अलावा, हमारे पास यह सिद्ध करने के लिए प्रमाण हैं कि एक समय में शिवाजी की सफलताओं ने पूर्वी भारत में मुगल आक्रमणों के प्रभावी विरोध को संगठित करने के लिए असम को अतिरिक्त प्रोत्साहन प्रदान किया था।" (2)

अहोम के विभिन्न बुरंजियों (ऐतिहासिक विवरण या इतिहास) में लाचित बरफुकन के व्यक्तिगत जीवन के बारे में अधिक विवरण नहीं है। इस प्रकार यदि हमें उनके व्यक्तित्व और उनकी उपलब्धियों की सीमा को समझना है तो हमें उनके कार्यों और दर्ज की गई घोषणाओं पर निर्भर रहना होगा। इनके अध्ययन से जो छवि उभरती है, वह जटिल प्रतिभावान, असाधारण सैन्य नेता की छवि है जो भावशून्य होने पर भी गहरी भावनाओं में सक्षम, निर्दयी और क्रूरता की हद तक कठोर भले ही हो, लेकिन अपने अधीन सैनिकों के लिए बहुत अधिक मानवीय और सहानुभूति रखने वाले थे।

लाचित बरफुकन, लोगों के शानदार नेता होने से बढ़कर ऐसे योद्धा थे जिन्होंने हर लड़ाई के दौरान अपनी मार्शल कौशल और ताकत का प्रदर्शन किया। वह पीछे सुरक्षित रहकर अपने सैनिकों और नाविकों को निर्देशित करने से संतुष्ट नहीं थे| उन्होंने हेंगडांग (एक प्रकार का अस्त्र) को उठाया और ज़ोर से जयघोष के साथ उनके कंधे से कंधा मिलाकर दुश्मन से युद्ध किया और उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। सैनिकों को प्रेरित करने की इसी क्षमता के कारण सरायघाट की लड़ाई में निश्चित हार की स्थिति को अचानक असमिया भाग्य यानी जीत में बदला जा सका।

उनकी सबसे बड़ी संपत्ति योग्य सलाह के साथ-साथ तार्किक आलोचना के प्रति ग्रहणशीलता और उसके अनुसार अपनी रणनीति तैयार करना थी। युद्ध-परिषद की बैठकें नियमित रूप से होती थीं, जहाँ हर बार रक्षात्मक उपायों पर चर्चा और बहस होती थी। यह उनका सौभाग्य था कि उनके पास मार्गदर्शन और सलाह देने के साथ-साथ निस्संकोच होकर उन्हें सुझाव देने के लिए अतान बुरगोहैन जैसे असाधारण रूप से चतुर और सक्षम लेफ्टिनेंट थे।

सुझावों के प्रति खुला दिमाग होने के बावजूद, हर कोई समझता था कि लाचित कठोर अनुशासक थे और कर्तव्य में कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने चेतावनी दी थी कि जो कोई भी सौंपे गए कार्य की उपेक्षा करता हुआ पाया गया, या निर्दिष्ट स्थान से अनुपस्थित पाया गया, उसे उनके क्रोध का सामना करना पड़ेगा, जिसे अधिकारियों और लोगों दोनों ने समझा। लाचित यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि मुग़ल सेना के हमले को विफल करने और सुरक्षा में सेंध लगाने के प्रयास को रोकने के लिए यह जरूरी था कि प्रत्येक व्यक्ति को जिम्मेदारियाँ सौंपी जाएँ और उन्हें तुरंत तथा अनुशासित तरीके से पूरा किया जाए। इस तरह का अनुशासन स्थापित करने के लिए उन्होंने घोषणा की कि जो कोई भी सौंपे गए कर्तव्यों की उपेक्षा करेगा, वह उसका सिर काट देगा, भले ही वह कोई उच्च पदस्थ अधिकारी हो या आम सैनिक। अहोम बुरंजिस में दर्ज है कि यह आदेश सभी शिविरों को सूचित करने से अतान बुरगोहैन जैसे वरिष्ठ और बड़े रैंक के अधिकारियों के दिलों में भी डर बैठ गया!

लेकिन शान कानूनों में कहा गया है कि मृत्युदंड देने का अधिकार केवल राजा के पास था। कर्तव्य की उपेक्षा के लिए अपने चाचा का सिर काटकर, उन्होंने इस पवित्र शान नियम का उल्लंघन किया था। हालाँकि, चक्रध्वज सिंह ने अपने लोगों में अनुशासन स्थापित करने की अपने जनरल की आवश्यकता की सराहना करते हुए बुद्धिमानी से उस अपराध को नजरअंदाज कर दिया।

अटल सत्यनिष्ठा और पूरी तरह से ईमानदार व्यक्ति, लाचित बरफुकन ने मुगल कमांडर-इन-चीफ के रिश्वत देने के प्रस्ताव, या अफवाहें फैलाकर उन्हें उकसाने के हर प्रयास को ठुकरा दिया। जिस तरह वह अपने अधिकारियों से ईमानदारी की उम्मीद करते थे, उसी तरह वह उनके प्रति निष्पक्ष और ईमानदार थे और यहाँ तक कि राजा की टिप्पणियों को भी अनुचित होने पर उनका खंडन करने से नहीं डरते थे। उदाहरण के लिए, मुगल आक्रमणकारियों के खिलाफ अभियान की लंबी प्रकृति पर नाराजगी दिखाते हुए चक्रध्वज सिंह ने लाचित को फटकार लगाई थी और धमकी दी थी कि अगर "मेरी सेना बिना लड़े ही मारी गई" और अगर कोई "स्वेच्छा से लड़ने से बाज आया" तो उसे सजा दी जाएगी।

इस संदेश के जवाब में, लाचित ने राजा को बताया कि दोनों सेनाओं के बीच संसाधनों की असमानता के बावजूद, हमारी सेना ने दुश्मन के कई सैनिकों को मार डाला और अनेक कैदियों और बहुत सारी लूट को गढ़गाँव भेज दिया। इस प्रकार, उन्होंने यह भी कहा कि उनकी सदैव निष्ठावान सेवा को देखते हुए, उनके आचरण के बारे में राजा के मूल्यांकन को जल्दबाजी में किया गया निर्णय माना जाना चाहिए। उनका मान रखते हुए चक्रध्वज सिंह ने भी लाचित के खंडन को उचित माना।

फिर भी, दृढ़ कमांडर-इन-चीफ होने से बहुत दूर, लाचित ऐसे मनुष्य थे जो नकारात्मक भावनाओं को अनुभव करने और नकारात्मक घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया करने में सक्षम थे। जब उन्होंने युद्ध के लिए जाने पर सामने खड़ी राजा राम सिंह की सेना को पहली बार देखा, तो कहा जाता है कि विशाल सेना को देखकर वे घबरा गए और यह सोचकर उनके आँसू निकल पड़े कि उनके कंधों पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। लेकिन इतिहासकारों ने यह भी लिखा है कि उनके महान आत्मनियंत्रण ने उन्हें क्षण भर में स्वयं को तैयार करने और उस जिम्मेदारी को निभाने की रणनीति बनाने के लिए पुनः समर्पित होने में सक्षम बनाया।

अहोम बुरंजिस ने यह भी दर्ज किया है कि वह खुले, समतल मैदान पर मुगलों का खुलेआम सामना करने के लिए सैनिकों को भेजने के विरोध में थे। इसलिए जब अहोम राजा चक्रध्वज सिंह ने जोर देकर कहा कि वह अलाबोई मैदानों पर डेरा डाले मुगलों पर हमला करने के लिए सेना भेजे, तो वह असमंजस में थे। वह जानते थे कि मुगल घुड़सवार सेना के सामने अपने पैदल सैनिकों को खड़ा करना मूर्खता होगी; लेकिन उन्होंने अपने राजा के प्रति निष्ठा की शपथ ली थी, इसलिए वह संप्रभु के आदेशों के विरुद्ध नहीं जा सके। उनका सहज मानवतावाद तब प्रकट हुआ जब उन्होंने अतान बुरगोहैन के सामने व्यक्त किया कि वह अलाबोई में अपने कई लोगों की मौत से कितने दुखी और निराश थे और युद्ध के मैदान से बहुत दूर बैठे लोगों के जमीनी हकीकत को समझने में असमर्थ होने से दुखी थे। परेशान जनरल को सांत्वना देने और उनमें नए जोश के साथ अपने अभियान को फिर से शुरू करने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास पैदा करने के लिए प्रधानमंत्री की ओर से बड़ी चतुराई की आवश्यकता थी।

एक अन्य अवसर पर चक्रध्वज सिंह के उत्तराधिकारी राजा उदयादित्य सिंह ने खुले तौर पर राजा राम सिंह के प्रस्ताव को भेजने में अपने बरफुकन की कार्रवाई को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि राजपूत कमांडर ने आधिकारिक राजदूत के माध्यम से अपने प्रस्ताव वाले पत्र को भेजने के शिष्टाचार का पालन नहीं किया था। नाराज राजा ने गौहाटी में लाचित के लिए वह सामान भेजने से मना कर दिया जो मुगल दूत के स्वागत के लिए जुटाया गया था।

अपने राजा की ओर से इस तरह की स्पष्ट अस्वीकृति, इस बात का संकेत थी कि राजा ने विशेष रूप से उनके अधिकारियों और अन्य लोगों द्वारा राजा और देश के लिए किए जा रहे बलिदानों को पूरा मान नहीं किया। इसने लाचित को निराश कर दिया। उस समय उनके वरिष्ठ लेफ्टिनेंटों की सलाह से उनके मनोबल को नहीं उठाया गया जिससे कि वह मुगलों के साथ शांति संधि की शर्तों पर बातचीत करें और स्वर्गदेव उदयादित्य सिंह को इस तरह के समझौते की उपयुक्तता के बारे में मनाएँ।

लाचित इतने अधिक निराश थे कि उन्होंने अपना संकल्प खो दिया और वह अहोम राजा को सलाह देने के लिए लगभग तैयार थे कि गौहाटी और निचले असम को मुगलों को वापस दे दिया जाना चाहिए। यह एक बार फिर बुद्धिमान प्रधान मंत्री अतान बुरगोहैन पर छोड़ दिया गया था कि वह लाचित को अपने उन हजारों लोगों के बलिदान की याद दिलाकर उन्हें ऐसा करने से रोकें, जिन्होंने राजा और देश की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।

यह सब और बहुत कुछ असम की बहादुर हस्ती के मानवीय पक्ष को दर्शाता है, जबकि उसके साहस, दृढ़ संकल्प और देशभक्ति को कम नहीं करता है। वह अत्यधिक नैतिक व्यक्ति थे जिसमें न केवल अपने लिए, बल्कि अपने परिवार और अपनी मातृभूमि के लिए भी सम्मान की उच्च भावना थी। उदाहरण के लिए, जब सरायघाट युद्ध के बाद पराजित मुगलों का पीछा कर रहे असमिया सैनिकों ने दुश्मन पर हमला करने और सामान और वस्तुओं को जब्त करने की अनुमति माँगी, तो लाचित ने यह कहते हुए उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया कि वह युद्ध के मैदान से भागते हुए सैनिकों को लूटकर अपने निष्पक्ष राजा के नाम को धूमिल नहीं करना चाहते।

इतिहासकार डॉ. सूर्य कुमार भुइयाँ के मौलिक शोध ने असम के महावीर को सुर्खियों में लाने में मदद की, वे "'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स'" में लिखते हैं :

"लाचित बरफुकन के जीवन का अध्ययन, विशेष रूप से मुगलों के साथ उनके संघर्ष के संदर्भ में, हमें उन गुणों को जानने में सक्षम बनाता है जो सफल जनरल बनाते हैं, जिसका मुख्य आकर्षण बिंदु उसके संसाधनों की विशालता या उसकी सेना की संख्यात्मक श्रेष्ठता नहीं, लेकिन गंभीर दृढ़ संकल्प और निडर साहस है... लाचित बरफुकन ने असमिया सेना को दक्षता के उच्चतम शिखर पर पहुँचाया। इतिहास में कहीं भी यह दर्ज नहीं है कि असमिया राष्ट्र ने संगठन, अनुशासन और संयुक्त कार्रवाई के लिए ऐसी क्षमता कभी नहीं दिखाई जैसी लाचित बरफुकन ने मुगलों के साथ युद्ध में दिखाई थी। चार वर्षों की लम्बी अवधि तक पूरे देश ने एक व्यक्ति की तरह काम किया। ढिलाई और अपराध के मामूली से संकेत को भी तुरंत और कठोरता से दबा दिया गया। राज्य की सेवा में वृद्ध हो चुके कमांडरों और राजनेताओं ने कम उम्र के प्रधान सेनापतियों के आदेशों का पालन किया। व्यक्तिगत सहजता और आराम, अपने सगे-संबंधियों के ख़याल, नींदविहीन सतर्कता और लंबे समय से पोषित विजय के सपने के आगे सब-कुछ परित्याग कर दिया गया। असमिया लोगों के चरित्र में मौजूद मजबूत तत्वों को इस सर्वोत्तम लाभ के लिए तैयार किया गया कि एकजुट होकर दुश्मन का सामना किया जा सके। एक भी शब्द नहीं कहा गया, कोई ऐसा कार्य नहीं किया गया, जिससे देश की प्रतिष्ठा या कमांडरों की गरिमा पर आँच आने की संभावना हो।

"निःस्वार्थ देशभक्ति और नेतृत्व के पाठ के लिए व्यक्ति को बार-बार मुगलों के साथ लाचित बरफुकन के संघर्ष को देखना चाहिए। उनके अत्यधिक शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी मुगल जनरल ने निराश होकर, असमिया कमांडर-इन-चीफ और अंबर के कच्छ की प्रशंसात्मक विशेषता की भावना में उनका समर्थन करने वालों की निम्नलिखित स्तुति की : 'राजा की जय! सलाहकारों की जय! कमांडरों की जय! एक अकेला व्यक्ति सभी सेनाओं का नेतृत्व करता है! यहाँ तक कि मैं, राम सिंह, व्यक्तिगत रूप से मौके पर होते हुए कोई बचाव का रास्ता और अवसर नहीं ढूँढ पाया!'" (3)

हालाँकि, लाचित की उपलब्धि की पूरी तरह से सराहना करने के लिए यह जरूरी है कि हम पहले व्यापक ऐतिहासिक फलक पर नज़र डालें और उसे उसके संदर्भ में रखें।

व्यापक फलक

आदिकाल से उपजाऊ और हरी-भरी ब्रह्मपुत्र घाटी भारत की मुख्य भूमि को चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने वाले प्राकृतिक गलियारे का निर्माण करती है। यह सभी दिशाओं से प्रवासियों को आकर्षित करने के लिए चुंबक के रूप में काम करती थी। विशेष रूप से, लगभग 2000 वर्ष पहले, पश्चिमी चीन से उत्तर-पूर्व की पहाड़ियों और घाटियों में मंगोलियाई जनजातियों का समय-समय पर प्रवास होता था जिससे उन्हें इस क्षेत्र की जातीय पच्चीकारी में प्रमुख स्थान मिला। माना जाता है कि ऑस्ट्रो-एशियाटिक में ऑटोचथॉन, द्रविड़ियन और काकेसाइड तत्व पश्चिम से आए, जिससे उस पच्चीकारी में अतिरिक्त जटिलता आ गई।

निरंतर, लेकिन आवधिक प्रवाह ने संघर्ष और संश्लेषण का चक्र शुरू किया। ऐसा तब तक चलता रहा जब तक कि प्रवासी छोटे राज्यों या रियासतों के रूप में पूरे क्षेत्र को उपनिवेश बनाने के लिए फैल नहीं गए। उन प्रत्येक जातीय इकाई की अपनी जीवंत और रंग-बिरंगी संस्कृति थी। कभी-कभी, किसी व्यक्तिगत रियासत का महत्वाकांक्षी प्रमुख प्रभुत्व का दावा करता था और अपने क्षेत्र का विस्तार करता था, जिसके कारण प्राचीन काल के प्रागज्योतिषपुर या कामरूप जैसे बड़े साम्राज्यों का निर्माण हुआ। लेकिन वर्ष-दर-वर्ष बीतते-बीतते ये साम्राज्य बिखर गए और 12वीं-13वीं शताब्दी तक यह क्षेत्र छोटे-छोटे जनजातीय समुदायों से आबाद हो गया।

फिर, 1228 ई. में, 'सुकाफा' नामक निडर नेता के नेतृत्व में शान या ताई योद्धाओं के समूह ने शान देश में अपना मूल निवास छोड़ दिया और पहाड़ों की पटकाई पर्वतीय शृंखला के माध्यम से ब्रह्मपुत्र घाटी में प्रवेश किया। दशकों तक भटकने के बाद 1253 में सुकाफा ने अंततः चेरैदाई में राजधानी के साथ छोटा सा राज्य स्थापित किया, जो बाद में शक्तिशाली अहोम साम्राज्य बन गया। (4)

सन 1826 में इस क्षेत्र पर अंग्रेजों का कब्जा होने से पहले छह शताब्दियों तक सुकाफा और उसके वंशजों ने पहले चेरैदाई से, बाद में गढ़गाँव जैसी महत्वपूर्ण राजधानियों से ब्रह्मपुत्र घाटी के बड़े हिस्से पर शासन किया। विश्व में कुछ ही राजवंशों ने लगभग अखंडित शासन की इतनी लंबी अवधि का आनंद उठाया है। इतने लंबे काल तक शासन सुनिश्चित होने के कई कारक थे, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण था शासन के कठोर पदानुक्रम की स्थापना और प्राचीन काल से शान या ताई द्वारा निर्धारित सिद्धांतों का सख्ती से पालन करना। अहोम बुरंजिस या इतिहास के अनुसार, राजा के पूर्वज स्वर्ग से आए देवताओं के वंशज थे और इसलिए उसे 'स्वर्गदेव' के रूप में नामित किया गया था। राजा सर्वोच्च अधिकारी होता था और उसके आदेशों का निर्विवाद रूप से पालन किया जाना था; किसी की ओर से की गई कोई भी असावधानी सबसे कठोर दंड का कारण बनती थी।

पदानुक्रम में अगले प्रमुख कुलीन होते थे जिन्हें 'पात्र-मंत्रियों' के रूप में जाना जाता था। शुरू में उनमें बुरागोहैन और बारगोहैन शामिल थे, लेकिन बाद में जैसे-जैसे अहोम साम्राज्य का विस्तार हुआ और क्षेत्र एवं विषयों की संख्या में वृद्धि हुई, बारपात्रागोहैन, बारबारुआ और बरफुकन के पदों को प्रशासनिक सुविधा के लिए जोड़ा गया। प्रमुख सरदारों को राजा के आदेशों का पालन करना होता था, उन्हें प्रशासन के विभिन्न पहलुओं पर सलाह देनी होती थी और यह सुनिश्चित करना होता था कि राज्य सुचारु रूप से कार्य करे। राजा के अधीन होने के बावजूद, पात्र-मंत्रियों के पास अत्यधिक शक्तियाँ होती थीं और वे सामूहिक रूप से राजा को पदच्युत कर सकते थे। हालाँकि इसके कुछ अपवाद थे, लेकिन यह किसी भी अहोम राजा के अत्याचारी बनने और मनमाने ढंग से कार्य करने में प्रभावी निवारक साबित हुआ। किसी भी राजा की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी चुनने की कठिन जिम्मेदारी भी प्रमुख सरदारों पर डाली गई थी।

अहोम सिंहासन का उत्तराधिकार हमेशा वंशानुगत प्रक्रिया नहीं थी; यह अहोम राजवंश के लंबे शासन के पीछे प्राथमिक कारणों में से एक था। जबकि दुनिया भर के अन्य राजवंशों ने ज्यादातर तत्काल संतान को सिंहासन विरासत में मिलने के सिद्धांत का पालन किया, जिससे उत्तराधिकारी के अभाव के कारण उस राजवंश के अचानक समाप्त होने की आशंका बढ़ गई। 'फैद्स' में धीरे-धीरे बढ़ते शाही परिवार का विस्तार होने और उनमें से मेल्स को महत्व देने के कारण अहोमों के बीच उत्तराधिकार अधिक तरल था। "शासन करने वाले राजा के पुत्रों, पत्नियों और अन्य निकट संबंधियों को जागीरें दी जाती थीं जिन्हें आमतौर पर 'मेल' के नाम से जाना जाता था... चैरिंगिया मेल, टिपामिया मेल, नामरूपिया मेल, सरू मेल और माजू मेल का पद आमतौर पर सम्राट के पुत्रों, भाइयों एवं भतीजों को दिए जाते थे और लाभार्थी राजा की उपाधि धारण करते थे..." (5)

इस प्रकार, यदि सम्राट की मृत्यु किसी पुरुष उत्तराधिकारी बिना या अपने तत्काल रिश्तेदारों के बीच किसी उपयुक्त उत्तराधिकारी को छोड़े बिना हो जाती थी, तो प्रमुख रईस विभिन्न फैड्स और मेल्स के बीच राजकुमार की तलाश कर सकते थे और उसे अहोम सिंहासन पर बैठा सकते थे। इससें यह सुनिश्चित होता था कि पूर्वज सुकाफा के समान शाही खून होने पर किसी भी व्यक्ति को सिंहासन विरासत में मिलेगा और अहोम राजवंश की निरंतरता को बनाए रखा जा सकेगा।

पात्र-मंत्रियों के नीचे कुलीनों और अधिकारियों से लेकर निम्न स्तर के कर्तव्य निभाने वाले व्यक्तियों तक का क्रमिक पदानुक्रम था। सबसे वरिष्ठ अधिकारियों में फुकन, फिर बरुआ, बारह राजखोवा, कई कटकी, काकाती और डोलोइस, साथ ही हजारिका, सैकिया और बोरा भी थे। प्रशासकों के व्यवस्थित क्रम में प्रत्येक को सौंपे गए कर्तव्यों को धार्मिक रूप से निष्पादित करने का आदेश होता था, चाहे वह कर्तव्य कितने भी महत्वहीन क्यों न हों। इसलिए यह क्रम शासन के पहियों को सुचारु रूप से चलाने में सहायक था।

अहोम राजवंश के दीर्घ शासन काल का अन्य महत्वपूर्ण कारक 'पैक' प्रणाली थी। आम लोगों में सभी पुरुष सदस्यों को 'पैक' कहा जाता था और उन्हें राज्य को राजस्व देने के बजाय श्रमिकों या सैनिकों के रूप में सेवा प्रदान करनी होती थी। "पैकों को गोटों में संगठित किया गया था... प्रत्येक गोट के एक सदस्य को आवश्यक कार्य के लिए, बारी-बारी

से उपस्थित रहने के लिए बाध्य किया गया था, और घर से उसकी अनुपस्थिति के दौरान, अन्य सदस्यों से अपेक्षा की जाती थी कि वे उसकी भूमि पर खेती करें और उसके परिवार को भोजन उपलब्ध कराते रहें। शांति के समय में, पैक को सार्वजनिक कार्यों में नियोजित करने की प्रथा थी; और इसलिए असम में विशाल तालाब और ऊँचे तटबंध वाली सड़कें अस्तित्व में आईं। 'पैकों' को 'खेल' के रूप आगे व्यवस्थित किया गया था, जिन्हें अधिकारियों का नियमित उन्नयन प्रदान किया गया था; बीस 'पैकों' की कमान बोरा, एक सौ की कमान सैकिया, एक हजार की कमान हजारिका, तीन हजार की कमान राजखोवा और छह हजार की कमान फुकन को दी गई; वे सभी नियमित सेना की तरह कठोर अनुशासन के अधीन थे.... वर्णन किए गए ढंग 'खेल' को उच्च कुलीनों के बीच वितरित किया गया था और प्रत्येक अधिकारी को वेतन के बदले में कुछ 'पैक' सौंपे गए थे... " (6)

'पैक' प्रणाली ने विशाल और महंगी सेना बनाए रखने की आवश्यकता को समाप्त कर दिया क्योंकि अहोमों के पास एक मिलिशिया थी जिसे खेल के मालिक द्वारा अपने अधीनस्थों के माध्यम से अल्प सूचना पर संगठित किया जा सकता था। "उनके नागरिक और सैन्य कर्तव्यों का कुछ प्रारंभिक ज्ञान, राज्य में उनकी पिछली सेवा द्वारा प्रत्येक पैक में प्रत्यारोपित किया गया था, उन्हें अपने आवंटित मुख्यालय या महानगर में ब्रशिंग या पुनश्चर्या पाठ्यक्रम से गुजरना पड़ता था, विशेष रूप से खास आवश्यकता वाले अवसर के लिए आवश्यक गहन प्रशिक्षण लेना होता था ... सरकार को औपचारिक भर्ती का सहारा नहीं लेना पड़ता था क्योंकि आपातकाल के समय वयस्क प्रभाव वाले पूरे निकाय की सेवाओं की कमान संभाली जा सकती थी।" (7)

इसके अलावा, अपने साम्राज्य का विस्तार करके, अन्य जनजातियों को अधीन करके, घाटी को एक ही प्रशासन के अधीन लाकर और आमतौर पर प्रबुद्ध एवं स्थिर शासन प्रदान करके, अहोमों ने समरूपीकरण की ऐसी प्रक्रिया शुरू की जिसके परिणामस्वरूप पूर्व-औपनिवेशिक दौर में असमिया राष्ट्र का जन्म हुआ। इसके शासनकाल में ब्रह्मपुत्र घाटी में मध्ययुगीन काल के दौरान रहने वाली विभिन्न जनजातियों का संश्लेषण और विशिष्ट असमिया भाषा, संस्कृति और राष्ट्रवादी पहचान का विकास देखा गया। जनजातियों के बीच व्यापक राजनीतिक और सांस्कृतिक मेलजोल, अंतर्विवाह और अन्य सामाजिक

आदान-प्रदान ने धीरे-धीरे नस्लीय और सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ दिया और लोगों में एकजुटता एवं राष्ट्रवादी भावना का संचार किया, जो महापुरुष शंकरदेव जैसे वैष्णव संतों द्वारा शुरू किए गए धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से भी एक साथ बँधे रहे। समय के साथ, बाहर से आने वाले लोगों ने कामरूप के निवासियों को अहोम के रूप संदर्भित करना बंद कर दिया, बल्कि उन्हें 'असमिया' कहने लगे।

स्वाभाविक रूप से, कुछ अहोम राजाओं का कार्यकाल लंबा था और कुछ का कार्यकाल बेहद संक्षिप्त था। कुछ के शासनकाल में राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति देखी गई, जबकि अन्य के शासनकाल अवर्णनीय और अचूक अंतराल थे। सुकाफा के बाद के महान शासकों में सुहुंगमुंग (1497-1539) शामिल हैं। जब तक वह सिंहासन पर नहीं बैठे, तब तक पूर्वज सुकाफा के उत्तराधिकारी राजा उनके द्वारा स्थापित छोटे राज्य के भीतर ही रहने से संतुष्ट थे। सुहंगमुंग का शासनकाल इस तथ्य के लिए उल्लेखनीय है कि पहली बार अहोमों ने उस राज्य की सीमाओं का विस्तार किया और चुटिया और कछारियों जैसी प्रमुख पड़ोसी जनजातियों को अपने अधीन करने के लिए अभियानों की एक शृंखला शुरू की। इस राजा द्वारा शुरू की गई विस्तारवादी प्रक्रिया, समय बीतने के साथ, उसके बाद आए कुछ राजाओं द्वारा आगे बढ़ाई गई और पूर्व में सदिया से लेकर पश्चिम में गोलपाड़ा तक संपूर्ण ब्रह्मपुत्र घाटी अहोम साम्राज्य में शामिल हो गई।

हालाँकि, सीमाओं के विस्तार ने अहोम शासकों को पहली बार राजा नरनारायण के कोच साम्राज्य के साथ-साथ बंगाल के मुस्लिम शासकों के साथ संघर्ष में उलझा दिया। हालाँकि सुहंगमुंग ने स्वयं अपने नए विरोधियों पर उल्लेखनीय जीत हासिल की, लेकिन प्रतिकूल परिणाम उनके उत्तराधिकारी सुक्लेनमुंग के समय में दिखाई देने लगे, जब 1546 में सुक्लाध्वज जिसे चिलाराय (पतंग-राजा) के नाम से भी जाना जाता था, के तहत कोच सेना ने असमिया रक्षकों को हरा दिया, लेकिन अंततः आक्रामक की आपूर्ति में कटौती करके उसे खदेड़ने में सफल रहे। (8)

सन 1563 में, सुक्लेनमुंग के बेटे सुखमफा, जिसे खोरा (लंगड़ा) राजा के नाम से भी जाना जाता है, के शासनकाल के दौरान, चिलाराय ने एक और भ्रमण किया और इस अवसर पर कोच जनरल विजयी हुए, न केवल उन्होंने असमिया को हराया और अहोम राजा को नागा

पहाड़ियों की तलहटी में बसे नामरूप में चोराई-खोरोंग भागने के लिए भी मजबूर कर दिया, बल्कि अहोम राजधानी गढ़गाँव में भी प्रवेश किया और उस पर कब्ज़ा कर लिया। तब जाकर अहोम राजा ने कोच की श्रेष्ठता को स्वीकार किया और कब्जे वाली भूमि के बड़े हिस्से को वापस लेने, असमिया बंधकों को छोड़ने की अनुमति देने और युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के बाद ही चिलाराय को कोचबिहार की कोच राजधानी लौटने के लिए राजी किया जा सका।(9)

लेकिन, कुछ वर्ष पश्चात, कोच साम्राज्य के समक्ष दिल्ली के मुगलों से पराजित होने का खतरा उत्पन्न हो गया! कोच सम्राट नरनारायण और उनके कमांडर चिलाराय को अपना ध्यान पश्चिम की ओर लगाना पड़ा, जिससे सुखमफा को उन्हें सौंपे गए क्षेत्र को वापस हासिल करने में मदद मिली। इसके बावजूद, नरनारायण ने असमियों को नाराज न करने की इच्छा से प्रेरित होकर, बंधक बनाए गए अहोम सरदारों के बेटों को सुरक्षित रूप से उनके परिवारों के पास जाने दिया। इससे उन्होंने कोच साम्राज्य के पूर्वी हिस्से को कवर कर लिया और उन्होंने पश्चिम में मुगलों का विरोध किया।

तब तक कोच साम्राज्य ने लगभग पूरे निचले असम को घेर लिया था और यह असम पर मुगलों के सीधे हमलों में बाधा साबित हुई। दुर्भाग्य से, नरनारायण की एक गलती के परिणामस्वरूप उनका साम्राज्य कमजोर हो गया और अंततः नष्ट हो गया। निःसंतान होने के कारण उन्होंने चिलाराय के पुत्र रघुदेव को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, लेकिन ज्यादा उम्र में उनके यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ!

निष्पक्षता की चाह में, 1581 के आस-पास, नरनारायण ने अपने राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया और रघुदेव तथा अपने बेटे लक्ष्मीनारायण को आधा-आधा हिस्सा दे दिया। 1584 में नरनारायण की मृत्यु के बाद, गौड़ के नवाब और अहोम राजा ने जल्द ही दो बेहद कमजोर कोच राज्यों पर कब्ज़ा कर लिया। (10) कुछ समय बाद मुगलों ने गौड़ साम्राज्य पर कब्ज़ा कर लिया, और तब से, डेढ़ शताब्दी तक, उनके और अहोम शासकों के बीच बार-बार और सीधे संघर्ष होते रहे, जब तक कि मुग़ल विस्तारवादी महत्वाकांक्षा को समाप्त करने की जिम्मेदारी लाचित बरफुकन को नहीं सौंपी गई।

मुगलों और असमियों के बीच पहला सीधा टकराव सुसेंगफा

के शासनकाल के दौरान हुआ, जिसे बुद्ध स्वर्ग नारायण या प्रताप सिंह के नाम से भी जाना जाता है। 17वीं सदी की शुरुआत के कुछ घटनाक्रमों ने इस तरह के टकराव के लिए मंच तैयार किया। ऐसी ही एक घटना 1615 में घटी जब कालियाबार के पास असमिया सैनिकों ने जासूस होने के संदेह में मुस्लिम व्यापारी की हत्या कर दी। इसके कारण बंगाल के मुगल गवर्नर शेख कासिम को दंडात्मक अभियान पर बड़ी सेना भेजनी पड़ी।

भराली नदी के मुहाने पर लड़ाई में असमिया पराजित हुए। हालाँकि, प्रताप सिंह के नेतृत्व में सेना ने रात को गुप्त हमले में मुगलों को उखाड़ फेंका। जबकि कई आक्रमणकारी मारे गए या भाग गए, भारी मात्रा में सामान असामियों के हाथ लगा, जिसमें हाथी, घोड़े और बड़ी संख्या में युद्धपोत, नौकाएँ, तोपें, बंदूकें और युद्ध के अन्य हथियार शामिल थे। (11)

इस पहली लड़ाई के बाद, अगले कुछ दशकों तक, मुग़लों के बीच कुछ छिटपुट झड़पें हुई, जो मुख्य आधार के रूप में हाजो के साथ निचले असम के तत्कालीन कोच क्षेत्र में विराजमान थे और प्रताप सिंह की असमिया सेना मुगलों को बाहर करने पर आमादा थी, लेकिन किसी भी पक्ष को कोई निश्चित लाभ नहीं हुआ। कुछ समय के लिए, 1630 के दशक के उत्तरार्ध में, स्थानीय आदिवासी प्रमुखों की सहायता से असमिया हाजो सहित मुगल कब्जे वाले अधिकांश क्षेत्र पर पुनः कब्जा करने में कामयाब रहे, लेकिन बहुत लंबे समय तक उन पर कब्जा नहीं बनाए रख सके। ढाका के नवाब के सैनिकों और जहाजों के समर्थन से हाजो के गवर्नर अब्दुस्सलाम उन्हें वहाँ से बाहर निकालने में सफल रहे। जबकि बरफुकन का बेटा मारा गया| अहोम बुरंजिस ने दर्ज किया है कि युद्ध के दौरान एक फिरंगी या सफेद विदेशी को पकड़ लिया गया और गढ़गाँव भेज दिया गया। वह अहोम साम्राज्य में कदम रखने वाला पहला यूरोपीय था।

लेकिन, जहाजों, लोगों और सामग्री की नई आपूर्ति से सशक्त होकर, असमिया ने मुगलों के खिलाफ अपने अभियान को फिर से शुरू किया और दो हजार बंदूकें और सात सौ घोड़ों सहित बड़ी मात्रा में उनके सामान पर कब्जा करते हुए, हाजो को वापस ले लिया। मुगलों ने जो ईंटों की इमारतें बनवाई थीं, उन्हें जमींदोज कर दिया गया। प्रताप सिंह की सेना ने पूरे कामरूप और गोलपाड़ा को मुगल कब्जे से मुक्त करा

लिया; कोच राजकुमार चंद्र नारायण को उस क्षेत्र के शासक के रूप में नियुक्त किया गया, क्षेत्र के कई जमींदारों ने उनके प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा ली।

1630 के दशक के दौरान अहोम और मुगलों-दोनों का अभियान पूरे समय एक-दूसरे की हार-जीत की लड़ाई जैसा रहा। (12) एक ही बार में इसे निपटाने के लिए प्रतिबद्ध ढाका के नवाब ने बड़ी सेना भेजी। निचले असम में मुगल वर्चस्व को बहाल करने के लिए अपने भाई मीर ज़ैनुद्दीन की कमान के तहत, पच्चीस युद्ध टुकड़ियों के साथ घुड़सवार सेना और मैचलॉक टुकड़ियों की सेना भेजी। 1637 में वर्ष भर धुबरी और जोगीघोपा में कई युद्ध हुए और अंत में असमिया हार गए। मीर ज़ैनुद्दीन ने अपनी अजेय प्रगति जारी रखी, ब्रह्मपुत्र के उत्तर और दक्षिण दोनों तटों पर मुगल क्षेत्र पर कब्ज़ा कर तब आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह सरायघाट नहीं पहुँच गया, जहाँ प्रताप सिंह अपने बेड़े के साथ डेरा डाले हुए थे।

आगामी लड़ाई में राजा की व्यक्तिगत भागीदारी के बावजूद असमियों को एक बार फिर सबसे बुरी स्थिति का सामना करना पड़ा। पांडु, अगियाथुरी, सरायघाट और कलंग नदी के मुहाने पर कजली किले में उनकी सेना परास्त हुई; पाँच सौ छोटी नौकाएँ और तीन सौ बंदूकें विजेताओं के हाथ लगीं। मुगलों ने कामरूप में अपने शासन को मजबूत करने और पुनः कब्जाए गए क्षेत्र के वित्तीय कामकाज प्रभावित करने में कुछ समय बिताया। मीर नुरुल्ला को थानेदार नियुक्त किया गया जिसका मुख्यालय दिल्ली में था।

प्रताप सिंह पीछे हटकर कलियाबार में अच्छी तरह से मजबूत गढ़ में पहुँच गए। कजली किले पर पुनः कब्जा करने के लिए वहाँ से उन्होंने जवाबी हमला किया, लेकिन आगे नहीं बढ़ सका और न ही मीर ज़ैनुद्दीन ने अपनी प्रगति जारी रखने के लिए कोई झुकाव दिखाया। जाहिर है, तब तक दोनों विरोधी लंबे युद्ध से थक गए थे और 1639 तक, उनके संसाधन समाप्त हो गए थे।

इस प्रकार, उस वर्ष, योद्धा-राजनेता मोमाई तमुली बोरबरुआ ने अहोम राजा के प्रतिनिधि और अल्लाह यार खान ने मुगलों के प्रतिनिधि के रूप में संधि पर बातचीत की। इसके तहत पूर्व राज्य की पश्चिमी सीमा ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर बरमाडी नदी पर तय की गई थी

जो मणिकर्णेश्वर पहाड़ी की तलहटी और दक्षिण तट पर गौहाटी के पूर्व में एक सड़क, असुरार अली पर स्थित थी। (13)

"फरवरी 1639 के आरंभ में हस्ताक्षरित असुरार अली की संधि के द्वारा, प्रत्येक पक्ष संबंधित प्रभुत्व में एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता को स्वीकार करने के लिए सहमत हुआ। 'उत्तरकुल' में बरनदी नदी और 'दखिनकुल' में असुर का मार्ग (अली) ब्रह्मपुत्र के दोनों तटों पर मुग़ल कामरूप और असम की सीमाएँ बन गए।

असम के राजा ने पहली बार कामरूप में मुग़ल वर्चस्व को मान्यता दी और वहाँ हस्तक्षेप न करने पर सहमति व्यक्त की। मुग़ल फौजदार ने असम के राजा के स्वतंत्र अधिकार को स्वीकार किया और ब्रह्मपुत्र के दोनों तटों पर बरनदी और कलंग के पूर्व में सभी क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को त्याग दिया। गौहाटी मुगलों के अधीन आ गई। दोनों पक्षों के बीच व्यापार और वाणिज्यिक संबंध स्थापित हुए।" (14)

अगले बीस वर्षों के दौरान, इस सीमा रेखा के पश्चिम का देश मुगलों के कब्जे में रहा, गौहाटी से लेकर मानस नदी तक का पूरा क्षेत्र, जो गोलपाड़ा के सामने ब्रह्मपुत्र में गिरती है, उनके हाथों में चला गया और उन्होंने अपना प्रशासन और राजस्व संग्रह प्रणाली शुरू की| उस अवधि के दौरान कामरूप की सरकार का संचालन मुगल फौजदार ने गौहाटी स्थित मुख्यालय से करते थे।

हालाँकि, एक संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे, लेकिन जैसा कि प्रायः दो परस्पर विरोधी दलों के बीच होता है, उनके बीच निरंतर शीत युद्ध की स्थिति जारी रही, जिसमें कई घटनाएँ हुईं जिनके लिए राजनयिक हस्तक्षेप की आवश्यकता थी| उदाहरण के लिए, सन 1640 में 'बयामत खान' नामक एक मुगल व्यापारी ने आधिकारिक अनुमति के बिना असम में प्रवेश किया और सिंगरी में असमिया सीमा अधिकारी सत्रुसेन ने उसे टोक दिया। इस पर अपमानित होकर, व्यापारी ने तीन असमियों को मार डाला और अधिकारी ने जवाबी कार्रवाई में 23 मुगल कैद कर लिए। मुग़ल फौजदार को क्षमादान प्राप्त करने के प्रयास में अहोम बारबरुआ के पास दूत भेजने पड़े। इसके अलावा, भूमि पर अतिक्रमण, हाथियों को पकड़ने का अधिकार, राजनीतिक भगोड़ों की वापसी न करना आदि जैसे मुद्दों पर लगातार मतभेद बने रहे और ये अहोम और मुगलों के बीच विवाद की जड़ बने रहे। (15)

***

प्रताप सिंह की मृत्यु सन 1641 में हुई, उनके तीन बेटे थे-सुरम्फा, सुतिनफा और साई। यद्यपि शान रीति-रिवाजों के अनुसार सबसे बड़ा पुत्र 'सुरम्फा' राजगद्दी का हकदार था, और प्रमुख रईसों ने उनके राजा बनने की पेशकश की, सबसे छोटे भाई 'साई' ने इसके विरुद्ध साजिश रची और पकड़े जाने के बाद उसे मार डाला गया। हालाँकि, सुरम्फा ने स्वयं साबित कर दिया कि उसके पास नेतृत्व की गुणवत्ता या आवश्यक नैतिकता की पूरी तरह से कमी है और प्रमुख रईसों ने जल्द ही उसके अनैतिक तरीकों से तंग आकर, उसे निर्वासित कर दिया और अंत में उसे मार डाला और सुतिनफा को राजा बना दिया।

उदासीन स्वास्थ्य के कारण नए राजा को नरिया (बीमार) राजा के नाम से भी जाना जाता था, और रीढ़ की हड्डी के टेढ़ेपन के कारण केकोरा (टेढ़ा) राजा भी कहा जाता था। वह भी समान रूप से अप्रभावी साबित हुआ, इसलिए नवंबर 1648 में उसे पदच्युत कर दिया गया। (16) उनके पुत्र सुतमला ने हिंदू नाम जयध्वज सिंह (1648-1663) अपनाया। उसे बड़ी धूमधाम से सिंहासन पर बिठाया गया। यह राजा महत्वाकांक्षी था; वह अहोम गरिमा पर मुगलों के लगातार हमलों को बर्दाश्त नहीं कर सके और उनके जीवन का लक्ष्य मुगलों को सौंपी गई भूमि को वापस लेना और एक बार फिर अहोम साम्राज्य को सुहंगमुंग या उनके पिता प्रताप सिंह द्वारा अस्थायी रूप से हासिल किए गए आयामों तक विस्तारित करना बन गया। हालाँकि आंतरिक कलह और कुछ जागीरदारों के विद्रोह ने यह सुनिश्चित कर दिया कि वह तुरंत अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए तैयार नहीं हो सके, लेकिन उचित समय आने पर उन्होंने इस स्थिति के लिए तैयारी करने की सावधानी बरती।

ऐसा ही एक क्षण 1657 में आया जब मुगल सम्राट शाहजहाँ गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसके चार पुत्रों दारा, शुजा, मुराद और औरंगजेब के दिल्ली के सिंहासन के लिए संघर्ष शुरू हो गया। अपने पिता की बीमारी के बारे में जानकर राजकुमार शुजा ने बड़ी सेना एकत्र की, और आगरा की ओर कूच किया। इसने न केवल बंगाल को नेतृत्वविहीन कर दिया, बल्कि बंगाल के पूर्वी किनारों पर मुगल किलेबंदी पर बहुत कम मानव रह गए और युद्ध नौकाओं का बेड़ा भी नहीं रहा।

मुगल सम्राट के अधीन कोचबिहार के राजा प्राणनारायण ने

निचले असम में इन घटनाक्रम के कारण पैदा हुए शून्य को तुरंत समझ लिया। उन्होंने स्वतंत्रता की घोषणा की, गौहाटी में मुगल फौजदार मीर लुतफुल्ला शिराजी पर हमला किया और वहाँ मुगल कब्जे वाले क्षेत्रों पर कब्जा करना शुरू कर दिया।

जयध्वज सिंह ने भी एक विशाल सेना और बेड़े के साथ गौहाटी की ओर आगे बढ़ते हुए अपना कदम बढ़ाया। उनके बीच फँसा मुगल फौजदार बीस तोपें और कई घोड़े और बंदूकें छोड़कर ढाका भाग गया, जिन्हें ले जाने का उसके पास समय नहीं था। अचानक असमियों और कोचों ने स्वयं को एक-दूसरे से भिड़ते हुए पाया। प्राणनारायण ने खाली क्षेत्र को साझा करने का प्रस्ताव रखा-ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर आधा हिस्सा ले लो और दक्षिणी तट पर असमिया को दे दो- जिसे सरसरी तौर पर अस्वीकार कर दिया गया। कोच सेना को तुरंत कामरूप की सीमा से संकोश नदी के पार खदेड़ दिया गया।

अहोम इतिहास में पहली बार संपूर्ण ब्रह्मपुत्र घाटी असमिया आधिपत्य के अधीन आ गई। गौहाटी में स्थित चेंगमुन राजसाहुर बरफुकन और पिक्चाई चेतिया को नए कब्जे वाले क्षेत्र का प्रभारी बनाया गया। वैष्णव मठों के प्रमुखों और मंदिर के पुजारियों को छोड़कर, निचले असम की पूरी आबादी को ऊपरी असम में पुनः आवंटित कर दिया गया। इसके पीछे यह गलत धारणा थी कि मुगल उस क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने की कोशिश में अपने संसाधनों को बर्बाद नहीं करेंगे, जिससे कोई राजस्व नहीं मिलेगा! डेढ़ वर्ष तक पूरा कामरूप क्षेत्र बंजर जंगल में तब्दील हो गया।(17)

मिर्ज़ा मुहम्मद काज़िम के 'आलमगीरनामा' (वैन्सिटार्ट एच. द्वारा अंग्रेजी अनुवाद) के अनुसार, असमियों ने कामरूप से आगे दक्षिण की ओर भी आक्रमण किया, जो भी बस्तियाँ मिलीं, उन्हें लूट लिया। बादुली फुकन, लापेटी फुकन और फुलबरुआ फुकन के नेतृत्व में उन्होंने कामरूप से आगे बढ़कर लूटपाट की और ढाका के करीब पहुँच गए और उस क्षेत्र के कई मुगल निवासियों का अपहरण कर लिया और उन्हें ऊपरी असम में भेज दिया। मुस्लिम इतिहासकार गुलाम हुसैन सलीम ने अपने इतिहास 'रियाजु-ए-सलातीन' में असमिया लूट की सीमा को दर्ज किया है। उन्होंने लिखा, "असमियों ने साहस और विद्रोह का स्तर बढ़ाया और बिना किसी प्रतियोगिता के उन्होंने कामरूप प्रांत पर कब्ज़ा कर लिया, उसे लूट की झाड़ू से साफ कर दिया, लोगों की चल और अचल संपत्ति

सहित सब-कुछ बलपूर्वक अपने देश ले गए, इमारतों को गिरा दिया, उर्वरता का कोई निशान नहीं छोड़ा, और पूरे प्रांत को सादे समतल मैदान में बदल दिया।" (18)

***

इस बीच, जुलाई 1658 में दिल्ली में औरंगजेब ने मुगल सिंहासन पर कब्ज़ा करने के लिए अपने भाइयों पर अत्याचार किया। जून 1660 में उसने अपने सबसे शक्तिशाली सरदारों में से एक मीर जुमला को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया। उसे यह स्पष्ट आदेश दिया कि उसे मेरे भाई और प्रतिद्वंद्वी राजकुमार शुजा को आश्रय देने के लिए अरक्कन के राजा को दंडित करना होगा और नवोदित कोचेस और अहोम को सबक भी सिखाना होगा।

यह स्पष्ट नहीं है कि क्या मीर जुमला को संदेह था कि चालाक औरंगजेब ने उसे इस पद पर नियुक्त करने या उपरोक्त जिम्मेदारियाँ सौंपने के पीछे गलत इरादे रखे थे। आख़िरकार उसने औरंगज़ेब के उत्तराधिकार के सफल युद्ध में आर्थिक मदद की और उसकी नियुक्ति को पुरस्कार के रूप में लिया जा सकता है। शायद महत्वाकांक्षी प्रकृति का होने और अपनी प्रतिष्ठा बनाने के लिए उत्सुक होने के बावजूद, वह यह कल्पना नहीं कर सका कि सम्राट उसमें दिल्ली सिंहासन के लिए संभावित खतरा देख सकता है। लेकिन तथ्य यह है कि मीर जुमला वास्तव में शक्तिशाली व्यक्ति था। गोलकुंडा के वज़ीर के रूप में, उसके महल और सेराग्लियो की भव्यता ने विदेशी आगंतुकों को आश्चर्यचकित कर दिया था। निश्चित रूप से औरंगजेब ने सोचा कि मीर जुमला के दिल्ली से दूर होने से वह अधिक सुरक्षित रहेगा और उस पर सैन्य अभियान चलाने का शाही कर्तव्य थोप दिया गया, खासकर असम में जो ऐसी भूमि के रूप में कुख्यात था जहाँ से कोई बाहरी व्यक्ति कभी नहीं लौटता था! (19)

लेकिन अराक्कन के राजा के खिलाफ अभियान में तत्काल बाधाएं होने के कारण, मीर जुमला ने पहले कोच और फिर अहोम के खिलाफ अपनी सेना को शामिल करना अधिक विवेकपूर्ण समझा और अभियान का नेतृत्व खुद किया। अपने (औरंगजेब के) फरमान में वह चाहता था कि मीर बंगाल के मामलों को निपटाने के बाद असम और अराक्कन को जीते। लेकिन यह मीर ही था जिसने अराक्कन अभियान को स्थगित करने और कूचबिहार और असम पर आक्रमण करने के लिए

सम्राट की अनुमति ली थी। शाही प्रतिष्ठा, शाही प्रभुत्व की सुरक्षा और मुस्लिम युद्ध बंदियों की रिहाई ने कोच और अहोम शासकों को दंडित करने की माँग की। इसके अलावा, मीर ने सामंती सहयोगियों की अहोम व्यवस्था में दरार के कुछ संकेत देखे और इसलिए स्थिति को अनुकूल माना। घिला विजयपुर के जय नारायण (जिन्हें असमियों ने पहले कामरूप के राजा के रूप में स्थापित किया था) ने पहले ही भवनाथ और असमियों के बीच मेल-मिलाप के शेखी भरे वादों को पूरा करने में विफलता के कारण सजा से बचने के लिए अहोम शासकों को छोड़ दिया था और मीर के साथ शामिल हो गया था। उसने मीर को कामरूप और असम की स्थिति से परिचित कराया। (20)

कुछ अहोम बुरंजिस का कहना है कि जब मीर जुमला को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया गया, तो जयध्वज सिंह ने यह संदेश देने के लिए उसके पास दूत भेजा कि अहोम राजा ने कोचों से बचाने के लिए ही निचले असम में मुगल भूमि पर कब्जा किया था, और वह इसे गवर्नर द्वारा नियुक्त किसी भी व्यक्ति को सौंपने के लिए तैयार हैं। इसलिए राशिद खान को ज़मीन वापस लेने के लिए छोटी सी सेना के साथ भेजा गया था। उसके निकट आते ही अहोम लोग धुबरी से भाग गए और मानस से पीछे चले गए। लेकिन राशिद खान को जाल में फंसने का संदेह हुआ और उसने आगे बढ़ना बंद कर दिया। उसने सूचना भिजवाई कि वह बड़ी सेना की प्रतीक्षा करते हुए बातचीत जारी रखेगा। अहोम सम्राट ने पीछे हटने वाले दो फुकन्स (दिहिंगिया और लाहुई) को दंडित किया और बेजदोलोई परिवार के गैर-अहोम, हिंदू कायस्थ भंडारपाल मंथु भराली बरुआ को निचली असम सेना का कमांडर नियुक्त किया। मानस नदी के मुहाने पर किला जोगीघोपा को मजबूत किया गया और ब्रह्मपुत्र के विपरीत तट पर पंचरतन में अहोम कैप्टन अहातागुरिया लाहोन फुकन और कंदु फुकन द्वारा नए किले का निर्माण किया गया। कुछ अहोम बुरंजिस का कहना है कि मीर जुमला ने अपने दूतों के माध्यम से इच्छा व्यक्त की थी कि वह असम पर आक्रमण नहीं करेगा| यदि अहोम राजा पूरे मुगल कामरूप को बहाल कर दें, अपनी बेटी को उचित श्रद्धांजलि के साथ भेजें और भविष्य में आक्रामकता से दूर रहने का वादा करें, इन माँग को उसने बाद में दोहराया। (21)

जल्द ही यह संदेह हुआ कि जयध्वज सिंह का निचला असम वापस लौटाने का कोई इरादा नहीं है, मीर जुमला एक अभियान का

नेतृत्व करने के लिए दृढ़ हो गया, पहले कोचों के खिलाफ और फिर असमिया के खिलाफ। 1 नवंबर, 1661 को दिलेर खान के साथ वह खिज़पुर चला गया। उसके साथ विशाल सेना थी जिसमें 12,000 घुड़सवार सेना, 30,000 पैदल सेना, एक शक्तिशाली तोपखाना और 300 से अधिक फ्लोटिंग बैटरियाँ या युद्ध-पोत जिन्हें 'घुराब' कहा जाता था जिसे यूरोपीय लोग चलाते थे, प्रत्येक में 14 तोपें और पाँच दर्जन नाविक थे, और 4 कुश या लंबी पंक्ति-नावों द्वारा खींचे जाते थे। बंगाल की सीमा से, स्काउट्स ने इस सेना को दिसंबर 1661 में कूचबिहार में प्रवेश करने के लिए अल्पज्ञात रास्ते से आगे बढ़ने में मदद की। कोचों ने घुटने टेक दिए, राजा भूटान भाग गए, और मीर जुमला ने बिना किसी प्रतिरोध के राज्य पर कब्जा कर लिया, और मुगल शैली का प्रशासन स्थापित किया जिसमें किसानों पर लगान लगाना भी शामिल था। (22)

फिर, कूचबिहार में 5,000 लोगों की चौकी छोड़कर, मीर जुमला 4 जनवरी, 1662 को असम के लिए निकला और रंगमती में राशिद खान से मिला। उसने दो दूत, लालुआ बेग और होराम रायख को जयध्वज के पास भेजा और एक बार फिर शाही क्षेत्र वापस करने की माँग पर जोर दिया। अहोम राजा ने अब जवाब दिया कि यह कोचों का क्षेत्र था, न कि मुगलों का, जो असमियों के कब्जे में है, इसलिए इसे वापस करने का सवाल ही नहीं उठता। क्रोधित मीर जुमला ने तब ऐसा अभियान शुरू किया जो असमिया लोगों के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ। मुगल रथ अधिक प्रतिरोध का सामना किए बिना तेजी से आगे बढ़ा। जोगीघोपा किले (23) में असमिया गैरीसन में लोगों की बहुत कमी थी जो हैजा की महामारी के कारण और भी कमजोर हो गया था, वे ज्यादा लड़ाई किए बिना सरायघाट और पांडु भाग गए।

मीर जुमला की सेना ब्रह्मपुत्र के उत्तरी और दक्षिणी दोनों किनारों पर आगे बढ़ी, नदी में घुरब उसके पीछे चल रहे थे। आगे बढ़ना कठिन था; सैनिकों को घुड़सवार सेना के लिए रास्ता बनाने के लिए घने पेड़ों के बीच से रास्ता काटना पड़ा, लेकिन इससे प्रगति धीमी हुई। उनकी प्रगति के बारे में जानकर, जयध्वज सिंह ने जल्दबाजी में सरायघाट और पांडु में अतिरिक्त सेना भेजी, लेकिन मुगलों ने वहाँ के किलों तक पहुँचने से पहले ही दोनों पर कब्ज़ा कर लिया। 4 फरवरी, 1662 को गौहाटी पर कब्ज़ा हो गया और वहाँ तैनात सैनिक रात को शक्तिशाली हमले में मार डाले गए।

इन असफलताओं की खबर ने रास्ते के अन्य किलों में तैनात सैनिकों को परेशान कर दिया, और फिर भी कुछ ने प्रतिरोध किया। मीर जुमला की सेना के पास तुलनात्मक रूप से आसान और स्थिर मार्ग था, जब तक कि वह सिमालुगढ़ में अहोम किले तक नहीं पहुँच गई। यह किला रणनीतिक रूप से लाभप्रद स्थान पर स्थित था और उसकी दीवारों पर तोपें लगी हुई थीं, दीवारों के साथ-साथ खाइयों के कारण भी किला काफी सुरक्षित था। इस पर धावा बोलने के बजाय, मीर जुमला ने अपनी सेना में जान-माल की हानि को रोकने के लिए इसकी घेराबंदी करने का फैसला किया। "लेकिन तोपों से की गई गोलाबारी से भी किले की मोटी दीवारों को नुकसान नहीं पहुँचा। रक्षकों ने भी, सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक 24 घंटे आक्रमणकारियों पर तोपखाने से भरी गोलीबारी की। सामने से की गई घेराबंदी का त्वरित परिणाम नहीं मिलने के कारण, मीर ने अपनी रणनीति में संशोधन किया। उसने किले को चारों तरफ से घेरने और उस पर एक साथ दो तरफ से हमला करने का फैसला किया। इसे दिलिर खान दाऊबाई ने अंजाम दिया, जिसमें फरहाद खान और महमूद बेग बख्शी ने सहायता की। हालाँकि सलाहकार ने सेना को गुमराह किया था, लेकिन असमिया सरदार का बेटा दिलिर खान अंततः सफल हो गया। हालाँकि उसके हाथी को 25 फरवरी की आधी रात के दौरान दीवार पर चढ़ने में 25 तीर लगे थे।" (24) अंततः, 26 फरवरी को, सिमलुगढ़ में अहोमों द्वारा पेश किए गए प्रतिरोध पर काबू पाया जा सका और मीर जुमला स्वयं किले में प्रवेश कर गया और किलेबंदी की ताकत से आश्चर्यचकित रह गया।

समधरा में अगली किलेबंदी पर तैनात टुकड़ी ने, सिमलुगढ़ के भाग्य को जानकर, बारूद का भंडार उड़ा दिया और भाग गई। मीर जुमला ने समधरा में एक चौकी स्थापित की और कालियाबार क्षेत्र पर शासन करने के लिए फौजदार नियुक्त किया। जैसे ही उनकी सेना आगे बढ़ी, उनके पीछे आने वाले बेड़े पर सात-आठ सौ असमिया जहाजों ने हमला कर दिया। "कालियाबार पर आसानी से कब्ज़ा करने के बाद, मीर जुमला ने 2 मार्च को इसे छोड़ दिया। चूँकि ब्रह्मपुत्र का किनारा पहाड़ी था, इसलिए उसे छह मील दूर समतल मार्ग लेना पड़ा। मुगल बेड़े के अलगाव का फायदा उठाते हुए, 600-700 मजबूत असमिया आर्मडा ने 3 मार्च की शाम को बरगोहैन के नेतृत्व में मुग़ल एडमिरल इब्न हुसैन की अस्थायी अनुपस्थिति में कलियाबार के ऊपर कुकराकादा में लंगर डाले

खड़ी 100 मुगल नावों पर अचानक हमला बोल दिया। नदी की ऊपरी धारा में होने के कारण भी स्थिति असमिया के पक्ष में थी। यह मुगल 'नववारा' के लिए संकट था, जो असमियों द्वारा घेरा और कुचला जाने वाला था, मुगल और बेहतर तकनीकों के जानकार एवं बेहतर हथियारों से लैस यूरोपीय एडमिरलों के करीबी सहयोग के कारण वह समय पर सहायता मिलने तक अपनी पकड़ बनाए रखने में सक्षम रहा। मुग़ल जनरल द्वारा नियुक्त मुहम्मद मुमीन बेग एक्काताज़ खान के नेतृत्व में समय पर सहायता आ जाने से असमिया भयभीत हो गए। ग्लेनियस ने हमें बताया कि असमिया एडमिरल (तमुली दलाई) ने राजा के आदेश के अनुसार गौहाटी के ऊपर उनके नववारा पर हमला करके मुगलों के प्रावधानों की आपूर्ति में कटौती करने की उपेक्षा की थी। मुगलों ने लगभग 300 जहाजों को नष्ट कर दिया और लगभग 400 'बड़ी बंदूकें ले जाने वाले' और कम-से-कम 21,000 लोगों को पकड़ लिया और अन्य को मार डाला। यह पहली बड़ी नौसैनिक आपदा थी और इसने कुछ समय के लिए असमिया नौसेना को प्रभावी रूप से पंगु बना दिया था।"(25)

अपनी सेना की दयनीय कमजोरी और लड़ने की इच्छाशक्ति की कमी का पता चलने पर, जयध्वज सिंह ने शीर्ष अधिकारियों के बीच बड़े बदलाव किए, और बहगारिया अर्जुन गोहैन खानिकर बरुआ (महान योद्धा-राजनेता अतान बुरागोहैन का पूरा नाम) को उत्तर और दक्षिण दोनों तटों पर मौजूद सेनाओं का कमांडर नियुक्त किया। राजा ने उन्हें दिहिंग और ब्रह्मपुत्र के संगम पर लाखाऊ में अपने सैनिकों को केंद्रित करने और आगे बढ़ने वाली मुगल सेना का विरोध करने के निर्देश भेजे। लेकिन तब तक, जो गति प्राप्त हो चुकी थी, उसे देखते हुए मीर जुमला की शक्तिशाली सेना का कोई भी विरोध नहीं कर सकता था। उस समय दिहिंग उथला होने के कारण, बेड़े को वहीं लंगर डाले छोड़ दिया गया, जबकि मुगलों ने गजपुर और तिरोमनी के रास्ते पैदल मार्च किया, जहाँ उन्हें बहुत कम या कोई प्रतिरोध नहीं मिला।

"रक्षा का कार्य अब जनवरी 1662 में बुरगोहैन नियुक्त अतान को सौंपा गया, और बागचोवाल खामोन राजमंत्री एवं दो भाइयों- नाओबैचा फुकन और चेंगमुन फुकन ने उनकी सहायता की। बुरगोहैन ने अपने लोगों को सलाह दी कि 'अपने दुश्मन को मारते रहो, लेकिन खुद मत मारे जाओ।" उन्होंने आधुनिक युग की गुरिल्ला युद्ध नीति के अनुरूप

'दगा-जुद्दा' नामक अनोखी विधियाँ ईजाद कीं। बारिश और बाढ़ के आगमन की प्रतीक्षा में, अहोम लोग पहाड़ियों पर चले गए। उन्होंने कभी भी मुगलों का खुलकर सामना करने का साहस नहीं किया, इसलिए उन्होंने परेशान करने वाली रणनीति अपनाई (i) अचानक छापेमारी और रात में हमले, डकैती, अपहरण। चारे या जलाऊ लकड़ी की तलाश में घुसपैठियों को गोली मारना या उनकी हत्या करना, बंदियों को लोहे के विशेष उपकरण से यातना दी जाती, वे अपने शिविरों में लौट जाते, लेकिन अंततः मर जाते; (ii) पारगमन में खाद्य आपूर्ति में बाधा डालना या कटौती करना, मुगल कमिश्रिएट और शिविरों को पंगु बनाना, (iii) "झुलसी हुई पृथ्वी" नीति के सिद्धांतों के अनुसार, मुगलों द्वारा जब्ती को रोकने के लिए पाउडर और धान या नावों के भंडार को नष्ट करना; (iv) खुली झड़पों या मुठभेड़ों द्वारा कभी-कभी प्रतिशोध (लड़ाई नहीं)। अहोम युद्ध में मीर जुमला को हराने में विफल रहे, लेकिन नौ महीने तक उनके रक्षात्मक युद्ध ने विजेताओं के धैर्य को नष्ट करने में योगदान दिया।" (26)

मीर जुमला को खबर दी गई कि अहोम राजा ने शहर से अपना व्यक्तिगत सामान हटाने के लिए राजधानी गढ़गाँव के करीब एक हजार नावें इकट्ठी की थीं; इसका मतलब था कि राजा अपनी राजधानी छोड़ने पर आमादा था। मुगल कमांडर-इन-चीफ ने तुरंत निकासी को रोकने और अभी तक नहीं हटाई गई संपत्तियों को जब्त करने के लिए एक उड़न दस्ता भेजा। 17 मार्च, 1662 को राजधानी गढ़गाँव में प्रवेश करने पर मीर जुमला को यह जानकर खुशी हुई कि उड़न दस्ते को भेजने की उसकी चाल के कारण सब-कुछ हटाया नहीं जा सका। लगभग तीन लाख मूल्य के सोने और चाँदी के साथ-साथ हजारों मन चावल से भरे अन्न भंडार के साथ 82 हाथी अब भी महल में बचे हैं।

इस बीच स्वर्गदेव सुतमला उर्फ जयध्वज सिंह अपने परिवार के साथ नामरूप के चोराई-खोरोंग भाग गए थे। कुछ रईस और पाँच हजार आदमी ही उनके साथ थे। बरगोहैन टीरा की ओर भाग गए थे; अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने माजुली के मठों में शरण ली; अहोम सेनाएँ पूरी तरह से असंगठित हो गई थीं और राज्य का भविष्य ही अंधकारमय प्रतीत हो रहा था। तब तक लोगों ने उन्हें भगनिया राजा या अपमानजनक उपाधि से पुकारना शुरू कर दिया था, जिसका अनुवाद है "वह राजा जो अपने राज्य से भाग गया"। उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि निचले असम को मुगलों से वापस प्राप्त करने की अपनी महत्वाकांक्षा को साकार

करने की कोशिश में उन्होंने जितना चबा सकते थे, उससे अधिक काट लिया था। अब उनकी सहायता की एकमात्र आशा अतान बुरागोहैन पर टिकी थी। (27)

"पूरे अभियान के दौरान मुगलों ने छह सौ पचहत्तर तोपें जब्त कीं, जिनमें दो सौ पाउंड से अधिक वजन वाले गोले फेंकने वाली एक तोप, लगभग 9,000 मैथलॉक और अन्य बंदूकें, बड़ी मात्रा में बारूद, शोरा, लोहे की ढाल, सल्फर और सीसा शामिल थे और एक हजार से अधिक जहाज, जिनमें से कई में साठ से अस्सी नाविक शामिल होते थे। ऐसा कहा जाता है कि मीर जुमला ने गढ़गाँव में एक टकसाल खोली और दिल्ली सम्राट के नाम पर वहाँ धन जमा कराया..." (28)) उसने मथुरापुर, रामदांग, त्रिमोहिनी, गजपुर, सिलपानी, अभयपुर आदि जैसे विभिन्न स्थानों पर प्रशासनिक उप-मुख्यालय भी स्थापित किए। लाखाऊ से पश्चिम की ओर ब्रह्मपुत्र के साथ गौहाटी तक चौकियाँ भी स्थापित की गईं। यह सब इस बात का संकेत था कि मुगल नेता को भरोसा था कि वह असम पर अपनी पकड़ बनाए रखने में सक्षम होगा और बरसात का मौसम समाप्त होने के बाद भी आगे बढ़ेगा।

"मीर जुमला ने पाँच महीने के भीतर कामरूप और असम पर विजय प्राप्त कर ली थी। लेकिन वह न तो लोगों के दिलों को जीत सका, न ही उनकी निष्ठा का आनंद ले सका और न ही पूर्ण अधिकार का प्रयोग कर सका। व्यवस्थित, स्थिर सरकार की स्थापना का तो प्रश्न ही नहीं था। वह अधिक से अधिक इतना कर सका कि वहाँ सैन्य शासन स्थापित कर दिया। मुगलों के आगे बढ़ने पर सैन्य चौकियाँ स्थापित की गईं ताकि बंगाल के साथ संचार की रेखा को बनाए रखा जा सके, विजय पर पकड़ बनाए रखी जा सके, अहोम छापेमारी को रोका जा सके और किसानों को संतुष्ट किया जा सके। कुछ स्थानों पर एक तरह से उनके महत्व के अनुसार सुरक्षा की गई थी ... गढ़गाँव और मथुरापुर की रक्षा के लिए मीर ने रेगिस्तानियों की मदद से आस-पास के लगभग 100 गाँवों पर कब्जा कर लिया और चारों ओर चौकियाँ स्थापित कीं... मीर जुमला के पास युद्ध में लूट का सभी सामान एकत्र, सूचीबद्ध और मीर मुर्तजा एवं उनके लोगों द्वारा संरक्षित किया गया था, जैसे तोपें, ज़म्बुराक, बंदूकें, बारूद, हाथी आदि शाही संपत्ति के रूप में। कुछ असमिया गाइड की जानकारी के आधार पर अहोम राजकुमारों और रईसों की कब्रें खोदकर तीन महीनों में उसने 90,000 रुपये की संपत्ति एकत्र की और मुर्दों की

हड्डियाँ तक भी निकाल लीं । रईसों (मैडम्स), कुछ असमिया गाइडों द्वारा खुलासा किया गया, तीन महीने के लिए उन्होंने रुपये की संपत्ति हासिल की। 90,000 और मृतकों की हड्डियाँ तक निकाल लीं। जयध्वज ने विलखते हुए कहा कि मेरी कैसी दुर्गति हुई, मैं अपने पूर्वजों की अस्थियों की भी रक्षा नहीं कर सका!' ग्लेनियस ने कब्रों से प्राप्त धन की गवाही दी, जबकि मनुची ने ढाका में मीर की विशाल नौकाओं को लूट के माल से लदा हुआ देखा।" (29)

लेकिन असम में लंबे समय तक रहने और इसे मुगल साम्राज्य का विस्तार बनाने की उसकी इच्छा नहीं हुई! उस वर्ष मानसून जल्दी शुरू हो गया, और कई हफ्तों तक लगातार बारिश ने मुगलों को राजधानी के भीतर ही रोके रखा और उन्हें भोजन जैसी आवश्यक चीजें प्राप्त करने में भी बाधा उत्पन्न की। उसी समय, राजमंत्री नाओबैचा फुकन और चेंगमुन फुकन की सहायता से अतान बुरागोहैन ने असमिया सेनाओं को पूर्व उल्लिखित प्रकार के गुरिल्ला युद्ध का अभियान शुरू करने, खाद्य आपूर्ति में काटने और गढ़गाँव के भीतर अकाल की स्थिति पैदा करने के लिए प्रेरित किया। मई के अंत में मीर जुमला ने फरहाद खान को चुनिंदा सैनिकों के साथ लाखाऊ में जहाजों से आपूर्ति प्राप्त करने के लिए भेजा, लेकिन असमिया ने गुरिल्ला रणनीति के कारण उसे रोक दिया। असमियों ने गजपुर की चौकी पर सफल हमला किया और वहाँ के सभी सैनिक मारे गए। मीर जुमला को अपनी चौकियाँ बनाए रखना अधिक से अधिक कठिन होता गया और इन्हें गढ़गाँव और मथुरापुर में ले जाना पड़ा। केवल यही दो स्थान उसके हाथ में रह गए; देश के शेष भाग पर अहोमों का पुनः कब्ज़ा हो गया; जयध्वज सिंह स्वयं चराई-खोरोंग से लौट आए और अपनी राजधानी के करीब शिविर स्थापित किया। (30)

ऊपरी असम में मुगलों के कब्ज़े का पूरा मानसून काल पीड़ा और दुख का भयानक चरण था। "असमियों ने अब सभी सड़कों को पूरी तरह से बंद कर दिया और गढ़गाँव और मथुरापुर को छोड़कर लाखाऊ के पूर्व की पूरी भूमि पर कब्ज़ा कर लिया। मीर जुमला को चरणों में सभी थानों को हटाना पड़ा। इन दोनों स्थानों का अलगाव इतना करीब था कि बाहर से कोई मदद नहीं कर सका, कोई अनाज या जरूरी चीजें नहीं मिल सकीं।" मुगलों ने वापसी की सारी आशा खो दी। समाचारों का अवरोधन इतना पूर्ण था कि हिंदुस्तान में रिश्तेदारों ने उनकी कोई खबर न सुनकर, उसका अंतिम संस्कार कर दिया।" (31)

इसके बारे में लिखते हुए मुगल इतिहासकार शियाबुद्दीन तालीश ने कहा, "इस तरह का मामला दिल्ली के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था। यहाँ 12,000 घोड़े और असंख्य पैदल सैनिक छह महीने तक बंद रहे, बारिश के कारण ऑपरेशन जारी नहीं रह सके, फिर भी उन्हें घेरे बैठे दुश्मन ने शायद ही उन पर हमला किया।" न ही इस दौरान रसद पहुँची। अमीरों ने लालसा से अपनी आँखें दिल्ली की ओर कर लीं और सैनिक अपनी पत्नियों और बच्चों के लिए तरस रहे थे... सैनिकों को घोड़ों और ऊँटों और किसी भी उस चीज़ का मांस खाने के लिए मजबूर किया गया था जिसे वे किसी भी पा सकते थे।"(32)

बारिश, कीचड़, बाढ़, बुखार और पेचिश से अभिभूत, यह इस भय का वास्तविक कारण था कि मीर जुमला की भूखी सेनाएँ अपने जनरलों के खिलाफ विद्रोह कर देंगी; कमांडर-इन-चीफ ने आगे की विजय की अपनी योजना छोड़ दी और अपने सैनिकों के साथ अहोम क्षेत्र छोड़ने का फैसला किया। मुगलों की दुर्दशा के बावजूद असमिया एक संधि के लिए प्रस्ताव बना रहे थे, अब उन्होंने उन्हें सूचित करने के लिए दूत भेजे कि सम्मानजनक शर्तों के साथ वह राज्य अहोम राजा को वापस सौंपने के लिए तैयार हैं। इस बीच, मौसम में सुधार के साथ, संचार बहाल किया जा सका और मुग़ल बेड़े के प्रभारी इब्न हुसैन ने भी असमियों पर जवाबी हमला किया। साथ ही, जहाजों से बड़ी मात्रा में ताजा आपूर्ति गढ़गाँव भेजी जा सकी और वहाँ के सैनिकों ने जल्द ही अपना मनोबल वापस पा लिया। भूमि सूख जाने के कारण मुगल अपनी घुड़सवार सेना चला सकते थे; परिस्थितियों में बदलाव ने जयध्वज सिंह को एक बार फिर नामरूप भागने के लिए मजबूर कर दिया, जबकि इसने अतान बुरागोहैन को मुगलों के साथ संधि की संभावनाएँ तलाशने के लिए चिंतित कर दिया ताकि वे गढ़गाँव छोड़ दें और निचले असम में वापस चले जाएँ।

"लेकिन, दिसंबर, 1662 तक स्थिति ऐसी हो गई थी कि दोनों पक्ष शांति चाहते थे। असमिया, राजा और लोग, समान रूप से, अपनी मातृभूमि के दिल पर कब्जे के अपमान की गहरी पीड़ा महसूस कर रहे थे, यहाँ तक कि स्वर्गीय राजा की राजधानी, जिसे उनकी सामयिक और निरर्थक उत्पीड़नकारी गतिविधियों से मुश्किल से ही शांत किया जा सका, जो मुगलों की ताकत को कमजोर करने में विफल रही। अहोम कूटनीतिक उपयोग में विदेशी आक्रमण से अपनी भूमि की स्वतंत्रता प्राप्त

करने के लिए कोई भी कीमत बहुत अधिक नहीं थी। दबाव में की गई संधि, भले ही सबसे अपमानजनक हो, किसी विदेशी की भौतिक उपस्थिति से बेहतर थी, क्योंकि स्थिति बदलने पर इसे आसानी से ख़त्म किया जा सकता था। इसलिए असमियों ने धन और सोने की पेशकश के साथ शांति प्रस्ताव शुरू कर दिए।" (33)

दूसरी तरफ, मीर जुमला गंभीर रूप से बीमार हो गए और केवल पालकी में यात्रा कर सकते थे। उनके जनरलों ने उन्हें शापित भूमि पर एक और बरसात का मौसम बिताने के लिए सैनिकों की अनिच्छा के बारे में सूचित किया। "जहाँ तक मुगलों का सवाल है, मीर जुमला, जिसने इतनी सख्ती से नरमी बरतने से इनकार कर दिया था, धीरे-धीरे शांति की ओर झुक गया, आंशिक रूप से असम की स्थिति की गंभीर वास्तविकताओं के कारण और आंशिक रूप से दिलिर खान की हिमायत के कारण। उनकी स्थिति सबसे अविश्वसनीय थी। उसने देश पर विजय प्राप्त की, लेकिन न तो स्थिर सरकार स्थापित कर सका और न ही लोगों पर जीत हासिल कर सका। उसका एकमात्र मुख्य आधार सेना थी। लेकिन बंगाल में अकाल फैलने की खबर और इसके परिणामस्वरूप लाखाऊ में मुगल नववारा के राशन में कमी ने सेना को चिंतित कर दिया| वह विद्रोह के कगार पर थी। वह बीमारी से पीड़ित, अपने छिन्न-भिन्न संविधान के बारे में चिंतित, सेना में असंतोष से चिंतित, शांति प्रस्ताव को अस्वीकार करने के आशंकित दुष्प्रभावों की गणना कर रहा था और सभी मुस्लिम युद्ध बंदियों को रिहा करने का इच्छुक था, इसलिए मीर जुमला अनिच्छा से शांति कायम करने के लिए सहमत हो गया। शांति और त्वरित वापसी का त्वरित निष्कर्ष, उसे 'सभी के लिए उचित और सर्वोत्तम' महसूस हुआ। फिर भी उसने पीछे हटने पर साहसी चेहरा दिखाया, यह दिखाते हुए कि वह अब भी टिपम की ओर आगे बढ़ सकता है, जहाँ की प्रारंभिक कार्रवाई शांति कायम करेगी। प्राण नारायण द्वारा कूचबिहार को वापस लेने की खबर से मामला बिगड़ गया।"(34)

इसलिए, उसने अपने दूत के माध्यम से उन शर्तों को बताया जिनके तहत वह ऊपरी असम को अहोम राजा को सौंपने के लिए सहमत होगा। अतान बुरागोहैन ने निष्कर्ष निकाला कि शत्रुता को किसी भी तरह से लम्बा खींचना उनकी मातृभूमि के लिए विनाशकारी होगा, इसलिए उन्होंने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और संधि पर पहुँचने के लिए [illegible]। इस प्रकार 23 जनवरी, 1663

को असमियों और मुगलों के बीच घिलाझारीघाट की संधि पर हस्ताक्षर किये गये।

मीर जुमला द्वारा निर्धारित सभी शर्तें मान ली गईं। जयध्वज सिंह को तुरंत बीस हजार तोला सोना, एक लाख बीस हजार तोला चाँदी और चालीस हाथियों का भुगतान करना पड़ा। एक वर्ष के भीतर अतिरिक्त तीन सौ तोला चाँदी और नब्बे हाथी दिए जाने थे और सालाना बीस हाथियों की आपूर्ति की जानी थी।

बदले में मीर जुमला और उसकी सेनाएँ गौहाटी लौट जाएँगी, हालाँकि अहोमों को उत्तर में भराली नदी के पश्चिम और दक्षिण में कलांग नदी की भूमि दिल्ली सम्राट को सौंपनी होगी। बीस हाथियों की वार्षिक श्रद्धांजलि की शर्त यह समझाने के लिए डाली गई थी कि अहोम राजा दिल्ली के सम्राट का जागीरदार था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि संधि की शर्तों को पूरी तरह से लागू किया जाएगा, मुगलों ने प्रमुख सरदारों के छह पुत्रों को बंधक के रूप में अपने साथ ले लिया, जिनमें बुरागोहैन के भतीजे रामराय, बारगोहैन के पुत्र ढाला गोहैन, बारपात्रागोहैन के पुत्र लांगी गोहैन और राजमंत्री फुकन के पुत्र मौपिया शामिल थे।

अहोम राजा को अपनी इकलौती बेटी को दिल्ली के शाही हरम में भेजना पड़ा और मुगलों के असमिया सहयोगी बदुली फुकन के परिवार के सभी सदस्यों और सभी मुगल कैदियों को सौंपना पड़ा। (35) जिस राजकुमारी को शाही हरम में पेश किया गया था, वह छह वर्षीय रमानी गभरू थी, जो जयध्वज सिंह की छोटी पत्नी पाखरी गभरू की बेटी थी, जो मोमाई तमुली बारबरुआ की बेटी थी। बाद में रमानी की शादी 2 मई, 1668 को 1,80,000 रुपये के दहेज के साथ सम्राट औरंगजेब के तीसरे बेटे सुल्तान मोहम्मद आज़म से कर दी गई, जब उनका नाम बदलकर रहमत बानू बेगम कर दिया गया। (36) अहोम राजा को टीपम राजा की बेटी मोहिनी अइदु को भी दिल्ली भेजना पड़ा। घिलाझरीघाट संधि की शर्तें फ़ारसी और असमिया दोनों स्रोतों में बताई गई हैं। हालाँकि, विभिन्न स्रोतों के बीच विसंगति और अतिशयोक्ति के कारण बहुत भ्रम है। उदाहरण के लिए, राजकुमारी का नाम नांगचेंग या नामसेंग गभारू भी दिया गया है।

"मुगल जनरल अपने साथ 12,000 असमिया अनुयायियों

और बंदियों को ले गया। मीर जुमला के साथ अपनी मर्जी से जाने वालों में बडुली फुकन, मौपिया, हरि डेका के बेटे, उद्धव दुआरिया, दंगधारा और रघु काठ के बेटे मनोहर काकती शामिल थे। निम्नलिखित असमिया अधिकारियों मुगल बंदी बना कर ले गए-लुथुरी चेतिया राजखोवा, दयाँगिया बरगोहैन राजखोवा, लालुक गोहैन और दिघाला राजखोवा। जयध्वज सिंह ने मुगल जनरल की कार्रवाई का विरोध किया जो स्पष्ट रूप से घिलाझारीघाट की संधि की शर्तों का उल्लंघन था।" (37)

25 जनवरी, 1663 को मीर जुमला की युद्ध से थकी हुई सेना गौहाटी की ओर चल पड़ी, उनके पास वापस ले जाने के लिए बहुत कम भोजन था। शियाबुद्दीन तालीश ने दर्ज किया है कि सैनिकों को रास्ते के अधिकांश भाग में घास और पानी पर गुजारा करना पड़ा। आपूर्ति में कटौती की अहोम रणनीति में झुलसी-पृथ्वी तकनीक भी शामिल थी जिसके तहत मार्ग के गाँवों को सरसरी तौर पर हटा दिया गया और सभी खेती नष्ट कर दी गई। किसी तरह वे गौहाटी पहुँचने में सफल रहे जहाँ अंततः उन्हें सहायता और सुरक्षा मिली।

"असम और कामरूप के रास्ते इस लंबी और कठिन यात्रा के दौरान, मुगलों को कभी भी असमिया से किसी भी विश्वासघाती हमले का सामना नहीं करना पड़ा... असमिया को इसका श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्होंने पीछे हट रही सेना पर कभी हमला नहीं किया अथवा उन्हें परेशान नहीं किया। मीर जुमला के गुप्तचर तालिश ने कभी भी कजली के जंगल में एक बार को छोड़कर, जनरल की वापसी यात्रा पर यूरोपीय लेखकों (जैसे बर्नियर, मनुची और ग्लेनियस) द्वारा उल्लिखित गंभीर खतरों की ओर संकेत नहीं किया, लेकिन वह एक बार भी केवल भोजन की कमी के बारे में था। (38)

हालाँकि, मीर जुमला स्वयं गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। वह हाथी की पीठ पर सवार नहीं हो सकता था और उसे गढ़गाँव से लाखाऊ तक पालकी पर ले जाना पड़ा था और वहाँ से जहाज द्वारा कालियाबार तक और फिर पालकी में ले जाना पड़ा। गढ़गाँव में उसे सीने में दर्द और दमा हो गया, लेकिन उनके निजी डॉक्टर यह पता लगाने में असमर्थ थे कि वास्तव में बीमारी का कारण क्या था और उन्होंने विभिन्न दवाएँ दीं, लेकिन उनसे कोई राहत नहीं मिली। 500 पुरुषों और 40 युद्धपोतों के साथ राशिद खान को गौहाटी और कामरूप के फौजदार के रूप में स्थापित किया। मुहम्मद खलील बख्शी और मुहम्मद बेग को

रशीद के अधीन थानेदार के रूप में स्थापित किया और उनके साथ असमिया कैदियों को छोड़कर, मीर जुमला ढाका के लिए आगे बढ़ा, लेकिन उसकी हालत खराब हो गई और जहाज के वहाँ पहुँचने के ठीक पहले 30 मार्च, 1663 को उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार, औरंगजेब की गुप्त इच्छा पूरी हो गई और इस शक्तिशाली रईस, जिसके पास एक बार प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा था, जिसे उसने सम्राट शाहजहाँ को उपहार में दिया था, के जीवन का अपमानजनक अंत हो गया! (39)

मीर जुमला के लिए गढ़गाँव तक का रास्ता बहुत आसान रहा था, जबकि अतीत के अन्य आक्रमणकारियों को असमियों के अत्यधिक गंभीर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा था, इसके कई कारण थे, राजा के मजबूत नेतृत्व की कमी इसका कारण बिलकुल नहीं था। जयध्वज सिंह ने न केवल अविवेकपूर्ण निर्णय लिए और अपने द्वारा किए गए गठबंधनों का पूरा उपयोग करने में विफल रहे, बल्कि उनकी कई नियुक्तियाँ योग्यता के आधार पर नहीं थीं, बल्कि प्रकृति में भाई-भतीजावादी थीं, जो योग्य लोगों के बजाय पसंदीदा को दी गईं। इससे उसके कमांडरों एक वर्ग के बीच बहुत असंतोष उत्पन्न हुआ था। यह ध्यान दिया जा सकता है कि जोगीघोपा से लेकर ऊपर तक असमियों ने मजबूत किलेबंदी कर ली थी और उन पर पहरा बिठा दिया था; फिर भी आक्रमणकारियों के सिमलुगढ़ पहुँचने तक बमुश्किल एक भी गोली चलाई गई !

उदाहरण के लिए, जयध्वज सिंह ने एक गैर-अहोम, मंथिर भराली बरुआ को निचले असम के कमांडर-इन-चीफ के रूप में नियुक्त किया, जिससे केवल मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड वाले अहोम रईसों को इस पद पर नियुक्त करने की लंबी परंपरा टूट गई, और इससे रईसों में असंतोष फैल गया। इसके लिए शायद उनमें से कई लोगों की मीर जुमला के साथ मिली-भगत और अपने पदों को त्यागने और अपने निर्धारित कर्तव्यों को पूरा करने में लापरवाही बरतने के लंबे मुकदमे को समझाने की लंबी व्याख्या की जरूरत होगी। जयध्वज सिंह जैसे राजा और उनके स्वार्थी सरदारों और कमांडरों (बरगोहैन के रूप में अतान की देरी से नियुक्ति अपवाद है) के समूह वाला असम मुश्किल से उस समय के महानतम जनरलों में से एक माने जाने वाले मीर जुमला जैसे असाधारण सैन्य कमांडर का विरोध करने की स्थिति में था। यह उस लोकाचार के बिलकुल विपरीत था जो कुछ ही वर्षों बाद, चक्रध्वज सिंह, लाचित बरफुकन और अतान बुरागोहैन के दिनों में प्रचलित रहा, जब शीर्ष पर

मजबूत नेतृत्व और राष्ट्रवाद की जबरदस्त भावना ने असमिया लोगों को यह दिखाने में सक्षम बनाया था कि वे क्या करने में सक्षम थे!

फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि मीर जुमला के असम के दुर्भाग्यपूर्ण अभियान ने मुगलों के दिमाग पर गहरी छाप छोड़ी जैसा कि 'आलमगीरनामा' के लेखक मुहम्मद काज़िम नामक समकालीन इतिहासकार के विवरण में देखा जा सकता है- "असम के राजाओं ने कभी समर्पण और आज्ञाकारिता का सिर नहीं झुकाया है, न ही उन्होंने सबसे शक्तिशाली सम्राट को श्रद्धांजलि या राजस्व का भुगतान किया है, लेकिन उन्होंने महत्वाकांक्षा पर अंकुश लगाया है और हिंदुस्तान के सबसे विजयी राजकुमारों की विजय को रोका है। उनके खिलाफ युद्ध के समाधान ने ऐसे नायकों की घुसपैठ को चकित कर दिया है जिन्हें दुनिया का विजेता कहा गया है।" (40)

***

मुगल इतिहासकार शियाबुद्दीन तालीश ने असम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसका दृष्टिकोण असमिया के प्रति उनकी प्रकट नापसंदगी के साथ-साथ कभी-कभार उसके द्वारा ग्रहण किए जाने वाले ताने-बाने के लहजे से भी रंगा हुआ था, जो किसी इतिहासकार के लिए आवश्यक निष्पक्षता की आवश्यकताओं के विपरीत था। फिर भी, उसका रेखाचित्र, अपनी कमियों के बावजूद, 17वीं शताब्दी के दौरान इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में दिलचस्प जानकारी प्रदान करता है। उसने लिखा, "असम जंगली और भयानक देश है," इसमें बहुत अधिक खतरा है। यह बंगाल प्रांत के उत्तर-पूर्व में स्थित है। ब्रह्मपुत्र नदी इसमें पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। पश्चिम से पूर्व, गौहाटी से सादिया तक असम की लंबाई लगभग 200 कोस है : इसकी चौड़ाई, उत्तर से दक्षिण, गारो, मिरी की पहाड़ियों से लेकर नागा जनजातियों के लोगों के लिए मिश्मी, डाफला और लांदाह की यात्रा एक अनुमान के अनुसार सात या आठ दिन की है...इसके दक्षिणी पर्वत लंबाई में खसिया, कछार और गोनाशेर के पहाड़ी क्षेत्र को छूते हैं और चौड़ाई में नागा जनजातियों द्वारा बसाई गई पहाड़ियों को छूते हैं। ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट की भूमि को 'उत्तरकोल' तथा दक्षिणी तट की भूमि को 'दखिनकोल' कहा जाता है। उत्तरकोल गौहाटी से लेकर मिरी और मिश्मी जनजातियों के घर तक और दखिनकोल नाक-कटी-रानी के साम्राज्य से लेकर सदिया गाँव तक फैला हुआ है... कालियाबार से

गढ़गाँव तक फलों के पेड़ों से भरे घर और बगीचे अटूट रेखा में फैले हुए हैं; और सड़क के दोनों ओर बाँस के छायादार झुरमुट आसमान की ओर सिर उठाए हुए हैं। यहाँ कई प्रकार के सुगंधित जंगली और बगीचे के फूल खिलते हैं और बाँस के पेड़ों के पीछे से लेकर पहाड़ियों की तलहटी तक खेत और बगीचे हैं। लाखुगढ़ से गढ़गाँव तक भी एक ही शैली में सड़कें, घर और खेत हैं; और यातायात के लिए गढ़गाँव तक ऊँची और चौड़ी तटबंध वाली सड़क का निर्माण किया गया है।

"इस देश में वे खेतों और बगीचों की सतह को इतना समतल बना देते हैं कि आँखें चरम क्षितिज तक की थोड़ी-सी भी ऊँचाई नहीं देख पातीं। उत्तरकोल में आबादी और खेती की बहुतायत है, लेकिन चूँकि वहाँ अधिक दुर्गम गढ़ और रक्षात्मक केंद्रीय स्थान दखिनकोल में है इसलिए असम के राजाओं ने बाद में अपना निवास स्थान वहाँ निश्चित कर लिया है।

"ब्रह्मपुत्र के तट पर स्थित भागों की जलवायु स्थानीय लोगों और अजनबियों के लिए समान रूप से उपयुक्त है। लेकिन नदी से कुछ दूरी पर, हालाँकि जलवायु स्थानीय लोगों के अनुकूल है, लेकिन यह विदेशियों के लिए ज़हर है। यहाँ वर्ष में आठ महीने बारिश होती है और यहाँ तक कि सर्दी के चार महीने भी बारिश से मुक्त नहीं हैं। ठंड के मौसम में सर्दी और नमी के रोग मूल निवासियों की तुलना में विदेशियों को अधिक तीव्रता से प्रभावित करते हैं, जबकि गर्मियों में पित्त का अत्यधिक स्राव मूल निवासियों की तुलना में विदेशियों को अधिक तीव्रता से जकड़ता है। इस देश के लोग बंगाल में प्रचलित कुछ घातक और घृणित बीमारियों जैसे कुष्ठ रोग, श्वेत कुष्ठ, एलिफेंटियासिस, त्वचीय विस्फोट, गण्डमाला और जलशीर्ष से मुक्त हैं। वे कई अन्य दीर्घकालिक रोगों से भी प्रतिरक्षित हैं। इसकी पहाड़ियों की हवा और पानी अपने मूल निवासियों और अजनबियों के लिए समान रूप से विनाशकारी सिमूम और घातक जहर की तरह है। पहाड़ियों से घिरे होने के कारण इसके मैदानी क्षेत्रों में उदासी और भय उत्पन्न होता है।

"इसकी पहाड़ियों और मैदानों में पेड़ बेहद ऊँचे, घने और मजबूत होते हैं। इसकी जल धाराएँ गहरी और चौड़ी होती हैं और दोनों में जहाँ पूल होते हैं और जहाँ नहीं होते हैं, वे संख्या की सीमा से परे होते हैं। बंगाल और हिंदुस्तान के कई प्रकार के सुगंधित फल और जड़ी-बूटियाँ असम में उगती हैं। हम यहाँ जंगली और खेती, दोनों तरह के फूलों और

फलों की कुछ खास किस्मों को देख सकते हैं, जो पूरे भारत में कहीं और नहीं मिलती हैं। नारियल और नीम के पेड़ दुर्लभ हैं, लेकिन काली मिर्च, जटामांसी और नींबू की कई प्रजातियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। आम कीड़े से भरे होते हैं, लेकिन प्रचुर मात्रा में मीठे और फाइबर से मुक्त होते हैं, लेकिन कम रस देते हैं। इसके अनानास बहुत बड़े होते हैं, स्वाद में स्वादिष्ट होते हैं और रस से भरपूर होते हैं। गन्ना काले, लाल और सफेद रंग की किस्मों का होता है और बहुत मीठा होता है, लेकिन इतना कठोर होता है कि किसी के दाँत तोड़ दे| अदरक रसदार है| देश की मुख्य फसल चावल है, लेकिन अनाज की पतली और लंबी किस्में दुर्लभ हैं। गेहूँ, जौ और मसूर नहीं उगाए जाते हैं। मिट्टी उपजाऊ है, जो कुछ भी बोया जाता है या लगाया जाता है, वह अच्छी तरह से बढ़ता है। नमक बहुत महंगा है और इसे प्राप्त करना कठिन है। यह कुछ पहाड़ियों की घाटियों में पाया जाता है, लेकिन बहुत कड़वा और तीखा होता है। इस देश के कुछ लोग केले को टुकड़े-टुकड़े करके धूप में सुखाकर जला देते हैं। फिर वे राख को बारीक सनी के टुकड़े पर रखते हैं जिसे वे जमीन में लगी चार छड़ों से बाँधते हैं, नीचे एक बरतन रखते हैं और धीरे-धीरे कपड़े पर पानी छिड़कते हैं; और वे नमक के विकल्प के रूप में टपकने वाले पदार्थ का उपयोग करते हैं जो अत्यधिक खारा और कड़वा होता है।

"मुर्गे, जलपक्षी, हंस, बकरियाँ, बधिया बकरियाँ और शिकार मुर्गे बड़े, प्रचुर मात्रा में और स्वादिष्ट होते हैं। देश के अधिकांश मुर्गों को उड़ान भरने की शर्मिंदगी से इतना ऊपर पाया गया है कि यदि किसी कमजोर का सामना किसी ताकतवर से होता है तो वह तब तक हठपूर्वक लड़ता है जब तक कि उसका सिर टूट न जाए और उसका मस्तिष्क बिखर न जाए और वह मर न जाए, लेकिन वह कभी भी अपने प्रतिद्वंद्वी से अपना मुँह नहीं मोड़ता और न ही अपने दुश्मन को अपनी पीठ दिखाता है। बड़े, उत्साही और सुगठित हाथी पहाड़ों और जंगलों में प्रचुर मात्रा में हैं। हिरण, एल्क, नीलगाय, लड़ाकू मेढ़े और तीतर प्रचुर मात्रा में हैं।

"सोने को ब्रह्मपुत्र की रेत से धोया जाता है। दस से बारह हजार असमी इस रोजगार में लगे हुए हैं और वे राजा की सरकार को प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति एक तोला सोना देते हैं। लेकिन यह सोना शुद्धता के निम्न स्तर का है| इसका एक तोला मात्र आठ या नौ रुपये में मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्मपुत्र के तट पर सभी स्थानों पर रेत से सोना

प्राप्त किया जा सकता है; लेकिन केवल असमिया लोग ही हैं जो इसे इकट्ठा करना जानते हैं। राज्य की मुद्रा में कौड़ियाँ, रुपये और राजा की मुहर लगे सोने के सिक्के शामिल हैं। तांबे के सिक्के वर्तमान में नहीं हैं। कस्तूरी मृग और हाथी पहाड़ियों में पाए जाते हैं जहाँ मिरी और मिश्मी जनजातियों के लोग निवास करते हैं, जो गढ़गाँव से 11 दिन की यात्रा की दूरी पर उत्तरकोल की तरफ असम के पूर्व में स्थित हैं। चाँदी, तांबा और टिन भी इन्हीं जनजातियों की पहाड़ियों में प्राप्त होते हैं... नामरूप, सदिया और लाखुगढ़ की पहाड़ियों में उगने वाली एलोवेरा की लकड़ी भारी, रंगीन और सुगंधित होती है।

"यदि इस देश को शाही प्रभुत्व की तरह प्रशासित किया जाता, तो बहुत संभव है कि रैयतों द्वारा दिए गए राजस्व, जंगलों में पकड़े गए हाथियों की कीमत और अन्य स्रोतों से चालीस से पैंतालीस लाख रुपये एकत्र किए जाते। यहाँ कृषकों से कोई भी भूमि कर लेने की प्रथा नहीं है, लेकिन प्रत्येक घर में तीन में से एक व्यक्ति को राजा की सेवा करनी होती है, और यदि उनके आदेश को पूरा करने में कोई देरी होती है, तो मौत के अलावा कोई अन्य सजा नहीं दी जाती है। इसलिए लोगों द्वारा अपने राजा की आज्ञा का पूर्णतः पालन किया जाता है।

"पिछले सभी युगों में कोई भी विदेशी राजा इस देश की सीमा पर विजय का हाथ नहीं बढ़ा सका और कोई भी विदेशी इस पर आक्रमण नहीं कर सका। यहाँ के संकीर्ण द्वार हैं जिनके माध्यम से बाहरी लोग इस देश में प्रवेश कर सकते हैं या निकल सकते हैं और वे पैर पंगु हैं जिनके बल पर वहाँ के मूल निवासी दूसरे देशों में जा सकते हैं। उनके राजा न तो विदेशियों को अपनी भूमि में प्रवेश करने देते थे और न ही अपनी किसी प्रजा को वहाँ से बाहर जाने की अनुमति देते थे। पूर्व में राजा के आदेश से वर्ष में एक बार एक दल गौहाटी के निकट अपनी सीमा पर व्यापार के लिए जाता था, वे नमक, शोरा, सल्फर और भारत के कुछ अन्य उत्पादों (जिन्हें गोहाटी के लोग ले जाते थे) के बदले सोना, कस्तूरी, एलोवेरा यानी मुसब्बर की लकड़ी, काली मिर्च, जटामांसी और रेशम के कपड़े देते थे । संक्षेप में इस देश में प्रवेश करने वाली प्रत्येक सेना जीवन के क्षेत्र से ही निकल जाती थी, इस भूमि पर पैर रखने वाला प्रत्येक कारवां मृत्यु के पड़ाव स्थल पर अपने निवास का सामान जमा कर ही आता था। पूर्वकाल में जब भी कोई सेना आक्रमण और विजय के लिए इस देश की ओर रुख करती थी, सीमा पर पहुँचते ही रात को उस पर

आक्रमण कर देते थे। यदि रात में किए गए पर उन्हें सफलता नहीं मिलती थी तो वे आक्रमण के मार्ग से किसानों को पहाड़ियों पर भगा देते थे, और उस क्षेत्र में घर में रहने या आग जलाने के लिए एक भी आदमी नहीं छोड़ते थे। सावधानी और चौकसी की उपेक्षा करनें वाले आक्रमणकारी खतरों से भरी अबाधित सड़कों, प्रचंड मूसलाधार धाराओं और जानलेवा जंगलों से ढकी भयावह घाटियों से गुजरते हुए देश के केंद्र तक पहुँच जाते और दूरी के कारण रास्ते में ही सर्दी समाप्त हो गई और वर्षा ऋतु आरम्भ हो गई। खतरनाक बाढ़ की तरह पहाड़ियों से उतरते हुए, हर तरफ सेना पर टूट पड़ते...अगर बारिश की दो बूँदें इस नम भूमि पर गिरती हैं, तो चलना-फिरना असंभव हो जाता है। अतः घिर जाने पर अविवेकी सेना के पास दुश्मन का मुकाबला करने और दुश्मन को पीछे हटाने की कोई शक्ति नहीं बचती है और भोजन की आपूर्ति प्राप्त करने में विफलता के कारण वह कमजोर हो जाती है और उसे ख़त्म कर दिया जाता है या बंदी बना लिया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस देश के कुछ निवासी जिनका नाम मुहमद्दन है, वे उस सेना के पकड़े गए सैनिकों के वंशज हैं। चूँकि इस देश में प्रवेश करने वाला कोई भी व्यक्ति कभी वापस नहीं जाता था और यहाँ के मूल निवासियों के तौर-तरीके कभी भी बाहरी लोगों को नहीं बताए जाते थे, इसलिए हिंदुस्तान के लोग असम के निवासियों को जादूगर और टोना-टोटका करने वाले कहते थे और उन्हें मानव प्रजाति से बाहर मानते थे। वे कहते हैं कि जो कोई इस देश में प्रवेश करता है, वह जादू से पराजित हो जाता है और कभी इससे बाहर नहीं आता।

"इस देश के राजा अपने अनुयायियों और परिचारकों की बड़ी संख्या और अपनी संपत्ति, खजाने और सशस्त्र बल की प्रचुरता के कारण हमेशा आत्मविश्वासी और गौरवान्वित रहे हैं; और उन्होंने हमेशा लड़ाकू पुरुषों और हाथी जैसे दिखने वाले क्रूर पर्वतों के विशाल समूह बना रखे हैं। वर्तमान राजा जयध्वज का उपनाम 'स्वर्गी राजा' है। इस मूर्ख की झूठी धारणा यह है कि उसके पूर्वजों में से एक स्वर्ग पर शासन करता था, वह सोने की सीढ़ी के माध्यम से वहाँ से उतरा और इस देश का प्रशासन करने का बीड़ा उठाया, और चूँकि उसे यह भूमि सुखद लगी, इसलिए वह स्वर्ग वापस नहीं गया। संक्षेप में, यह पागल आदमी अपने पूर्वजों की तुलना में अधिक दंभ और अहंकार में डूबा हुआ है और खून बहाने और जीवन को नष्ट करने का अधिक आदी है। एक छोटी सी गलती के लिए

वह पूरे परिवार को ख़त्म कर देगा। जरा-से संदेह पर वह पूरी पीढ़ी को मार डालेगा। चूँकि उसकी पत्नियों ने केवल बेटियों को जन्म दिया है और राज्य में उसका उत्तराधिकारी बदनामी के अलावा कोई नहीं होगा, इसलिए उसने अपने दादा-दादी के पोते-पोतियों में से कोई भी पुत्र जीवित नहीं छोड़ा है। यद्यपि वह हिंदू धर्म से जुड़े हुए हैं, फिर भी वह स्वयं को सृष्टिकर्ता के महान अवतारों में से एक मानते हैं, वह किसी भी मूर्ति की पूजा में अपना सिर नहीं झुकाते हैं।

"और इस देश के सभी लोग, अपनी गरदनों को किसी भी धर्म के बंधन में नहीं डालते, किसी भी व्यक्ति के हाथ से जो कुछ भी प्राप्त करते हैं, उसे खाते हैं, चाहे उसकी जाति कुछ भी हो, और हर प्रकार का श्रम करते हैं जो उनकी दोषपूर्ण दृष्टि के लिए उचित प्रतीत होता है। वे मुसलमानों और गैर-मुसलमानों द्वारा पकाए गए भोजन को खाने से परहेज नहीं करते और मानव मांस को छोड़कर हर तरह के मांस का सेवन करते हैं, चाहे वह मृत या वध किए गए जानवर का ही हो। घी खाने का उनका रिवाज नहीं है, इसलिए घी जैसे स्वाद की कोई भी चीज़ वे नहीं खाएँगे । उनकी भाषा पूर्वी भारत के सभी लोगों से बिलकुल अलग है। इस देश के लोगों में ताकत और वीरता स्पष्ट है; वे कठिन कार्य करने में सक्षम हैं; वे सभी युद्धप्रिय और रक्तपिपासु हैं, हत्या करने और मारे जाने से नहीं डरते, क्रूरता, विश्वासघात और अशिष्टता में बेजोड़, धोखे, झूठ और विश्वास के उल्लंघन की दुनिया में अद्वितीय हैं। उनकी महिलाओं के व्यक्तित्व सुंदरता और नैन-नक्श की नाजुकता, बालों का कालापन और लंबाई, शरीर की कोमलता, हाथों और पैरों के रंग और सुन्दरता से चिह्नित होते हैं। दूर से उनका सामान्य स्वरूप पूर्णतः सुंदर दिखता है, लेकिन अंगों के अनुपात के अभाव के कारण विकृत हो जाता है। हालाँकि, जब उन्हें करीब से देखा जाता है, तो वे इससे भी बहुत अधिक सुंदर दिखती हैं। राजाओं और किसानों की पत्नियाँ कभी भी किसी के सामने अपना चेहरा नहीं छिपाती और वे बाजारों में नंगे सिर घूमती हैं।

"कुछ पुरुषों की केवल दो पत्नियाँ होती हैं, अधिकांश की चार या पाँच होती हैं, और वे परस्पर अपनी पत्नियों का आदान-प्रदान करते हैं, या उन्हें खरीदते या बेचते हैं। इन लोगों के बीच आराधना घुटने टेकने का रूप लेती है। जो किसान राजा के पास जाते हैं, या जो कुलीन लोग उनके दर्शन करते हैं, वे दोनों घुटने मोड़कर घुटनों के बल बैठ जाते हैं,

दोनों आँखें ज़मीन पर टिकाते हैं। वे अपने बाल, दाढ़ी और मूँछें मुंडवाते हैं। यदि कोई भी जातक इस प्रथा के विपरीत कार्य करता है तो विशेष रूप से, वे कहते हैं कि उसने बंगालियों के शिष्टाचार को अपना लिया है और वे उसका सिर काट देते हैं।

"इस देश में गधे, ऊँट और घोड़े दुर्लभ हैं और इन्हें प्राप्त करना कठिन है। चूँकि प्रजातियों की आत्मीयता ही संगति का कारण है। ये डरपोक गधे, अर्थात, असमिया, गधों को देखने और पालने की बहुत इच्छा व्यक्त करते हैं, और इसी कारण से अपनी मूर्खतापूर्ण प्रकृति के कारण वे इन्हें उच्च कीमतों पर खरीदते हैं; और वे सृजन के चमत्कार ऊँट को देखने के लिए सीमा से परे उत्सुक हैं। वे घोड़ों से बहुत डरते हैं, और यदि वे किसी घोड़े को पकड़ते हैं, तो वे उसे काट देते हैं। यदि एक भी सैनिक पूरी तरह से हथियारबंद सौ असमियों पर हमला करता है तो सभी अपने हथियार फेंक कर भाग जाते हैं, और यदि वे भाग नहीं पाते, तो वे कैदियों के रूप में जंजीरों से बँधे होने के लिए अपने हाथ ऊपर कर देते हैं। लेकिन अगर उनमें से एक का सामना दस मुसलमान पैदल सैनिकों से होता है, तो वह निडर होकर उन्हें मारने की कोशिश करता है और उन्हें हराने में सफल हो जाता है। असमिया लोग हाथी की बिक्री को सबसे अपमानजनक कार्य मानते हैं और इसे कभी नहीं करते हैं।

"राजा और फुकन सिंहासन पर सवारी करते हैं और प्रमुख और अमीर लोग डुलिस में सवारी करते हैं, जो हास्यास्पद तरीके से डंडों और तख्तों से बनाए जाते हैं। सिंहासन और डुलिस के खंभे लकड़ी से बने होते हैं। वे स्टूल की शैली में लकड़ी की कुर्सियाँ बनाते हैं, और उन्हें ढके हुए कूड़े और हौदों के बजाय हाथियों की पीठ पर बाँधते हैं। सिर के चारों ओर पगड़ी बाँधना, कोट, पतलून या जूते पहनना या बिस्तर पर सोना उनका रिवाज नहीं है। वे सिर के चारों ओर केवल बढ़िया लिनन का टुकड़ा लपेटते हैं, और बीच में कमरबंद, और कंधों पर एक चादर रखते हैं। उनके कुछ अमीर आदमी सर्दियों में जैकेट की तरह हाफ कोट पहनते हैं। जो लोग वहन कर सकते हैं, वे तख्त पर सोते हैं जो बिस्तर के रूप में कार्य करता है। वे कच्ची सुपारी के साथ बड़ी मात्रा में पान के पत्ते चबाते हैं। फूलदार रेशम, मखमल, टाट-बैंड और अन्य प्रकार के रेशम के सामान यहाँ उत्कृष्ट रूप से बुने जाते हैं। वे बहुत अच्छी और साफ-सुथरी ट्रे, संदूक, सिंहासन और कुर्सियाँ बनाते हैं, सभी लकड़ी के एक टुकड़े से नक्काशीदार होते हैं। राजा की संपत्ति में कुछ सिंहासन पाए गए, जिनमें

से प्रत्येक लकड़ी के एक टुकड़े से बना था और लगभग दो हाथ चौड़ा था और उसके पैर एक ही टुकड़े से काटे गए थे और जुड़े हुए नहीं थे।

"वे बंगाल के कोसा की तरह युद्ध नौकाओं का निर्माण करते हैं और उन्हें 'बचरी' कहते हैं। दोनों के बीच इसके अलावा कोई अन्य अंतर नहीं है कि कोसा के धनुष और स्टर्न में दो उभरे हुए सींग होते हैं, जबकि बचरी में केवल एक समतल तख़्ता होता है; और चूँकि, पूरी तरह से ताकत का लक्ष्य रखते हुए, वे टिंबर की हार्ट-वुड से इन नावों का निर्माण करते हैं, वे कोसा की तुलना में धीमे चलती हैं। इस देश में बड़ी और छोटी नावें इतनी अधिक हैं कि एक बार गौहाटी के समाचार-लेखक ने रिपोर्ट की थी रमज़ान के महीने में उसके लिखे जाने की तारीख तक 32,000 बचरी और कोसा नावें उस स्थान तक पहुँच चुकी थीं या उसे पार कर चुकी थीं। शाही सेना और असम के उन निवासियों को पहुँचाने वाली नावों की संख्या जो नवाब (मीर जुमला) की वापसी पर उसके साथ थे, संभवतः समाचार-लेखक द्वारा बताई गई संख्या से अधिक हो गई। संभवतः इनमें से आधे असमियों द्वारा चलाई गई थी। वे अपनी अधिकांश नावें चंबल की लकड़ी से बनाते हैं; और ऐसे जहाज बनाते हैं, चाहे उन पर कितना भी भार लादा गया हो, वे दलदल में फँसने पर पानी में नहीं डूबते।

"वे उत्कृष्ट माचिस और बचदार तोपखाने बनाते हैं और इस शिल्प में महान कौशल दिखाते हैं। वे प्रथम श्रेणी का बारूद बनाते हैं, जिसकी सामग्री वे शाही प्रभुत्व से खरीदते हैं। गढ़गाँव के द्वारों और कुछ मंदिरों को छोड़कर पूरे असम में ईंट, पत्थर या मिट्टी से बनी कोई इमारत नहीं है। अमीर और गरीब समान रूप से लकड़ी, बाँस और पुआल से अपने घर बनाते हैं। इस देश के मूल निवासी दो नस्लों-असमी या कोलिता से हैं। सभी बातों में कोलिता असमियो से से श्रेष्ठ हैं; लेकिन कठिन कार्य करने और युद्ध में डटे रहने में स्थिति इसके विपरीत होती है।

"छह या सात हजार असमी हमेशा राजा के निवास और शयनकक्ष के चारों ओर पहरा देते हैं, और इन्हें 'चौदांग' कहा जाता है। वे राजा के समर्पित और विश्वसनीय सेवक हैं और वे उनके जल्लाद हैं। युद्ध के हथियार माचिस, तोप, लोहे के सिर वाले और बिना सिर वाले तीर, छोटी तलवारें, भाले और लंबे घुमावदार तीर या क्रॉसबो हैं। युद्ध के समय राज्य के सभी निवासियों को युद्ध में जाना पड़ता है, भले ही वे

चाहें या नहीं; गीदड़ों की तरह वे एक साथ मिलकर ज़ोर से चिल्लाते हैं और बड़ा हमला करते हैं। गीदड़ जैसे दिल वाले वे लोग कल्पना करते हैं कि ऐसी चीखों के माध्यम से वे युद्ध के मैदानों में जंगल के शेरों और बाघों को डरा देंगे। थोड़ी सी संख्या में उनके सैनिक अकसर लड़ाई में हजारों को मात देते हैं। लेकिन उनके योद्धा और नायक जो तलवारों और तीरों से दुश्मन पर हमला करते हैं और साहसपूर्वक दुश्मन के रैंकों को भेदते हैं, असली असमिया की जाति के हैं, और उनकी संख्या शायद 20,000 पुरुषों से अधिक नहीं है। वे ज्यादातर मंगलवार को लड़ाई और रात के हमलों में शामिल होते हैं जिसे वे शुभ दिन मानते हैं। आम लोग या तो लड़ते हैं और हार जाते हैं, या बिना लड़े ही भाग जाते हैं, अपने मन की आँखों में इस कविता का अर्थ रखते हुए: 'जिन्हें डर था, उन्हें सुरक्षा मिली। जबकि निडर नष्ट हो गए,' वे अपने सारे हथियार फेंक देते हैं और भाग निकलते हैं।

"आम लोग अपने मृतकों को उनकी संपत्ति में से कुछ हिस्से के साथ दफनाते हैं, सिर पूर्व की ओर और पैर पश्चिम की ओर रखते हैं। मुखिया अपने मृतकों के लिए तहखाने बनाते हैं, और मृतकों की पत्नियों और नौकरों को मारकर कुछ वर्षों के लिए आवश्यक वस्तुओं के साथ रखते हैं, जिसमें विभिन्न प्रकार के सोने और चाँदी के बरतन, कालीन, कपड़े और खाद्य पदार्थ शामिल होते हैं। वे मृतकों के सिर को मजबूत डंडों से बहुत मजबूती से ढकते हैं, और तिजोरी में बहुत सारे तेल के साथ दीपक जलाने के कार्य के लिए जीवित सहायक को दफन करते हैं। मुगलों द्वारा खोले गए दस तहखानों से लगभग नब्बे हजार रुपये की संपत्ति बरामद हुई। (41) आश्चर्यों में से एक यह था कि अस्सी वर्ष पहले दफनाई गई इस देश की एक रानी की कब्र से सोने की सुपारी का डिब्बा निकाला गया था, जिसके भीतर सुपारी अब भी हरी थी। लेखक ने इस ताबूत को नहीं देखा।

"जहाँ तक उन मुसलमानों की बात है, जिन्हें पूर्व समय में बंदी बना लिया गया था और जिन्होंने यहाँ शादी करने का फैसला किया था, उनके वंशज बिलकुल असमियों के तरीके से काम करते हैं और नाम के अलावा उनके पास इस्लाम का कुछ भी नहीं है; उनके दिल मुसलमानों के साथ जुड़ाव की तरफ झुकने के बजाय असमियों के साथ घुलने-मिलने की ओर अधिक झुकते हैं। इस्लामी भूमि से आए मुहम्मदन प्रार्थना और उपवास के प्रदर्शन में लगे हुए थे, लेकिन उन्हें प्रार्थना करने या सार्वजनिक

रूप से 'भगवान के शब्द' का पाठ करने से मना किया गया था।

"गढ़गाँव शहर में मिट्टी से बने पत्थर के चार द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक से राजा के महल तक, तीन कोस की दूरी तक पुरुषों के आवागमन के लिए एक अत्यंत मजबूत, ऊँचा और चौड़ा तटबंध बनाया गया है। शहर के चारों ओर, एक दीवार के स्थान पर दो कोस या उससे अधिक चौड़ाई में लगातार बाँस का बागान बना हुआ है। लेकिन शहर में बस्तियाँ नियमित रूप से नहीं बसाई जाती हैं... राजा के महल के पास, दिखोउ नदी के दोनों किनारों पर असंख्य घर हैं और बाजार की एक सँकरी सड़क है। बाजार में बैठने वाले एकमात्र व्यापारी पान बेचने वाले हैं। बाजार में खाद्य सामग्री खरीदना और बेचना उनका चलन नहीं है। निवासी बाजार में सामान जमा करते हैं जिससे उनके घरों में एक वर्ष तक सभी प्रकार के भोजन की आपूर्ति होती है और उन्हें खाने का कोई भी सामान खरीदने या बेचने की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

"संक्षेप में गढ़गाँव गाँव हमें गोलाकार, विस्तृत और गाँवों का समूह प्रतीत होता है। राजा के घर के चारों ओर एक तटबंध बनाया गया है और दीवार के रूप में काम करने के लिए उस पर मजबूत बाँस लगाए गए हैं। इसके चारों ओर एक खाई खोदी गई है जो अधिकांश स्थानों पर मनुष्य की ऊँचाई से भी अधिक गहरी है और हमेशा पानी से भरी रहती है। घेरा एक कोस और चौदह जंजीरों की परिधि में है। इसके अंदर ऊँचे और विशाल फूस के घर बने हुए हैं।

"राजा के दर्शक कक्ष को 'सोलंग' कहा जाता है जिसकी अंदर से माप 120 हाथ लंबी और 30 हाथ चौड़ी है। यह 66 स्तंभों पर खड़ा है, जिनमें से प्रत्येक लगभग चार हाथ गोल है। उन्होंने इन स्तंभों को इतनी अच्छी तरह से चिकना किया है कि पहली नजर में ही ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें किसी खराद पर ऐसा बनाया गया है। हालाँकि लोगों ने खराद को चालू करने की कला का दिखावा किया, फिर भी तर्क इस पर विश्वास करने से इनकार करता है। मेरी कलम इस महल की लकड़ी की सजावट में प्रयुक्त अन्य कलाओं और दुर्लभ आविष्कारों का विस्तार से वर्णन करने में विफल रही है। संभवतः दुनिया में कहीं भी इस देश के लोगों की इस तरह की सजावट और आकृतियों की नक्काशी के लकड़ी के घर नहीं बनाए जा सकते हैं। इस महल के किनारों को विभिन्न डिजाइनों की लकड़ी की जालियों में विभाजित किया गया है, जो अंदर और बाहर दोनों जगह उभरी हुई और सजी हुई हैं और उन पर लगे पीतल के दर्पणों

पर इतनी बारीकी से पॉलिश की गई है कि जब सूरज की किरणें उन पर पड़ती हैं, तो रोशनी की चमक से आँखें चौंधिया जाती हैं। इस हवेली को 12,000 लोगों ने एक साल तक काम करके पूरा किया था। इस महल के अंत में, चार स्तंभों पर एक-दूसरे के सम्मुख छल्ले लगाए गए हैं, प्रत्येक स्तंभ पर नौ छल्ले लगाए गए हैं। जब भी राजा इस घर में रहना चाहते थे, तो चार खंभों के बीच एक सिंहासन रखा जाता था और नौ छतरियाँ, प्रत्येक अलग-अलग सामान से बनी होती थीं, सिंहासन के ऊपर के छल्लों में बाँधी जाती थीं। राजा छतरियों के नीचे सिंहासन पर बैठते हैं; ढोल बजाने वाले अपने ढोल और दंडों को पीटते हैं। दंड हमारे घंटों की तरह पीतल का गोलाकार, चपटा वाद्य यंत्र है। जब राजा दरबार लगाते हैं या बाहर निकलते हैं, या सरदार उन स्थानों के लिए निकलते हैं जहाँ उनकी नई नियुक्ति हुई है, तो ढोल और दंडों को बजाया जाता है। जहाँ तक महल के अंदर विद्यमान नक्काशीदार, सजी-धजी, मजबूत, चौड़ी और लंबी कई अन्य लकड़ी की हवेलियों की बात है, उनकी सुंदरता और विशिष्ट विशेषताओं को वर्णित करने से बेहतर उन्हें देखा जाना चाहिए। लेकिन जब तक यह देश शाही प्रभुत्व में शामिल नहीं हो जाता, तब तक किसी काफ़िर को भी इन घरों को देखना नसीब नहीं होगा, ताकि वह उन विपत्तियों में शामिल न हो, जिन्होंने हमें अभिभूत कर दिया है।

"महल के घेरे के बाहर, राजा के निवास के लिए एक बिलकुल साफ और शुद्ध हवेली बनाई गई है और शाही लोगों ने शाही पैलेस के पास बहुत अच्छे और मजबूत घर बनाए हैं। राजा के दामाद बरफुकन ने अपनी हवेली के अंदर मैदान में बहुत ही शुद्ध और मीठे टैंक के चारों ओर बेहद सुंदर और ताज़गी भरा बगीचा बनाया था। सचमुच वह रमणीय स्थान और हृदय-विमुग्ध एवं पवित्र निवास था। कूड़े-कचरे की अधिकता के कारण इस देश में ज़मीन की सतह पर घरों के आंगन बनाने की प्रथा नहीं है, बल्कि वे लकड़ी के खंभों के चबूतरे पर अपना घर बनाते हैं ..." (42)

***

"मीर जुमला के बवंडरी आक्रमण ने असम को पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दिया, जिससे विनाश, लूट और महामारी फैल गई। जनशक्ति, सैन्य और आर्थिक संसाधन बुरी तरह समाप्त हो गए। गाँव खाली हो गए क्योंकि निवासियों ने सुरक्षित पहाड़ियों और जंगलों में जाने के लिए अपने घर-बार और चूल्हे-चौके छोड़ दिए। युद्ध, परित्याग

और बीमारी के कारण सेना की रैंक काफी कम हो गई थी। किलेबंदी ध्वस्त हो गई थी। शस्त्रागार खाली हो गए थे। युद्ध के खर्चों और युद्ध क्षतिपूर्ति के कारण खजाना खाली हो गया था। लेकिन इस तरह की तबाही से असम न केवल पूरी तरह उबर गया, बल्कि जल्दी ही नई उपलब्धि भी हासिल कर ली। पाँच वर्ष की संक्षिप्त अवधि में ही वह अपने विजेता के साथ तलवारें भाँजने और गौहाटी को उससे छीनने में सक्षम हो गया। (43)

जैसे ही मुगल चले गए, जयध्वज सिंह ने अपना सिंहासन पुनः प्राप्त कर लिया, लेकिन पुजारियों ने उसे गढ़गाँव न जाने की सलाह दी क्योंकि यह स्थान मुगलों के कब्जे से अपवित्र हो गया था, उन्होंने बकाटा को अपनी अस्थायी राजधानी बनाया। प्रतिशोधी स्वभाव के होने के कारण अहोम राजा कर्तव्य में लापरवाही के लिए कुछ रईसों को गंभीर रूप से दंडित करना चाहते थे, लेकिन अतान बुरागोहैन और खामुन राजमंत्री फुकन सहित उनके अधिकारियों ने बहुत कठोर दंड न देने की सलाह दी क्योंकि इससे कुलीन वर्ग का मनोबल और भी गिर सकता था। राजा ने सलाह में निहित बुद्धिमत्ता को पहचानते हुए अपनी नज़र में दोषी लोगों को कोड़े मारने या उनके पदों से बर्खास्त करने जैसी अपेक्षाकृत हल्की सजा देकर खुद को संतुष्ट किया। दोषियों में सबसे वरिष्ठ बरुकियाल लांगी बरगोहैन था जो दक्षिणी तट पर सेना में अतिरिक्त बल भेजने में विफल रहा था जिसकी पिटाई राजा ने स्वयं अपनी तलवार के कुंद सिरे से की।(44)

उनके भरोसेमंद अधिकारियों के अनुसार, समय की माँग थी कि तत्काल आम लोगों के मनोबल को बहाल करने के उपाय किए जाएँ, जो नेतृत्व के शीर्ष क्षेत्रों में मतभेदों के साथ-साथ बादुली फूकन और मौपिया फूलन भाइयों जैसे अधिकारियों के दलबदल के कारण कमजोर हो गया था जिन्होंने न केवल मुगलों की मदद की, बल्कि अपने परिवारों सहित असम छोड़ कर मुगलों के साथ चले गए। एक अन्य अपराधी राजमंत्री फुकन का भाई चेंगमुन बरफुकन था, जिसने हमलावर मुगलों के साथ लड़ाई करने से परहेज किया था क्योंकि एक गैर-अहोम अधिकारी को निचले असम की सेना के कमांडर के रूप में नियुक्त किया गया था। अपने अपराध को बढ़ाते हुए बरफुकन ने अहोम सुरक्षा को प्रभावी ढंग से भेदने के लिए मुगलों को मार्गदर्शन प्रदान करके उनकी सहायता भी की। इस तरह के गंभीर दुष्कर्मों के लिए फाँसी की सजा होनी चाहिए थी,

लेकिन बरफुकन ने खुद को मारकर चीजों को सरल बना दिया।

देश में लंबे समय से चली आ रही अराजकता ने खेल व्यवस्था को लगभग पूरी तरह से नष्ट कर दिया था, जिसके तहत आम सैनिकों और श्रमिकों, पाइकों को व्यवस्थित रूप से संगठित किया गया था। इसका मुख्य कारण आगे बढ़ते मुगलों के सामने आबादी का पलायन और फैलाव था। मीर जुमला और उसकी सेनाओं द्वारा गढ़गाँव पर कब्जे के दौरान यह स्पष्ट संभावना थी कि अहोमों का शासन समाप्त हो जाएगा और तब से एक और अखिल भारतीय शक्ति इस भूमि पर शासन करेगी। इस कारण अहोम स्वर्गदेव का राजनीतिक और नैतिक अधिकार उनकी प्रजा के बीच गंभीर रूप से कम कर हो गया था, वे जयध्वज सिंह को लगातार भगनियार्किंग की अपमानजनक पदवी से संदर्भित किया करते थे। प्रजा के बीच निराशा का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब मीर जुमला ने असम छोड़ा तो कुछ बंदियों सहित 12,000 से कम असमिया अनुयायी उसके साथ चले गए थे।

बुरगोहैन ने अहोमों के नियंत्रण वाले पूरे क्षेत्र का दौरा करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली, और भगोड़ों को अपने मूल गाँवों में लौटने और अपने पहले के व्यवसायों को फिर से शुरू करने के लिए राजी किया। उनमें से अधिकांश के लिए सामान्य स्थिति में लौटने से उनमें से ज्यादातर का मनोबल बढ़ा और राष्ट्रवादी गौरव की उनकी खोई हुई भावना फिर से जागृत हुई। समाज के आर्थिक संतुलन की बहाली के साथ-साथ, बुरागोहैन ने प्रशासन के उच्च पदों पर भी व्यापक बदलाव किया और विभिन्न पदों पर योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की।

यहाँ तक कि नामरूप में अपने निर्वासन की अवधि के दौरान भी जयध्वज सिंह यह सोचकर पूर्व स्थानीय सहयोगियों के पास गुप्त दूत भेजते रहे थे कि यदि भविष्य में मुगल हमलावरों पर जवाबी हमला करने का कोई अवसर आए तो उनसे सहायता मिल सके। अब, बकोटा लौटने के बाद, उन्होंने उनके साथ फिर से संपर्क शुरू किया। कूचबिहार, जयंतिया और कछार के राजाओं को पत्र भेजकर पूछा गया कि क्या वे पूर्वी भारत में मुगल विरोधी संघ का हिस्सा बनेंगे। शत्रुता फिर से शुरू होने पर सहायता का आश्वासन देते हुए उन्होंने आश्वस्त रूप से सकारात्मक उत्तर भेजे।

अपने निर्वासन के दौरान जयध्वज सिंह ने कोच राजा प्राणनारायण के साथ पत्र-व्यवहार किया था। उनकी वर्तमान स्थिति के बारे में पूछने वाले संदेश के जवाब में जयध्वज ने लिखा : "मेरे सैनिकों ने

समधरा में सात दिनों तक लड़ाई लड़ी थी। जैसा कि आपके मामले में था, मेरे अपने लोग दुश्मन के पक्ष में चले गए, और उनके लिए समधरा के किले में प्रवेश करना संभव बनाया। बाद की लड़ाई में मेरी सेना तितर-बितर हो गई और मुगलों ने गढ़गाँव में मेरी राजधानी पर कब्जा कर लिया। कई स्थानों पर लड़ाई जारी रही और मुगल पीछे हटने के कगार पर थे। लेकिन हमारा कट्टर दुश्मन बडूली आगे बढ़कर मुगलों के पास गया और उन्हें वापस लौटने के लिए प्रेरित किया। कोई अन्य रास्ता न देखकर मैंने पहाड़ियों में शरण ली। फिर मैंने गायों और ब्राह्मणों के साथ-साथ देश के लोगों के हित में असम से मुगल सेना की वापसी की व्यवस्था की।" (45)

इस पर प्राणनारायण ने उत्तर दिया : "मैंने अपना राज्य खो दिया है और इसी प्रकार आपने अपना राज्य खो दिया है। चूँकि हमने एक-दूसरे के प्रति बुरे इरादे नहीं रखे थे, इसलिए हम दोनों ने अब अपना-अपना राज्य वापस पा लिया है। आपको अस्थायी रूप से अपना राज्य खोने पर व्यथित महसूस नहीं करना चाहिए।" क्योंकि रामचन्द्र, सुरथ और युधिष्ठिर भी इसी तरह की आपदाओं से बच नहीं सके। लेकिन उनकी प्रतिष्ठा पर कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि उन्होंने अपने प्रयासों से अपने क्षेत्र दोबारा हासिल कर लिए। हमारी प्रतिष्ठा तभी कम होगी जब हम इस मामले में निष्क्रिय रहेंगे।"

जयध्वज सिंह का जवाब उनके बढ़ते आत्मविश्वास को दर्शाता है : "यहाँ तक कि जब सूर्य को एक बार ग्रहण लग जाता है, तो क्या वह फिर से प्रकट नहीं होता है? हम अपनी शक्ति के अनुसार तैयारी कर रहे हैं और मुझे आशा है कि आप भी ऐसा ही कर रहे हैं। जब आग और हवा एकजुट होकर काम करते हैं, वे पेड़ों और घासों को जलाने में देर नहीं लगाते। इसलिए अगर हम दोनों के बीच प्रभावी गठबंधन स्थापित हो जाए तो हम भी दुश्मन को हरा सकते हैं और नष्ट कर सकते हैं।" (46)

जयंतिया राजा जसमत्ता राय ने मुगल आक्रमण के दौरान अहोम राजा के पास दो दूत भेजे थे, लेकिन संपर्क करने से पहले ही मीर जुमला के सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया था, उन्होंने जयध्वज सिंह के बकोटा लौटने के बाद लिखा : "जयंतिया और गढ़गाँव अलग और विभाज्य नहीं हैं। मुगलों के हाथों आपकी परेशानी से मुझे ऐसा महसूस हो रहा है मानो मेरे ही देश को दुश्मन ने परेशान और अपमानित किया है। जो हुआ, उसे पूर्ववत नहीं किया जा सकता है। अब से हमें दोस्ती के

बंधन को मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए। मुगलों ने आपके देश पर आक्रमण किया; वे इसे स्थायी रूप से अपने प्रभुत्व में रखने में सक्षम नहीं हैं। भूमि और लोग सभी अक्षुण्ण हैं, साथ-ही-साथ आपका गौरव भी। अब हमारे बीच अधिक प्रभावी सहयोग को व्यवस्थित करने के लिए उपाय किए जाने चाहिए ताकि हम मुगलों से प्रतिशोध ले सकें।" (47)

जयंतिया के जागीरदार राज्य नर्तियाँग के राजा माणिक सिंह ने लिखा : "दो लोगों की हानि (दो पकड़े गए दूतों के संदर्भ में) कुछ भी नहीं है। अगर हमने आपकी खातिर दस या बीस हजार लोगों को भी खो दिया होता तो भी हमें खेद नहीं होता। हमें दुख है कि हम अपने लोगों के साथ आपकी कोई सहायता नहीं कर सके। आपसे बड़ा हमारा कोई मित्र नहीं है, और हम जानते हैं कि आपकी भावनाएँ भिन्न नहीं हैं। अगर दो पक्षों के हृदय शुद्ध एवं निष्ठापूर्ण हैं तो दूरियाँ भी समृद्धि बन जाती है, जैसा कि आप संस्कृत की कहावत से जानते हैं, जो किसी से जुड़ा होता है, वह किसी भी दूरी को नहीं पहचानता। जयंतिया और गढ़गाँव दो अलग-अलग जगह नहीं हैं। मुझे सबसे अधिक दुख इस बात का है कि जब आपके देश पर मुगलों का कब्ज़ा हो रहा था तब मैं शांति और आराम से रह रहा था। मुझे जीवनभर यह अफसोस रहेगा कि मुझे अपने दस या बीस हजार दिग्गजों को आपकी आपात स्थिति में आपकी सहायता के लिए दौड़ने का आदेश देने का अवसर नहीं मिला। मुगलों ने अपनी शक्ति और क्षमता के अनुरूप कार्य किया है। उन्होंने जो तबाही मचाई है, उसका बदला उन्हें मिलना चाहिए। यह अपमान तभी मिटेगा जिस दिन हम अपने दुश्मन को नेस्तनाबूद कर सकेंगे।" (48)

अहोम राजा और उसके सरदारों का मनोबल बढ़ाने में इस तरह के पत्राचार और समर्थन की अभिव्यक्ति की भूमिका उल्लेखनीय थी और उन्होंने नए जोश के साथ पुनर्वास और बहाली के उपाय किए। यह भी देखा जाएगा कि यद्यपि दोस्ती के सभी प्रस्ताव वास्तविक मदद की पेशकश नहीं करते हैं, लेकिन रानी के राजा जैसे कुछ सहयोगियों को भविष्य की घटनाओं के दौरान अमूल्य सहायता प्रदान करनी थी।

जैसा कि पहले-उल्लेख किया गया है, मीर जुमला को जो अपेक्षाकृत आसान मार्ग मिला, वो अहोम रईसों एवं सेना और नौसेना अधिकारियों के बीच आंतरिक कलह और असंतोष के कारण था, जैसा कि चेंगमुङ बरफुकन के विश्वासघात से पता चलता है। इन सेनाओं में महत्वपूर्ण पद हमेशा अहोमों के अधीन रहे हैं, और राजा जयध्वज सिंह

द्वारा निचले असम में सेना की कमान के लिए परबतिया फुकन के रूप में कायस्थ मंथिर भराली बरुआ की नियुक्ति वंशानुगत अहोम सरदारों और कमांडरों को पसंद नहीं आई, और आक्रमणकारियों के प्रति उन्होंने जो प्रतिरोध किया, वह अनिच्छा से किया गया और कमज़ोर था, जो शान या ताई योद्धाओं के रूप में उनकी स्थिति के अनुरूप नहीं था! इससे यह सुनिश्चित हो गया कि असम में मीर जुमला का अभियान अहोम इतिहास में अभूतपूर्व विजय और जीत की शृंखला थी।

इस बारे में उस महान राजनेता-योद्धा अतान बुरगोहैन से बेहतर कोई नहीं जानता था, जिसने अब रईसों और अधिकारियों में राष्ट्रीयता की भावना और शाही सिंहासन के प्रति निष्ठा पैदा करने, उन्हें लगातार उनकी गौरवशाली विरासत और शान जाति की परंपरा और आदर्शों की याद दिलाने के साथ ही अस्वीकार्य व्यक्तियों को बाहर करने और महत्वपूर्ण पदों पर अधिक स्वीकार्य लोगों को स्थान देने पर ध्यान देने के लिए दिन-रात कार्य किया। मीर जुमला के आक्रमण ने एक समय आत्मनिर्भर भूमि को तबाह कर दिया था, भोजन की आपूर्ति कम थी, जबकि शाही खजाना खाली था। मुगलों को युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में चुकाई जाने वाली अत्यधिक श्रद्धांजलि के कारण स्थिति और भी खराब हो गई थी।

बुरगोहैन ने यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपनाए कि मुगल फौजदार राशिद खान के मन में संदेह पैदा किए बिना श्रद्धांजलि के भुगतान की गति धीमी हो जाए, वरना वह दिल्ली में अपने मालिक को इसके बारे में बता सकता था। असमियों ने मीर जुमला के प्रवास के अंतिम कुछ दिनों के दौरान उसकी उपस्थिति में गढ़गाँव में ही युद्ध क्षतिपूर्ति का बड़ा हिस्सा चुका दिया था। उन्होंने किस्तों में शेष राशि चुकाने में समय लिया, जबकि देरी की मुगलों की शिकायतों से निपटने के दौरान उन्होंने विनम्रतापूर्वक, लेकिन दृढ़ता से जवाब दिया कि वे अपने दायित्वों को पूरा करने की पूरी कोशिश कर रहे थे। उनकी समस्याएँ अनेक थीं; आख़िरकार वे उस भूमि पर धन जुटाने की कोशिश कर रहे थे जिसे स्वयं मुग़लों ने उजाड़ दिया था! बरसात के मौसम में हाथियों को पकड़ना भी मुश्किल होता था और उन्हें प्रशिक्षित करने में बहुत समय लगता था! मुगलों के पास ऐसे स्पष्टीकरणों और बहानों को स्वीकार करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था। जब कभी वे सबसे कमजोर प्रतीत हुए, तो उन्होंने भरोसेमंद लोगों के प्रति कुछ हद तक

गौहाटी में बंधकों की उपस्थिति की ओर इशारा किया और पूछा कि क्या जान-बूझकर युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करने से बचना और इस प्रकार चार अहोम सरदारों के बेटों के जीवन को खतरे में डालना संभव है? (49)

इसके साथ ही, वे किसानों को अधिक कृषि योग्य भूमि खोलने और उनके कृषि उत्पादन को दोगुना करने के लिए उत्साहित करने के कठिन प्रयास में लगे रहे। सोने के लिए नदियों के दोहन जैसे राजस्व के स्रोतों की नए सिरे से तलाश की गई। सेना का पुनर्गठन किया गया, अतिरिक्त अधिकारी और जवान भर्ती किये गये और प्रशिक्षण दिया गया ताकि यह दक्षता का प्रतीक बन जाए| राजा और बुरागोहैन व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षण सत्रों और युद्धाभ्यासों की निगरानी करते थे। आयुध कारखानों को दिन-रात संचालित किया गया, बंदूकों और तलवारों का उत्पादन चौगुना कर दिया गया| विशेषज्ञों द्वारा नए हथियार तैयार कराए गए। हालाँकि, इन उपायों को करने में बहुत गोपनीयता बरती गई ताकि इसका कोई संकेत विदेशी कानों तक न जाए; उदाहरण के लिए, हथियार बनाने वाले लोहार केवल महल के बाड़ों के भीतर ही छिपे रहते थे!

हालाँकि, उपरोक्त सभी गतिविधियाँ जयध्वज सिंह की मृत्यु के कारण अचानक बाधित हो गईं, जिनका स्वास्थ्य कष्टों के कारण खराब हो गया था। नवंबर, 1663 में, वह गंभीर बीमारी से पीड़ित हो गये और कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु हो गयी।

प्रतिकूल घटनाओं के कारण गढ़गाँव में अपनी राजधानी छोड़ने और इस तरह भगनिया राजा के रूप में हमेशा के लिए छाप होने के बावजूद, जयध्वज सिंह हृदय से देशभक्त व्यक्ति थे| जैसा कि उनके क्षेत्र को छोड़कर मुगलों के जाने के दौरान अपनी भूमि को फिर से जीवंत करने और जब्त किए गए क्षेत्रों को वापस छीनने की तैयारी करने के उनके प्रयास से पता चला।

जैसा कि बुरंजियों में दर्ज है, जब वह बकोटा में अपनी मृत्यु शय्या पर लेटे थे, तो उन्होंने अपनी प्रिय राजधानी गढ़गाँव के अंतिम दर्शन करने की इच्छा व्यक्त की, जहाँ वह 15 वर्षों तक राजा के रूप में रहे थे। अतान और उसके सहयोगियों ने उसे रोकने की कोशिश की क्योंकि गढ़गाँव वीरान और खंडहर था, और यह डर था कि मीर जुमला

के सैनिकों ने, उनके जाने से पहले शहर में जाल बिछा दिया होगा। देवधाई और ब्राह्मण पुजारी, साथ ही दरबारी ज्योतिषी भी मना करने वाले स्वर में शामिल हो गए, लेकिन राजा दृढ़ रहे। उन्हें नगर में ले जाकर फाटक पर खड़ा किया गया; उन्होंने उसमें से झाँककर देखा और यह देखकर कि गढ़गाँव को क्या बना दिया गया, वह रोने लगे और बेहोश हो गए और उन्हें निस्सहाय हालत में बकोटा वापस ले जाना पड़ा।

बताया जाता है कि अपने निधन से पहले उन्होंने अपने मंत्रियों को बुलाया और उनसे बात की: "मेरी हालत चिंताजनक और गंभीर है,"| उन्होंने कहा, "आपको एक ध्येय और उद्देश्य वाला होना चाहिए और तबाह हुए अपने देश की समृद्धि और शांति बहाल करने के लिए अपने प्रयासों को करना चाहिए। किसी को अपना सर्वोपरि भगवान नियुक्त करें और देश की परंपराओं के अनुसार लोगों की रक्षा करें। आपका पुरजोर प्रयास होना चाहिए कि आप हमारे शत्रु, मुगलों द्वारा देश पर लगाए गए अपमान के तीर को देश के सीने से निकाल दें।" (50)

***

यह असम का सौभाग्य था कि जो राजा सुपुंगमुंग या चक्रध्वज सिंह उनके तुरंत उत्तराधिकारी बने| वह उद्यमी व्यक्ति थे, राष्ट्रवादी उत्साह से भरे हुए थे और उन्होंने निचले असम को मुगलों से वापस छीनने के लिए दृढ़ संकल्प किया था। रोगग्रस्त राजा के साथ उसके सटीक संबंध के बारे में बुरंजियों में मतभेद है। कुछ का कहना है कि वह उसका भाई था, अन्य का कहना है कि वह चचेरा भाई था, जबकि अन्य का कहना है कि वह उसका पोता था। कुछ लोगों का दावा है कि जयध्वज सिंह ने अपनी मृत्युशय्या पर, मुख्य रानी की इच्छा के विरुद्ध, खुद ही 'चक्रध्वज सिंह' नाम रखा था, जो पहले सरिंग राजा थे, और उन्होंने अहोम सिंहासन के अगले अधिकारी के रूप में मीर जुमला के खिलाफ अभियान में जबरदस्त वीरता दिखाई थी। खामुन राजमंत्री फुकन से कम किसी व्यक्ति ने नए राजा के अधिकार को चुनौती नहीं दी, लेकिन अतान बुरागोहैन के नेतृत्व वाले पात्र-मंत्रियों ने उसे रोक दिया।

जाहिर तौर पर, अपेक्षाकृत कमजोर राजा और मीर जुमला प्रकरण की वजह से अहोम प्रशासनिक व्यवस्था में उथल-पुथल के कारण, रईसों के बीच व्याप्त असंतोष, प्रतिद्वंद्विता और कलह को दबाने में

बुरागोहैन अभी तक पूरी तरह से सफल नहीं हुए थे, क्योंकि इन लोगों ने अपने बदसूरत हुडों को उठाया था। जैसे ही जयध्वज सिंह की मृत्यु हुई, मृत राजा की इच्छाओं के विपरीत, सिंहासन के लिए विद्रोह शुरू हो गया। इसके पीछे कोई और नहीं, बल्कि खमुन राजमंत्री फुकन और उनके रिश्तेदार थे। खामुन और उनके दो भाई, चेंगमुन और लेचाई, मुख्य रूप से अपने पिता बाघचोवाल हलधिथेंगा निओग गोहैन के कारण अहोम प्रशासनिक पदानुक्रम में ऊपर उठे थे| उनके पिता प्रतिष्ठित सैनिक और प्रशासक थे। बाघचोवाल प्रताप सिंह के शासनकाल के दौरान बरफुकन बन गया था और मुगलों से लड़ते हुए कामाख्या के निकट अमराजुरी में उसकी मृत्यु हो गई। उनका सबसे बड़ा बेटा, चेंगमुन, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, कालियाबार में बरफुकन था, सबसे छोटा लेचाई हातिमुरिया फुकन का कार्यालय संभालता था; और दूसरा, खामुन, राजमंत्री के पद के साथ नाओबैचा फुकन बन गया।

खामुन की शाही घराने से निकटता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनकी दो बेटियों की शादी जयध्वज सिंह से हुई थी। बड़ी बहन की शादी पहले बुरागोहैन के परिवार के सदस्य से हुई थी, लेकिन राजा ने उसकी सुंदरता से मुग्ध होकर उसे उसके पति से छीन लिया और उसे अपनी पत्नी बना लिया, और उसे पर्वतिया कुओनरी की उपाधि दी। जयध्वज सिंह ने उसके पहले विवाह से हुए बेटे लैंगिचांग गोहेन, जिसे कालिया गोहैन के नाम से भी जाना जाता है, को गोद लिया और उसे महल में रहने दिया। जब राजा अपनी मृत्युशय्या पर थे, तो पर्वतिया कुओनरी ने अपनी छोटी बहन कुसुमी बरकुओनरी के साथ उन्हें यह समझाने की कोशिश की कि कालिया गोहैन उनके उत्तराधिकारी के लिए सबसे उपयुक्त हैं। लेकिन जयध्वज सिंह ने विरोध किया क्योंकि कालिया में शाही खून नहीं था और वह सामान्य व्यक्ति था। जैसा कि पहले कहा गया है, उन्होंने सरिंग राजा चक्रा को प्राथमिकता दी, जो उस समय उनके हेंगडांग-धोरा या तलवार वाहक के पद पर था, और उन्होंने अतान बुरागोहैन सहित अन्य सभी रईसों को अपनी प्राथमिकता बताई।

लेकिन जैसे ही उनकी मृत्यु हुई, उनकी इच्छा के विपरीत चेंगमुन बरफुकन के दो बेटों, चिकन और सरिया ने अपने भाइयों और भतीजों कमला, लांगचा, लोकचा, खामचा, रंगचा और टोलन की मदद से सिंहासन पर खुद कब्जा करने की कोशिश की। महल की हवा साजिशों से भरी हुई थी, और विश्वासघात पर्याय बन गया : "फिर राजशुर

(चेंगमुन का एक और पदनाम) के पुत्र चिकन और सरिया आए। राज्य में भ्रम की स्थिति थी और वह अस्थिर और लड़खड़ाई हुई थी। राज्य में तीन दिन तक अराजकता की स्थिति जारी रही : षड्यंत्रकारी और असंतुष्ट लोग पूरे देश में फैल गए।" (51)

दृढ़ निष्ठा और दृढ़ संकल्प के साथ, अतान बुरागोहैन ने स्थिति पर मजबूत पकड़ बना ली। अन्य रईसों के समर्थन से वे घनी रात को सारिंग राजा चक्रा को बकोटा के महल में लाए और उन्हें नया राजा घोषित किया| नए राजा ने अहोम नाम 'सुपुंगमुंग' और हिंदू नाम 'चक्रध्वज सिंह' धारण किया। पात्र-मंत्रियों ने नए राजा के सामने सिर झुकाया और एक-एक करके उन्हें अपनी निष्ठा का वचन दिया। उनके सिंहासनारूढ़ होने के समारोह में ब्राह्मण और गणक पुजारियों का भोज के साथ सत्कार किया गया और उन्हें कई मूल्यवान उपहार दिए गए। जयंतिया राजा ने बधाई देने के लिए दूत भेजा, साथ ही दरांग के राजा ने भी दूत भेजा जिन्होंने आक्रमण के दौरान मीर जुमला का पक्ष लिया था!

हालाँकि, खामुन राजमंत्री फुकन तीन दिन बाद उन्हें बधाई देने आए। राजा इस देरी से बहुत खुश नहीं थे, लेकिन उन्हें सम्राट औरंगजेब द्वारा भेजे गए दो दूतों का स्वागत करने के लिए तुरंत खुद को तैयार करना पड़ा, जो मूल रूप से जयध्वज सिंह के दरबार के लिए आए थे। इसलिए, उन्होंने राजमंत्री के परिवार के सदस्यों के विश्वासघात और विद्रोह में उनकी भूमिका की जाँच को बाद के समय के लिए स्थगित कर दिया। (52)

यह ध्यान दिया जा सकता है कि बकोटा लौटने के बाद, जयध्वज सिंह ने सम्राट औरंगजेब को पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने स्वीकार किया था कि उन्होंने मुगल कब्जे वाले क्षेत्रों पर आक्रमण करके अपराध किया था और दोहराया था कि वह घिलाझरीघाट की संधि की शर्तों को पूरी तरह से स्वीकार करते हैं। क्षमा याचना को शालीनता से स्वीकार करने के बजाय, बेईमान मुगल सम्राट ने डोर बेग और रुस्तम बेग नाम के दो अहादीस (सज्जन-सैनिकों) को एक पत्र और सिरपो या शाही पोशाक सहित "उपहार" लेकर दूत के रूप में भेजकर अपने प्रतिद्वंद्वी के घावों पर नमक छिड़कने की कोशिश की थी। उनके आने के बारे में जानकर, जयध्वज सिंह को एहसास हुआ कि अभी "उपहार" स्वीकार करने अलावा कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि स्वीकार न करने पर संदेह

पैदा हो सकता है।

फिर भी निजी तौर पर अपने मंत्रियों के सामने उन्होंने अपनी पीड़ा व्यक्त की कि उन्हें उनके द्वारा भेजी गई शाही पोशाक पहननी पड़ेगी क्योंकि उन्हें मुगलों का सहायक माना जाता है। जैसा कि घटनाएँ घटीं, वह इस तरह के अपमान से बच गया, क्योंकि गौहाटी से डेरगाँव तक यात्रा करने वाले दूतों के उस तक पहुँचने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

दोनों शाही दूतों को नए राजा चक्रध्वज को पत्र और "उपहार" सौंपने के नए निर्देश मिले थे। राजा चक्रध्वज सिंह को पत्र और "उपहार" सौंपने के नए निर्देश मिले थे। नवाब दिलेर खान दाउदजई के दूत गदाई और राशिद खान के उकील्स ताज़ खान और शेख कमाल के साथ, दूतों ने गौहाटी से अहोम राजधानी तक यात्रा की। अपने पत्र में दिलेर खान ने अहोम राजा को उचित सम्मान के साथ शाही सद्भावना के प्रतीक प्राप्त करने की सलाह दी। मुगल प्रोटोकॉल के अनुसार, सहायक राजा को पत्र और उपहार प्राप्त करने के लिए अपने सिंहासन से उतरना पड़ता था और कुछ कदम आगे बढ़ना पड़ता था। फिर वह उपहारों के बीच से अपने वस्त्र को खोलता था और उनकी उपस्थिति में इसे पहनकर यह एहसास कराता था कि वह वास्तव में मुगल सम्राट का सहायक है। दूतों को समारोह के बारे में ठीक उसी तरीके से सम्राट को सूचना देनी थी जिस तरह सम्राट की अनुपस्थिति में वह आयोजित किया गया।

यह कहना कि अहोम सम्राट चक्रध्वज सिंह अनुष्ठानों का पालन करने के इच्छुक नहीं थे, अतिशयोक्ति होगी! वह चाहता था कि उसके सरदार दूतों को उनका आवंटित मिशन पूरा किए बिना वहीं वापस भेज दें जहाँ से वे आए थे। हालाँकि, अतान ने इस तरह के उतावले कदम के खिलाफ चेतावनी दी क्योंकि यह उस तरह के संघर्ष में बदल सकता था जिसके लिए असमिया सेनाएँ बिलकुल तैयार नहीं थीं। चतुर व्यक्ति के नाते राजा ने संभावित परिणामों के बारे में सलाह की काफी सराहना की और शाही दूतों से मिलने के लिए सहमत हुए, जिन्हें प्रोटोकॉल में किसी भी कमी को नजरअंदाज करने को प्रेरित करने के लिए भारी रिश्वत दी गई थी। ताड़ना को इस धमकी से प्रबल किया गया कि यदि उन्होंने अनुपालन करने से इनकार कर दिया तो उन्हें तुरंत मार दिया जाएगा, और गौहाटी, ढाका और दिल्ली को बहाना पेश किया जाएगा कि उन्होंने बैठक के दौरान अहोम सम्राट के सामने शिष्टाचार का व्यवहार

नहीं किया था! शाही उपस्थिति में प्रवेश करने से पहले आखिरी क्षण में उन्हें अतिरिक्त सोने की दो सौ मोहर और चाँदी के दो हज़ार रुपये की रिश्वत दी गई। इस तरह के प्रलोभनों का सामना करते हुए, खतरनाक धमकियों से परेशान होकर, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि दोनों दूत-डोर बेग और रुस्तम बेग निर्धारित प्रोटोकॉल के प्रत्येक उल्लंघन पर आसानी से आँखें मूँद लेने के लिए तुरंत सहमत हो गए!

यह कूटनीति का चरम रूप था, जिसे यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था कि अहोम राजा ने कलंक के बावजूद अपनी गरिमा बरकरार रखी। दिलेर खान और राशिद खान के दूतों को बैठक में भाग लेने से रोक दिया गया| शाही सिंहासन के सामने भारी कालीनों का ढेर लगा दिया गया ताकि यह आभास दिया जा सके कि राजा खड़े थे, जबकि वास्तव में, वह बैठे रहे। राजा ने अतान से सम्राट को अपनी निराशा के बारे में सूचित करने के लिए कहा| हालाँकि उसने अपनी बेटी से नाता तोड़ लिया था और तीन लाख रुपये और नब्बे हाथी दिए थे, लेकिन उसे अपनी पुरानी क्षेत्रीय सीमाएँ वापस नहीं मिलीं। मीर जुमला द्वारा बंधक बनाए गए कैदियों को भी रिहा नहीं किया गया था।

उन्होंने औरंगजेब को पत्र भी भेजा जिसमें लिखा था : "जो उपहार आपने डोर बेग और रुस्तम बेग के माध्यम से भेजे थे, जिसमें एक सिरपाओ और एक जामदार शामिल थे, मैंने कुछ कदम आगे बढ़कर और गंभीर अभिवादन के साथ प्राप्त किए। मुझे बहुत अच्छी तरह पादशाह की याद आ रही है।" मुझसे प्रसन्न होकर तुम्हें सदैव मुझे अपने मित्र के रूप में देखना चाहिए। हम दोनों के बीच जो मित्रता है, उसके कारण ही मैंने अपनी पुत्री को तुम्हारे महल में सौंप दिया है। यही वांछनीय है कि हमारी पारस्परिक मित्रता सदैव बढ़ती रहे।" (53)

फिर दोनों दूतों को सम्राट के लिए पत्र और उपहारों के साथ, उन पर नज़र रखने के लिए चंद्र कंडाली कटकी और सनातन कटकी के साथ वापसी यात्रा पर भेजा गया। यह बैठक दिखावा मात्र थी क्योंकि अपरिहार्य संघर्ष की तैयारी के लिए असमिया बलों को आवश्यक राहत देने की तत्काल आवश्यकता थी।

***

चक्रध्वज सिंह वर्षों की अपनी लंबी सेवा के सम्मान में खामुन राजमंत्री फुकन के खिलाफ कार्रवाई करने के अनिच्छुक थे| इससे खामुन को विश्वासघाती कृत्य में शामिल होने का एक और मौका मिल गया। यह रईस अपने पोते कालिया गोहैन और बाद में अपने भतीजों चिकन और सरिया के लिए अहोम सिंहासन सुरक्षित करने में विफल रहा था; अब उसने इसे अपने लिए हथियाने का प्रयास किया। उसने फौजदार राशिद खान के दो दूतों से मुलाकात की, जो राजा के साथ मुलाकात के लिए रुके थे और सुझाव दिया कि यदि उस अधिकारी ने उन्हें समर्थन दिया, तो वह चक्रध्वज सिंह की हत्या कर देगा और सिंहासन पर कब्जा कर लेंगे। राशिद खान को इस प्रस्ताव के बारे में विधिवत सूचित किया गया, जिसने 05 दिसंबर, 1663 को लिखे जवाब में, "हमारे घोड़े, नावें, सैनिक और अन्य आवश्यक युद्ध सामग्री" तुरंत भेजने का वचन दिया।(54)

खामुन के कपटी मंसूबों का पर्दाफाश हो गया और लालुब ढोलकशारिया बरुआ, सनातन कटकी, गनक बरुआ और राम ब्राह्मण द्वारा उपलब्ध कराए गए सबूतों के आधार पर उसके साथी साजिशकर्ताओं को पकड़ लिया गया। इनमें उसके भाई लेचाई हरिमुरिया फुकन, और चिकन और सरिया शामिल थे, उन सभी को मार डाला गया। थोड़ी देर बाद कुसुमी और उसकी बहन का भी यही हश्र हुआ, जिन्होंने अपने रिश्तेदारों के मंसूबों के बारे में अनभिज्ञता जताकर सजा से बचने की कोशिश की थी, लेकिन सफलता नहीं मिली| साथ ही जयध्वज सिंह के दत्तक पुत्र कालिया गोहैन का भी यही हश्र हुआ। लेकिन देशद्रोही कार्यों के अकाट्य सबूत प्रस्तुत किए जाने के बाद भी चक्रध्वज सिंह ने खामुन राजमंत्री फुकन पर कार्रवाई करने में संकोच किया, लेकिन खामुन ने प्रतिरक्षा की पेशकश को यह कहते हुए ठुकरा दिया कि चूँकि उनके परिवार के सभी सदस्य मारे गए, इसलिए वह शाखाओं एवं पत्तियों रहित पेड़ की तरह नंगे खड़े रहेंगे।" इसलिए बेहतर होगा कि उसे भी मार दिया जाए। तदनुसार, खामुन और उसके भाई लेचाई की गला घोंटकर हत्या कर दी गई। (55)

फरवरी के अंत तक, पूर्ववर्ती राजमंत्री के परिवार के पूर्ण विनाश के साथ, अहोम सम्राट के रूप में चक्रध्वज सिंह की निरंतरता के लिए सभी खतरे समाप्त हो गए, लालुक बरुआ को साजिश के पर्दाफाश में भूमिका के लिए नाओबैचा फुकन बनाया गया, जबकि अतान बुरागोहैन राजमंत्री बनाया गया।

***

इस बीच, गौहाटी फौजदार के दो दूत, जिन्हें हर समय एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ा था, अधिक अधीर और असभ्य होते जा रहे थे। उन्होंने माँग उठानी शुरू कर दी कि उन्हें वे सभी विशेषाधिकार दिए जाएँ जो शाही दूतों को दिए गए थे और उन्हें तत्काल सुनवाई का अवसर दिया जाए| इस दौरान वे केवल अपनी भुजाएँ जोड़कर और ऊपर उठाकर अहोम राजा को सलामी देंगे। लेकिन उनकी निम्न स्थिति के बारे में खतरनाक ढंग से सुधार किए जाने के बाद, वे केवल फौजदार के दूत थे, मुगल सम्राट के नहीं, इसलिए उन्होंने तुरंत अपना सुर बदल लिया और सलाम द्वारा अभिवादन करने के लिए सहमत हो गए। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे अहोम राजा के प्रति बहुत अच्छे नहीं थे और यह उनके स्वामी को वापस की गई उनकी सूचना में परिलक्षित हुआ। धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से अहोम नेतृत्व और मुगलों के नेतृत्व के बीच संघर्ष विकसित हो रहा था और युद्ध के नगाड़े बजने में ज्यादा समय नहीं था।

सितंबर 1664 में अहोम स्वर्गदेव के दो कटकी, चंद्र कंडाली और सनातन, जिन्हें दिल्ली भेज दिया गया था, वापस लौट आए। उन्होंने बताया कि उन्हें सम्राट से मिलने का मौका दिया गया था, जिन्होंने प्रतिज्ञा की कि घिलाझरीघाट संधि द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक मुगलों के कब्जे वाली पूरी भूमि अहोमों को वापस कर दी जाएगी। उन्होंने इस आशय का न तो कोई पत्र भेजा और न ही इसे संप्रेषित करने के लिए उकील, बल्कि दो असमिया दूतों को ढाका की यात्रा करने और वहाँ के नवाब शाइस्ता खान से मिलने का निर्देश दिया, जो उन्हें अहोम राजा को शब्दों में जवाब देंगे।

लेकिन, ढाका में शाइस्ता खान का जवाब था कि विचाराधीन क्षेत्र वास्तव में कोचों के थे, इसलिए इन्हें वापस करने का सवाल ही नहीं उठता। अहोमों को उत्तरी तट पर भराली नदी और दक्षिण में कजली की सीमा-रेखा से संतुष्ट रहना चाहिए। एक दूत, पंडितराय, यह संदेश लेकर आए थे, लेकिन चक्रध्वज सिंह ने उन्हें जल्दी से वापस भेज दिया, उन्होंने उसके साथ एक औपचारिक पत्र भेजने की भी जहमत नहीं उठाई।

तब तक नए अहोम राजा का उत्साही स्वभाव उन असमिया लोगों, जिनका वह प्रतिनिधित्व करता था, के बार-बार होने वाले अपमान और मुगलों द्वारा उसे दी जा रही अधीनस्थ स्थिति के कारण

असहनीय हो चुका था। अब उन्होंने अपने तीन सबसे वरिष्ठ मंत्रियों, बाघरिया अतान बुरागोहैन, बाघचोवाल बारपात्रा गोहैन और बरुकियाल लांगी बरगोहैन के साथ बैठक की और उन्हें इस प्रकार संबोधित किया : "विदेशियों की अधीनता के जीवन से मृत्यु बेहतर है। मुझे सिले हुए वस्त्रों के लिए अपनी स्वतंत्रता का समर्पण करना होगा! मेरे पूर्वज कभी किसी अन्य व्यक्ति के अधीन नहीं रहे, और मैं स्वयं मुगलों की अधीनता में नहीं रह सकता। मैं स्वर्गीय राजा का वंशज हूँ और मैं दुष्ट मुगलों को सम्मान कैसे दे सकता हूँ? आपको उपाय सोचना और अपनाना चाहिए ताकि मैं गौहाटी को हड़पने वाले विदेशियों को खदेड़ने के बाद अपनी चौकी वापस हासिल कर सकूँ।" (56)

चक्रध्वज सिंह तुरंत मुगलों के खिलाफ आगे बढ़ना चाहते थे, लेकिन चतुर अतान बुरागोहैन, जो अपनी बात कहने से कभी नहीं डरते थे, ने समय से पहले कार्रवाई न करने की सलाह दी और एक यादगार भाषण दिया, जो उनकी व्यावहारिक दूरदर्शिता और देशभक्ति की भावना का प्रमाण था।

"यह एक राजा का न्यायसंगत कर्तव्य है," उसने अपने राजा और साथी रईसों से कहा, "अपने दुश्मनों को हराकर और नष्ट करके अपने प्रभुत्व की पुरानी सीमाओं को बहाल करना। युद्ध में उनकी सफलता ही उनकी महिमा और प्रसिद्धि को बढ़ा सकती है। इसलिए महामहिम का प्रस्ताव न्यायसंगत और उचित है। हम प्राचीन काल से पूर्ण और निर्बाध संप्रभुता का आनंद ले रहे हैं, और मुगलों की मनमानी हमारी सहनशीलता की सीमा को पार कर गई है। महामहिम ने तब केवल अपने मंत्रियों की भावनाओं को ही व्यक्त किया है जब उन्होंने घोषणा की कि हमें ऐसा करना चाहिए इसी क्षण मुगलों पर टूट पड़ें। लेकिन हमें सेना को पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री और युद्ध सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए और भंडार में इतना सामान रखना चाहिए कि जैसे ही वे खाली हो जाएँ, हम अभियान सेना के भंडार को फिर से भर सकें। अतिरिक्त सैन्य आपूर्ति का कार्य बार-बार होने वाला मामला बन जाएगा।

"मीर जुमला के साथ पिछले युद्ध के दौरान ग्रामीणों के अपने घरों से भागने के कारण देश निर्जन हो गया है। महामहिम ने हाल ही में उनकी देश वापसी कराई है और उन्हें अलग-अलग स्थानों पर बसाया है। हमें यह पता लगाना होगा कि क्या वे लोग अपना चावल और भोजन

प्राप्त करने में सक्षम हैं। चावल जीवन की सभी आवश्यकताओं में सबसे अपरिहार्य है; और यदि यह विफल हो गया, तो कुछ भी सफल नहीं होगा। जिन अधिकारियों को नावों, नाविकों और रसद के आवंटित कोटे की आपूर्ति करनी है, वे अब महामहिम द्वारा की जा रही पूछताछ पर जोर देकर कहेंगे कि उन्होंने सभी उपकरण तैयार कर लिए हैं, और जब भी उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता होगी, वे उन्हें वितरित करने में सक्षम होंगे। हो सकता है कि जब हमें उनकी सख़्त ज़रूरत हो तब वे ऐसा करने में असफल रहें और कुछ भी हासिल नहीं होगा, भले ही हम असफल अधिकारियों को मार दें या उन्हें दंडित करें। नौकाओं और साजो-सामान की उपलब्धता में विफलता से हमें गंभीर आपदा झेलनी पड़ेगी। जब तक हमारे भंडार में पर्याप्त अतिरिक्त सामान न हो जाए, तब तक वर्तमान स्थिति में युद्ध को दो या तीन वर्ष तक लम्बा खींचना पड़े तो क्या हम उस स्थिति का सामना कर सकेंगे? हमें अभी आवश्यक कदम उठाने चाहिए और भविष्य की सभी आकस्मिकताओं के लिए व्यवस्था करनी चाहिए। आपूर्ति की विफलता की स्थिति में यातना या मृत्यु भी हमें किसी आपातस्थिति से निपटने में मदद नहीं करेगी।

"'कारिपाइक' या महामहिम की विनम्र प्रजा, अपने मोटे चावल को उबालने के लिए दो कौड़ियों की मामूली कीमत पर मिट्टी का बरतन खरीदती है। ऐसा न हो कि चावल और बरतन, जिसका कुल मूल्य, किसी भी स्थिति में, बीस कौड़ी या एक पैसे से अधिक न हो, खराब हो जाए। वह खरीदारी करने से पहले दो या तीन बार नीचे और किनारों पर उंगलियों से मारकर बरतन की मजबूती का परीक्षण करता है।

"एक पक्षी ऊँचाई पर घोंसला बनाता है जहाँ वह अपने बच्चों को जीवित रखने के लिए उनका पालन-पोषण करता है। जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं तो वह उन्हें एक शाखा से दूसरी शाखा तक ले जाता है। जब वे उड़ने में सक्षम हो जाते हैं तो उन्हें जमीन पर ले जाता है। यदि उन्हें पूर्ण विकसित होने से पहले ही छोड़ दिया जाए तो कुत्ते और सियार उन्हें खा जाते हैं। मातृ पक्षी उन्हें तभी छोड़ती है जब वे अपना भोजन स्वयं उठाकर खा सकते हैं।

"इसी प्रकार, जब महामहिम की नौका के मध्य और दो छोरों पर तैनात नाविकों के तीन जत्थे एक साथ अपने चप्पुओं को मारते हैं, तो दृश्य देखने में सुंदर हो जाता है, नाविकों को प्रेरणा मिलती है, नाव तेजी

से चलती है, और कर्णधार नाव चलाता है आसानी और आराम के साथ स्टीयरिंग। लेकिन, दूसरी ओर, अगर नाविकों के तीन बैचों के स्ट्रोक में कोई सामंजस्य और समकालिकता नहीं है, तो कर्णधार को शाफ्ट चलाने में असुविधा होती है, नाव आगे नहीं बढ़ पाती है और दर्शक खुश होने से कोसों दूर हो जाते हैं।

"यदि राजा अपने उपायों को ऊपर बताई गई तर्ज पर निर्देशित करेगा, केवल तभी वह अपने शत्रुओं को परास्त कर पाएगा और अपने क्षेत्रों को पुरानी सीमाओं तक बढ़ा पाएगा।" (57)

स्वर्गदेव चक्रध्वज सिंह चतुर व्यक्ति थे और उन्होंने तुरंत अतान के शब्दों की समझदारी को समझ लिया। निश्चित रूप से, जब उन्होंने शस्त्रागार के प्रभारी अधिकारी जयानंद ताम डोलोई से पूछा कि शाही शस्त्रागार में युद्ध सामग्री की मात्रा कितनी है, तो उन्हें जवाब मिला कि बड़ी मात्रा में उपयोग के लिए उपलब्ध है। लेकिन, थोड़ी देर बाद, डोलोई ने सम्राट से उनके आंतरिक गर्भगृह में मुलाकात की और उन्हें सूचित किया कि उन्होंने राज्य की स्थिति के बारे में सच नहीं बोला है। "हमारे पास बारूद की एक भी पेटी नहीं है। जहाँ तक गोलियों और छर्रों का संबंध है, हमारे पास चार पेटियाँ भी नहीं हैं, न ही हमारे पास तीरों का एक भी ढेर है। जैसा कि महामहिम ने दरबार में भरी सभा में सबकी उपस्थिति में मुझसे प्रश्न पूछा था, इसलिए मैंने जान-बूझकर उत्साहजनक यद्यपि भ्रामक रिपोर्ट प्रस्तुत की, क्योंकि इसके विपरीत जवाब हमारे अपने लोगों को हतोत्साहित करेगा और हमारे शत्रुओं के दिलों को प्रसन्न करेगा।" (58)

यह बिलकुल वैसा ही था जैसा कि उनके प्रधानमंत्री अतान ने अपने संबोधन में तब चेतावनी दी थी जब उन्होंने कहा था कि युद्ध की तैयारी के कार्य में लगाए गए सभी लोग राजा द्वारा पूछताछ किए जाने पर पूर्वाग्रह का सहारा लेंगे। इस प्रकरण ने अतान के शब्दों की व्यावहारिकता की पुष्टि की और इस तर्क को पुष्ट किया कि यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक समय की आवश्यकता है कि तैयारी आधी-अधूरी न रह जाए। चक्रध्वज सिंह ने तत्काल निर्देश दिए कि इन पर तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत है। सबसे महत्वपूर्ण था सैनिकों का प्रशिक्षण, उनका मनोबल बढ़ाना और सेना की दक्षता में सुधार के लिए प्रणाली लागू करना। इसलिए, प्रत्येक रेजिमेंट को दो भागों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक में 500 सैनिक थे, जिनका नेतृत्व सक्षम अधिकारी करते थे

और आसन्न कार्यों के लिए आवश्यकतानुसार सुसज्जित थे। चूँकि सैनिक पाइक थे और पेशेवर लड़ाके नहीं थे, इसलिए यह जरूरी था कि उन्हें पूरी तरह से प्रशिक्षित किया जाए, और भर्ती किए गए नए लोगों का अवलोकन राजा ने स्वयं किया, हाथ में छड़ी लेकर, उनके प्रशिक्षण को देखा और निर्देशित किया, और समय-समय पर उनमें राष्ट्रवादी भावना जगाने के लिए जोशीले भाषण दिए।

उन्होंने तुरंत ही कुछ रंगरूटों की क्षमता का अंदाजा लगा लिया और उन्हें अधिक जिम्मेदारी वाले उच्च पद पर पदोन्नति देकर पुरस्कृत किया, जिससे उनका आत्म-गौरव बढ़ा। अतान और अन्य मंत्रियों की सहायता से, उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से अपने क्षेत्र का दौरा किया कि किसान अपनी भूमि पर अधिक-से-अधिक दूर तक खेती कर रहे हैं ताकि वे न केवल सेना के लिए सामान्य भोजन उपलब्ध करा सकें, बल्कि आपातकालीन आपूर्ति और भंडार के लिए सुरक्षित करने की भी व्यवस्था कर सकें। इसके साथ ही, हथियारों और बंदूकों का उत्पादन तत्काल आवश्यकता के स्तर तक बढ़ा दिया गया| बारूद, तोप के गोले आदि के अधिशेष को इस उद्देश्य के लिए बनाए गए गोलाघरों या शस्त्रागारों में संगृहीत किया गया।

शक्तिशाली नौसेना का निर्माण उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि थल सेना का प्रशिक्षण। सुकाफा के नेतृत्व में शान का समूह मूल रूप से मुंगमऊ से आया था, भूमि से घिरे क्षेत्र से होने के कारण वह समूह नाव बनाने या चप्पू चलाने के बारे में ज्यादा नहीं जानता था। फिर भी, थोड़े समय में घाटी में नावों के महत्व को महसूस करते हुए, जहाँ नदियों की इतनी अधिक सघनता थी, उन्होंने चुटिया जैसी जनजातियों से आवश्यक शिल्प सीखा, जो विशेषज्ञ नाव-निर्माता और मल्लाह थे। जब स्वर्गदेव सुहंगमुंग सिंहासन पर बैठे, तब तक अहोम लोगों ने नावें, विशेषकर युद्ध-नावें बनाने की कला में महारत हासिल कर ली थी, और नदी-लड़ाई में निपुण बड़ी नौसेना का निर्माण कर लिया था, जो पूरी तरह आवश्यक थी। पूरे अहोम साम्राज्य में विभिन्न नौसाल या नाव बनाने वाले गोदीघर स्थापित किए गए थे, जबकि नदी-योद्धाओं को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण केंद्र भी थे। युद्ध की तैयारियों के हिस्से के रूप में, नौसाल अहोम साम्राज्य के भीतर, राजधानी गढ़गाँव के पास, साथ ही माजुली और सादिया जैसे अन्य स्थानों पर, युद्ध के लिए युद्ध नौकाओं और पुरुषों के परिवहन के लिए जहाजों के निर्माण में पूरे समय लगे रहे।

असमिया नाव-निर्माता चंबल की लकड़ी के फट्टों को जोड़कर जटिल डिजाइन के आसानी से चलने योग्य जहाज बनाने में सक्षम थे, उनके दोनों सिरे पानी के स्तर से बहुत ऊँचे उठे रहते थे।

"लाख और मधुमक्खी-मोम का उपयोग तख्तों के बीच के अंतराल को ढकने के लिए किया जाता था, साथ ही अपातानी पहाड़ी-जनजातियों से खरीदे गए विशेष राल का भी उपयोग किया जाता था, जिसे मैदानी लोगों में अहोम-एथा (ड्रायमिकार्पस्नेसेमोसा) के रूप में जाना जाता था। ऐसा कहा जाता है कि अहोम-एथा को कभी खोला नहीं जा सकता था और उससे जहाज जलरोधी कोटिंग प्रदान की जाती थी... चार प्रकार के जहाजों का निर्माण किया जाता था-युद्ध-पोत, व्यापारिक जहाज, यात्री-जहाज और रेसिंग-जहाज| प्रत्येक की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ थीं... धनुष पर लगी तोपों के साथ हिलोईचोरांडोस युद्ध-पोतों का आविष्कार सबसे पहले चुटिया ने किया था...... गोचनाओ नौसैनिक युद्धों में नियोजित विशाल, आलीशान जहाज थे। युद्ध में उपयोग की जाने वाली अन्य नावें भरिनाओ, गेरापनाओ, सुलुपनाओ (बड़ी और तेज़ युद्ध नौका), गारामिनाओ आदि थीं।"(59)

शुरुआती दिनों में अहोमों के पास केवल नाओबोइचा फुकन के अधीन नागरिक उद्देश्यों के लिए छोटी नौसेना थी। लेकिन जैसे-जैसे राज्य का विस्तार हुआ, कोचों और मुगलों जैसे दुर्जेय शत्रुओं के साथ संघर्ष शुरू होने के कारण नौसेना की सैन्य इकाइयों की निगरानी के लिए 'पानी फुकन' नामक एडमिरल के तहत अलग सैन्य नौसेना बनानी पड़ी। उनके नीचे बार निओग्स थे जिन्होंने छोटी नौसैनिक इकाइयों की कमान संभाली थी। इन इकाइयों का प्रशिक्षण सेना की तरह ही कठोर था, जिससे आने वाले दिनों में लाचित बरफुकन के नेतृत्व में असमिया सेना को अच्छी स्थिति में खड़ा किया जा सका।

"मुगलों के खिलाफ अभियान शुरू करने से पहले, अहोमों को दीर्घकालिक युद्ध के लिए व्यवस्था करने की आवश्यकता का एहसास हुआ, जैसा कि हम प्रधानमंत्री अतान बुरागोहैन के भाषण से सीखते हैं। बुरागोहैन ने नावों, नाविकों और साजो-सामान की आवश्यकता को ध्यान में रखा। प्रधानमंत्री ने राजा चक्रध्वज सिंह और सलाहकारों से कहा, 'नावों और रसदों की अंततः विफलता में, गंभीर आपदा का सामना करना पड़ेगा। जब तक हमारे पास वर्तमान में भंडार में पर्याप्त अधिशेष नहीं है, अगर युद्ध हुआ और दो या तीन वर्ष तक खिंचा तो हम स्थिति

का सामना कैसे करेंगे? हमें अभी आवश्यक कदम उठाने चाहिए और भविष्य की सभी आकस्मिकताओं की व्यवस्था करनी चाहिए। "अहोम के पास ऐसी व्यावहारिक दूरदर्शिता थी कि वे युद्ध की सभी घटनाओं का अनुमान लगाने में सक्षम थे, वे युद्ध की तैयारी के उद्देश्य से देश के विशाल संसाधनों का उपयोग करने में असफल नहीं हुए।" (60) जाहिर है कि बड़े पैमाने पर नौकाओं का निर्माण और लोगों को नाविकों का प्रशिक्षण युद्ध की तैयारियों का महत्वपूर्ण पहलू था।

चक्रध्वज सिंह ने अपने पड़ोसियों, चाहे वह छोटा और महत्वहीन हो, को लुभाने की अपने पूर्ववर्ती जयध्वज सिंह द्वारा अपनाई गई रणनीति को बुद्धिमानी से आगे बढ़ाया, ताकि संघर्ष की स्थिति में उनकी सहायता सुनिश्चित की जा सके या उनमें से कुछ को मुगलों की सहायता करने से रोका जा सके जैसा कि उन्होंने मीर जुमला के आक्रमण के दौरान किया था। अहोम राजा ने एक पत्र के साथ प्राणनारायण को दूत के रूप में भेजा जिसमें लिखा था : "आप स्वयं जानते हैं कि हमने मुगलों पर किस तरह से भारी प्रहार किया है। यदि भगवान ने इस अवसर पर हमारे साथ उलटफेर किया, यदि ऐसा फिर होता है तो हमें फिर से असुविधा का सामना करना पड़ेगा?"

प्राणनारायण के पत्र के जवाब में सहयोग की प्रतिज्ञा थी : "जो कुछ हुआ है, वह भाग्य के अपरिहार्य अध्यादेश के माध्यम से हुआ है, जिसके लिए अकेले उसे ही दोषी ठहराया जा सकता है, और कोई भी इसे दूर नहीं कर सकता है। जब भाग्य अनुकूल हो जाता है तो कमजोर व्यक्ति भी सशक्त पर विजय प्राप्त कर सकता है। यदि हम दोनों गठबंधन करें, तो शत्रु को बेहतर लाभ नहीं मिलेगा; दूसरी ओर, भाग्य हम दोनों को प्रतिशोध और बदला लेने का उचित अवसर प्रदान करेगा।" (61)

पत्र व्यवहार जारी रखते हुए चक्रध्वज सिंह ने फिर लिखा : "आपने मौखिक संदेश भेजा है कि शेवा (मराठा राजा शिवाजी) और मुगलों के बीच युद्ध शुरू हो गया है, और शेवा ने मुगलों को हराकर उन्हें बीस दिन गमन की दूरी पर पीछे धकेल दिया है और दाऊद खान का पतन हो गया है, और दिलेर खान घायल हो गया है, और बादशाह दिल्ली से आगरा आ गया है। यह भविष्यवाणी नहीं की जा सकती कि कौन पराजित होता है, और कौन विजयी होता है। आपने हमें अपनी किलेबंदी मजबूत करने और सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए कहा है। यह उचित और उपयुक्त है कि आपको हमें ऐसी मैत्रीपूर्ण एवं उत्साहवर्धक

सलाह देनी चाहिए। क्योंकि मुगलों ने एक बार हमारे सामने असहज स्थिति पैदा कर दी थी, क्या इसका मतलब यह है कि हमें उनकी अधीनता की स्थिति को त्यागने का कोई प्रयास नहीं करना चाहिए? उन्होंने हमें एक बार असहज किया और हमने उन्हें बार-बार गंभीर आघात पहुँचाया है और इस तथ्य से आप पूरी तरह से अवगत हैं| (62)

***

अहोम राजा और उनके लोगों द्वारा बरती गई गोपनीयता प्रभावी साबित हुई। असमियों द्वारा की जा रही आक्रामक तैयारियों से पूरी तरह से अनभिज्ञ, गौहाटी और ढाका में मुगल अधिकारियों ने, जैसा कि उनके पत्राचार में दर्शाया गया है, चक्रध्वज सिंह पर युद्ध क्षतिपूर्ति का पूरा भुगतान करने के लिए दबाव डालना जारी रखा, जिसमें लंबे समय से देरी हो रही थी, लेकिन उन्हें टालमटोल वाले उत्तरों से संतुष्ट रहना पड़ा। जबकि दिलेर खान दाउदजई ने दिल्ली में सम्राट को खुश रखने की सलाह के बारे में राजा को पत्र लिखा। गौहाटी में फौजदार राशिद खान ने अहोम राजा को ढाका में मुगल सूबेदार के साथ पत्र-व्यवहार करने की सलाह दी, जिस पर चक्रध्वज सिंह ने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया : "लेकिन बंगाल के गवर्नर को लिखने की हमारी प्रथा कभी नहीं रही। गौहाटी के फौजदार जब भी अवसर होते हैं, मेरी सरकार को लिखते हैं और मेरे मंत्री उसका उत्तर भेजते हैं। हमारी इच्छा है कि अब भी उसी प्रक्रिया का पालन किया जाए।" (63)

जाहिर तौर पर, गौहाटी फौजदार को अहंकारी श्रेष्ठता का स्पष्ट प्रदर्शन करते हुए, अहोमों से सीधे "अनुरोध" करने की आदत थी, जिससे चक्रध्वज सिंह क्रोधित हो गए| उन्होंने अत्यधिक संयम बनाए रखा और अपेक्षाकृत विनम्र शब्दों में जवाब दिए। उदाहरण के लिए, राशिद खान ने एक बार अतान बुरागोहैन से चालीस या पैंतालीस हाथ लंबी कुछ नावें भेजने के लिए कहा, जिसका उपयोग आनंद शिकार के लिए किया जा सके। बुरागोहैन ने चतुराई से जवाब दिया : "जहाँ तक नावों के लिए आपके अनुरोध का सवाल है, मैंने उनकी तलाश की है। लेकिन मुझे खेद है कि मुझे आवश्यक माप की कोई भी नाव नहीं मिल सकी। अगर मुझे ऐसी नावें मिलती हैं, तो उन्हें आपके पास भेज दिया जाएगा।" फिर भी बुरागोहैन अपने आंतरिक रोष को छुपा नहीं सका, जो शायद इस गूढ़ वाक्यांश की व्याख्या करता है, जो लगभग धमकी के बराबर है, "क्या तुम्हें लगता है कि एक नाव तुमसे अधिक कीमती है?" जिसके साथ संदेश समाप्त हो गया! (64)

एक अन्य अवसर पर राशिद खान ने बुरागोहैन से कहा कि अहोमों से प्राप्त धन और हाथियों की एक सूची तैयार करने और अभी तक प्राप्त होने वाली राशि और संख्या की गणना करने में उसकी मदद करने के लिए एक काकती या लेखाकार भेजा जाए। बुरागोहैन का उत्तर, हमेशा की तरह, टालमटोल वाला था : "हमने जो कुछ भी भेजा है, उसका उचित लेखा-जोखा हमने यहाँ रखा है और आपने जो प्राप्त किया है, उसके संबंध में आपने भी ऐसा ही किया होगा। हमने आपको हाथियों और धन के रूप में जो दिया है, केवल इस कारण से कि हमारे चार बेटे बंधक के रूप में आपके पास हैं। क्या आपको कभी संदेह हो सकता है कि आपको शेष राशि नहीं मिलेगी?" (65)

क्षतिपूर्ति की शेष राशि के शीघ्र भुगतान के लिए राशिद खान की माँगें लगातार जारी रहीं, इन पत्रों का स्वरूप तेजी से शत्रुतापूर्ण होता गया। यद्यपि चक्रध्वज सिंह का धैर्य कमजोर हो रहा था, इसलिए अतान बुरगोहैन ने ही उत्तर भेजने की जिम्मेदारी संभाली, जिनमें देरी के "कारणों" के बारे में अहोम की स्थिति को दोहराया गया था : " हमारे देश में हाल ही में हुई तबाही की सीमा आप अच्छी तरह से जानते हैं। यही कारण है कि हम आपको हाथियों और धन की पूरी पूर्ति नहीं कर सके हैं। हमने आपको पहले ही बड़ा हिस्सा दे दिया है, और हम शेष की आपूर्ति करेंगे। क्या आपको लगता है कि हमने जान-बूझकर क्षतिपूर्ति का भुगतान वापस ले लिया है? आने वाली सर्दी में जब हम हाथियों को पकड़ेंगे और जब उनके परिवहन के लिए सड़कें सूखी हो जाएँगी, तो हम हाथियों को भेजेंगे। जहाँ तक धन की शेष राशि का संबंध है, हमारे पास अब देने के लिए पैसे नहीं हैं। हमने अपने चार बेटों को आपके पास रखा है और नवाब जानते हैं कि पिता अपने बच्चों के प्रति कितना स्नेह रखता है।" (66)

पत्रों के नियमित आदान-प्रदान के बीच, तनाव के क्षण भी आए| उदाहरण के लिए, जब राशिद खान ने असमिया सैनिकों पर तीन मुगलों की हत्या का आरोप लगाया। जाहिर है, चूँकि हत्यएं मुग़ल क्षेत्र में हुई थीं, इसलिए असमिया सैनिकों को इसका दोषी नहीं ठहराया जा सकता और आरोप केवल डराने वाली चाल थी। हमेशा की तरह, बुरगोहैन का जवाब विनम्र, उचित स्वर में था : "आपने कुछ हत्याओं का संदर्भ दिया है, लेकिन हमारे लिए इस तरह के अनियंत्रित नरसंहार में शामिल होना कैसे और किस उद्देश्य से संभव है, जब हमने अपने चार

बेटों, दो उकील और एक बरमुदोई आपकी देखभाल और संरक्षण में रखे हैं? मैं आपसे इस घटना को नजरअंदाज करने के लिए कहूँगा। आपने अपनी पूर्वी सीमा भराली नदी पर तय की है, और यह घटना इस प्रकार आपके अधिकार क्षेत्र में हुई है और हमें कैसे पता चलेगा कि हत्यारा कौन है और हत्या किसकी हुई है? यह उचित नहीं है कि आप हमें अपने क्षेत्र के अंदर हत्याओं के लिए जिम्मेदार ठहराएँ। यदि यह पता चलता है कि हमारी प्रजा ने अपराध किया है तो हम अपराधियों को आपके हवाले कर देंगे और आप उनके सिर काट सकते हैं। यदि अपराध को हमारी प्रजा के दरवाजे पर नहीं डाला जा सकता, तो हम क्या करें?" (67)

ऐसा प्रतीत होता है कि तब तक गौहाटी के फौजदार को असमियों की टालमटोल की रणनीति समझ आ गई थी और उसने अब बंधकों को ढाका ले जाने की धमकी दी, जहाँ शायद उन्हें कम सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार मिलेगा। इस योजना को मुगल फौजदार के राजपूत अधिकारी ने शुरुआत में ही विफल कर दिया था, जिसने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके राशिद खान को अपनी योजना बंद करने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने असम के कुलीनों के बेटों को अपनी देखभाल और संरक्षण में ले लिया, और अतान बुरगोहैन को आश्वस्त पत्र भेजा : "उन्होंने आपके चार बेटों को ढाका ले जाने की योजना बनाई थी, लेकिन मैं उन्हें अपने स्थान पर रखने में सफल रहा। वे यहाँ उसी खुशी और आराम के साथ आनंद से रह रहे हैं जो उन्हें अपने घरों में मिलता था। आपको उनके कारण कोई चिंता नहीं करनी चाहिए।" (68)

गीदड़ भभकी और धमकियों के बावजूद राशिद खान में असमिया को धोखा देने और कोई दंडात्मक कार्रवाई करने का साहस नहीं था, जिसके कारण अंततः मार्च 1667 में उसके स्थान पर सैयद फ़िरोज़ खान को नियुक्त किया गया, जो सख्त सामग्री से बने प्रतीत होते थे। 1667 की शुरुआत में उसने एक बार फिर कड़े शब्दों में पत्र भेजा जिसमें युद्ध क्षतिपूर्ति की शेष राशि के तत्काल भुगतान की माँग की गई। तब तक यह स्पष्ट नहीं था कि ठीक कितनी राशि बची है। केवल एक बुरंजिस में राशि की मात्रा का उल्लेख है, लेकिन कुछ हद तक अस्पष्ट तरीके से। समस्या इस तथ्य से उत्पन्न हुई प्रतीत होती है कि अहोम खजाने में सोने और चाँदी की कमी हो गई थी, या बुरगोहैन जैसे रईसों ने ऐसा दावा किया था और पैसे के बजाय हाथी भेजे गए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें से प्रत्येक का मूल्य 2000 रुपये था, जिससे यह प्रतीत

होता है कि असमियों पर अभी मुगलों के लगभग 1,12,000 रुपये बकाया थे ! (69)

मुगलों के विरुद्ध अपना जवाबी अभियान तुरंत शुरू करने के चक्रध्वज सिंह के दृढ़ संकल्प को फिरोज खान द्वारा अपनाए गए ढीठ और कृपालु लहजे से और भी मजबूती मिली। आखिरी तिनका मुगल फौजदार की ओर से सबसे अपमानजनक माँग साबित हुई| वह चाहता था कि अतान बुरगोहैन उसके पास असम से कुछ युवतियों को भेजे, जिनकी सुंदरता के बारे में उसने अपने पूर्ववर्ती राशिद खान से बहुत सुना था, जो ऐसा लगता है कि कुछ असमिया लड़कियों को अन्य माध्यमों से गुप्त रूप से प्राप्त कर रहा था।(70)

जाहिर तौर पर, इस माँग के बारे में अप्रत्यक्ष रूप से फिरोज खान के राजस्व एजेंट भोलानाथ कानूनगो ने बताया था। जून 1667 में कानूनगो ने दो असमिया प्रतिनिधियों माधबचरण कटकी और पूर्णानंद कटकी को इस माँग के बारे में लिखा : "आपको सैयद जाफ़र उकील के साथ शेष हाथियों के साथ आना चाहिए और मामले में कोई देरी नहीं होनी चाहिए। अपने गोहैन्स को सूचित करने के बाद आप अपने साथ हमारे नवाब साहब के लिए दो-तीन सुंदर लड़कियाँ लेकर आएँ। जब आप लड़कियों को लेकर यहाँ आएँगे तो हमारे साहब बहुत प्रसन्न होंगे और आपको हमारे साहब से उचित इनाम मिलेगा। हमारे साहब ने हमसे यह अनुरोध करने के लिए कहा है और इसलिए हमने आपको लिखा है। इस मामले में कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए और जब आप यहाँ आएँ तो लड़कियों को अपने साथ लाएँ ।" (71)

क्या मुगल मातहत को असमिया सरदार से ऐसी अशोभनीय माँग करने का साहस है? यह अभूतपूर्व माँग थी, जो किसी भी मुगल ने किसी अन्य गैर-मुगल शासक से नहीं की थी! यह असमियों के संबंध में मुगलों के हीन आकलन का संकेत था! जब चक्रध्वज सिंह ने यह बात सुनी तो वे क्रोध से भर गए और इस बात का पता चलने पर उसके सरदार भी खुद पर काबू नहीं सके। अहोम राजा ने निचले असम को वापस हासिल करने के उद्देश्य से अपनी सेना को तत्काल भेजने का आदेश दिया।

आख़िरकार, वह समय आ गया! अतान बुरगोहैन के नेतृत्व में रईस ऐसी स्थिति के लिए दो वर्षों से तैयारी कर रहे थे। स्वेच्छा से सेना में शामिल होने के लिए आए पाइक्स को उनके परिवारों के लिए उपहार

दिए गए। अनुभवी सैनिक, राजा के साथ-साथ रईसों की सीधी निगरानी में, नए रंगरूटों को तीर चलाने और युद्ध के अन्य हथियारों को चलाने की सही विधि के बारे में सिखा रहे थे। ज़मीनी लड़ाई की तैयारी के अलावा, असमियों ने कई युद्ध-पोतों का निर्माण किया जिन पर तोपें लगाई जा सकती थीं, साथ ही साधारण नावों का बड़ा बेड़ा भी बनाया जो सैनिकों, भोजन और युद्ध सामग्री को ले जा सकता था। सेना को व्यवस्थित रूप से कुल 1000 सैनिकों की दो खंडों की बटालियन में विभाजित किया गया था जिसकी कमान हजारिका के पास थी जिसके अधीन सैकिया और बोरा जैसे कनिष्ठ अधिकारी थे| 6000 की बड़ी इकाई की कमान फुकन के पास थी। सम्राट के सामने परेड आयोजित की गई ताकि उन्हें संतुष्ट किया जा सके कि तैयारियाँ वास्तव में पूरी थीं।

फिर सबसे महत्वपूर्ण निर्णय आया, विशाल सेना का नेतृत्व कौन करेगा? आगे के उद्देश्य के लिए असाधारण मार्शल कौशल रखने वाला असाधारण व्यक्ति होना चाहिए। सबसे बढ़कर उसे ऐसा व्यक्ति बनना होगा जो सैनिकों में देशभक्ति की भावना जगा सके और उन्हें अपनी मातृभूमि की सेवा में अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए प्रेरित कर सके। शक्तिशाली योद्धा होने के अलावा उसे सक्षम प्रशासक भी होना चाहिए, क्योंकि अभियान समाप्त होने के बाद उसे प्रशासनिक कार्य भी सौंपे जाएँगे।

चक्रध्वज सिंह ने अपने सरदारों, दरबारी ज्योतिषियों और ब्राह्मण तथा देवधाई पुजारियों से परामर्श करके पहले ही ऐसे व्यक्ति का चयन कर लिया था। वह कोई और नहीं, बल्कि असम के शूरवीर लाचित बरफुकन थे!

महावीर का आगमन

लाचित बरफुकन के पूर्ववृत्त के बारे में बहुत कम दस्तावेजी जानकारी है, जैसा कि प्रसिद्ध इतिहासकार-जीवनीकार डॉ. सूर्य कुमार भुइयाँ ने अपनी पुस्तक "'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स'" में स्वीकार किया है। इसका कारण यह था कि इस राजवंश के इतिहासकार अहोम बुरंजिस पर निर्भर हैं और बुरंजिस राजशाही-केंद्रित थे, इस प्रकार व्यक्तियों का संदर्भ केवल तभी दिया जाता था जब ये राजा के किसी कार्य से संबंधित होते थे। इसमें कोई संदेह नहीं है, कुछ कुलीन परिवारों ने वैयक्तिक बुरांजी बनाए रखे, लेकिन ये लाचित के पूर्ववृत्त के बारे में कोई अंतर्दृष्टि प्रदान नहीं करते हैं। जाहिर तौर पर, शाही नियुक्तियों के बाद ही बुरंजिस में उनका उल्लेख मिलता है, और तब प्रसिद्धि और महिमा के लिए उनके मार्ग का पता लगाना संभव हो पाता है।

"इतिहासकारों को असंबद्ध व्यक्तिगत विवरणों को कोई भी प्रमुखता देने की सख्त मनाही थी, जैसा कि हम शासकों के इतिहास का पालन करने के लिए एक अहोम पंडित को नियुक्त करने के समय राजा शिव सिंह द्वारा जारी निषेधाज्ञा से सीखते हैं-'इतिहास में केवल स्वर्गदेवों के नाम और लेन-देन होने चाहिए।' (72) यह सीमा निंदनीय है क्योंकि हमारे पास असम के संतों और धार्मिक उपदेशकों की व्यक्तिगत जीवनियाँ प्रचुर मात्रा में हैं, और यदि ऐसे संकलनों को देश के प्रशासन द्वारा

अनुमोदित किया गया होता तो राजनीतिक जीवनियाँ अधिक संख्या में संकलित की गई होतीं। ऐसी जीवनियों ने हमें आंतरिक मन की कार्यप्रणाली को उजागर करने वाली अंतरंग झलकियाँ और स्पर्श प्रदान किए हैं, जिससे हम इतिहास की प्रमुख हस्तियों के चरित्र का सटीक अनुमान लगाने में सक्षम हुए हैं।" (73)

लाचित को महान योद्धा-राजनेता मोमाई तमुली बारबरुआ के सबसे छोटे पुत्र के रूप में जाना जाता है, जो अहोम राजा प्रताप सिंह (1603-1641) के शासनकाल के दौरान प्रसिद्ध हुए और सम्राट जहांगीर एवं शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान मुगलों पर आक्रमण के अभियान का नेतृत्व किया। लेकिन 1667 में चक्रध्वज सिंह द्वारा बरफुकन के रूप में नियुक्त किए जाने से पहले लाचित के जीवन के अधिकांश तथ्य काल्पनिक हैं, या असमिया लोक कथाओं के उपाख्यानों पर आधारित हैं।

मोमाई तमुली बारबरुआ का अहोम राजा प्रताप सिंह के दरबार में प्रतिष्ठित पदों पर पहुँचना अहोम इतिहास में सबसे अजीब और सबसे आकर्षक घटनाओं में से एक है। "मोमाई तामुली जीवन में साधारण स्थिति से उठकर बारबरुआ के कार्यालय तक पहुँचे थे, जिसमें मुख्य कार्यकारी अधिकारी और देश के मुख्य न्यायाधीश के कार्यों को शामिल किया गया था। सुकुति को इतिहास में मोमाई तामुली के नाम से बेहतर जाना जाता है| वह पहले साधारण दास थे जिन्होंने चार रुपये की राशि के लिए अपने भतीजे के अधीन काम करने का वचन दिया। एक दिन, वह चराइदेव में अहोम क़ब्रिस्तान की ओर जाने वाली सड़क के किनारे खेत में कुदाल से काम कर रहा था और बारिश के पानी को संगृहीत करने के लिए मेड़ बना रहा था। भांजा उसे 'मोमाई' कहता था, जिस शब्द से असम में मामा को संबोधित किया जाता है और सुकुति को इलाके के लोगों के बीच 'मोमाई' के नाम से जाना जाता था। अहोम राजा स्वर्गदेव प्रताप सिंह (1603-1641) उस सड़क से गुजर रहे थे। मोमाई काम पर था और धान के खेत में मोमाई के संचालन की सूक्ष्मता से राजा प्रसन्न हुए। उसकी योग्यता पर राजा की गहरी नजर थी| उन्होंने सुकुति को भानजे के प्रति उनके दायित्वों से मुक्त कर दिया और उसे पहले टिपामिया राजखोवा के रूप में नियुक्त किया और बाद में बार्टामुली या शाही उद्यानों का अधीक्षक बनाया। बारबरुआ नियुक्त होने तक मोमाई तमुली एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय तक पहुँचते रहे... उन्होंने 1639 में अल्लाह यार खान के साथ प्रसिद्ध संधि को लागू करने में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो आने वाले दशकों के लिए अहोम-मुगल संबंधों का आधार थी। उनकी दूरदर्शिता और साहस राजा प्रताप सिंह के लिए बहुत बड़ी पूँजी थी।" (74)

मोमाई तामुली सौंपे गए कर्तव्यों के प्रति गहन निष्ठा और समर्पण रखने वाला व्यक्ति था, मोमाई तामुली पर अहोम प्रशासन और सामाजिक संरचना में तालमेल बिठाने के साथ-साथ अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने के सुधारात्मक उपाय करने की जिम्मेदारी थी। मोमाई तामुली पर अहोम प्रशासन और सामाजिक संरचना को सुव्यवस्थित करने के साथ-साथ अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सुधारात्मक उपाय करने की जिम्मेदारी थी।

लाचित का जन्म कुछ स्रोतों के अनुसार 24 नवंबर, 1622 को हुआ था। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि लाचित को निस्वार्थ देशभक्ति और कर्तव्य के प्रति समर्पण अपने पिता से विरासत में मिला था।

क्षेत्र के प्रमुख अधिकारी का बेटा होने के नाते, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि लाचित अनुकूल वातावरण में बड़ा हुआ और उसने क्षेत्र के अन्य बच्चों की तुलना में कहीं बेहतर औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। उन दिनों उच्च कुलीनों के बीच यह प्रथा थी कि वे अपने बच्चों को ज्ञान प्रदान करने के लिए विद्वान शिक्षकों को नियुक्त करते थे, जो यह सुनिश्चित करते थे कि बच्चे प्रशासन में उच्च पद प्राप्त करने की पारिवारिक परंपरा को जारी रखें। लाचित के मामले में भी बारबरुआ ने ऐसे विद्वान पंडितों को नियुक्त किया होगा जो बालक को अहोम इतिहास और ग्रंथों के साथ-साथ अर्थशास्त्र जैसे हिंदू क्लासिक्स की शिक्षा दे सकें।

कोई यह मान सकता है कि बच्चे को छोटी उम्र से ही कुशल लड़ाकू बनाने के लिए विशेष प्रशिक्षक भी नियुक्त किए गए थे। निर्देशों में मार्शल आर्ट और आमने-सामने की लड़ाई, तीरंदाजी और हेंगडांग चलाने, नौका कौशल आदि में प्रशिक्षण शामिल थे। उतना ही महत्वपूर्ण यह प्रशिक्षण दिया गया कि बंदूक जैसे हथियारों को कैसे संभालना है और युद्ध के बीच में तोपों और उनकी स्थिति से परिचित होना भी उतना ही महत्वपूर्ण था, जिनके ज्ञान से ही भविष्य में उस अभियान में अच्छा प्रदर्शन किया जिसका नेतृत्व करना उनके भाग्य में था। उन दिनों नागरिक और सैन्य कर्तव्यों में कोई अलगाव नहीं था और प्रत्येक

अधिकारी को, चाहे उसका पद कुछ भी हो, जरूरत पड़ने पर राजा की ओर से हथियार उठाने की आवश्यकता होती थी। इसलिए, यदि लाचित जैसे महत्वाकांक्षी व्यक्ति को सफलता की सीढ़ी चढ़नी है तो सैन्य प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक था।

इसके अलावा, कहा जाता है कि लाचित के पूर्वजों ने अहोम राजवंश के संस्थापक, सुकाफा के साथ यात्रा की थी, जब वह मुंगमऊ के शान प्रांत से अहोम साम्राज्य की स्थापना करने के लिए आए थे, जिसकी राजधानी चेरैदाई में थी, और इसलिए उन्होंने अहोम साम्राज्य की मुख्य प्रशासनिक रूपरेखा बनाई। दरअसल, लुखुराखुन कबीला बहुत प्राचीन था जिससे लाचित संबंधित थे। इसलिए उस कबीले के वंशजों के प्रत्येक पुरुष सदस्य में बहुमुखी व्यावसायिकता होनी आवश्यक थी। इस प्रकार, जबकि लाचित को कर्तव्य और निष्ठा की भावना अपने पिता से विरासत में मिली| यह उनके प्रशिक्षक ही थे जिन्होंने उन्हें असाधारण युद्ध कौशल प्रदान किया जो उन्होंने मुगलों के खिलाफ अभियान के दौरान प्रदर्शित किया।

वास्तविक जीवन के सबक भी उतने ही महत्वपूर्ण थे जो उस बुद्धिमान लड़के ने पर्यावरण से सीखे थे। "जहाँ तक लाचित की प्रारंभिक शिक्षा का संबंध है, उनके महानगरीय निवास में उनके पिता के दरबार ने नियमित प्रशिक्षण शिविर और विश्वविद्यालय के रूप में कार्य किया। बारबरुआ के रूप में, मोमाई तामुली के पास अधीनस्थ अधिकारियों और क्लर्कों की सामान्य व्यवस्था थी, जो उनके घर पर राज्य के कामकाज के लेन-देन में निर्णय लेने, राजस्व और न्यायिक शिकायतों, विदेशी दूतों का स्वागत करने और राज्यकला एवं कूटनीति की समस्याओं पर चर्चा करने में सहायता करते थे। उन्होंने सचिवालय, राजा के न्यायाधिकरणों और घरों में कर्तव्यों का आवंटन किया था; लेकिन उनके अपने घर में हमेशा बहुत सारा कारोबार होता था, जिसके परिणामस्वरूप चर्चा और पुष्टि के लिए पूरी कैबिनेट के सामने उपस्थित होना पड़ता था। युवा लाचित ने अपने पिता के आधिकारिक निवास में जो कुछ भी हुआ, उसे देखा और सुना।" (75)

छोटी उम्र से ही बारबरुआ के पुत्र होने के कारण लाचित को महल तक आसानी से पहुँच प्राप्त थी और दरबार में उपस्थित होने के लगातार अवसर मिलते थे। "यह भी दर्ज है कि लाचित को प्रधानमंत्री का स्कार्फ-वाहक बनाया गया था, जो निजी सचिव के बराबर पद था।

इसे हर जगह महत्वाकांक्षी राजनयिक और राजनेता के करियर में पहला कदम माना जाता है। स्कार्फ-वाहक का पहला कर्तव्य उसे अपने स्वामी की सुपारी और महत्वपूर्ण दस्तावेजों का बंडल ले जाना होता था और इस तरह उसे शाही दर्शकों और कैबिनेट बैठक में प्रवेश करने की सुविधा प्राप्त थी जो विशेषाधिकार का मामला था। इस प्रकार लाचित ने अपने पिता के दरबार में जो कुछ भी सीखा था, उसे प्रधानमंत्री और उनके सहयोगियों द्वारा किए गए अधिक महत्वपूर्ण मामलों के ज्ञान से अनुपूरक करने का अवसर मिला था।" (76)

दिलचस्प बात यह है कि उनके महान कारनामों के बावजूद लाचित कैसा दिखता होगा, इसका कोई समकालीन विवरण मौजूद नहीं है, चित्र की तो बात ही छोड़ दें। हमारे पास पुराने बुरांजी में केवल एक क्षणभंगुर संदर्भ है जिसमें लिखा है : "इटाखुली के तल पर लाचित फुकन थे। उनका चेहरा चौड़ा है और अपनी पूरी कला में वे चंद्रमा जैसे दिखते हैं। कोई भी उनके चेहरे को घूरने में सक्षम नहीं है।" (77)

अहोम बुरंजिस में कभी-कभी उनके उल्लेख से पता चलता है कि वह घोरा बरुआ, या शाही अस्तबल के रक्षक और शाही पालकी के पर्यवेक्षक दुलिया बरुआ जैसे निचले स्तर के पदों से ऊपर पहुँचे थे; उन्हें सिमलुगुरिया फुकन जैसे सेना से संबंधित कार्यालयों में भी नियुक्त किया गया था और माना जाता है कि उन्होंने मीर जुमला के खिलाफ अहोम अभियान के दौरान वीरता का प्रदर्शन किया था। समय के साथ वह राजा की नज़र में आ गया और जब चक्रध्वज सिंह ने निचले असम को वापस लेने का फैसला किया जो मुगलों को सौंप दिया गया था, तो उन्होंने लाचित को बरफुकन के रूप में चुना।

"अभियान की सर्वोच्च कमान प्रताप सिंह के समय के प्रतिष्ठित राजनेता और जनरल मोमाई तमुली बारबरुआ के सबसे छोटे बेटे लाचित डेका को सौंपी गई थी, जिन्होंने जहांगीर और शाहजहाँ के अधीन मुगलों से लड़ने में ख्याति अर्जित की थी। लाचित ने दिखौमुख में मीर जुमला के आदमियों से लड़ने और विभिन्न पदों पर रहने के दौरान अपने कौशल और नेतृत्व की शक्ति के प्रमाण दिए थे; उदाहरण के लिए, घोरा बरुआ (शाही घोड़ों के अधीक्षक), दुलिया बरुआ (डोला के अधीक्षक या राजाओं के पालकी-वाहक और शाही पालकी के प्रभारी), सिमालुगुरिया फुकन (लेवी के कमांडेंट आमतौर पर राजधानी के पास सिमालुगुड़ी में तैनात होते हैं) और डोलकाशरिया बरुआ (शाही पालकी पर चलते समय राजा

के साथ जाने वाले सशस्त्र गार्डों के अधीक्षक, और पुलिस कांस्टेबल, वास्तव में आज के पुलिस महानिरीक्षक जितने महत्वपूर्ण)... ..राजा ने विभिन्न तरीकों से उनकी परीक्षा ली और उन्होंने सभी में अपनी योग्यता साबित की। इस प्रकार काफी खोज और उचित परीक्षणों के बाद उनका चयन किया गया और सेना के कमांडर-इन-चीफ और निचले असम में नागरिक प्रशासन का प्रभारी बरफुकन नियुक्त किया गया।" (73)

बेशक, असमिया लोक कथाओं में लाचित की पसंद से संबंधित कई उपाख्यान हैं। उनकी नियुक्ति के समय वह डोलकशरिया बरुआ, या वह अधिकारी था जो राजा की पालकी के बगल में सवारी करता था। ऐसा माना जाता है कि अधिकारी के नेतृत्व कौशल का परीक्षण करने के लिए, राजा ने लाचित से डुलियासोर सेडान-वाहकों को यह निर्देश देने के लिए कहा कि उन्हें विभिन्न संभावित स्थितियों में क्या करना है, जिसे अधिकारी ने इस तरह से पूरा किया जिससे राजा प्रसन्न हुए। इसके बाद राजा ने मुगलों को असम की धरती से बाहर करने की योजना का विषय उठाते हुए पूछा, "दुश्मन हमारे ठीक पड़ोस में है। उनके नेताओं सैयद फिरोज और सैयद सना को पकड़ना कैसे संभव होगा? जिस आदमी को मैं जनरल के रूप में नियुक्त करने जा रहा हूँ, उस व्यक्ति को असामान्य धैर्य, सहनशक्ति और निर्णय की गहराई से संपन्न होना चाहिए।" लाचित का उत्तर था : "क्या ऐसा हो सकता है कि महामहिम के क्षेत्र में कोई योग्य व्यक्ति नहीं है? दुश्मन क्या हैं? वे सभी साधारण नश्वर प्राणी हैं। क्या हमें अपने देश में ऐसे ही व्यक्ति नहीं मिलेंगे? महाराज अपने चरणों की धूल ही प्रदान करें, अवसर के अनुरूप व्यक्ति तुरन्त मिल जायेगा ।" राजा को उत्तर इतना पसंद आया कि ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने तुरंत लाचित को प्रस्तावित अभियान के प्रमुख के रूप में नियुक्त करने का संकल्प कर लिया| ऐसा संकल्प जिसकी जल्द ही रईसों, ज्योतिषियों और पुरोहित सलाहकारों ने पुष्टि की। (79)

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि अहोम कुलीनों के रैंक में कई संभावित कमांडर थे। इसके अलावा, अंतिम रूप से चुने गए व्यक्ति को अतान बुरागोहैन जैसे पात्र-मंत्रियों का सम्मान प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए जो उसके अधीन काम करेंगे, इस प्रकार उन्हें एक पल के लिए नहीं, बल्कि सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श करने के बाद चुना जाना था। असमिया लोक कथाओं में लाचित को औपचारिक रूप से बरफुकन घोषित किए जाने से पहले विभिन्न परीक्षणों का उल्लेख किया गया है।

उदाहरण के लिए, ऐसा कहा जाता है कि जब लाचित चक्रध्वज सिंह के सामने सभा के लिए आए, तो राजा के गुप्त निर्देश पर एक सेवक ने उनकी टोपी छीन ली, जो गंभीर अपमान का कार्य था। इस तथ्य से बेपरवाह कि वह शाही उपस्थिति में था, लाचित ने कथित तौर पर नौकर का पीछा किया और यदि राजा ने हस्तक्षेप नहीं किया होता तो उसने उसका बुरा हाल कर दिया होता! जाहिर तौर पर, राजा, लाचित द्वारा प्रदर्शित अपरिष्कृत साहस से बहुत खुश थे, जिसने उनके दृढ़ संकल्प को मजबूत किया। (80)

"अब आधिकारिक तौर पर बरफुकन को नियुक्त करने का समय आ गया था। लाचित को सोरा के दक्षिणी छोर पर घड़ियाल धोरा स्तंभ (बोरसोरा का मुख्य स्तंभ) के निकट लाया गया। फिर उसने अपने दाहिने हाथ से स्तंभ को छुआ। मजिन्दर बरुआ या राजा के आदेशों को दर्ज करने और उद्घोषणाओं को पढ़ने के प्रभारी अधिकारी ने पत्र को खोला और नियुक्ति के आदेश को पढ़ा। आदेश में उल्लेख किया गया था कि लाचित बरफुकन को सेना के जनरलिसिमो के रूप में नियुक्त किया गया है, और वह निचले असम के नागरिक प्रशासन की देखभाल करेंगे। जैसे ही आदेश पढ़ा गया, लाचित ने स्वर्गदेव की ओर और फिर बोरसोरा में भीड़ की ओर अपने हाथ जोड़े। बरफुकन के बोरपिरा (स्टूल) के बैठने की चटाई बारबरुआ के बगल में रखी गई थी और जो अपने नए रहने वाले की प्रतीक्षा कर रही थी , उसके स्थान पर नई रखी गई थी। स्वर्गदेव ने उपहार लाने के लिए लिगिरा को इशारा किया।

"लिगिरा जल्द ही पीतल की ट्रे के साथ अंदर आया। उस पर एक हेंगडांग था, उसका ब्लेड चंद्रमा की तरह चमक रहा था और उसकी पकड़ सोने से बनी थी। दूसरा लिगिरा बरफुकन के पारंपरिक साज-सामान लेकर आया। स्वर्गदेव अपने सिंहासन से उतरे, उन्होंने लाचित को हेंगडांग पेश किया और उस पर साज-सज्जा सजाई। लाचित बरफुकन ने झुककर राजा को प्रणाम किया, वे घुटनों के बल बैठ गए और अपने हाथ सिर के ऊपर जोड़ दिए..." (81)

पिछले दो वर्षों की कड़ी तैयारी सफल हो गई थी और जो सेना और बेड़ा इकट्ठा किया गया था, वह वास्तव में देखने लायक था। अतान बुरागोहैन द्वारा निर्देशित असमियों ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। झांजी से तेलियाडोंगा-पुखुरी तक सड़क का निर्माण भी किया गया था ताकि नए कमांडर लाचित के नेतृत्व में सेना उस पर युद्धाभ्यास कर सके और

मॉक-ड्रिल कर सके जिसे राजा और उनके वरिष्ठ सरदारों ने अपनी संतुष्टि के लिए देखा। इन अवसरों पर लाचित को पूर्ण सैन्य राजचिह्न पहनाया जाता था और सेना वर्दी पहनती थी और अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र को दर्शाते हुए हथियार रखती थी। राजा सहित पर्यवेक्षक ड्रेस रिहर्सल के दौरान सैनिकों द्वारा दिखाई गई निपुणता और तालमेल से संतुष्ट थे और तुरंत समझ गए कि महत्वपूर्ण क्षण आ गया है। यह कि पूरी परेड जनता की नज़रों से दूर नवनिर्मित सड़क पर आयोजित की गई थी, जिसने इसकी गुप्त प्रकृति में योगदान दिया।

"असाधारण निर्णय और धैर्य के धनी, लाचित की रणनीति भूमि की स्थलाकृति की स्पष्ट समझ पर आधारित थी, जिसके लिए भूमि और जल पर आगे बढ़ना आवश्यक था। इसलिए अभियान पर निकलने से पहले उन्होंने अन्य फुकनों के साथ परामर्श किया और लोगों से सड़कों का 'सूक्ष्मता से' परीक्षण कराया।" (82) यह इलाके से परिचित होने के साथ-साथ उस ज्ञान का सर्वोत्तम उपयोग करने की सहज आदत थी, जिसने लाचित को न केवल गौहाटी और निचले असम को वापस लेने के शुरुआती अभियान में मदद की, बल्कि राजा राम सिंह के तहत मुगलों के साथ संघर्ष के दौरान भी मदद की।

***

जैसा कि पहले कहा गया है, चक्रध्वज सिंह ने क्षेत्र के आदिवासी सरदारों और छोटे शासकों को प्रतिशोध के इस सैन्य अभियान की सहायता करने के लिए, यदि संभव हो तो, और यदि सहायता नहीं कर सकते तो तटस्थ रहने के लिए दूत भेजे थे, और उत्तर अनुकूल थे। इसके अलावा, अभियान शुरू होने से बहुत पहले ही अहोमों के अत्यंत कुशल और जटिल जासूसी तंत्र को कार्यान्वित कर दिया गया था और कमांडर और उनके लेफ्टिनेंट उनके द्वारा प्रदान किए गए इनपुट के आधार पर मुगल सुरक्षा के नक्शे तैयार कर सके थे; विभिन्न किलों और छावनियों के इस अमूल्य डेटा के साथ-साथ जनशक्ति और हथियार के अनुमान ने उन्हें हमले की अपनी रणनीति पहले से तैयार करने में सक्षम बनाया।

राज्य के दो सबसे प्रतिष्ठित ज्योतिषियों, चूड़ामोनी डोलोई और सरोबर डोलोई को लाचित और उसकी सेना के साथ जाने और अभियान के प्रत्येक चरण में भविष्यवाणियाँ करने के लिए नियुक्त किया गया था। अब उन्होंने अपनी गणना की और गुरुवार, 20 अगस्त, 1667

को चुना। शाही अहोम पुजारियों ने भी उनकी गणना का समर्थन किया और अच्छी तरह से स्थापित "चिकन-लेग्स" प्रक्रिया द्वारा प्रस्थान का समय तय किया। अभियान की शुरुआत से जुड़े पारंपरिक धार्मिक संस्कार अहोम और हिंदू पुरोहित संहिता के अनुसार किए गए।

प्रस्थान से पहले लाचित बरफुकन के पीछे अतान बुरगोहैन, गुइमेला बारगोहैन-फुकन, कलियाबारिया बारगोहैन-फुकन, निमाती लालुक नाओबोइचा-फुकन, चारिंगिया पेलन फुकन, मिरी-सैंडिकोइ फुकन, डौकी भेबा फुकन नामदंगिया राजखोवा, कलंचु संदिकोई दिखौमुखिया राजखोवा, कलंचु के पुत्र बेटमेला, हलाधिया चेंगा अभयपुरिया राजखोवा और पानी अभयपुरिया राजखोवा, अहोम रांजाओं और रईसों के सामने पंक्तिबद्ध थे जो अभियान पर नहीं जा रहे थे। वे सभी पूरी तरह से अपनी युद्ध पोशाक पहने हुए थे और उनके पीछे उनकी सेना फैली हुई थी| उनकी भुजाएँ धूप में चमक रही थीं, जिससे प्रभावशाली दृश्य बन रहा था।

स्वर्गदेव चक्रध्वज सिंह ने प्रस्थान करने वाले लोगों को अपना अंतिम संबोधन दिया : "मैं चाहता हूँ कि आपकी पत्नियों और बच्चों और गायों और ब्राह्मणों की विधिवत सुरक्षा और संरक्षण किया जाए; और मुझे मुगलों को परास्त करने की प्रतिष्ठा और गौरव भी प्राप्त हो। यदि आप इटाखुली (गौहाटी) में दुश्मन को हराने के कार्य में अक्षम साबित हुए तो आपको छूट नहीं दी जाएगी। और, क्या आपको लगता है कि आपके जैसे कमांडरों, फुकनों और राजखोवाओं की कमी होगी?" (83)

यह बहुत अधिक प्रेरणादायक संबोधन नहीं था, लेकिन वीर योद्धाओं को विदा करने के लिए एकत्र हुई भीड़ के उत्साह ने इसकी अच्छी भरपाई कर दी। जैसा कि पहले कहा गया है, यह मुख्य रूप से अहोम राजवंश के कारण था कि पूर्व-औपनिवेशिक असमिया राष्ट्र का जन्म हुआ था। इसके शासनकाल में ब्रह्मपुत्र घाटी में रहने वाली असमान जातीय संस्थाओं का संश्लेषण और विशिष्ट असमिया भाषा, संस्कृति और राष्ट्रवादी पहचान का विकास देखा गया था। जनजातियों के बीच व्यापक राजनीतिक और सांस्कृतिक मेलजोल, अंतर्विवाह और अन्य सामाजिक आदान-प्रदान ने अंततः नस्लीय और सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ दिया और लोगों में एकजुटता और राष्ट्रवादी भावना का संचार किया।

जनता के बीच सहज उल्लास इस बात का पर्याप्त संकेत था कि

बीच के वर्षों में वे एक बार फिर असमिया राष्ट्रवाद की उस भावना से प्रेरित हो गए थे, जिसने मीर जुमला प्रकरण के दौरान उन्हें छोड़ दिया था। साधारण सैनिकों के बीच जातीय और सांप्रदायिक विविधता के कारण, यह अहोम सेना के बजाय असमिया सेना थी जो अब बाहरी आक्रमणकारियों द्वारा हड़पी गई भूमि को वापस लेने के लिए तैयार हो गई थी!

"उनकी तैयारी हो चुकी थी; और 20 अगस्त, 1667 को इंद्र को बलि देने के बाद, गौहाटी को मुगलों से छीनने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित सेना निकल पड़ी। कमान बारबरुआ के पुत्र लाचित को सौंपी गई थी। बारबरुआ महान राजनेता राजा प्रताप सिंह के शासनकाल के योद्धा थे जिन्हें बरफुकन नियुक्त किया गया था।" (84)

असमिया सेना, एक दुर्जेय नौसेना से पूरित होकर, गढ़गाँव से निकलकर जमीन और पानी दोनों रास्तों से आगे बढ़ी ताकि कालियाबार में डेरा डाला जा सके जो बरफुकन का पूर्व मुख्यालय था। वहाँ से इसे दो भागों में विभाजित किया गया, एक की कमान दिहिंगिया सैंडिकि फुकन ने संभाली, जिसने उत्तरी तट पर बंसबारी शिविर पर अपने प्रयासों को निर्देशित किया और सितंबर 1667 की शुरुआत में इस पर कब्जा कर लिया और कैदियों को साथ ले लिया, जिनमें प्रमुख मुगल कमांडर लाल बेग और रोशन बेग भी शामिल थे और लूट का माल भी प्राप्त किया जिसे गढ़गाँव भेज दिया गया।

दक्षिणी तट पर नौसालिया फुकन के नेतृत्व में दूसरा मोर्चा और भी अधिक सफल रहा; 30 अगस्त, 1667 को कजली किले में मुगल सेना को पूरी तरह से आश्चर्यचकित कर दिया गया और आसानी से परास्त कर दिया गया और पाँच सरदारों सहित उसके कैदियों को तलवार से मार दिया गया। कजली में राजा राय सिंह मारा गया और सैय्यद खान घायल हो गया। कई बंदी बना लिए गए और अनेक घोड़े, बंदूकें, ढालें और सींग लेकर गढ़गाँव भेज दिए गए। दोनों किलों की मरम्मत की गई और अहोमों द्वारा भविष्य में उपयोग के लिए उनकी सुरक्षा को मजबूत किया गया। किलों की कमान संभालने के लिए सैनिकों के दो छोटे समूह छोड़कर लाचित की सेना आगे बढ़ी।

सच्चाई तो यह थी कि अहोमों के साथ शत्रुता समाप्त होने के बाद मुगल आत्मसंतुष्ट हो गए थे और अप्रत्याशितता के तत्व के साथ

असमिया हमले की गति ने यह सुनिश्चित कर दिया था कि वे आसानी से पराजित हो जाएँ। एक-एक करके असमिया रथ मुग़ल रक्षात्मक किलों- सोनपुर, पानीखैती एवं तातीमारा पर लुढ़कता गया और उनमें तैनात सैनिकों को कुचलता गया, और लाचित की सेनाएँ मुख्य लक्ष्य गौहाटी के नदी-बंदरगाह पर थीं। असमिया अभियान की गति इतनी तेज थी और मुगलों की शालीनता इतनी अधिक थी कि गौहाटी का शाही गवर्नर सैयद फिरोज खान ऐसी किसी घटना के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं था और ढाका से अतिरिक्त सेना भी नहीं बुला सका।

"मुगलों ने अपनी राजधानी की मजबूत किलेबंदी कर दी थी। मुख्य शहर तब ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर स्थित था। लेकिन प्रत्येक तट पर पाँच किलेबंद चौकियाँ या निगरानी चौकियाँ स्थापित की गई थीं। उत्तर में शाहबुरुज़ (गौहाटी के सामने की मणिकर्णेश्वर पहाड़ी) और रंगमहल में दो बड़ी किलेबंदी थी। दक्षिण में किला इटाखुली गहरी खाई से घिरा हुआ था, जो दो चौकियों, जयदुआर और लतासिल चौकियों के बीच अत्यधिक रणनीतिक स्थल पर स्थित था। (85)

मणिकर्णेश्वर पहाड़ी पर शाहबुरुज़ पर हमले करने के बाद, लाचित ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि गौहाटी पर फिर से कब्ज़ा कैसे किया जाए। मुगलों ने इस नदी-बंदरगाह शहर की मजबूत किलेबंदी की थी। मुख्य किला इटाखुली में लुइत के तटों पर स्थित था। लाचित का पहला कदम उस समय दो मुगल चौकियों के करीब बरनाडी नदी के मुहाने पर दो भंडारों पर उड़ाना था। बदुली फुकन, वह पाखण्डी जो मुगल पक्ष में चला गया था, हाथ में ढाल लेकर शाहबरुज के किले से बड़ी सेना के साथ उभरा और डेरा जमाई हुई असमिया सेना पर हमला कर दिया। इस दौरान दो असमियों कमांडरों में भीषण झड़प हुई। हलाधिया चेंगा राजखोवा और कलंचु दिखौमुखिया राजखोवा महान वीरता का प्रदर्शन करने के बाद आमने-सामने की लड़ाई में मारे गए। शाहबुरुज़ किले के निकट तैनात असमिया टुकड़ी को खदेड़ दिया गया और उसे पीछे हटना पड़ा। हालाँकि, मुगल आक्रमण कायम नहीं रहा और बदुली और उसके लोग किले के निकट लौट आए, और किसी तरह असमिया ने ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर अपनी स्थिति बनाए रखी। यह शुरुआती हार इस बात का सूचक थी कि अच्छी तरह से मजबूत गुवाहाटी बंदरगाह शहर पर कब्ज़ा करना कितना मुश्किल होगा। हालाँकि, अभियान की सामान्य गतिविधि पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अन्य फुकनों ने

बरनाडी को पार किया और दो दिनों तक चले कड़े संघर्ष के बाद, रंगमहल और शाहबुरुज़ पर कब्ज़ा कर लिया। लेकिन दिहिंगिया सैंडिकि फुकन को यह एहसास हुआ कि उत्तरी तट पर दुश्मन को हराना असंभव है, इसलिए उन्होंने दक्षिणी तट पर जैदुआर जाने का फैसला किया, जहाँ मुगल जमे हुए थे। (86)

इटाखुली किला शहर की सुरक्षा के केंद्र में खड़ा था, जो न केवल ऊंची दीवारों और तोप-घुड़सवार दलों से संरक्षित था, बल्कि उसे चारों ओर विभिन्न किलेबंद स्थानों पर सेना की छोटी टुकड़ियों से भी संरक्षित किया गया था। लाचित बरफुकन, अतान बुरगोहैन और अन्य कमांडरों ने स्थिति का अध्ययन करने के लिए सम्मेलन आयोजित किया और एक निर्णय पर पहुँचे। इटाखुली किला लगभग अभेद्य होने के कारण, इसके भीतर के लोगों को लंबी घेराबंदी के माध्यम से बाहर निकालना होगा। इसका मतलब यह था कि नदी की दिशा से हमला करना व्यर्थ और निरर्थक होगा; इसलिए कम सैनिकों वाले अन्य छोटे किलेबंद स्थानों पर कब्ज़ा करना होगा ताकि इटाखुली किले को चारों ओर से घेरा जा सके।

गौहाटी से थोड़ी दूरी पर बोंडा गाँव में लुइत नदी के दक्षिणी तट पर अपनी युद्ध नौकाओं को बाँधते हुए, लाचित ने बड़ी संख्या में सैनिकों को उतरने का आदेश दिया और पेलन फुकन को प्रभारी बनाकर शहर की सुरक्षा को तोड़ने और इटाखुली किले को घेरने का आदेश दिया। वह स्वयं नदी के किनारे से आक्रमण करने के लिए शस्त्रागार के साथ नदी की ओर आगे बढ़ा। किले के भीतर मौजूद लोगों ने अहोम शस्त्रागार को खदेड़ने के लिए अपने बंदूक-जहाजों का उपयोग करने का प्रयास किया, लेकिन ये बेहतर गोलाबारी का कोई मुकाबला नहीं कर सके और उन्हें प्रयास छोड़ना पड़ा।

गौहाटी की सुरक्षा में सेंध गौहाटी के पूर्वी प्रवेश द्वार जयदुआर पर लगी, जो संकीर्ण सड़क द्वारा आंतरिक शहर से जुड़ी हुई चौकी थी। शाहबुरुज़ में मारे गए कलानचू के बेटे बेटमेला सैंडिकोइ ने मुगलों को बाहर निकालने के लिए असामान्य रणनीति अपनाई! वह अकेले ही गेट तक चला गया और ललकारते हुए बोला: "अगर तुम्हारे बीच कोई मुगल सरदार हो, तो उसे बाहर आकर मुझसे मुकाबला करने दो।" एक कप्तान ने चुनौती स्वीकार कर ली और किले से बाहर आ गया। द्वंद्व युद्ध में बेटमेला ने अपने प्रतिद्वंद्वी को हरा दिया और उसका सिर धड़ से अलग

कर दिया, हालाँकि वह खुद भी थोड़ा घायल हो गया। इससे जयदुआर किले के भीतर के सैनिक पूरी तरह से हतोत्साहित हो गए और वे जल्द ही परास्त हो गए।

इटाखुली किले के चारों ओर की बाहरी रक्षात्मक चौकियों पर एक-एक करके कब्ज़ा कर लिया गया और मुग़ल सेनाएँ पीछे हटती गईं। किला अब घिर चुका था और उसकी घेराबंदी की जा सकती थी। पेलन फुकन ने आशंका के साथ देखा कि किला कितनी अच्छी तरह से संरक्षित था और उसने अपने कमांडर को इसकी अभेद्यता के बारे में बताया। उसकी टिप्पणी कुछ इस प्रकृति की प्रतीत हो रही थी, कि "मैं उस सैनिक का बंधुआ बनूंगा जो इटाखुली किले पर धावा बोल सकता है"! कुछ दिनों बाद सभी को आश्चर्य हुआ, जब घेराबंदी जारी थी, चक्रध्वज सिंह द्वारा भेजा गया पैकेट अहोम शिविर में पहुँचा।

इसमें कुछ महिलाओं के परिधान थे जिनमें मेखलास या असमिया महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले निचले वस्त्र, झाड़ू और कुल्हाड़ियाँ शामिल थीं! जो पत्र संलग्न किया गया था उसमें अहोम सम्राट का आदेश था कि यदि पेलन ने ऐसी पराजयवादी टिप्पणियाँ की हैं तो उसे मार डाला जाना चाहिए, और उसके सैनिकों को महिला वस्त्र पहनने के लिए कहा जाना चाहिए! पत्र के साथ लिखा था, "आपको पेलन फुकन का दिल खोलकर मुझे भेजना होगा।" "क्या उन्हें इस तरह से बोलना चाहिए? अन्य सैनिकों के बारे में जो समान पराजयवादी विचार रखते हैं, उन्हें मेखला पहनाएं और उन्हें झाड़ू से पीटें।" पेलन और उनके साथी अधिकारियों ने कसम खाई कि ऐसी टिप्पणी कभी की ही नहीं गई थी, एक उत्तर जिसने स्पष्ट रूप अहोम राजा को संतुष्ट किया और इस मामले पर फिर कोई चर्चा नहीं हुई। (87)

लेकिन उस संदेश ने इटाखुली किले पर शीघ्र कब्ज़ा करने की चेतावनी के रूप में कार्य किया। इसकी घेराबंदी शुरू हुए दो महीने बीत चुके थे, लेकिन ऐसा कोई संकेत नहीं था कि अंदर मौजूद मुगल आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार थे। खतरे की यह आशंका भी शामिल थी कि असमिया हमले की खबर किसी तरह ढाका तक पहुँच सकती थी और अतिरिक्त सेना पहले से ही रास्ते में हो सकती थी। इस प्रकार सामने से हमला अपरिहार्य हो गया।

लेकिन असमिया अपने युद्ध में हमेशा चालाक रहते थे और

उन्होंने मुगल सुरक्षा को पूरी तरह से कमजोर करने के लिए सरल रणनीति अपनाई। जपांग गोहैन के नेतृत्व में एक रात गुप्त हमला शुरू किया गया। लाचित बरफुकन ने कमांडो सैनिकों की विशेष टास्क फोर्स को प्रशिक्षित किया था, जिन्हें चोर-बाचा के नाम से जाना जाता था। उनके पास असाधारण कौशल था, और उन्हें दुश्मन की जासूसी करने, या ऐसे मिशनों को पूरा करने के लिए नियुक्त किया गया था जिनके लिए ऐसे कौशल और साहस की आवश्यकता होती थी जो सामान्य सैनिकों के पास नहीं होते थे।

गोहैन ने इनमें से कुछ चोर-बचाओं को पूरी तरह से काले कपड़े पहनने का आदेश दिया, और इस तथ्य का लाभ उठाते हुए कि शिविर में मुगल सैनिक अपनी पूर्व-भोर की प्रार्थना (फज्र की नमाज़) में लीन थे, वे बिना किसी को नज़र आएअँधेरे में किले की दीवारों को पार कर गए और मुगल तोपों के मुँह में पानी डाल दिया। फिर, गुरुवार, सत्रहवें कार्तिक, 1589 शक (4 नवंबर, 1667 ई.) की रात को, असमिया सेना ने खून जमा देने वाली चीखों के साथ, इटाखुली किले पर भयंकर सीधा हमला किया। (88)

हतप्रभ मुगलों को अचानक पता चला कि उनकी तोपें, जो रक्षा का प्राथमिक हथियार थीं, फायर नहीं करेंगी। यहाँ तक कि जब उनकी युद्ध-नौकाओं से तोपें एक तरफ से इटाखुली किले पर हमला कर रही थीं, तो असमिया योद्धा सीढ़ियों की मदद से किले की दीवारों पर चढ़ गए और हत्या की होड़ में लग गए। सैकड़ों मुग़ल योद्धा मारे गए, किसी को बंदी नहीं बनाया गया। बुरांजी दो महिला योद्धाओं की बात करते हैं, जो युद्ध उग्र होने पर भी इटाखुली किले से निकलीं, लेकिन ब्रह्मपुत्र पार करते समय असमिया सैनिकों ने उनका पीछा किया और अंततः अश्वक्रांता में पकड़ ली गईं! किले के भीतर असमियों ने मुगलों का विशाल खजाना हासिल कर लिया। नकदी को सैनिकों के बीच वितरित किया गया और बाकी लूट को राजा को देने के लिए गढ़गाँव वापस ले जाया गया।

एच. के. बारपुजारी द्वारा संपादित "'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम'" (असम का व्यापक इतिहास) हमें उन घटनाक्रमों की विस्तृत रूपरेखा प्रदान करता है जिसके कारण अंततः महत्वपूर्ण इटाखुली किले पर कब्ज़ा किया जा सका। " दक्षिण में असमियों का मुख्य उद्देश्य इटाखुली किला था, उन्होंने इसके पास लगभग एक मील पूर्व की ओर डेरा

डाला, जबकि उनकी नावें बोंडा गाँव के पास नदी पर लंगर डाले रहीं। युद्ध में जड़ता को कर्तव्य के प्रति घोर लापरवाही बना दिया गया। किले में संकेंद्रित मुग़ल सुरक्षा बलों के कड़े प्रतिरोध का सामना करते हुए, उन्होंने रणनीति बनाकर गौहाटी के पूर्वी प्रवेश द्वार जैदुआर को घेर लिया। उन्होंने पाण्डु चौकी के सामने भी डेरा डाल दिया और उस पर कब्ज़ा कर लिया। अतिरिक्त सैन्य सहायता के साथ कई मुगल युद्धपोतों का आगमन भी बेटमेला सैंडिकि की वीरतापूर्ण उपलब्धि के कारण इटाखुली के प्रवेश द्वार जयदुआर को बचाने में विफल रहा। बेटमेला ने इस युद्ध में अपनी एक उंगली खो दी। जयदुआर पर कब्ज़ा करते हुए असमिया गौहाटी में आगे बढ़े और इटाखुली किले पर तीरों और बंदूकों की गोली की बौछार कर दी। पेलन फुकन के स्थान पर नए कमांडर अभयपुरिया राजखोवा के निर्देशों के तहत, कमांडो या जासूसों ने मुगल बंदूकों को अप्रभावी बनाने के लिए उनके मुँह में पानी डाल दिया।

"उमानंद, बरहट, अगियाथुरी, मराकिया, रीवा और लाथाओ में अलग-अलग टकरावों के कारण मुगलों को असफलता मिली। 04 नवंबर, 1667 की रात के अंत में इटाखुली किले पर भव्य हमला किया गया और सैनिक सीढ़ियों से दीवारों पर चढ़ गए। इस प्रकार लगभग दो महीने के बाद युद्ध सामग्री, बंदूकें, पीतल, तांबा, सोना और चाँदी, नावें और सभी प्रकार के जानवरों के साथ किले पर कब्जा कर लिया गया। अधिकांश रक्षकों का नरसंहार किया गया......विजेताओं ने नवंबर 1667 के मध्य में राजधानी में प्रवेश किया।" (89)

इटाखुली किले पर कब्ज़ा करने के ठीक बाद, कुछ सरदारों के नेतृत्व में कुछ मुगल युद्धपोत सहायता प्रदान करने के लिए पहुँचे, लेकिन असमिया नौसेना ने उन पर हमला किया, और उन्हें उमानंद और बरहट से दूर खदेड़ दिया और सेना ने, जमीन और पानी पर आगे बढ़ते हुए, उत्तरी तट पर अगियाथुरी और सरायघाट, दक्षिणी तट पर पांडु पर कब्ज़ा कर लिया और कालाहिमुख पहुँच गए जो नागरबेरा के ऊपर कालाही या कुलसी के मुहाने पर स्थित था।

फौजदार सैयद फिरोज खान और उनके मीरबक्शी सैयद साला सहित कुछ मुग़ल सैनिक और उनके कमांडर इटाखुली किले के पीछे के गुप्त मार्ग से भागने में सफल रहे जो सीधा ब्रह्मपुत्र नदी तक जाता था। स्नाइपर्स द्वारा हमला किए जाने और प्रशिक्षित असमिया जहाजों की बंदूकों के बावजूद, वे घाट पर बंधे जहाजों पर चढ़ने और

मानस नदी की ओर नीचे की तरफ जाने में कामयाब रहे, जिसके पार उनकी एक चौकी थी। लाचित बरफुकन, दिहिंगिया फुकन और पेलन सरिंगिया फुकन के नेतृत्व में असमिया जहाज ने जोरदार पीछा किया। रास्ते में भागते हुए मुगलों की ताकत तब और बढ़ गई जब ढाका से सैनिकों और रसद के रूप में भेजे गए कई जहाज उनके साथ आ गए, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। इससे असमियों को प्रेरणा और लाभ मिला। चतुर रणनीतिकार लाचित ने पहले से अनुमान लगाया था कि मुगलों का एक वर्ग इसके लिए खतरा बन सकता है, उन्होंने मानस नदी के मुहाने पर मिरी संदिकोई फुकन की कमान में उच्च प्रशिक्षित शार्पशूटरों और तीरंदाजों की सेना तैनात की थी, जिन्होंने भागते हुए मुगलों को एक-एक कर पकड़ लिया था जिसने अपने संकटग्रस्त नेताओं को आत्मसमर्पण का सफेद झंडा लहराने के लिए मजबूर किया।

"जैसे ही पराजित मुगल सेना मानस नदी की ओर बढ़ रही थी, उन्हें नदी के मुहाने पर रोक लिया गया। इसके बाद हुई मुठभेड़ में, असमिया शार्पशूटरों ने भगोड़े दुश्मन को कुचलना शुरू कर दिया। डिमरुआ का एक राजकुमार, जो मौपिया के साथ हाथी पर बैठा था, असमिया पक्ष की गोली से मारा गया। उसके साथी को फिर हाथी से उतार दिया गया, और घोड़े पर बिठाया गया। फ़ौजदार सैयद फ़िरोज़ नवाब ने तब असमिया को अपनी अधीनता की पेशकश करते हुए संदेश भेजा और उन्हें बंदूकें चलाने या तीर चलाने से परहेज करने के लिए कहा। असमियों ने मुगलों से हथियार डालने के लिए कहा। ऐसा किया गया और लड़ाई समाप्त हो गई।

"फौजदार सैयद फिरोज खान और उनके मुरबिक्शी सैयद साला को पकड़ लिया गया और कैदियों के रूप में लाया गया। असमियों ने बड़ी संख्या में देशवासियों को भी बचाया, जिन्हें नवाब मीर जुमला ने बंधक बना लिया था। डंगरिया के बेटे और भतीजे-ढाला, लंगली और रामराय बंधकों के रूप में गौहाटी में रह रहे थे, जिनकी इस बीच मृत्यु हो गई और फौजदार ने अंतिम संस्कार के लिए उनके पार्थिव शरीर गढ़गाँव भेज दिए। उपर्युक्त उल्लेखित मौपिया, राजमंत्री फुकन का पुत्र अब एकमात्र जीवित बंधक था। अहोमों ने मुग़ल भंडारों पर भी कब्ज़ा कर किया जिसमें युद्ध-सामग्री, (तोपें, माचिस और गोला-बारूद, हथियार), साथ ही नावें, घोड़े, हाथी, ऊँट, बैल, भैंस, गधे और बड़ी मात्रा में सोना और चाँदी और पीतल और ताँबा शामिल थे।" (90)

अभियान के समापन के तुरंत बाद गौहाटी में स्मारक के रूप में पत्थर का स्तंभ स्थापित किया गया, जो इस प्रसिद्ध जीत और मुगलों से निचले असम को छीनने का प्रतीक था। उसका संस्कृत अनुवाद इस प्रकार है: "वर्ष 1589 शक में नामजानी (निचले असम) के बरफुकन का सितारा बुलंद हुआ, जो बारबरुआ (मोमई तमुली) का पुत्र था। वह यवनों द्वारा छेड़े गए विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, हाथी, घोड़े और कमानों के युद्ध में विजयी हुआ। बरफुकन का शरीर सभी प्रकार के आभूषणों से सुशोभित है, उसका हृदय विविध विद्याओं से प्रकाशित है, वह उन गुणों से संपन्न है जो कलियुग के पापों से कलंकित नहीं हैं। वह पराक्रम और उद्यम में तेजस्वी है, वह हाथियों, घोड़ों और सैनिकों का सेनापति है, और वह धैर्य, स्वाभिमान, वीरता और गंभीरता के संबंध में महासागर के समान है। (91)

इस जीत को न केवल लगभग हर प्रमुख अहोम बुरंजी में गौरवपूर्ण स्थान दिया गया, बल्कि इसे असम के विभिन्न स्थानों पर पट्टिकाओं और तोपों पर भी अंकित किया गया। उदाहरण के लिए, नागाँव जिले में सिमलुगढ़ किले के पास सिलघाट में पाई गई तोप पर शिलालेख हथियार की बरामदगी को संदर्भित करता है और संस्कृत शिलालेख में लिखा है: "राजा चक्रध्वज सिंह ने 1589 शक में युद्ध में मुगलों को फिर से नष्ट कर दिया, इस हथियार को प्राप्त किया, जो अपने शत्रुओं के हत्यारे के रूप में उनकी महिमा का प्रचार करता है।" कामरूप में मणि कर्णेश्वर मंदिर के पास कनाई बारासी चट्टान पर शक 1589 के असमिया शिलालेख "सना और सैयद फ़िरोज़ की हार और मृत्यु के बाद" वहाँ अहोम किले के निर्माण का रिकॉर्ड देता है। डिकॉम में एक और प्राचीन शिलालेख में ऐसा ही लिखा है, जो अगले वर्ष की जीत को दर्शाता है। यह तोप विशेष रूप से दिलचस्प है, क्योंकि इसमें फ़ारसी में भी शिलालेख है, जिसमें बताया गया है कि इसे 1704 हिजरी (1663 ई.) में असम को जीतने के उद्देश्य से हुसैन में सैयद अहमद के प्रभार में सौंपा गया था।" (92)। इसमें फुलुंगरगढ़ प्राचीर पर उत्तरी गुवाहाटी में कनाई-बरसाई-बोसिल में असमिया में पत्थर के दो शिलालेख भी हैं जो स्थानीय जीत की प्रशंसा करते हैं, साथ ही कई अन्य स्थानों पर भी जीत का उल्लेख है।

***

लाचित बरफुकन के नेतृत्व में असमियों द्वारा गौहाटी में जीत के परिणामस्वरूप मानस तक कामरूप की पुनः प्राप्ति हुई, जो अहोम-मुगल संबंधों में महत्वपूर्ण अध्याय था। यह मुगलों के खिलाफ रुख मोड़ने का पहला दौर था। अगले चार वर्षों में असमियों ने 1663 में खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर ली। बाद के घटनाक्रमों से पता चला कि मुगल इस क्षेत्र में फिर कभी उस प्रभुत्व को प्राप्त नहीं कर सके जो उन्होंने एक बार प्राप्त किया था!

"जब इन सफलताओं की खबर राजा तक पहुँची, तो वह बहुत खुश हुए, और अपने सफल जनरलों पर उपहारों की वर्षा की। गौहाटी को बरफुकन के मुख्यालय के रूप में चुना गया, पांडु और सरायघाट को दृढ़ता से मजबूत किया गया, और विजित क्षेत्र के प्रशासन के लिए त्वरित व्यवस्था की गई। देश का सर्वेक्षण किया गया और जनसंख्या की गणना की गई।" (93)

यह मुख्य रूप से लाचित बरफुकन के प्रेरक नेतृत्व, उनके लेफ्टिनेंटों, विशेष रूप से चतुर अतान बुरगोहैन द्वारा प्रदान किए गए समर्थन और अहोम सम्राट चक्रध्वज सिंह द्वारा दिए गए मजबूत समर्थन के कारण था कि कुछ ही महीनों के भीतर असमिया ने अपना खोया हुआ क्षेत्र वापस पा लिया और अपनी प्रतिष्ठा और गौरव वापस पा लिए। जब जीत की खबर स्वर्गदेव को दी गई, तो उन्होंने चिल्लाकर कहा : "केवल अब ही मैं अपने भोजन का निवाला आसानी और खुशी से खा सकता हूँ।" (94) उन्होंने गौहाटी के सभी अधिकारियों को उचित उपहार भेजे, स्वर्गदेव ने उन्हें सतर्क रहने को भी कहा क्योंकि यह निश्चित था कि दिल्ली में औरंगजेब मुगलों की हार को बहुत हल्के में नहीं लेगा और जवाबी सेना भेजेगा। जीत का आशीर्वाद देने पर देवताओं को बलि चढ़ाने के लिए वह स्वयं उत्तरी तट पर विश्वनाथ के मंदिर में गए।

इसके तुरंत बाद मुगल सहयोगियों ने कुछ क्षेत्र वापस लेने का कमजोर प्रयास किया। "1688 में रंगमती में मुगलों के साथ शत्रुता हुई, जहाँ इंद्र दमन नाम का राजा स्पष्ट रूप से कमान में था; उसके सेना ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी तट पर काकफाक में पराजित हो गई, लेकिन, जब वह और मजबूत सैन्य सहायता के साथ व्यक्तिगत रूप से आया, तो अहोम सरायघाट पर वापस लौट गए। इस स्थान पर उसका हमला विफल रहा, और वह जखलिया की ओर पीछे हट गया।"(95)

लाचित बरफुकन द्वारा शुरू किए गए बिजली की तेजी से अभियान के कारण निचला असम, गौहाटी के सभी महत्वपूर्ण नदी-बंदरगाह और मानस नदी तक फैला हुआ क्षेत्र एक बार फिर अहोम साम्राज्य का हिस्सा बन गया। लाचित को वापस लिए गए क्षेत्र पर अपनी पकड़ मजबूत करने का आदेश देते हुए, चक्रध्वज सिंह ने कलियाबार में अस्थायी किलेबंदी को रंगालीबुरुज़ के नाम से जाने जाने वाले स्थायी गढ़ में बदलकर पूर्ववर्ती सीमा को मजबूत किया।

कभी राजनयिक रहे अतान बुरागोहैन ने रईसों के बीच प्रमुख के रूप में अपनी क्षमता में बंगाल के नवाब शाइस्ता खान को पत्र लिखा था, जिसमें उन्हें निचले असम के घटनाक्रम से अवगत कराया गया था, लेकिन चतुराई से मुगल हार की विनाशकारी प्रकृति को उजागर करने से परहेज किया। मीर जुमला के हमले का जिक्र करते हुए पत्र में कहा गया है, "हमारे देश की सारी प्रतिष्ठा और सम्मान नष्ट हो गया, जब आपने हमारे क्षेत्रों को तबाह कर दिया। हमने तब तीन लाख रुपये और नब्बे हाथी देने का वादा किया था। हमने वह वादा केवल हमारी सीमाओं के साथ-साथ हमारी अखंडता और सम्मान की भी रक्षा करने के लिए किया था। उस वादे के अनुसरण में, हमने आपको हाथी और धन दिया है, और हमारे बेटे क्षतिपूर्ति की शेष राशि के लिए ज़मानत के रूप में आपके साथ हैं। फिर भी हमें हमारे क्षेत्र वापस नहीं मिले हैं, न ही हमारी प्रजा वापस मिली जो आपकी भूमि पर चली गई थी। राशिद खान नवाब ने उमानंद में स्वागत समारोह के दौरान हमारे दूतों का गंभीर अपमान किया था: और हमारे बरमुदोई के साथ भी घोर दुर्व्यवहार किया गया और डांटा गया। इसके अलावा, युवतियों की आपूर्ति के लिए अनुरोध किया जाता है और जब उन्हें भेजा जाता है तो उन्हें वापस लौटा दिया जाता है। असम के महामहिम स्वर्ग-महाराजा इन अपमानों की रिपोर्ट मिलने पर अत्यधिक क्रोधित हो गए, और उन्होंने हमें गौहाटी पर हमला करने का आदेश दिया; लेकिन हमने राजा के चरणों में प्रार्थना की, और उन्होंने अपने आदेश वापस लेने की कृपा की। इसके बाद, सैयद फ़िरोज़ ने अपने कार्यालय (गौहाटी के फौजदार के रूप में) का कार्यभार संभालने पर सैयद जाफ़र उकील को हमारे स्थान पर नियुक्त किया। महामहिम को पता चला कि सैयद फ़िरोज़ नवाब एक अच्छे इंसान थे और हम भी इसी नतीजे पर पहुँचे। सैयद जाफ़र उकील के हमारे यहाँ रहने के दौरान हमने नौ हाथियों को गौहाटी भेजा। तब हमें बताया गया कि सैयद

फ़िरोज़ नवाब ने उनसे कुछ कुंवारी लड़कियाँ उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। यह सुनकर, स्वर्गदेव आक्रोश और क्रोध से भर गए, और गौहाटी पर हमला करने का आदेश दिया। अब, यदि आप हमारे साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के इच्छुक हैं, तो कृपया इस उद्देश्य के लिए उकील और पत्रियाँ भेजें। यदि आपकी ऐसी कोई इच्छा नहीं है, तो यह आपकी नज़र में है। मैं और क्या कहूँ? आप अपने आप ही सब-कुछ जानने वाले हैं।" (96)

रक्षा रणनीति

लाचित बरफुकन ने अपनी मार्शल कौशल का प्रदर्शन किया था, वे अपने सैनिकों को पीछे से निर्देशित करने से ही संतुष्ट नहीं थे, बल्कि हेंगडांग उठाई और अपने गले से युद्ध के नारे लगाते हुए अपने सैनिकों के साथ दुश्मन से लड़ाई की और उन्हें अपने अधिकतम प्रयासों के लिए प्रेरित किया। उन्होंने भी अतान बुरगोहैन जैसे असाधारण रूप से चतुर और सक्षम लेफ्टिनेंटों के साथ, हर तरह से अभियान की योजना बनाई थी, रणनीतिक स्थानों पर सैनिकों को तैनात किया था और अपनी कमान में हर रणनीति का उपयोग किया था। लेकिन अब जब लगभग असंभव को हासिल कर लिया गया था, और दुश्मन को असमिया क्षेत्र से बाहर खदेड़ दिया गया था, तो लाचित "योद्धा" को पीछे हटना पड़ा, और लाचित "रक्षा रणनीतिकार" को कमान संभालनी पड़ी!

कोई शालीनता नहीं होनी चाहिए; जीत के फल को स्थायी तरीके से बरकरार रखने के लिए बड़ा प्रयास करना पड़ा। युद्ध में भाग लेने वाले सभी लोग, सम्राट चक्रध्वज सिंह से लेकर आम सैनिक तक, सभी इस बात से अवगत थे कि सुदूर दिल्ली में मुगल सम्राट औरंगजेब घटनाक्रम पर आक्रामक प्रतिक्रिया देगा और खोए हुए क्षेत्र को वापस पाने के लिए बड़ी सेना भेजेगा। लेकिन इस बार असमियों ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मीर जुमला की "सफलता" को दोहराया नहीं जाएगा

और अपने क्षेत्र को और अधिक नहीं हड़पने दिया जाएगा। इस प्रकार नेताओं ने, गढ़गाँव के आग्रह और समर्थन से, मुगल सम्राट द्वारा उन पर किए जाने वाले किसी भी आक्रमण को विफल करने के लिए बहुआयामी रणनीति को लागू करना शुरू कर दिया।

सबसे अत्यावश्यक जरूरत विजित क्षेत्र के नागरिक प्रशासन को सुव्यवस्थित करने की थी जो संघर्ष के कारण बहुत हिंसक रूप से बाधित हो गया था। मुगलों ने अपने कब्जे के दौरान निचले असम में जमींदारी प्रथा को दोहराया था जिसका उपयोग वे बंगाल में करते थे। यह प्रणाली अहोम शासित क्षेत्र में प्रचलित खेल और पाइक प्रणाली से स्पष्ट रूप से भिन्न थी, जिसके तहत नागरिक आबादी को राजस्व का भुगतान करने के बजाय राज्य को सेवा देनी होती थी। बरफुकन ने बुरगोहैन के परामर्श से निर्णय लिया कि निचले असम में मौजूदा व्यवस्था को बाधित करने और इसे ऊपरी असम में प्रचलित व्यवस्था के अनुरूप बनाने के बजाय, इसे जारी रखना अधिक व्यावहारिक होगा। इस प्रकार कामरूप का परगनों में विभाजन बरकरार रखा गया। हालाँकि, स्वाभाविक रूप से, यह असमिया अधिकारी ही थे जिन्हें इनका प्रबंधन करने के लिए नियुक्त किया गया।

इस अत्यावश्यकता को महसूस करते हुए गढ़गाँव ने प्रशासन चलाने में मदद करने के लिए अपने लगभग सभी बेहतरीन सैन्य और नागरिक अधिकारियों को गौहाटी भेजा। जैसा कि बाद में देखा गया, इसने ऊपरी असम में प्रशासनिक ढाँचे को कमजोर कर दिया, जिससे दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम हुआ, लेकिन उस सटीक क्षण में इसके लिए कोई अन्य मदद नहीं थी। पुनः कब्जे वाले क्षेत्र को हर कीमत पर बरकरार रखना था और सभी प्रयासों को इसी उद्देश्य की ओर निर्देशित करना था।

बरफुकन ने पाटी-दरांग, बरभाग और बंगेश्वर परगने को अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण में बनाए रखा, जबकि खाता और बनभाग के परगने पानीफुकन के अधीन, पुबपर और पश्चिमपार को दुआरा फुकन के अधीन, सरुबंगसर और कछारी-महल को डेका फुकन के अधीन और रामसा एवं सरूखेत्री को चेतिया फुकन के अधीन रखा गया। इसी तरह, बरखेत्री को दयाँगिया राजखोवा के तहत, चयनिया को तार-सलांगुरा राजखोवा के तहत, बरहंती को गजपुरी-राजखोवा के तहत, चमरिया को दिखौमुखिया राजखोवा के तहत, नागरबेड़ा को पानी-सलागुरिया राजखोवा के तहत, बागरीबारी को पानी-दिहिंगिया राजखोवा के तहत,

बारपेटा को तारुआ-दिहिंगिया राजखोवा, बारनगर नामदंगिया राजखोवा के अंतर्गत, बजाली को पानी-अभोयपुरिया राजखोवा के अंतर्गत, बेकेली को बार अभोयपुरिया राजखोवा के अंतर्गत और बौसी को सरु अभोयपुरिया राजख़ोवा के अंतर्गत रखा गया। (97)

दिलचस्प बात यह है कि ऊपर उल्लिखित अधिकारियों द्वारा प्रशासित परगनों का ऐसा वितरण जारी रहा, जिसमें उन्हें न केवल यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी गई कि राजस्व एकत्र किया जाए, बल्कि विदेशी ताकतों द्वारा हमले की स्थिति में क्षेत्रों की रक्षा भी की जाए। यह स्थिति स्वर्गदेव गदाधर सिंह (1681-96) के दिनों तक जारी रही, जब परगने चलाने की जिम्मेदारी संभाल रहे कुछ अधिकारी अत्यधिक शक्तिशाली हो गए और उन्होंने अहोम वायसराय गर्गायन सैंडिकोइ फुकन को पकड़ने की साजिश रची। कुछ ही समय में साजिश को जड़ से ख़त्म कर दिया गया और अधिकारियों से परगने चलाने का दायित्व वापस ले लिया गया और उनका प्रशासन सीधे बरफुकन के प्रभार में आ गया। (98)

यह देखते हुए कि परगनों में राजस्व संग्रह की जमींदारी प्रणाली बरकरार रखी गई थी, समय-समय पर बकाया एकत्र करने के लिए नियुक्त चौधरियों, बुजरबरुआ, ठाकुरों और पटवारियों के स्थान पर असमिया प्रशासन द्वारा नियुक्त अधिकारियों को तैनात किया गया। सतराजिया और पंचराजिया के नाम से प्रसिद्ध कुछ जागीरदार मुखियाओं, का उपयोग भी राजस्व इकट्ठा करने के लिए किया जाता था। (99)

निचले असम के प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के साथ-साथ, लाचित बरफुकन और अतान बुरगोहैन, वरिष्ठ असमिया अधिकारियों के साथ दैनिक विमर्श में लगे हुए थे कि गौहाटी में किलेबंदी को कैसे मजबूत किया जाए, जो रणनीतिक रूप से सबसे लाभप्रद स्थिति प्रतीत होती है जहाँ से मुगलों को पीछे हटाना है। कुछ अधिकारियों ने सुझाव दिया कि मौजूदा बुनियादी ढाँचे के कारण तेजपुर के पास समधरा एक बेहतर विकल्प होगा, लेकिन उसे सरसरी तौर पर खारिज कर दिया गया। लाचित ने बताया कि समधरा बहुत अंतर्देशीय था, जहाँ से, असमिया उलटफेर की स्थिति में, दुश्मन आसानी से गढ़गाँव पर कब्ज़ा कर सकता था, जैसा कि मीर जुमला के आक्रमण के दौरान हुआ था। अंततः गौहाटी का चयन इसलिए किया गया क्योंकि इसके रणनीतिक लाभ थे और

बंदरगाह-शहर को यथासंभव अभेद्य बनाने के लिए योजनाएं तैयार की गई।

किलेबंदी योजनाओं के कार्यान्वयन में कोई देरी नहीं हुई और प्रमुख कुलीन, अतान बुरगोहैन को निर्माण की निगरानी का कार्य सौंपा गया। अहोम सम्राट चक्रध्वज सिंह को निचले असम की रक्षा की योजना की पत्रियों से अवगत कराए जाने पर उन्होंने योजना को पूरी तरह से मंजूरी दे दी। उन्होंने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि उनके प्रमुख मंत्री अतान बुरगोहैन को, सैन्य रक्षात्मक निर्माण के साथ अपने पिछले अनुभव को देखते हुए, तैयारियों का समग्र पर्यवेक्षक होना चाहिए, विशेष रूप से मिट्टी की प्राचीर के निर्माण का, जिस पर काम तुरंत शुरू हो गया था। हजारों सैनिक-श्रमिकों ने प्राचीर खड़ी करने के लिए दिन-रात मेहनत की, जो उन निर्माणों का चमत्कार साबित हुआ जो सदियों बाद भी असम की जलवायु के प्रकोप का सामना कर सके। प्रधानमंत्री ने इस प्रकार की संरचनाओं से परिचित अधिकारियों और पुरुषों के परामर्श और सहायता से, चमत्कारिक रूप से कम समय में इस विशाल कार्य को पूरा करने के लिए अपने पास मौजूद सभी संसाधनों का उपयोग किया।

"एक किले और पांडु-सरायघाट के निर्माण को प्राथमिकता दी गई। वास्तव में इसका मतलब था उत्तर में सरायघाट (आधुनिक अमिंगाँव) और दक्षिण में पांडु में नदी के दोनों किनारों पर दो किलों का निर्माण। इस परियोजना में उत्तर गौहाटी में मणिकर्णेश्वर मंदिर पर प्राचीर और सरायघाट के सीमांत स्थल शाहबुरुज़ में एक किला, और दक्षिण में दायरानीबाई, कटहलबाड़ी, कलाही, नागरबेरा और बोको में देश रानी के पाँच अन्य किले शामिल थे जिनकी जिम्मेदारी प्रधानमंत्री अतान को सौंपी गई और उन्होंने इसे रिकॉर्ड समय में और पूर्णता के साथ संपन्न किया। लाचित बरफुकन को रणनीतिक बिंदुओं पर मानव संसाधन की समस्या से निपटना पड़ा। शिकार के बहाने गौहाटी के पास दर्रों और अशुद्धियों का निरीक्षण किया गया। प्रशिक्षित तोपची ने प्राचीर के बुर्जों, पहाड़ियों, पहाड़ी ढलानों पर अंतराल पर रखी गई बैटरियों और और घाटियों में बंदूकों का कार्यभार संभाला। नदी के किनारों और मध्य धारा में कामचलाऊ दीवारें और स्टॉकेड स्थापित करने और ब्रह्मपुत्र पर नावों के पुल स्थापित करने और पानी के तेज बहाव के साथ आने वाले दुश्मन को दूर करने के लिए अचानक उन्हें वापस लेने की पारंपरिक कला अब सिद्ध हो गई थी। दक्षिण में पांडु से असुरार अली तक और उत्तर में

अगियाथुरी से कुरुआ तक पूरे युद्ध क्षेत्र को सेक्टरों में विभाजित किया गया और प्रत्येक सेक्टर को आजमाए हुए अधिकारी के अधीन किया गया । दक्षिण में लाहन हजारिका को कलाही किले में तैनात किया गया था, लेकिन लाचित बरफुकन दक्षिण में इटाखुली पहाड़ी पर गौहाटी में मुख्यालय का प्रभारी था। इतने लंबे समय तक अस्थायी रूप से किलेबंद रहे कालियाबार को अब स्थायी किले के रूप में मजबूत किया गया और इसका नाम रंगालिबुरुज़ रखा गया। उत्तर में पाँच फुकन सेनाओं के साथ कटहलबाड़ी किले में रहने के लिए आए थे, लेकिन उत्तरी बेस के अतान बुरगोहैन लाठिया पर्वत किले में थे और उत्तर में पूर्वी कमान के बागचोवाल बारपात्रा गोहेन कुरुआ में थे। नदी की रखवाली लकु हजारिका, लैंडाओमी हजारिका और हरनाथ के पुत्र करते थे।" (100)

परिश्रम से जो सामने आया, वह मध्ययुगीन भारत में देखी जाने वाली कुछ सबसे अद्भुत रक्षात्मक संरचनाओं में शामिल थीं, जिनकी तुलना उस युग के किसी भी युद्ध में बनाई गई संरचना से नहीं की जा सकती। मूल, अंतर्निहित अवधारणा, सरलता ही थी। गौहाटी का परिदृश्य अपेक्षाकृत नीची और हरी-भरी पहाड़ियों से भरा हुआ था, जिन्हें बड़ी सेना और युद्ध के साजो-सामान को रखने के लिए छावनियों में परिवर्तित किया जा सकता था। इनमें से कुछ पहाड़ियाँ ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों के करीब थीं, जिससे रक्षकों को ब्रह्मपुत्र की ओर आने वाली दुश्मन की युद्ध नौकाओं, या जमीन से आगे बढ़ने वाले सैनिकों पर तोपखाने की बौछार शुरू करने में ऊँचाई का लाभ मिलता था।

हालाँकि, पहाड़ियों के बीच अंतराल थे; इन्हें ऊँची मिट्टी की प्राचीरों से बंद कर दिया गया जिसके परिणामस्वरूप वह संरचना गौहाटी के चारों ओर लगभग पच्चीस मील की परिधि में विशाल सुरक्षात्मक घेरा प्रदान करती थी। असमिया द्वारा अपनाई जाने वाली पाली प्रणाली के अनुसार सैनिकों और तोपों को पहाड़ियों और प्राचीरों पर तैनात किया गया था। इस प्रणाली में यह शामिल था कि व्यक्तिगत सैनिकों और समूह कमांडरों को उनके बीच खड़ी पहाड़ियों और प्राचीरों की पाली या विशेष क्षेत्र सौंपा गया था, जिसकी उन्हें रक्षा करनी थी। प्रत्येक पाली के कमांडर को सैनिकों की एक टुकड़ी और आवश्यक हथियार और गोला-बारूद और अन्य साजो-सामान प्रदान किए गए थे।

उनके पास अपनी सुरक्षा को बढ़ाने, पाली के आस-पास के क्षेत्र में दुश्मन की गतिविधियों के बारे में जानकारी एकत्र करने और साथ ही

ऐसे कार्य करने के लिए कई चोर-बाचा कमांडो भी थे, जिनके लिए असाधारण साहस और कौशल की आवश्यकता होती थी। पालियों से दक्षिण से उत्तरी तट तक रक्षात्मक संरचना के प्रत्येक क्षेत्र को ढक दिया ताकि एक भी टूट-फूट न हो।

लाचित और अतान बुरगोहैन ने सुनिश्चित किया कि पहाड़ियों पर लगभग 13.5 फीट की दूरी पर और प्राचीर पर लगभग 9 फीट की दूरी पर एक सैनिक को तैनात किया जाए। व्यवस्थित दूरी का उद्देश्य सुरक्षा के किसी भी हिस्से को खत्म होने से रोकना था और साथ ही सेना के विभिन्न वर्गों के बीच संचार की सुविधा प्रदान करना था। पहाड़ियों के शिखर पर विशिष्ट अंतराल पर विशेषज्ञ तोपखाने पुरुषों द्वारा संचालित बैटरियाँ भी लगाई गई थीं।

जैसा कि कुछ बुरंजियों में वर्णित है, प्रत्येक सैनिक के उपकरण में "तीर के दो ढेर, दो तरकश, एक धनुष, दो मशालें, एक ढाल, शरीर पर पहनने के लिए एक चकटालिया (संभवतः किसी प्रकार का कवच-प्लेट), सामने की तरफ एक बोरचटा (छतरी), एक जोड़ी चक (शायद बंदूक चलाने के लिए आवश्यक उपकरण) शामिल थे। आगे की पंक्ति के सैनिकों को उनके माचिस की तीली के लिए चक के दो बंडल दिए गए थे। बरफुकन ने स्वयं इस किट को लिया और अन्य लोगों ने भी इसका अनुसरण किया।"

"मैदानों में मिट्टी की प्राचीरों पर नौ फीट के अंतराल पर एक सैनिक तैनात किया जाता था, और पहाड़ियों पर हर साढ़े तेरह फीट के अंतराल पर एक सैनिक तैनात किया जाता था। प्रत्येक पाली की लंबाई और प्रत्येक में स्थापित करने के लिए विभिन्न प्रकार की बंदूकों की संख्या को गढ़ों की संख्या के साथ कठोरता से परिभाषित किया गया था; और पहाड़ियों और प्राचीरों की सापेक्ष दूरी को भी सावधानीपूर्वक मापा और दर्ज किया गया था। रेत पर किलों के निर्माण के लिए आवश्यक सामग्रियों को न्यूनतम विवरण में निर्दिष्ट किया गया था। एक अधिकारी अपनी व्यक्तिगत टुकड़ी के साथ गढ़ वाले क्षेत्र के एक निश्चित हिस्से का प्रभारी नियुक्त किया गया था। इन सबका प्रभाव किलेबंदी को रक्षा की अभेद्य दीवार बनाना था। युद्ध-परिषद में परिपक्व विचार-विमर्श के बाद जो व्यवस्थाएँ सामने आईं, उन्हें स्टाफ मैनुअल के उद्देश्य की पूर्ति के लिए लिखित रूप में बदल दिया गया ताकि रक्षात्मक उपायों की सामान्य योजना में कम-से-कम गड़बड़ी के साथ उन्हें स्वचालित रूप से लागू किया जा सके" (101)

इतना विशाल, सुदृढ़ और अच्छी तरह से सुसज्जित घेरा दक्षिण तट पर पांडु से असुरार अली तक और उत्तर में अगियाथुरी से कुरुआ तक, गौहाटी को सुरक्षा के घेरे में बंद कर दिया, वह बंदरगाह-शहर अब केवल ब्रह्मपुत्र नदी के पार हमला करने के लिए खुला था जो इसे काटती है। "प्रकृति और मनुष्य द्वारा बनाए गए दुर्गों के अभेद्य चरित्र ने असमियों को बाद में यह कहने के लिए प्रेरित किया कि वे इंजीनियरिंग के देवता विश्वकर्मा द्वारा बनाए गए थे और वे देवताओं के लिए भी अभेद्य थे।"(102)

यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि इस तरह की संरचना लाचित की रणनीति के लिए आवश्यक थी जिसका उदाहरण मध्ययुगीन भारत के किसी भी युद्ध में देखी गई किसी संरचना से नहीं मिलता। वह अच्छी तरह से जानता था कि घुड़सवार सेना की अनुपस्थिति ने उसकी थल सेना को उन घुड़सवार सैनिकों के लिए कमजोर बना दिया था जिन्हें मुगल निश्चित रूप से लाएँगे और असमिया पैदल सैनिक स्वाभाविक रूप से उनसे भयभीत थे। इस प्रकार लाचित ने ज़मीन पर युद्ध के बजाय नदी युद्ध को प्राथमिकता दी और उनकी रणनीति युद्ध को रोकने के लिए पहाड़ियों और प्राचीरों का उपयोग करने और हमलावर सेना को ब्रह्मपुत्र पर अपनी सेना से लड़ने के लिए लुभाने की थी। नदी युद्ध की स्थिति में, लाचित के अपने शब्दों में,

"वे ऐसे लड़ सकते थे मानो अपने घरों में बैठे हों।" (103)

गौहाटी में और उसके आस-पास के इलाके ने भी इस तर्क को मजबूत किया कि मातृभूमि की रक्षा के लिए रणनीतिक रूप से यह सबसे लाभप्रद स्थिति थी। यह क्षेत्र अनेक जल निकायों से युक्त था जिनकी धाराएँ ब्रह्मपुत्र तक जाती थीं; अहोम जहाज़ उनमें छिप सकते थे, दुश्मन के जहाज़ों के गुजर जाने के बाद निकलकर पीछे से उन पर हमला कर सकते थे। गौहाटी में ऐसा जल निकाय दिघाली पुखुरी था, जिसमें ब्रह्मपुत्र नदी के लिए एक धारा थी और उपरोक्त उद्देश्य के लिए उपयोग किए जाने के अलावा, इसे असमिया युद्ध-नौकाओं के लिए गोदी के रूप में भी परिवर्तित किया गया था। एक पहाड़ी पर हथियार और गोला-बारूद का कारखाना स्थापित किया गया था ताकि हथियारों की त्वरित उपलब्धता को सुविधाजनक बनाया जा सके, बाद में उस पहाड़ी को खरगुली या वह स्थान कहा जाने लगा, जहाँ गन-पाउडर और तोप के गोले बनाए जाते थे।

अपने स्तर पर, लाचित ने अपने नौसैनिकों को अभ्यास कराया और नावों के पुल बनाने की कला में निपुण किया, जो ब्रह्मपुत्र के एक तट को दूसरे तट से जोड़ते थे| यह तब आवश्यक था जब एक तट के सैनिकों को दूसरे तट पर अपने साथियों की सहायता के लिए जल्दी से नदी को पार करना पड़ता था। यह ऐसी रणनीति थी जो असमिया रक्षात्मक रणनीति के लिए अद्वितीय थी और भारत में मध्ययुगीन किसी भी अन्य लड़ाई में नहीं देखी गई थी।

ब्रह्मपुत्र नदी पर सुरक्षा की एक और अनूठी और उल्लेखनीय विशेषता पानी के भीतर लकड़ी के भंडारों का निर्माण था| यह कौशल भारत में किसी भी अन्य लोगों को नहीं पता था। इस तरह के भंडार इसलिए संभव हुए क्योंकि ब्रह्मपुत्र किसी एक धारा के रूप में नहीं बहती थी, बल्कि बीच में रेत के टीलों के साथ कई धाराओं में बहती थी। इसलिए लकड़ी के टुकड़ों को नदी के तल में रेत के एक किनारे से दूसरे किनारे तक ले जाया जा सकता था, जिससे प्रवाह के पार लकड़ी का पुल बन जाता था। नदी भंडार दुश्मन जहाजों के खिलाफ प्रभावी अवरोधक साबित हुए और उनसे लड़ने के लिए सुविधाजनक स्थान भी प्रदान किए। ऐसे भंडारों के निर्माण में असमिया कारीगर इतने कुशल थे कि ये मानसून के दौरान भी नदी की धाराओं के प्रकोप का सामना करते थे, जब नदी अपने पूरे उफान पर होती थी। उनके पास द्वार जैसे मार्ग थे जिन्हें नावों को पार करने के लिए खोला जा सकता था।

दिलचस्प बात यह है कि रक्षात्मक तैयारियाँ अधूरी होने के बावजूद 1668 में मुगलसुंदर राजा इंद्र दमन के हमले को विफल करने के लिए पर्याप्त साबित हुईं, जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। यह याद किया जा सकता है कि ढाका के नवाब की सेना को सरायघाट की ओर बढ़ने की अनुमति देने के लिए अहोमों ने सामरिक दृष्टि से अपनी अग्रिम चौकियों से वापसी की, जहाँ उन पर हमला किया गया और व्यापक रूप से पराजित किया गया। यह अपेक्षाकृत कम पैमाने का हमला वास्तव में छिपा हुआ आशीर्वाद था क्योंकि इससे गौहाटी में कुछ रक्षात्मक कमियाँ दिखाई दीं जो बड़ी सेना के साथ टकराव में बाधा बन सकती थीं।

उस अनुभव से और अधिक प्रबुद्ध होकर, इटाखुली में अपने मुख्यालय में लाचित और विपरीत तट पर लथिया पर्वत में अतान बुरगोहेन ने मिलकर अपनी रक्षात्मक तैयारियों में खोजी गई कमियों को

सुधारना शुरू कर दिया। “पूरे क्षेत्र को कई सेक्टरों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक की कमान विशिष्ट वीरता और सिद्ध दक्षता वाले अधिकारी के पास थी। युद्ध क्षेत्र दक्षिण तट पर पांडु से असुरार अली तक और उत्तर में अगियाथुरी से कुरुआ तक फैला हुआ था। इटाखुली हिल से पूरे क्षेत्र का नजारा दिखता है जो जनरल लाचित का मुख्यालय थी, जबकि बुरगोहैन लथिया पर्वत पर अपने बेस पर उत्तरी डिवीजन के प्रभारी बने रहे। उत्तर में पूर्वी कमान बाघचोवल बारपात्रा गोहैन के प्रभारी थे जिनका मुख्यालय कुरुआ में था। पूरी व्यवस्था रणनीति और नियोजन की उत्कृष्ट कृति थी और ऐसा प्रतीत होता था कि कोई भी दुश्मन गौहाटी के अजेय वातावरण में सेंध लगाने में सक्षम नहीं होगा।” (104) “10 दिसंबर, 1669 को सम्राट औरंगजेब को सौंपी गई रिपोर्ट के अनुसार, गौहाटी में बरफुकन के पास सेना की कुल संख्या एक लाख थी, जिसमें घुड़सवार सेना की संख्या बहुत कम थी।” (105)

कई अहोम बुरंजिस पालियों के कमांडरों की तैनाती का विस्तृत, कभी-कभी विचित्र विवरण देते हैं: “दक्षिणी तट पर, पूरा क्षेत्र जनरलिसिमो लाचित बरफुकन की सीधी कमान के अधीन था। उनका शिविर इटाखुली के तल पर या गौहाटी में सुक्रेस्वर पहाड़ी पर स्थित था। वह तलवार और धनुष से लैस थे और युद्ध टोपी पहनते थे...

“बरगोहैन परिवार के खहुआ पात्रा गोहैन-फुकन, अमराजुरी से पांडु तक पाली के प्रभारी थे।

“लुथुरी चेतिया ओपर-दयाँगिया राजखोवा, रंगालिबुरुज़ से कामाख्या मंदिर की ओर जाने वाली पश्चिमी सीढ़ियों तक, 80 चोर-बचों के साथ। वह युद्ध-टट्टू, युद्ध-टोपी, तलवार और धनुष और भाले से सुसज्जित थे।

“लातुम डोलकाशरिया बरुआ, कामाख्या के पश्चिमी चरण से डुआर-गरिला तक, 360 चोर-बचों के साथ। वह कद में लंबे थे और टट्टू एवं तलवार से लैस थे। उन्होंने शरीर पर गती या कपड़ा कसकर लपेटा हुआ था जिसके दोनों सिरों पर कमर के पास गाँठ लगी रहती थीं।

“बारचेंग गोहैन, दुआर-गरिला से पाराघोपा तक, 360 चोर-बचों के साथ। वे अपने हाथ में तेज़ धार वाली तलवार रखते थे।”

“ठकुआ बंदुकियाल बारगोहैन, पाराघोपा से धेनुखिरिया तक, 80 चोर-बचों के साथ। वे हाथ में तलवार रखते थे।”

"बेथाबार हजारिका लेकाई चेटिया, लेचाई कारी के पुत्र, गोटागर से फतासिल तक, 80 चोर-बचों के साथ। वह तलवार और स्पैम रखते थे और युद्ध-टोपी पहनता थे, वह छोटे और मोटे थे और काले रंग के थे।"

"नियोग गोहैन, फतासिल से असुरार अली तक, 60 चोर-बचों के साथ। वह कद में छोटे और बौने थे और अपनी चाल में तेज थे। उनके हाथों में भाला और घुमावदार तलवार रहती थी और वे युद्ध-टोपी पहनते थे।

"बरगोहैन परिवार के हटराई कलियाबारिया गोहैन-फुकन, असुरार अली पर, 100 चोर-बाचो के साथ। वह आकार में पतले और तेज गति वाले थे और वह डैन और भाला रखते थे, और युद्ध-टोपी एवं गारी पहनते थे। वह अपनी पालि की निगरानी करते हुए पालकी पर सवार रहते थे। वह देखने में डरावने थे।

"असुरार अली के दक्षिण में स्थित पहाड़ी पर बरगोहैन परिवार के लहमान मरांगी-खोवा चेतिया, 100 चोर-बाचो के साथ। वह आकार में पतले थे और रंग में काले और चमकदार थे। वह युद्ध-टोपी और काले कबूतर के रंग की गारी पहनते थे। वे हाथ में तलवार रखते थे और चिल्लाते हुए आदेश और निर्देश देते हुए घूमते थे।

"बरगोहैन परिवार के जातिचंदन नामदयाँगिया राजखोवा, उषा-हरण पर्वत के नाम से मशहूर पहाड़ी पर, 80 चोर-बाचो के साथ। उनका रंग सुर्ख था; उनकी आँखें तांबे के रंग की थीं; और वह देखने में डरावने थे। वे युद्ध टोपी और भैंसे के रंग की गैती पहनते थे। वह तलवार और धनुष रखते थे।

"बुरगोहैन परिवार के चक्रपाणि मातबर तार-सलागुरिया राजखोवा, बार हजारिका के पुत्र, उषा-हरण पर्वत से ओभोटा-सिमलुर बट के नाम से प्रसिद्ध सड़क पर, 80 चोर-बाचो के साथ। उनका रंग भूरा था। वह तेज़ गति से अपनी पालि में चलते थे। उनके पास तलवार, धनुष और मोटी गदा रहती थी।

"निम्नलिखित कमांडर ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी तट पर जल मार्ग की रक्षा में तैनात रहते थे:

"[illegible] राजखोवा नदी पर बनाए गए भंडारों के प्रभारी

थे। उनके अधीन 104 चौकीदार और नाविक थे।

"चेताई पानी-सलागुरिया राजखोवा, तंगाचू का पुत्र, 80 चोर-बाचो के साथ।"

"तंगाचू दिखौमुखिया राजकोवा, 80 चोर-बाचो के साथ।"

"कलंचु सैंडीकोई नेओग, 80 चोर-बाचो के साथ"

"उत्तरी तट पर: प्रधानमंत्री बहगरिया अतान बुरगोहैन राजमंत्री डांगरिया व्यक्तिगत रूप से गौहाटी के उत्तरी तट पर कमान के प्रभारी थे। उनका शिविर लाथिया पर्वत पर स्थित था, और उनके साथ 80 चोर-बाचा रहते थे। बुरगोहैन का कद लंबा था, और उनकी चाल हंस के कदमों जैसी थी। उनका चेहरा चौड़ा था और माथे पर दो तिल थे। उनका रंग सुर्ख था। वह भैंसे के रंग की गैती पहनते थे और हाथ में बड़ी तलवार रखते थे।

" बुरगोहैन परिवार के सेन गोहैनबार-अभयपुरिया राजखोवा, 80 चोर-बाचों के साथ जुरिया से सराय तक के पाली के प्रभारी थे। वह लंबे कद के, सुर्ख रंग के ऊँची और गूँजने वाली आवाज़, तेज गति वाले और देखने में डरावने थे। वह काली गाती, और युद्ध-टोपी पहनते थे, और दाव, धनुष और भाला धारण करते थे।

"मंजू-अभयपुरिया राजखोवा, फूंल बरुआ का भतीजा, सराय के सामने डेरा डाले हुए था, जिसका अधिकार क्षेत्र केकुरी तक था। उसके पास 80 चोर-बाचा थे। वह पतला और दिखने में सुंदर था। वह भैंस के रंग की पोशाक गति और युद्ध-टोपी पहनता था। वह तलवार, धनुष, दो मशाल और दो चाक रखते थे। वह अपनी पाली में तेजी से गतिशील रहता था। उसके बाल और आँखें लाल थीं। इधर-उधर जाते समय वह दुश्मन के प्रति गंभीर अवज्ञा का रुख दिखाता था।

"लंकमखरू परिवार का हरिबार सरू-अभोयपुरिया राजखोवा, केकुरी से लाठिया पर्वत तक की जिम्मेदारी संभालता था। उसकी आँखें थोड़ी तिरछी थीं। वह अपनी पाली में तेजी से घूमता रहता था।

"मिरी-सैंडिकोइ फुकन 100 चोर-बाचा के साथ लाठिया से चीला पर्वत तक का क्षेत्र संभालता था। वह बार चीला पर्वत और सारू चीला पर्वत दोनों का प्रभारी था। उसका रंग काला था, उसकी आँखें लाल थीं और उसकी गति बहुत तेज थी। उसे किसी विशेष स्थान पर

स्थिर और शांत रहना पसंद नहीं था और लगातार पैदल चलते रहना चाहता था।

वह देखने में डरावना लगता था। वह तलवार और धनुष रखता था और गाती पहनता था।

"हजारिका बरुआ सरू चीला पर्वत के एक हिस्से की रक्षा करता था और निओग बरुआ ने शेष हिस्से की सुरक्षा संभालता था। उनमें से प्रत्येक के पास 50 चोर-बाचा थे। वे दोनों डरावने लगते थे और तलवार ऊपर उठाकर तेज़ी से इधर-उधर गतिशील रहते थे। वे अपने पास धनुष भी रखते थे।

"सरूजना दुआरा लेचाई तारुआ-दिहिंगिया राजखोवा, चिला पर्वत से सिंधुरिघोपा तक का दायित्व संभालते थे, जहाँ तक सड़क खारा-परुआ अली के नाम से जानी जाती थी। वह 120 चोर-बाचाओं के साथ कार्य करते थे। वह हाथी की गंभीरता के साथ पैदल चलते थे। उसका रंग सुर्ख और चौड़ी छाती और पतली कमर थी। वह अपने हाथ में दाओ और बगल में धनुष रखते थे और युद्ध-टोपी पहनते थे।

"चेरिंगिया पेलन फुकन, खारा-गरूआ अली से लेकर रंगमहल तक 120 चोर-बाचाओं के साथ कार्य संभालते थे। उसके हाथ और पैर छोटे और मोटे थे। उसका रंग भूरा था और वह देखने में डरावना था। वह दाव, धनुष और ढाल रखता था और भैंस के रंग की गाती और गोलाकार टोपी पहनते थे।

"धावा गोहैन गजपुरिया राजखोवा, रंगमहल से एडमर सिल को, 100 चोर-बाचाओं के साथ संभालते थे। वह थिगने और छोटे कद के थे। उसके पास तलवार और भाला था; और युद्ध टोपी और भैंसे के रंग की गाती पहनते थे।"

"मोरन गोहैन राजा के भाई थे और 80 चोर-बाचाओं के साथ अदामार सिल से कनाई-बारासी-बोआ सिल तक दायित्व संभालते थे।

"रूप संदिकाई को सादिया-खोवा के नाम से भी जाना जाता है। वे कनाई-बारासी-बोआ सिल से शाहबुरुज़ तक का दायित्व 100 चोर-बाचा के साथ संभालते थे।"

"बाघचोवाल बारपात्रा गोहैन 120 चोर-बाचाओं के साथ

कुरुआ में तैनात थे। उनका रंग सुर्ख था। वे जहाँ भी जाते थे अपनी छाप छोड़ते थे। उनके हाथ में केवल तलवार होती थी। उनकी पाली निचली भूमि में स्थित थी।"

"रैडांगिया फुकन का बड़ा भाई, बरपात्रा गोहैन की पाली के पास 80 चोर-बाचा के साथ दायित्व संभालते थे। वह दिखने में बहुत सुंदर थे।"

"ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर पानी की रक्षा दिहिंगिया फुकन के भतीजे पाणि-दिहिंगिया राजखोवा करते थे जिनके साथ 80 चोर-बाचा थे और बरगोहैन फुकन 100 चोर-बाचा के साथ दायित्व संभालते थे।"

"निम्नलिखित अधिकारियों को भी दोनों तटों पर महत्वपूर्ण कमान सौंपी गई थी, लेकिन उनकी पालियों को अब किसी भी स्तर की सटीकता के साथ सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है : बरगोहैन परिवार के कमलाकांत अभयपुरिया राजखोवा; हलधर दुआरा, फुल बरुआ के पुत्र; दयाँगिया राजखोवा, लुथूरी के पुत्र; पपांग परिवार के चौदांग बरुआ; रैडांगिया फुकन; चेरेगुअल फुकन; और दिहिंगिया फुकन।" (106)

पच्चीस मील चौड़ी किलेबंदी में सावधानीपूर्वक योजना और तैनाती ने रणनीतिकार लाचित बरफुकन की कौशल और क्षमता की गवाही दी। यह एक जनरल द्वारा इलाके के बारे में अपने ज्ञान और मौजूदा प्राकृतिक विशेषताओं का उपयोग करके आदर्श रक्षात्मक संरचना बनाने का संकेत उदाहरण था, जिसे एक शत्रु थल सेना, चाहे वह कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, के लिए तोड़ना लगभग असंभव होगा। लंबे अनुभव वाले योद्धा-राजनेता, प्रधामंत्री अतान बुरगोहैन ने बहुमूल्य सुझाव दिए थे। लाचित की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उनका दिमाग योग्य सलाह के साथ-साथ तार्किक आलोचना को भी ग्रहण करता था और उसी के अनुसार अपनी योजना को कार्यान्वित करता था। युद्ध-परिषद की बैठकें नियमित रूप से होती थीं और रक्षात्मक उपायों पर हर दिन चर्चा और बहस होती थी।

सुझावों के प्रति खुले दिमाग का होने के बावजूद, हर कोई समझता था कि लाचित भी कठोर, लगभग निर्दयी अनुशासक था और कर्तव्य के प्रति कोई लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने अपने अधिकारियों को चेतावनी दी थी कि यदि कोई सौंपे गए कार्य की उपेक्षा

करता हुआ पाया जाता है, या निर्दिष्ट स्थान पर अपने कार्य से अनुपस्थित पाया जाता है तो उसके क्रोध का सामना करेगा| यह कुछ ऐसा था जिसके बारे में सबसे निचले रैंक के सैनिकों और अन्य लोगों को सूचित किया गया था। रक्षात्मक ढाँचे को तैयार करने का काम दिन-रात चलता रहा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुश्मन अभी तक सामने नहीं आया था, फिर भी पूरी सतर्कता जरूरी थी।

दरअसल, दूर क्षितिज पर काले बादल उमड़ रहे थे। युद्ध के कुत्तों को जल्द ही खुला छोड़ दिया जाएगा!

मुगल प्रतिक्रिया

"फ़िरोज़ खान की हार और गौहाटी हाथ से निकलने का समाचार दिसंबर 1667 में औरंगजेब तक पहुँचा। उसने तुरंत अपमान को मिटाने का संकल्प लिया और इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, राजा राम सिंह को शाही सेना की कमान सौंपी जिसे बंगाल कमान के सैनिकों द्वारा मजबूत किया जाना था। उसके साथ गौहाटी का पुराना थानेदार राशिद खान भी था। उसकी सेना को इकट्ठा करने और परिवहन में कुछ समय लगा, जिसमें 18,000 घुड़सवार और 30,000 पैदल सैनिकों के साथ कोच बिहार से 15000 तीरंदाज भी शामिल थे, और वह फरवरी 1669 तक रंगमती नहीं पहुँचा।" (107)

कम-से-कम एक तरह से असमिया के खिलाफ मुगल सेना का नेतृत्व करने के लिए राम सिंह को चुनना अहोम राजा जयध्वज सिंह के खिलाफ आगे बढ़ने के लिए सम्राट औरंगजेब की मीर जुमला की पसंद के समान थी। यह याद किया जा सकता है कि चालाक सम्राट ने शक्तिशाली मीर जुमला को इस गुप्त आशा के साथ भेजा था कि असम की ऐसी भूमि के रूप में बुरी प्रतिष्ठा थी जहाँ से कोई विदेशी नहीं लौटता, वह सच साबित होगी और वह भूमि उसके संभावित प्रतिद्वंद्वी का अंत देखेगी। वह आशा पूरी हो गई थी और असम ने वास्तव में मीर जुमला को मार डाला था।

अंबर के मिर्जा-राजा जय सिंह के पुत्र राम सिंह के चयन में, औरंगजेब ने गुप्त रूप से आशा की थी कि अभियान में उस गौरवशाली राजपूत राजकुमार का भी अंत होगा। यह आगरा में बंदी रहने के समय प्रसिद्ध योद्धा छत्रपति शिवाजी और उनके पुत्र की मदद करने में राम सिंह की कथित मिलीभगत के लिए सज़ा साबित होनी थी। शिवाजी आगरा से कैसे भाग निकले इसकी कहानी मुगल भारत की सबसे दिलचस्प किंवदंतियों में से एक है। मई 1666 में, शिवाजी और उनके नौ वर्षीय पुत्र संभाजी, औरंगजेब के निमंत्रण पर, मुगल दरबार में आये और उन्हें गिरफ्तार कर आगरा में कैद कर लिया गया। ऐसा कहा जाता है कि मराठा योद्धा और उनके बेटे ने फलों की टोकरियों में छिपकर हिरासत से भागने में सफलता हासिल की थी! औरंगजेब जानता था कि वे बाहर की मदद के बिना इस तरह के साहसी पलायन को अंजाम नहीं दे सकते थे और उसे संदेह था कि राजा राम सिंह इस कृत्य में भागीदार था, उसके संदेह को राजपूत कमांडर के प्रतिद्वंद्वियों के आरोपों से बल मिला था।

उन आरोपों के परिणामस्वरूप राजा राम सिंह को मनसबदार या कमांडर के पद से वंचित कर दिया गया और मुगल दरबार में बैठने का विशेषाधिकार भी समाप्त कर दिया गया। अंबर के प्रसिद्ध कुच्छवा कबीले के उनके गौरवान्वित पिता जय सिंह पूरे भारत में योद्धा के रूप में प्रसिद्ध थे और उन्होंने मुगलों को विशिष्ट सेवा प्रदान की थी। जय सिंह अपने बेटे के अपमान की खबर से टूट गए और कुछ ही समय बाद 2 जुलाई, 1667 को उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद, राम सिंह को सम्राट ने फिर से वापस ले लिया, उसे चारहज़ारी के रूप में नियुक्त किया गया| उसके पहले के विशेषाधिकार बहाल किए गए और नवोदित असमियों को सबक सिखाने का काम सौंपा गया।

कथित तौर पर, राम सिंह की माँ और पत्नियाँ उनकी नियुक्ति से चिंतित थीं, और उनसे सिख गुरु तेग बहादुर से परामर्श करने के लिए कहा। "उनकी सलाह के अनुसार, राम सिंह अपने मंत्रियों और सैनिकों के बड़े दल के साथ गुरु तेग बहादुर से मिलने गया। राम सिंह ने गुरु से कहा, 'मेरी माँ और रानियों ने मुझसे पूछा कि क्या मैं असामयिक मृत्यु चाहता हूँ।' उन्होंने दर्शाया कि मीर जुमला जितना बहादुर कोई भी नहीं है और यदि वह नष्ट हो गया तो मेरे लिए क्या आशा है? उस अभियान में शामिल सभी जनरलों में राजा मान सिंह को छोड़कर कोई भी कभी वापस नहीं आया। तब मुझे भी खतरे की स्थिति दिखी। हमलावर सेना

की कमान संभालना निश्चित मौत है और सम्राट के आदेश की अवज्ञा करना मेरे लिए भी उतना ही घातक होगा। गुरु तेग बहादुर ने राम सिंह से ईश्वर में विश्वास रखने को कहा।" (108)

"गुरु नानक," उन्होंने कहा, "आपकी सहायता करेंग और आप कामरूप पर विजय प्राप्त करेंगे।" गुरु ने राम सिंह के साथ असम जाने की पेशकश की। (109)

उनकी नियुक्ति के प्रतीक के रूप में, 27 दिसंबर, 1667 को, औरंगजेब ने राम सिंह को खेलत भेंट की, जिसमें सोने की काठी और मोतियों से सजी बेल्ट के साथ एक ख़ंजर शामिल था। (110)

6 जनवरी, 1668 को राम सिंह को असम के अहोम राजा के खिलाफ आगे बढ़ने के लिए तैयार मुगल सेना के कमांडर-इन-चीफ के रूप में नियुक्ति का औपचारिक आदेश मिला। उसे प्रधानमंत्री जफ़र खान उमदत-उल-मुल्क ने बताया कि उन्हें सैनिकों के लिए साजो-सामान की आपूर्ति की जाएगी और समय के साथ उन्हें और अधिक सैनिक उपलब्ध कराए जाएँगे। (111)

जफर खान ने उसे जो शाही फरमान सौंपा, उसमें लिखा था : "अंबर के राजा और मिर्जा राजा जय सिंह के पुत्र, राम सिंह चारहज़ारी को असम की विजय के लिए शाही सेना के कमांडर-इन-चीफ के रूप में नियुक्त किया गया है। उसके पास इक्कीस राजपूत प्रमुख, अपने पेरोल के तहत चार हजार सैनिक, पंद्रह सौ अहादीस (सज्जन-सैनिक) और पाँच सौ तोपखाने वाले लोग थे। अभियान में उसके प्रतिनिधि राजा इंद्रमणि, दो हजार पाँच सौ पुरुषों के साथ चादमेंद खान, आलम खान दुइहज़ारी, बकरम खान दुइहज़ारी, दीवान सईद गज़प खान एकहज़ारी, कायम खान, ज़ुलेल बेग, राजा पृथु, राजा माणिक, मीर गज़राफ खान बेलदारी अपने 2,500 लोगों के साथ, नासिरी खान, किरत खान भुर्तैया, मिर्था के रघुनाथ सिंह और बैरम देव सिसौदिया। बंगाल के गवर्नर शाइस्ता खान द्वारा विशाल सेना की व्यवस्था की जा रही है और दोनों सेनाओं का संयोजन अजेय होगा।" (112)

शक्तिशाली सेना के मुखिया के रूप में अप्रभावित राजपूत राजा को भेजने में औरंगजेब की बुद्धिमत्ता संदिग्ध हो सकती है, लेकिन चतुर सम्राट को यह विश्वास था, जैसा कि मीर जुमला के मामले में हुआ था। शरीर में सुई चुभने की आशंका को घर के करीब रहने की अनुमति

देने के बजाय दिल्ली से दूर रखना बेहतर होगा। हालाँकि, उन्होंने मीरा सईद सैफ दीवान, मीर राजी दीवान, 700 जसोल के बहलोल खान दरोगा, 300 अहदीस के सुल्तान अली दरोगा जैसे कई मुग़ल अधिकारियों और मीर गार बेग हाजी वाकयानवीस को राजपूत राजा के कार्यों पर व्यक्तिगत रूप से नजर रखने और रिपोर्ट करने के लिए तैनात करने की सावधानी बरती ताकि वह असम के राजा और अधिकारियों के साथ मिलीभगत करने से बचे। (113)

"इस अभियान में राम सिंह के साथ नवाब राशिद खान भी था जो मीर जुमला के आक्रमण के दौरान असम में था और जिसने चार वर्षों तक गौहाटी के फौजदार के रूप में कार्य किया था। यह सम्राट औरंगजेब की परिपाटी थी कि जब विशेषरूप से हिंदू दुश्मन के खिलाफ अभियान में किसी हिंदू को इकलौता प्रभारी बनाता था तो मुस्लिम अधिकारी को सेकंड इन कमान नियुक्त करता था। इस नीति के अनुसरण में दिलेर खान दाउदजई को शिवाजी के खिलाफ युद्ध में मिर्जा राजा जय सिंह के साथ भेजा गया था। औरंगजेब का आदेश राशिद खान को इस प्रकार दिया गया-'राशिद खान, आपको असम के खिलाफ अभियान में शामिल होना है। आप पहले मजूम खान (मीर जुमला) के साथ वहाँ गए थे, और आप उन लोगों की भाषा और रीति-रिवाजों को जानते हैं।" (114)

जनवरी 1668 में जब राम सिंह दिल्ली से निकला, तो उसकी सेना अपेक्षाकृत छोटी थी; लेकिन सम्राट द्वारा दी गई सेना और वादे के अनुरूप बंगाल से सहायक सेना के साथ यह 30,000 पैदल सेना, 18,000 तुर्की घुड़सवार सेना और 15,000 कोच तीरंदाजों तक बढ़ गई। थल सेना को 40 युद्ध नौकाओं या घुरबों के बेड़े द्वारा संवर्धित किया गया, जिनमें तोपें लगी थीं और प्रत्येक पचास से साठ लोगों को ले जाने में सक्षम थी। प्रत्येक नाव में सैकड़ों कासा या नाविकों द्वारा खींची जाने वाली छोटी नावें थीं। यह जानना भी दिलचस्प है कि मुगल सेना में सैकड़ों विशाल शिकारी कुत्ते थे जिन्हें दुश्मन के पैदल सैनिकों को टुकड़े-टुकड़े करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। दिल्ली से साथ आए मुगल कमांडरों के अलावा, रास्ते में उसके साथ कूचबिहार के कमांडर भी शामिल हुए, जिनमें राजा जय नारायण, परीक्षित के पोते, कविसेखर बरुआ, सर्वेश्वर बरुआ, मनमथ बरुआ और घनश्याम बख्शी शामिल थे।

अहोम बुरंजियों के साथ-साथ मुगल और फारसी इतिहास में राम सिंह की सेना के आकार के बारे में भिन्नता है, लेकिन कुछ

इतिहासकारों के विचारों के विपरीत, यह निश्चित रूप से विशाल सेना होने की कल्पना की जा सकती है क्योंकि यह महत्वपूर्ण अभियान पर निकल रही थी और मुगल प्रतिष्ठा दाँव पर थी।

राम सिंह अपने साथ पटना से सिख गुरु तेग बहादुर और पाँच मुस्लिम पीर भी लाया था जो काली कलाओं का मुकाबला कर सकते थे, जिसके लिए असम उस समय कुख्यात था। लेकिन गुरु ने बाद में स्वीकार किया कि राम सिंह के साथ जाने के तीन उद्देश्य थे-राजा के मित्र के रूप में, भगवान के शब्दों का उपदेशक और रक्तपात को रोकना । शायद असम मार्च के दौरान गुरु के सहयोग ने इस तथ्य में कुछ हद तक योगदान दिया कि राम सिंह ने अपने अभियान के प्रारंभिक चरण में रक्तपात से बचने की कोशिश की और इसके बजाय बातचीत का रास्ता खोजा। गुरु जिन स्थानों पर गए उन्होंने उन सभी स्थानों पर सिख धर्म का प्रचार किया, राजपूत राजा की सेना के धुबरी पहुँचने और रंगनदी की मुगल चौकी की तरफ बढ़ने के बाद ही गुरु राजपूत राजा से अलग हुए। सिख गुरु ने असम में ब्रह्मपुत्र के तट पर धुबरी में पहला गुरुद्वारा बनाया। गुरुद्वारा दमदम के नाम से प्रसिद्ध यह गुरुद्वारा बाद में सिखों के लिए पवित्र तीर्थस्थल बन गया।

धुबरी प्रवास के दौरान, गुरु तेग बहादुर को कथित तौर पर खबर मिली कि पटना में उनके बेटे का जन्म हुआ है। यह ख़ुशी का कार्यक्रम राम सिंह के शिविर में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें संगीत और बंदूकों से फायरिंग और प्रचुर मात्रा में भिक्षा का वितरण किया गया। यह पुत्र गोविंदा थे, जो 1675 में सम्राट औरंगजेब द्वारा तेग बहादुर को फाँसी दिए जाने के बाद सिखों के दसवें गुरु बने। (115)

ढाका पहुँचने पर गवर्नर नवाब शाइस्ता खान ने राम का गर्मजोशी से स्वागत किया जो मिर्जा राजा जय सिंह के करीबी दोस्त थे। नवाब मुग़ल सम्राट शाहजहाँ की पत्नी, प्रसिद्ध बेगम मुमताज महल का बड़ा भाई था। वास्तव में, यह जहाँगीर ही था जिसने अपने परिवार की सेवा करने के सम्मान में शाइस्ता खान को मिर्जा की उपाधि से सम्मानित किया और मुग़ल दरबार में पद दिया था। चूँकि औरंगजेब ने दिल्ली की गद्दी हासिल करने के लिए अपने पिता शाहजहाँ को अपदस्थ कर कैद कर लिया था, इसलिए स्वाभाविक रूप से उसका शाइस्ता खान के प्रति अच्छा रवैया नहीं था।

शिवाजी को हराने में असफल रहने के कारण, विशेषकर पुणे में हुए उपद्रव के बाद, जिसमें शाइस्ता खान ने अपनी कुछ उंगलियाँ खो दी थीं। नवाब ने औरंगजेब को और अधिक अलग-थलग कर दिया था। बंगाल के गवर्नर पद पर उसकी नियुक्ति दंडात्मक प्रकृति की पोस्टिंग थी। इसलिए, वह औरंगजेब और सम्राट द्वारा भेजे गए किसी भी कमांडर के प्रति बहुत अच्छा व्यवहार नहीं रखता था। हालाँकि, जय सिंह के साथ उसकी पिछली दोस्ती नवाब के लिए राम सिंह के प्रति शत्रुता न रखने का पर्याप्त कारण थी।

नवाब ने उन्हें किसी भी तरह से मदद करने का वादा किया और तुरंत राम सिंह की पहले से ही दुर्जेय सेना में शामिल होने के लिए बंगाल कमांड से 2000 अतिरिक्त सैनिकों को मंजूरी दे दी। पुराने असमिया बुरंजी के अनुसार शाइस्ता खान ने गुप्त रूप से आशा व्यक्त की थी कि राम सिंह असमियों को हराने में सफल नहीं होंगे, क्योंकि एक संप्रभु देश के रूप में असम का निरंतर अस्तित्व बंगाल सूबेदार के रूप में उसकी अपनी स्थिति को बढ़ाने का काम करेगा, जिसे मुग़ल साम्राज्य और एक स्वतंत्र राज्य के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करना था।

न ही शाइस्ता खान उस सफलता के बारे में बहुत आशावादी था जिसे राम सिंह को अपने निर्धारित उद्देश्य में हासिल करना था, क्योंकि उसने मीर जुमला और उसके दुर्भाग्यपूर्ण अभियान पर आई आपदा की मिसाल कायम की थी। उसी पुराने इतिहास के अनुसार शाइस्ता खान ने राम सिंह को निम्नलिखित सलाह दी : "आपको इस तरह से कार्य करना होगा कि आप सम्राट की कृपा में बने रहें जो चतुर राजनीतिज्ञ है। मैंने सुना है कि असम ने विशाल किलेबंदी का निर्माण किया है। मुझे यह भी बताया गया है कि अहोम चतुर राजनयिक हैं। शुजानगर (हाजो) अस्वास्थ्यकर स्थान है; इसकी पहाड़ियाँ जंगलों से ढकी हुई हैं, और दो महीनों-बैसाख और ज्येष्ठ के दौरान नदियों में जहरीला पानी बहता है। वहाँ जो हवा चलती है, वह विष से संक्रमित है। इस कारण वहाँ हमारे आदमी बड़ी संख्या में मरते हैं और तुम्हें वहाँ बहुत सावधानी से रहना चाहिए। लौहित्य या ब्रह्मपुत्र को छोड़कर कोई अन्य पानी मत पीना। वहाँ की स्त्रियों को अपने महल में प्रवेश न करने देना; वे दुष्ट और विश्वासघाती हैं। जब भी आपके पास भोजन सामग्री, युद्ध सामग्री या धन की कमी हो तो कृपया मुझे लिखें और मैं आपको अपने में से एक मानकर उन्हें आपके पास भेज दूंगा।" (116)

इस तरह के आश्वासन के साथ, राम सिंह अपनी विशाल सेना के साथ असम की ओर चल पड़ा। वह औरंगजेब को पहली बार निचले असम के हाथ से निकलने के बारे में पता चलने के दो वर्ष से अधिक समय बाद फरवरी 1669 में ही रंगमति में मुग़ल चौकी पहुँच सका, इतनी लंबी अवधि यह सुनिश्चित करने के लिए काफी थी कि अहोम रक्षात्मक बुनियादी ढाँचा खड़ा कर सके, जैसा कि घटनाएं सामने आईं, वह बिलकुल अभेद्य सिद्ध हुआ!

26 फरवरी, 1669 के फरमान में सम्राट औरंगजेब ने असम में प्रवेश करने के लिए राजा राम सिंह की सराहना की और उसे निर्देश दिए कि आगे क्या करना चाहिए। फरमान में लिखा था: "जान लो, राजा राम सिंह कि सम्राट को अमीरुल उमरा (शाइस्ता खान) के पत्र से पता चला है कि आपने उनसे छुट्टी ली थी और बहादुर सेनापति के रूप में सैनिकों के समूह के साथ असम के जमींदार के क्षेत्र पर आक्रमण किया। इस समाचार ने सम्राट को बहुत प्रसन्न किया है। आपको तुरंत गौहाटी और अन्य थानों की ओर बढ़ना चाहिए, जहाँ शायद सैयद फिरोज खान और सैयद सालार खान पहले से ही तैनात हों और उन्हें जबरन हटा दें और पूर्ण और दृढ़ नियंत्रण स्थापित करें। इसके बाद शाही नौकरों में से प्रत्येक को सहयोग करना चाहिए और थाने की सुरक्षा के लिए कदम उठाना चाहिए और उनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए प्रयास करना चाहिए। और आपको पता होना चाहिए कि इस कार्य को सबसे उत्कृष्ट तरीके से आदेश के अनुसार करने को प्राथमिकता दो और शाही दरबार में अच्छे नतीजे लाओ..." (117)

शतरंज का लंबा खेल

जैसा कि पहले कहा गया है, अहोम राजाओं के अधीन असमिया सैन्य प्रशासन ने मध्ययुगीन भारत में देखे जाने वाले बेहतरीन जासूसी नेटवर्क में से एक विकसित किया था। वास्तव में, लाचित बरफुकन के अधीन कुछ चोरबाचा दिल्ली से प्रस्थान के समय से ही राम सिंह और उसकी विशाल सेना का पीछा कर रहे थे और उनकी प्रगति की जानकारी गौहाटी में कमांडर-इन-चीफ को दे रहे थे। इस प्रकार यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि जैसे ही ये घटनाक्रम हुआ, लाचित को राजपूत जनरल के ढाका से प्रस्थान और रंगमती में आगमन के बारे में अवगत कराया गया।

"असम के अभियान में अंबर के राजा राम सिंह के नेतृत्व ने असमियों को और अधिक कठिन तैयारियों की आवश्यकता के बारे में जागरूक किया। मुगल साम्राज्यवाद के वंशानुगत समर्थक अंबर घराने और उनके सैन्य कौशल एवं वीरता को भारत में हर जगह जाना जाता था। राम सिंह की भागीदारी ने असमियों के दिलों में घबराहट की भावना पैदा नहीं की, इससे उन्हें केवल यह विश्वास हुआ कि आगामी अभियान पुनर्प्राप्ति के पिछले युद्ध की तुलना में कठिन खेल होगा। इस

प्रकार असम-मुग़ल संघर्ष का नया चरण, गौहाटी और मानस तक के क्षेत्रों पर कब्ज़ा बनाए रखने के लिए रक्षात्मक युद्ध शुरू हुआ।" (118)

जासूसों ने राम सिंह की सेना की संरचना का सूक्ष्म विवरण भेजने में कष्ट उठाया था। लाचित को तुरंत एहसास हुआ कि बाहरी सीमाओं में तैनात की गई कोई भी रेजिमेंट आने वाली सेना का सामना करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी और उसे केवल गौहाटी में ही खदेड़ा जा सके। इसलिए, कार्रवाई के तीन तरीके तुरंत अपनाने पड़े। सबसे पहले, गौहाटी में रक्षा संरचना को और मजबूत करना पड़ा। दूसरा, परिधि पर तैनात छोटे असमिया सैनिक दलों को पीछे हटने की जरूरत थी। राम सिंह की सेना को आगे बढ़ने में देरी करने के लिए सामने से हमलों के बजाय उत्पीड़न करने वाली गुरिल्ला रणनीति अपनाने का निर्देश दिया जाना चाहिए, जिससे खुद को और अतान बुरगोहैन जैसे लेफ्टिनेंटों को सुरक्षा मजबूत करने के लिए अतिरिक्त समय मिल सके। यह सुनिश्चित करने के लिए भी इस तरह की देरी की रणनीति की आवश्यकता थी कि राम सिंह को प्रभावी कार्रवाई से रोकने के लिए भयानक मानसून की बारिश आ जाए। तीसरा, ऐसी रणनीति बनानी होगी जो धीरे-धीरे राजपूत जनरल को गौहाटी में बिछाए गए जाल में फँसा दे और खुले मैदान की बजाय नदी की लड़ाई में उलझा दे।

फलस्वरूप, मानस नदी के पास अहोम चौकियों को शाही सेना के साथ झड़पों में शामिल होने का आदेश दिया गया ताकि गौहाटी के प्राथमिक लक्ष्य तक पहुँचने में जितना संभव हो देरी हो सके। मारो और भागो की गुरिल्ला रणनीति अपनाने वाली छोटी टुकड़ियाँ आसानी से पराजित हो गईं, हालाँकि उन्होंने आगे बढ़ने में देरी करने में मदद की। शाही सेना में शामिल अहोम सैनिकों को पूर्व सूचना थी कि मुगल अपने साथ क्रूर युद्ध-शिकार लेकर आए थे, लेकिन इसके बावजूद उन्हें इन जानवरों द्वारा मचाए जाने वाले विनाश का पूरी तरह से अनुमान नहीं था।

"राम सिंह अपने साथ 1,000 युद्ध शिकारी कुत्ते लेकर आया था, और वे हमारे सैनिकों को लड़ाई की स्थिति में गोलियों के धुएँ में भी पकड़ लेते थे। चूँकि वे झुंड में असमिया सीमा के पास नहीं आते थे, इसलिए उनमें से एक समय में केवल एक या दो को ही मारा जा सकता था।" (119)

बंगाल के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए रंगमती में मनसबदारों की छोटी टुकड़ी को छोड़कर राम सिंह ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट के साथ आगे बढ़ा। आदेश के अनुसार, असम सीमा पर टुकड़ियाँ अपनी स्थिति से हट गईं और गौहाटी की ओर रवाना हो गईं। उसी समय लाचित ने मुगलों को नदी बंदरगाह के निकट आने का लालच देने के लिए तीन राजखोवाओं के अधीन छोटी-छोटी टुकड़ियाँ भेजीं। "राम सिंह ने असम के पानी में निर्विरोध प्रवेश किया और असमियों की ओर से प्रतिरोध की अनुपस्थिति के लिए राम सिंह ने उनकी निष्क्रियता और भय को जिम्मेदार ठहराया। राजखोवा की टुकड़ियाँ शेष नदी पर इस तरह चली गई जिससे राम सिंह की सेना की दृष्टि में रहें, लेकिन मुगलों की तोपों की सीमा के बाहर रहें। रात में राजखोवा नदी के किनारे डेरा डालते थे। उनके शिविरों में केले के पेड़ों के तने लगे होते थे जिनमें से प्रत्येक पर एक मशाल होती थी। सुबह-सुबह असमिया सैनिक अपनी नावों पर चढ़ गए और पहले से ही अपनी नौकायन फिर से शुरू कर दी। इस प्रकार राम सिंह का बेड़ा विशाल सेना के पीछे हटने का आभास दे रहा था। राम सिंह ने यह सोचकर खुद की चापलूसी की कि वह अपने पूर्ववर्ती मीर जुमला की तरह ब्रह्मपुत्र नदी तक आसानी से आगे बढ़ने में भाग्यशाली था। (120)

रंगमती से राम सिंह के आगे बढ़ने के छठे दिन, असमिया कमांडर दिहिंगिया राजखोवा के दो परिचारक सो रहे थे और गलती से उनके शिविर में रह गए। दोनों को मुगलों ने पकड़ लिया और राम सिंह के सामने पेश किया। जनरल ने उन्हें रिहा करने का आदेश दिया ताकि वे वापस जाकर असमिया कमांडर-इन-चीफ को संदेश दे सकें। यह संदेश लाचित को एक घंटे तक लड़ने की पुरानी चुनौती थी| इसका तात्पर्य यह था कि जो भी हारेगा, उसे प्रतिद्वंद्वी की आज्ञा का पालन करना होगा। निस्संदेह , लाचित ने चुनौती को उस अवमानना के साथ नजरअंदाज कर दिया, जिसके वह हकदार थे। (121)

आगे बढ़ने से रोकने की रणनीति अपनाने के माध्यम से कुछ समय प्राप्त करने के बाद, लाचित और अतान बुरगोहैन ने असमिया किलेबंदी पर भूमि से हमले को रोकने के लिए और भी अधिक मिट्टी की प्राचीरें खड़ी करके सुरक्षा को मजबूत करनें के प्रयासों को दोगुना कर दिया। जनरल को अच्छी तरह से एहसास था कि मुगल सेना के हमले को विफल करने और सुरक्षा में किसी भी उल्लघन को रोकने के लिए यह

जरूरी था कि प्रत्येक व्यक्ति सौंपी गई जिम्मेदारियों को तुरंत और अनुशासित तरीके से पूरा करे। इस तरह का अनुशासन स्थापित करने के लिए उन्होंने घोषणा की कि जो भी सौंपे गए कार्य की उपेक्षा करेगा, उसका सिर काट दिया जाएगा भले ही वह ऊँचे पद पर आसीन अधिकारी हो या सामान्य सैनिक। "असमिया जनरल ने अपनी तैयारी पूरी करने में सतर्कता और सावधानी दिखाई। युद्ध परिषद के परिपक्व विचार-विमर्श को स्टाफ हस्तचालित बनाने के लिए लिखित रूप में प्रतिबद्ध किया गया था। लाचित बरफुकन ने अनुशासन लागू करने का आदेश जारी किया। व्यक्ति को दृढ़ता से अपने प्रभार पर कायम रहना चाहिए और मृत्यु की पीड़ा पर निर्धारित समय के अंदर सौंपे गए अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।" (122)

यहाँ तक कि अतान बुरगोहैन को भी ऐसी कठोर घोषणा से डर का एहसास हुआ; उससे निचले पद पर मौजूद व्यक्तियों पर इसके प्रभाव की अच्छी तरह कल्पना की जा सकती है। शान परंपरा के अनुसार केवल राजा ही दोषी पाए गए किसी भी व्यक्ति को फाँसी देने का आदेश दे सकता था| इस प्रकार लाचित के शब्द अहोम रीति-रिवाज और परंपरा के पूर्ण उल्लंघन और शाही अधिकार के लिए चुनौती थे। इस घोषणा की खबर जल्द ही चक्रध्वज सिंह के कानों तक पहुँच गई, जो गढ़गाँव में दरबार में बैठे हुए थे और दैनिक आधार पर गौहाटी के घटनाक्रम पर बारीकी से नजर रख रहे थे। अहोम सम्राट ने गंभीर स्थिति का सामना कर रहे लाचित और उसकी असमिया सेनाओं की सराहना की, लेकिन तुरंत अपनी राय व्यक्त करने से परहेज किया क्योंकि उनके जनरल ने अपने आप केवल राजघराने के साथ निहित विशेषाधिकार को निरस्त कर दिया था। हालाँकि, उनकी रानी ने उनसे स्पष्ट रूप से कहा कि यदि देश, उनके सिंहासन और असमिया लोगों को बचाना है तो बरफुकन को पूर्ण अधिकार दिया जाना चाहिए। राजा ने अपनी ओर से तुरंत लाचित की कार्रवाई के लिए समर्थन व्यक्त किया, जबकि दूतों को उनके पास यह समाचार लाने के लिए फटकार लगाई। (123)

लाचित ने कल्पना भी नहीं की थी कि इसके तुरंत बाद उन्हें अपने शब्दों के अनुरूप कार्रवाई करनी पड़ेगी! हर रात बरफुकन, कुछ सैनिकों के साथ, घोड़े पर सवार होकर रक्षा बुनियादी ढाँचे में व्यक्तिगत स्थानों का अचानक निरीक्षण करते थे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर कोई सतर्क है और सौंपे गए कार्यों को पूरा कर रहा है। ज़मीन से

अचानक होने वाले हमले को रोकने के लिए अमीनगाँव के पास अगियाथुरी से गौहाटी तक सड़क पर तत्काल प्राचीर बनाना आवश्यक था। जिस अधिकारी को उस प्राचीर के निर्माण की जिम्मेदारी दी गई, वह लाचित के अपने चाचा थे। उस प्राचीर के महत्व से अवगत होकर, लाचित ने यह जानने के लिए एक रात दौरा किया कि इस पर काम कैसे प्रगति कर रहा है। उन्हें यह जानकर क्रोध आया कि सभी कर्मचारी और उनके चाचा गहरी नींद में सो रहे थे, जबकि प्राचीर अधूरी पड़ी थी।

जनरल के दल के घोड़ों की टापों की आवाज से अधिकारी और कर्मचारी जाग गये। लेकिन, अपने कृत्य के लिए माफी माँगने के बजाय, उनके चाचा ने यह बहाना पेश किया कि लंबे समय तक मेहनत करने से थके हुए कर्मचारियों को आराम की जरूरत थी। किंवदंती है कि इस तरह का बेपरवाह जवाब मिलने पर लाचित ने अमर वाक्यांश कहा, "मेरे चाचा मेरी मातृभूमि से बड़े नहीं हैं," और, अपना हेंगडांग निकालकर, तुरंत अपने चाचा का सिर काट दिया!

लाचित के इस त्वरित कार्यान्वयन ने उन श्रमिकों को उत्साहित कर दिया। उन्होंने गुस्से में निर्माण कार्य जारी रखा और अगली सुबह सूरज उगने से पहले प्राचीर का निर्माण पूरा कर लिया। तब से यह स्थान मोमाई-कोटा गढ़, या उस प्राचीर के रूप में प्रसिद्ध हो गया जहाँ चाचा का गला कटा गया था! इस बात का पता चलने पर, लाचित को फटकारना तो दूर, अहोम सम्राट ने उनकी अनुशासनात्मक कार्रवाई की सराहना की। (124)

अन्य उपाख्यान भी हैं, जिनमें से कुछ अहोम बुरंजियों में परिलक्षित होते हैं, कुछ केवल असमिया लोक-कथाओं में हैं, जो मुगलों की बढ़त के सामने अपने सैनिकों का मनोबल बनाए रखने के लिए लाचित और उनके वरिष्ठ अधिकारियों के निरंतर प्रयास से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, यह कहा जाता है कि लाचित ने एक रात एक सपना देखा जिसमें एक लंबी, सुडौल और गोरे रंग की महिला दिखाई दी, जिसका मुँह खुला हुआ था और जीभ फैली हुई थी। महिला का ऊपरी होंठ उसके ऊपर आकाश को छू रहा था और निचला होंठ नीचे की ओर लटका हुआ था। उसकी जीभ मुगलों की तरफ थी, जबकि असमिया सैनिक अपने कमांडर के पीछे खड़े थे।

लाचित ने [illegible] से अपनी सेना से जुड़े दो ज्योतिषियों

चुडामोनी डोलोई एवं सरोबर डोलोई और अहोम शकुनश मचाई फूकन को बुलाया और उस सपने की व्याख्या करने को कहा। तीनों ने सर्वसम्मति से पुष्टि की कि यह वास्तव में शुभ सपना था, जो असमिया सेना की जीत और मुगल सेना के विनाश का संकेत देता था। "बरफुकन के सपने" की खबर और ज्योतिषियों द्वारा इसकी व्याख्या जल्द ही अधिकारियों और उनके लोगों के बीच फैल गई और इससे उनकी जीत की अनिवार्यता के बारे में असमिया सैनिकों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में काफी मदद मिली। (125)

कुछ बुरंजियों में यह भी दर्ज है कि लाचित को स्वयं भी आत्म-संदेह के क्षणों का सामना करना पड़ा था। अप्रैल 1669 तक मुगल उत्तरी तट पर सुआलकुची तक पहुँच गये और डेरा डाल दिया। जबकि नावों का विशाल शस्त्रागार नदी तट पर बाँधा गया था, राम सिंह के सैनिकों ने शिविर स्थापित किए जो पूरे ग्रामीण इलाकों में फैले थे। यद्यपि उसके जासूसों ने राम सिंह की सेना की ताकत के बारे में जानकारी भेजी थी, लेकिन उसकी योजनाओं के निर्माण के लिए यह जरूरी था कि वह खुद इसे पहले से सत्यापित कर ले। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लाचित कुछ सैनिकों के साथ एक किले की चोटी पर चढ़ गए और दुश्मन शिविर का सर्वेक्षण किया। एक चश्मदीद ने लिखा है कि विशाल शस्त्रागार और विशाल मुगल सेना को देखकर बरफुकन के गालों पर आँसू बह निकले। वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सचेत होकर अभिभूत हो गया और बोला : "मेरे राजा को कैसे बचाया जाएगा? मेरे लोगों को कैसे बचाया जाएगा? मेरी भावी पीढ़ी को कैसे बचाया जाएगा?"(126)

यह भी उल्लेख है कि लाचित ने ऐसी दुःखद निराशा की भावना पर कुछ ही क्षणों में काबू पा लिया। उनका हृदय अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए नए संकल्प से भर गया और उन्होंने एक बार फिर खुद को उस काम के लिए समर्पित कर दिया जो उन्हें उनके राजा ने सौंपा था।

शत्रु सेना के विशाल आकार को स्वयं देखने के बाद लाचित को समझ आया कि उन्हें ब्रह्मपुत्र की रेत में और अधिक भंडारों के निर्माण सहित अपनी कुछ रक्षात्मक संरचनाओं को और मजबूत करने की जरूरत है। इसके अलावा, बरसात का मौसम जल्द ही आने वाला था और इससे संचार मुश्किल होने के कारण मुगलों को परेशानी होगी जैसा कि उन्होंने चिलाराई था मीर जुमला के हमलों के दौरान अतीत में किया था। इस

प्रकार, अपरिहार्य संघर्ष को और विलंबित करने के लिए, उसने एक चालाक योजना तैयार की। उन्होंने चक्रध्वज सिंह से गौहाटी के पूर्व फौजदार सैयद फिरोज खान को अस्थायी रूप से रिहा करने का अनुरोध किया, जिसे बंदरगाह-शहर को फिर से हासिल करने की पिछली लड़ाई में पकड़ लिया गया था और कैदी के रूप में गढ़गाँव भेज दिया गया था। खान को दूत बनाया जाना था जो मुगल और असमिया शिविरों के बीच आवागमन करेगा। लाचित को इस बात का कोई डर नहीं था कि खान इस मौके का फायदा उठाकर मुगल पक्ष में चला जाएगा और आखिरकार अपनी आजादी हासिल कर लेगा, वह अच्छी तरह से जानता था कि औरंगजेब ने उन कमांडरों के साथ क्या व्यवहार किया था जो अपनी कमान खो चुके थे और सौदेबाजी में असमियों द्वारा बंदी बना लिए गए थे !

गौहाटी भेजे जाने पर, सैयद फ़िरोज़ खान को कमांडर-इन-चीफ लाचित का एक पत्र राजा के पास ले जाना पड़ा, जिसमें इतनी मजबूत और शत्रुतापूर्ण सेना के साथ अहोम साम्राज्य में आने के उसके मकसद पर सवाल उठाया गया था। पत्र में यह भी कहा गया कि यदि दिल्ली और गढ़गाँव के बीच कोई विवाद है, तो इसे अनावश्यक संघर्ष के बजाय शांतिपूर्ण बातचीत के माध्यम से सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाया जा सकता है। पत्र में लिखा था, "इसके अलावा, युद्ध मुद्दों को सुलझाने का एकमात्र तरीका नहीं है।" "हमारे राजनीतिक ग्रंथों में चार रास्ते बताए गए हैं-सुलह, उपहार, असहमति और खुला विच्छेद। यदि कोई व्यक्ति अपने उपायों को स्थिति की तात्कालिकता के अनुरूप ढाल सकता है, तो वह जानकार व्यक्ति साबित होता है।" (127)

राम सिंह योद्धाओं के पुराने स्कूल से थे जिनके लिए युद्ध संहिता का पालन करना युद्ध जितना ही महत्वपूर्ण था। वह चतुर असमियों की चालाकी को समझ नहीं सका और उनके संदेश को गंभीरता से लिया। इसके अलावा, उसका दिल वास्तव में लड़ने का नहीं था, क्योंकि उसे मजबूरी में मुगल सेना का नेतृत्व करना पड़ा था। इसलिए उसने पत्र को सशस्त्र संघर्ष का सहारा लिए बिना अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के तरीके के रूप में देखा।

"राजा के युद्ध के तरीके बिलकुल वही थे जो शिवाजी के विरुद्ध अभियान में जय सिंह (उनके पिता) ने अपनाए थे। राम सिंह का लक्ष्य सबसे पहले कूटनीतिक बातचीत के साथ असमियों के साथ शपथ, वादों

और आश्वासनों के सामान्य दौर के साथ और फिर विकल्प के रूप में सशस्त्र संघर्ष की दिखावटी तैयारियों के समर्थन से समझौता करना था। रिश्वत और उपहारों द्वारा और उनके बीच मतभेद पैदा करके असमिया कमांडरों और अहोम रईसों को भ्रष्ट करने का लगातार प्रयास किया गया। लेकिन, यहाँ असम में, राजपूत रणनीति को पूरी तरह विफलता मिली, जबकि मराठा नेता के खिलाफ ऑपरेशन में उसे आंशिक सफलता मिली थी।" (128)

उसने फ़िरोज़ खान के माध्यम से उत्तर दिया कि युद्ध की कोई आवश्यकता नहीं है और उसकी सेना विजय के लिए नहीं आई है। अहोम राजा को बस इतना करना था कि वह अपनी सेना को उत्तर में बरनाडी और दक्षिण तट पर असुरार अली तक पीछे ले जाए, जो पिछली संधि के अनुसार उसके क्षेत्र की पश्चिमी सीमाएं थीं। राजा राम सिंह ने दोनों राजाओं को यह दिखाने के लिए एक घंटे की "लड़ाई" करने की भी पेशकश की कि बल का प्रयोग किया गया था-यदि असमिया सेना के पास पर्याप्त गोला-बारूद नहीं हो तो मुगल उन्हें इसकी आपूर्ति करने में बहुत खुश होंगे! "मैं, राम सिंह, राजा मुकुंद का वंशज हूँ," उनके उत्तर में लिखा था, "मैंने व्यक्तिगत रूप से मैदान संभाला है। बरफुकन भी बारबरुआ का पुत्र होने के कारण प्रतिष्ठित व्यक्ति है। उसे मेरे साथ एक घंटे का युद्ध करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि उसके पास युद्ध-सामग्री की कमी है, तो उसे मुझसे कहना चाहिए, और मैं मान लूँगा।" (129)

इस पत्र पर लाचित का उत्तर व्यंग्यपूर्ण था : "ठीक है, फ़िरोज़ खान, मेरे मित्र अंबर के राजा को बताओ कि वह अल्लाह यार खान और मेरे पिता मोमाई तमुली बारबरुआ के बीच संधि के अधिकार का हवाला देता है, फिर भी कामरूप और गौहाटी का मुगलों के नहीं हैं। हमने कोचों को हटाकर इस स्थान पर कब्ज़ा किया है।" (130) उपर्युक्त दावा इस तथ्य पर आधारित था कि कामरूप और गोलपाड़ा कोच हाजो के राज्य में शामिल थे, मूल रूप से राजा नारायण के अधीन कोच साम्राज्य का हिस्सा था। उन्होंने इसे अपने भतीजे रघुदेव को दे दिया था जो चिलाराई के पुत्र और परीक्षित के पिता थे। 17वीं शताब्दी के दौरान कोच हाजो बारी-बारी से कोच, मुगलों और अहोमों के हाथों में चला गया। मुगलों ने 1639 और 1658 के बीच इस पर कब्जा कर लिया था, जब अहोमों ने उनसे गौहाटी छीन ली थी, और फिर "कोचेस के साथ युद्ध किया और, थोड़े से अवकाश के बाद, उन्हें दो बार हराया और संकोश के पार खदेड़

दिया। इस प्रकार वे पूरी ब्रह्मपुत्र घाटी के स्वामी बन गए।" (131)

लाचित ने यह भी कहा, "यह महज संयोग था कि यह कुछ सीज़न के लिए मुगलों के हाथों में पड़ गया।" "अब ईश्वर ने प्रसन्न होकर इसे हमें वापस दे दिया है। जब वह इसे हमारे भाई-संप्रभु मुगल सम्राट को देना चाहेगा, तब उसे गौहाटी मिलेगी, उससे पहले नहीं। जहाँ तक उसके एक घंटे तक लड़ने के अनुरोध की बात है, मैं कहना चाहूँगा कि जब तक हमारी रगों में खून की एक बूँद भी है, हम लड़ने के लिए तैयार हैं। उसने हमें युद्ध सामग्री देने की इच्छा भी व्यक्त की है। वह अपनी यात्रा में थकान से गुजरते हुए लंबी दूरी तय करके आया है और साजो-सामान उसके उद्देश्य के लिए अपर्याप्त हो सकते हैं। हमारे महामहिम स्वर्ग से आए राजा के पास कुछ भी अनुपलब्ध नहीं है। यदि राजपूत राजा के पास सामग्री की कमी है, तो वह मुझसे कहे, और मैं उसे उपकृत करने का प्रयास करूँगा।" (132)

स्वर भले ही व्यंग्यपूर्ण रहा हो, लेकिन शब्दों में अस्पष्ट अर्थ थे और राम सिंह की इस माँग का सीधा जवाब नहीं था कि लाचित उन्हें निचला असम सौंप देगा। इस प्रकार उत्तर से मुद्दे का कोई शांतिपूर्ण समाधान नहीं निकला, जो अनिच्छुक राजपूत राजा तो चाहते थे, लेकिन दृढ़ असमिया नहीं चाहते थे। संदेशों को आगे और पीछे भेजने में लगने वाले समय ने लाचित और उनके लोगों के लिए अच्छा काम किया, जिससे वे रक्षा तैयारियों को मजबूत करने के लिए शेष चरणों को पूरा करने में सक्षम हुए।

जहाँ तक दूत सैयद फ़िरोज़ खान की बात है, विभिन्न अहोम बुरंजिस उनके अंतिम भाग्य के बारे में भिन्न राय रखते हैं हैं। कुछ लोगों का मानना है कि अंतिम संदेश के साथ असमिया शिविर में लौटने के बाद उसे एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया गया और कैदी के रूप में लतासिल और फिर कलियाबार भेज दिया गया। (133)

अपनी मांसपेशियों को दिखाने असमिया सैनिकों पर हावी होने और उनके मनोबल को नष्ट करने के पारदर्शी प्रयास में राम सिंह ने अपनी विशाल सेना के साथ, पहले से ही मानस के पश्चिम क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था और चेंगा और तपेरा में दो असमिया चौकियों पर नियंत्रण कर लिया था| हाजो में अपने दुर्जेय बेड़े और वहाँ डेरा डाले हुए सैनिकों के साथ गौहाटी के करीब पहुँच गया। हाजो गौहाटी से बमुश्किल 14

मील दूर था और आसन्न खतरा अब भयंकर रूप धारण कर चुका था। फिर भी, लाचित और उसके लोगों को डराने की बजाय, इसने उन्हें आक्रमणकारियों का विरोध करने के लिए और भी अधिक दृढ़ बना दिया।

इस बीच, शतरंज के इस लंबे खेल में शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर चालें और पलटवार जारी रहे! राम सिंह ने लाचित के शिविर में खसखस के थैले के साथ एक और संदेश भेजा, जिसमें लिखा था : "बरफुकन को गौहाटी खाली कर देनी चाहिए। हमारी सेना इस थैले में मौजूद खसखस जितनी ही असंख्य है।" हालाँकि, तब तक लाचित और अतान ने अपने रक्षात्मक उपाय पूरे कर लिए थे; वे अब इस बात पर जोर दे सकते थे कि वे कोचों से छीने गए क्षेत्र का एक इंच भी देने के बजाय लड़ना पसंद करेंगे। उन्होंने अपनी सेना की संख्या दर्शाने के लिए रेत से भरी बाँस-नली भी भेजी! "उपहार" के साथ एक पत्र भी था जिसमें कहा गया था : "यदि खसखस को कुचला जाए तो वह पतला पेस्ट बन जाएगा। हमारी सेना इस बाँस-नली में भरे रेत की तरह असंख्य और अविभाज्य है।" (134)

एक किस्सा यह है कि बाँस-नली और संदेश लेकर दो असमिया दूत निम और रामचरण गए थे। राम सिंह ने दूतों में आश्चर्य की भावना जगाने के लिए अपने दर्शक कक्ष में लकड़ी के कई पक्षियों को उड़ने के लिए प्रेरित किया। रामचरण ने विनती की कि उसे ऐसा एक पक्षी दिया जाए और उसे दो पक्षी दिए गए। लाचित ने शत्रु के शिविर में ऐसे विनम्र व्यवहार के लिए न केवल रामचरण को फटकारा, बल्कि सैनिकों को दिखाने के लिए उन्हें बेड़ियाँ भी डाल दीं। निम ने तुरंत कहा कि भविष्य में उसे ऐसे लोभी व्यक्ति के साथ कभी भी विदेशी अदालत में नहीं भेजा जाना चाहिए!

एक अन्य किस्सा यह है कि असमिया यात्री हंगलभंगा लस्कर कुछ समय के लिए राम सिंह के शिविर में रुका था| उसे असमिया सैनिकों ने तब पकड़ लिया था जब वह हाजो के पास कुलिहाटी के राजेंद्र चक्रवर्ती से मिलने गौहाटी जा रहा था, फिर वह पुजारी और शुभचिंतक के रूप में बरफुकन के शिविर में रुका था। सैनिक उसे लाचित के पास ले गए और उसने कमांडर-इन-चीफ के सामने मुगल शिविर में चल रही आंतरिक गतिविधियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रकट की। उसके अनुसार, मुगल असमियों द्वारा बनाई गई भारी किलेबंदी को देखकर निराश हो गए थे। लस्कर के अनुसार, राम सिंह ने अपने लेफ्टिनेंट राशिद

खान से कहा : "किलों का निर्माण असमियों द्वारा पहाड़ियों की चोटी पर किया गया है और बाहरी मैदान भी खुले युद्ध के लिए बहुत संकीर्ण हैं। यही कारण है कि असमिया विदेशियों के विरुद्ध अपने युद्धों में अजेय साबित हुए थे। किलेबंदी पेचीदा और जटिल है, और प्रत्येक किले में तीन रास्ते हैं। दुश्मन हमारे भारी तोपखाने की पहुँच से परे है; और तीर और बंदूकों से लड़ने का कोई अवसर नहीं है। रक्षा की ऐसी अभेद्य दीवार बनाने के लिए उनके मंत्री, कमांडर और पैदल सेना सभी की प्रशंसा की जानी चाहिए।"

प्रधानमंत्री अतान बुरगोहैन राजमंत्री डांगरिया ने असमिया अधिकारियों और सैनिकों को लस्कर की दी गई जानकारी से विधिवत अवगत कराया। "आप सावधानीपूर्वक ध्यान दें," उन्होंने उनसे कहा, "कि हमारी किलेबंदी को देखते हुए दुश्मन के शिविर में पहले से ही मनोबल गिरना शुरू हो गया है। उसका उत्साह पहले से ही कम हो रहा है।" इस पर उन्हें अपने अधिकारियों और लोगों से निम्नलिखित प्रतिक्रिया मिली : "बरफुकन को केवल अपनी कमान में अखंड रहना चाहिए और हम अपने खून की आखिरी बूँद तक लड़ेंगे।" (135)

लस्कर से प्राप्त जानकारी वास्तव में सच थी, क्योंकि मुगल शिविर में सब-कुछ ठीक नहीं था, इसका प्राथमिक कारण राजपूत कमांडर-इन-चीफ राजा राम सिंह और उसके लेफ्टिनेंट राशिद खान के बीच विकसित हो रहा मनमुटाव था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मार्च 1669 में, शहंशाह के जन्मदिन के अवसर पर, शहंशाह ने राम सिंह का पद बढ़ाकर पाँच हज़ारी से भी ऊपर कर दिया| गौहाटी का पूर्व फौजदार राशिद खान जोर देकर कहता रहा कि उसके विशेषाधिकार राजपूत राजा के बराबर थे और उसने कई बार उसकी नहबत को कमांडर-इन-चीफ की तरह झटका दिया। राम सिंह ने इस पर आपत्ति व्यक्त की और कहा कि कमांडर-इन-चीफ और राशिद खान सहित उसके अधीनस्थों के बीच कुछ अंतर किया जाना चाहिए। इस पर राशिद खान ने जवाब दिया कि उन दोनों को सम्राट औरंगजेब ने असमियों से लड़ने और हड़पी गई जमीन वापस लेने के लिए भेजा था, इसलिए उनमें से प्रत्येक को मिलने वाले विशेषाधिकारों में कोई अंतर नहीं होना चाहिए! (136)

हालात तब और बदतर हो गए जब राम सिंह को इस बात का एहसास हुआ कि उनके प्रतिद्वंद्वी लाचित समय हासिल करने के लिए उसे

रोक रहे थे| उसने असमिया सुरक्षा में सेंध लगाने के लिए व्यवस्थित अभियान शुरू किया। 3 अप्रैल, 1669 ई. को राम सिंह ने ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर अगियाथुरी में अपने सैनिकों की टुकड़ी का नेतृत्व किया, जबकि राशिद खान ने अमिंगाँव में अहोम किले के सामने अपना तम्बू खड़ा किया। अहोमों ने मुगलों की बढ़त का विरोध किया, दोनों ओर से तोपों से गोलीबारी की गए और तीर बरसाए गए| दरअसल, एक तोप के गोले ने राम सिंह के तंबू में सेंध लगा दी, जबकि राजपूत राजा का भतीजा तीर से मारा गया।

लेकिन लड़ाई दोनों पक्षों के लिए बिना किसी निर्णायक परिणाम के समाप्त हो गई। शाम को राम सिंह ने स्थिति और अगले दिन की कार्ययोजना पर चर्चा करने के लिए राशिद खान को अपने तंबू में आमंत्रित किया। राशिद खान नृत्य और संगीत कार्यक्रम का आनंद ले रहा था और उसने अपने जनरल के सम्मन का जवाब नहीं दिया। मामले को और भी बदतर बनाने के लिए राशिद खान ने अहोम कमांडर मिरी संदिकाई को एक दोस्ताना पत्र भेजा। स्वाभिमानी राजपूत राशिद खान की गुस्ताखी को अब और बर्दाश्त नहीं कर सका। राशिद खान के तंबू की ओर बढ़ते हुए, उसने तंबू से बंधी रस्सियों को काट दिया। राजपूत राजा के क्रोध को भांपते हुए राशिद खान ने विवेक को वीरता का बेहतर हिस्सा माना और अपने दल के साथ नदी से दूर चला गया, अस्थायी रूप से दलबारी में रुका और फिर हाजो के लिए अंतिम वापसी की। राम सिंह ने असमियों के साथ संभावित टकराव के लिए राशिद खान के कर्तव्य से पीछे हटने को जिम्मेदार ठहराया और इसकी सूचना औरंगज़ेब को दी। राम सिंह ने असमियों के साथ संभावित साँठ-गाँठ के लिए राशिद खान के कर्तव्य से पीछे हटने को जिम्मेदार ठहराया और इसकी सूचना औरंगज़ेब को दी।

अपने सेकंड इन कमांड के परित्याग के बावजूद राजा राम सिंह ने अब असमिया किलेबंदी के विभिन्न बिंदुओं पर हमले जारी रखे। उसने अपनी सेना को चार डिवीजनों में विभाजित किया| उनमें से प्रत्येक को व्यापक किलेबंदी के चार अलग-अलग स्थानों पर स्पष्ट रूप से निर्विवाद असमिया सुरक्षा में सेंध लगाने का रास्ता खोजने का कठिन कार्य सौंपा गया। ब्रह्मपुत्र नदी पर बँधे बेड़े में नौसैनिक कमांडरों के अधीन तोपखाने की तैनाती थी, जिसमें मंसूर खान, लतीफ खान, रासिप खान, [illegible] कहे जाने वाले लोग और ब्रिटेन एवं पुर्तगाल के कुछ

फिरंगी या विदेशी शामिल थे। अली-अकबर खान, मीर सैयद खान, राजा इंद्रमणि, राजा जयनारायण और मारुल खान सरदार की कमान में दक्षिणी तट पर सेना तैनात थी। राम सिंह स्वयं उत्तरी तट पर असमिया किलेबंदी के सामने डट गया। दुर्जेय सेना जिसमें तलवारों और ढालों से लैस पैदल सेना बटालियन और कम-से-कम 15,000 कोच तीरंदाज शामिल थे, जो जहीर बेग, कायम खान, घनस्याम बख्शी और कूचबिहार के तीन बरुआ-कविशेखर, सर्वेश्वर और मन्मथ के अधीन सिंदुरी घोपा प्रवेश द्वार पर तैनात थे। राम सिंह के नेतृत्व वाली सेना के अलावा, तीन अन्य किसी भी प्रकार की महत्वपूर्ण आक्रामक कार्रवाई में शामिल नहीं दिखे।

बताया जाता है कि राम सिंह ने अमीनगाँव की किलेबंदी पर हमला करने के लिए अनोखे साधन का इस्तेमाल किया, जिसमें उसके सैनिकों ने किले में घुसने के लिए सुरंग खोदी थी। लेकिन उसकी चाल का पता चल गया और असमिया रक्षकों ने सुरंग में पानी भर दिया, जिससे वह अगम्य हो गई। उसने हमला जारी रखा, पांडु के पास रंगालिबुरुज़ में किले पर तोप से बमबारी की और कई स्थानों पर इसकी दीवार को तोड़ दिया। लेकिन रक्षकों के बीच विशेषज्ञ इंजीनियरों ने, ऐसी किसी भी स्थिति के लिए आरक्षित लोगों की सहायता और सामग्रियों के कारण इन दरारों की तुरंत मरम्मत कर दी, जिससे मुगलों के लिए किले में प्रवेश करना असंभव हो गया। इसके विपरीत, उन्होंने अपने शत्रु पर तोपों से आग बरसायी जिसने राम सिंह उसी जगह वापस लौटने को मजबूर कर दिया जहाँ से वह चला था।

रानी के जागीरदार राजा रंगालिबुरुज़ में अहोम कमांडरों की मदद कर रहे थे, उस झड़प के दौरान उन्होंने हमले में शामिल कुछ मुगल सैनिकों को पकड़ लिया था और लाचित बरफुकन के पास भेजे जाने से पहले इन कैदियों की उंगलियाँ काट दी गई थीं। लाचित ने मुगल बंदियों को गढ़गाँव भेज दिया और राजा चक्रध्वज सिंह ने रानी के राजा को उपहारों के साथ उचित रूप से पुरस्कृत किया। (137)

जून 1669 में राजा सुजान सिंह और राजा रूपनारायण के नेतृत्व में मुगल सेना ने कलजोर पहाड़ी पर असमिया सुरक्षा को तोड़ने का प्रयास किया। मिरी संदिकाई फुकन उस स्थान पर कमांडर थे। उन्होंने तुरंत अधिक संख्या में सैनिकों की तैनाती की। वहाँ नौ दिन तक लड़ाई चली, लेकिन मुगल कोई भी घुसपैठ नहीं कर पाए।

"लेकिन बरफुकन की चतुर कूटनीति का प्रभाव बाद की घटनाओं पर जल्द ही देखा जाने लगा," एच. के. बारपुजारी द्वारा संपादित असम का व्यापक इतिहास अहोम सुरक्षा के विभिन्न बिंदुओं पर मुगलों के चार डिवीजनों द्वारा किए गए विभिन्न हमलों को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। अपने अभियान के शुरुआती चरण में "राम सिंह की प्रगति स्पष्ट रूप से धीमी हो गई थी। उत्तरकुल में जैसे ही वह जोगीघोपा से हाजो की ओर आगे बढ़ा और वहाँ से कुल्हाटी और सुआलकुची की रेत तक असमिया किलेबंदी के करीब पहुँचा| उसे कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। अगियाथुरी, रंगमहल और सरायघाट की घेराबंदी या तो लंबे समय तक की गई या अनिर्णायक रही। जनरल ने स्वयं 3 अप्रैल, 1669 को अगियाथुरी की घेराबंदी की थी... नतीजा अनिर्णायक था। अपने कुछ लेफ्टिनेंटों को अगियाथुरी की घेराबंदी सौंपकर जनरल असमिया के सरायघाट किले को जीतने के लिए आगे बढ़ा (जहाँ राशिद खान को पहले ही तैनात कर दिया गया था) और वह असमिया किले से तोप की गोलाबारी की सीमा से दूरी पर जम गया। दो किले स्थापित करके, उसने सरायघाट को घेर लिया। लेकिन 3000 के मनसबदार राशिद खान की अवज्ञा के कारण मुगल कमजोर पड़ गए। क्योंकि उस पर शत्रु के साथ साँठ-गाँठ के संदेह के कारण उसे शिविर से निष्कासित कर दिया गया। इसके अलावा, दो किलों पर डटे मुगलों का मुकाबला दिहिंगिया बरगोहेन द्वारा स्थापित दो असमिया किलों से किया गया। मुगल असमियों से पूरी तरह घिर गये। बिना विचलित हुए राम सिंह ने स्वयं सुरंग खुदवा कर भूमिगत रास्ते से अमीनगाँव की ओर बढ़ना चाहा, लेकिन असमियों ने आस-पास की खाई को पानी से भर दिया। तब अस्थायी प्लेटफार्मों पर लगी राम सिंह की तोपों से दीवारों में दरारें पड़ गईं; इनकी तुरंत मरम्मत कर दी गई। हालाँकि, असमियों की जवाबी गोलीबारी के कारण जनरल को पीछे हटना पड़ा। रंगमहल की सीमांत चौकी (स्वयं राम सिंह के अधीन) के मुगल घेराबंदी करने वालों को किले से बाहर निकलने वाली पूरी रक्षा चौकी के जोरदार हमले के सामने झुकना पड़ा और उन्हें हाजो की ओर पीछे हटना पड़ा। इसी तरह, अकूर अली में असमिया किले की घेराबंदी करने वालों को पूरी तरह से घेर लिया गया और उन्हें पांडु की ओर पीछे हटना पड़ा। हालाँकि, मुगलों ने हुरामती किले (तब गुइमेलिया बरगोहैन के अधीन) पर हमला किया।

"दक्षिणकुल में भी असमियों ने अपनी आक्रामक गतिविधियाँ जारी रखीं। दो हजारिकाओं ने मुगलों को जनशक्ति, बंदूकों और ढालों से

नुकसान पहुँचाया। बरफुकन के साथ बुरगोहैन द्वारा प्रतिनियुक्त एक टुकड़ी ने फ्रेनबार में मुगल किले को लूट लिया और उस पर कब्जा कर लिया। राम सिंह ने सबसे पहले दो राजाओं, इंद्रदमन और जयनारायण (राजा परीक्षित के पोते) को सैयद मीरा के साथ असमिया चौकियों पर कब्ज़ा करने के लिए नियुक्त किया। मुगल बेड़े (ईश्वरपति के अधीन, फिरंगी या यूरोपीय और एक अमीर) उनकी सहायता के लिए खड़े थे। दोनों राजाओं ने लुथुरी पर कब्ज़ा कर लिया, फ्रेनबार में अपने भंडार बनाए और पांडु को सुदृढ़ किया। असमिया के साथ नौसैनिक युद्ध में उनके दो जहाज नष्ट हो गए। इससे मुगल जनरल के लिए दक्षिण की ओर आगे बढ़ना जरूरी हो गया। मुगल इसके निकट पाँचवें दिन रंगालिबुरुज में दरार डालने में सफल रहे। लेकिन सदैव सतर्क रानी के राजा की त्वरित रिपोर्ट और असमियों की तैयारियों की स्थिति के कारण स्थानीय कमांडर लुथुरी चेतिया राजखोवा ने इसकी शीघ्र मरम्मत करवा कर मुगलों को आश्चर्यचकित कर दिया। असमियों से लूटमार करने के लिए चौबीस मुगल घुड़सवार लुथुरी और थांगड़िया किलों से आगे बढ़े और असमिया दल ने उनका विरोध किया जिसके साथ बरगोहैन भी आ मिले। इसके बाद मुगलों ने तोपखाने की लड़ाई का सहारा लिया। अहोम बुरंजी इसे 'भयानक युद्ध' के रूप में वर्णित करता है। यह मुगलों के लिए आपदा साबित हुई और उन्हें पीछे हटना पड़ा।" (138)

इस बीच, मानसून आ गया, जिससे संतुलन असमिया के पक्ष में झुक गया। मई-जून में, जयस्था के पास कलजोर पहाड़ी पर युद्ध में राजा सुजान सिंह और राजा रूप नारायण के नेतृत्व में मुगलों को मिरी सैंडिकि फुकन ने हरा दिया और उन्हें पीछे हटना पड़ा। ऐसे कई अप्रभावी संघर्ष के बाद, राजा राम सिंह ने अगली बार गौहाटी के अच्छी तरह से मजबूत बंदरगाह शहर को चारों ओर से व्यापक रूप से घेरने और दरांग के माध्यम से असमिया सेना पर हमला करने का प्रयास किया। इसे ध्यान में रखते हुए, बहलोल खान, प्राणनारायण, कविसेखा बरुआ और राजा सुरा सिंह के नेतृत्व में 2000 घुड़सवार, 200 पैदल सैनिक और 200 बंदूकधारियों की मजबूत सेना को गौहाटी के सामने बरनाडी नदी के मुहाने पर बहबरी या बहगोरा किले की ओर भेजा गया। लेकिन रानी के राजा ऐसी किसी भी हरकत पर नज़र रख रहे थे और उन्होंने तुरंत लाचित बरफुकन को सतर्क कर दिया। लाचित ने राजा को सलाह दी कि वह स्वयं उस प्रयास को नाकाम कर दे, राजा ने मुग़ल सेना पर घात लगाकर हमला करने के लिए दो पहाड़ियों के बीच से एक संकरा रास्ता

चुना, जिससे मुगल सैनिकों और युद्ध सामग्री दोनों की भारी क्षति हुई। डिमरुआ की पहाड़ी जनजातियों ने भी मुगलों का विरोध करने में रानी के राजा के साथ हाथ मिला लिया। मंसूर खान के नेतृत्व में राम सिंह की नौसेना को भी बार-बार हार का सामना करना पड़ा। गौहाटी को चारों ओर से घेरने के दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास को रानी के राजा ने प्रभावी रूप से विफल कर दिया और मुगलों ने फिर इस तरह के युद्ध का प्रयास नहीं किया। (139)

हालाँकि, इसने असमिया रक्षकों के एक वर्ग को, जो अब तक ज्यादातर रक्षात्मक उपायों में लगे हुए थे, बाहर निकलने और आक्रामक होने के लिए प्रोत्साहित किया। युद्ध नौकाओं पर दिहिंगिया फुकन की कमान के तहत एक टुकड़ी ने अगियाथुरी के करीब सेसा नदी के पास जमीन और पानी दोनों जगह मुगलों पर हमला किया। आरंभिक चरण में ऐसा प्रतीत हुआ कि असमियों ने विजय प्राप्त कर ली और मुगलों को उनकी स्थिति से पीछे धकेल दिया, बड़ी संख्या में सैनिकों को बंदी बना लिया और बड़ी मात्रा में युद्ध सामग्री कब्जा ली। लेकिन जब राम सिंह अतिरिक्त सेना के साथ मैदान में उतरा, तो असमिया हमलावरों की भूमि सेना को करारी शिकस्त मिली, जिससे उन्हें ब्रह्मपुत्र में कूदने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनका पीछा किया गया और उनमें से बड़ी संख्या में मारे गए। कई असमिया युद्ध नौकाओं पर मुगलों ने कब्ज़ा कर लिया। असमिया कमांडरों को अपने किलेबंदी की सुरक्षा में लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। हार की जानकारी होने पर राजा ने बरफुकन को दुश्मन पर फिर से हमला करने और जहाजों को वापस लाने का आदेश दिया। लेकिन यह दिखाने के लिए कोई रिकॉर्ड नहीं है कि क्या इसके लिए वास्तव में प्रयास किया गया था।

रणनीतिकार लाचित बरफुकन ने उचित अवसर आने तक विशाल शत्रु सेना पर सीधे हमला करने की कोशिश के खतरे को पूरी तरह से समझ लिया था। इस प्रकार, अब तक वह अपने गढ़वाले स्थानों की सुरक्षा में रहकर संतुष्ट था और यह मुगलों पर छोड़ दिया था कि वे जिस तरह भी चाहें हमला कर सकें ताकि उनके संसाधन समाप्त हो जाएँ। उन्होंने स्वयं अपनी सेना की ओर से किसी भी आक्रामक कार्रवाई का आदेश नहीं दिया था| इसके बजाय रक्षात्मक मुद्रा अपनाते हुए, मानसून की प्रतीक्षा कर रहे थे जो मीर जुमला के मामले की तरह राम सिंह को असुविधा के अलावा मुगल शिविर में महामारी फैलने का कारण बन

सकता था। मानसून के दौरान तेज़ बारिश भी राम सिंह को ढाका से अतिरिक्त सेना बुलाने से रोकती क्योंकि उफनती नदी इस तरह के प्रयास में बाधा डालती। दूसरी ओर, ऊपरी असम के लिए उनकी अपनी संचार लाइन पूरी तरह खुली रही और मानसून के आने तक इनके कट जाने का कोई खतरा नहीं था। दिहिंगिया फुकन के नेतृत्व वाली टुकड़ी के निरर्थक हमले ने लाचित की रणनीति के पीछे के ज्ञान को मजबूत किया। वास्तव में, मुगलों में निराशा घर कर रही थी क्योंकि वे युद्ध के मोर्चे पर विभिन्न बिंदुओं पर किए गए हमलों की बार-बार विफलता से हताश थे।

यह निराशा वास्तव में तब और अधिक बढ़ गई, जब उस वर्ष जून तक मानसून ठीक से आ गया; दिन-ब-दिन ब्रह्मपुत्र घाटी पर स्वर्ग से पानी बरसता रहा और राम सिंह को उसी पीड़ा का अनुभव कराता रहा जिसका सामना उसके पूर्ववर्ती मीर जुमला ने किया था। ज़मीन पर कीचड़ होने और सड़कों के सभी निशान मिट जाने के कारण, दुश्मन के शिविरों का संपर्क एक-दूसरे से टूट गया, यहाँ तक कि कुछ में ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों का उफनता पानी घुस गया। इलाके में फैले विभिन्न जल-स्रोतों में भी पानी भर गया। आगे बढ़ना जारी रखने में सक्षम होने के बजाय, मुगल सैनिकों को अपने शिविरों, नमी, कीचड़युक्त और पीड़ादायक स्थिति में रहना पड़ा। मनोरंजन के लिए उनके पास करने के लिए कुछ भी नहीं था।

यह ऐसा समय था जब मीर जुमला और उसकी सेना के गढ़गाँव में फँसी होने पर असमियों ने जो किया था, उससे प्रेरणा लेते हुए लाचित बरफुकन ने आधुनिक समय के गुरिल्ला युद्ध के अनुरूप, मारो और भागो की युक्ति का उपयोग करके मुगल सेना को परेशान करने की अपनी दागा-जुद्दा रणनीति शुरू की। उन्होंने उत्पीड़न के सबसे सरल तरीकों का इस्तेमाल किया, जिसमें मुगल सैनिकों के इस डर का फायदा उठाना भी शामिल था कि असम जादू-टोने और काले जादू की भूमि है! (140)

***

"मुगल पड़ाव की नदी किनारे चौकी पर संतरी की आँखें खुली-की-खुली रह गईं। वह चिल्लाकर चेतावनी देना चाहता था, लेकिन उसके गले से कोई आवाज नहीं निकली।

"नदी का किनारा नाचते हुए कंकालों से भर गया था!"

"शिविर की परिधि से पानी को अलग करने वाली भूमि के छोटे से हिस्से पर उनमें से सैकड़ों लोग पड़े थे, उनकी खोपड़ी और हड्डियाँ अँधेरे में अजीब तरह से चमक रही थीं। फिर वे विलाप करने लगे, उनकी लंबी और भयानक चीख ने दिल को झकझोर कर रख दिया। अन्य ने भी उस भयानक शोर को सुना और मृतकों के शैतानी नृत्य को देखने में संतरी के साथ शामिल हो गए। वे डर से इतने स्तब्ध थे कि उन्होंने नंगी तलवारों से कंकाल बल पर हमला करने के बारे में भी नहीं सोचा! वे बस यह तमाशा देखते रह गए, उन्हें यकीन हो गया कि असम के जादू-टोने की भूमि होने के बारे में उन्होंने जो अफवाहें सुनी थी वो बिलकुल सच था।

"उनमें से एक ने अपनी आँखें दूसरी ओर घुमा लीं और अपने वरिष्ठ को सचेत करने के लिए शिविर की ओर भागा। जल्द ही कमान की जोरदार आवाज़ और मशाल लिए हुए लोगों के कारण शिविर का वह भाग जीवन हो उठा। उस सटीक क्षण में मानो जादू से नाचते हुए कंकाल गायब हो गए।

"बेशक, यह मुगल सैनिकों को और अधिक हतोत्साहित करने के लिए चतुर अहोमों की चाल थी। 'कंकाल' के रूप में अहोम समूह के लोग थे जो पहाड़ी की चोटी पर छिपे हुए थे। अहोमों के पास ऐसे कई गुप्त समूह थे जो रणनीतिक स्थानों पर छिपे रहकर, दुश्मन की हरकतों का निरीक्षण करते, अचानक हमला करते, या ऐसा मज़ाक करते थे जैसा अभी मुगल संतरियों ने देखा था।

"इनमें से दो दर्जन लोग चार टुकड़ियों में नाव चलाकर नदी के उस बिंदु तक पहुँच गए थे। रात का चयन सावधानी से किया गया था। चंद्रमाहीन होने और आकाश में बादल छाए होने के कारण घुप्प अँधेरा था। नदी-तट पर पैदल चलते समूह ने काली शर्ट, पाजामा और टोपियाँ पहन रखी थीं, जिन पर खोपड़ियाँ, पसलियाँ और हड्डियाँ चमकदार पेंट से बनाई गई थीं जिनमें केवल अहोम पुजारियों को ज्ञात गुप्त, लेकिन प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया गया था। यह एक विस्मयकारी, आश्वस्त करने वाला प्रदर्शन था-हालाँकि, शिविर के भीतर आग की लपटों और विस्फोट की गतिविधि ने समूह को सचेत कर दिया कि शो समाप्त किया जाना चाहिए! शिविर की ओर पीठ करके लोगों ने कपड़े उतार दिए जिससे कंकाल रहस्यमय तरीके से गायब हो गए। कुछ क्षण बाद वे अपनी नावों के अंदर थे और चप्पू तेजी से चलने के कारण उनकी नाव अपने ठिकानों की ओर जा रही थीं।"

***

03 अगस्त, 1669 को सम्राट औरंगजेब द्वारा राम सिंह को भेजे गए फरमान में इस तथ्य पर असंतोष व्यक्त किया गया था कि राम सिंह अभियान में हुई प्रगति की रिपोर्ट भेजने में विफल रहा था और उन्हें वजीर जाफर खान के माध्यम से ही मुगलों की बार-बार असफलता की सूचना अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हुई। साथ ही, फरमान में गौहाटी पर कब्ज़ा करने के लिए किए जा रहे जनरल के ईमानदार प्रयासों की सराहना की गई, लेकिन अभियान की धीमी गति पर नाराजगी भी व्यक्त की गई। उन्होंने राम सिंह को यह भी बताया कि वह बारिश थमने पर जनरल के संसाधनों को बढ़ाने के लिए इंतजाम करेंगे और पुरुषों, जानवरों, सामग्रियों, तोपों, गोला-बारूद और युद्ध के हथियारों के साथ साजो-सामान भेजेंगे जो शाइस्ता खान द्वारा नावों के अधीक्षक मुजफ्फर खान और तोपखाना अधीक्षक जलालुद्दीन के साथ ढाका से आएगा। उन्होंने राम सिंह को सलाह भी दी कि वह बारिश और बाढ़ खत्म होने तक गौहाटी किले के पास उपयुक्त स्थान पर सेना के साथ रहें, और फिर "पूरे परिश्रम और अटूट प्रयास" के साथ उस पर कब्जे के लिए प्रयास करे। (142)

उसी समय, अहोम सम्राट चक्रध्वज सिंह भी मुगलों पर कोई प्रभाव न पड़ने से व्यथित थे। उन्होंने लाचित और अतान बुरगोहैन से जमीन और पानी के रास्ते निर्णायक हमला करने का आग्रह किया। परिणामस्वरूप, दिहिंगिया फुकन, सर्रिंगिया फुकन और गुइमेलिया बरगोहैन फुकन ने बुरगोहैन की सीधी कमान के तहत मुगल किले के करीब अगियाथुरी में किले का निर्माण किया। लाचित ने कलियाबरुआ फुकन के साथ मिलकर गौहाटी के उत्तर में एलामुंग में एक और किला बनाया। इन स्पष्ट रूप से आक्रामक कदमों से चिंतित होकर, मुगलों ने उनकी भूमि सेना और नौसैनिक बेड़े दोनों पर हमला कर दिया। तीन राजखोवाओं ने उन्हें ज़मीन पर खदेड़ दिया, जबकि अतान बुरगोहैन ने पानी पर भी ऐसा ही किया, दोनों ने दुश्मन को भारी नुकसान पहुँचाया और उन्हें बनपिंका में स्थापित भंडार के तीन ठिकानों से पीछे हटने के लिए विवश किया। (143)

जबकि बुरगोहैन ने कुछ सफलता हासिल की, लाचित की कमान वाली सेना के परिणाम मिश्रित रहे। [illegible] योयपुरिया राजखोवा, नादरडेन, दिहिमगिया फुकन और कुछ राजखोवाओं की

कमान वाली सेना ने सेसा में स्थित दिहिंगिया फुकन के तहत नौसैनिक बल और खुद बरफुकन के तहत एक और बेड़े के समर्थन से डेरा डाले हुए मुगल सेना पर आक्रमण किया। इस समन्वित हमले से दुश्मन को भारी नुकसान हुआ; बड़ी संख्या में मुगल सैनिकों को पकड़ लिया गया, जबकि अगियाथुरी में अनेक सैनिकों की हत्या कर दी गई, और घोड़े, घरेलू जानवर और सामान जब्त कर लिए गए। हालाँकि, उस समय राम सिंह मजबूत भूमि सेना और जहाजों के समर्थन से मैदान में उतरे और इस झड़प के ज्वार को मुगलों के पक्ष में मोड दिया। बरगोहैन के पोते मारन हजारिका सहित असमिया भूमि सेना का मुगलों द्वारा नरसंहार किया गया। लाचित के नेतृत्व में नादरडेन ने स्थिति को बचाने की कोशिश की, लेकिन बेहतर नौसैनिक गोलाबारी ने असमिया जहाजों को सेसा नदी पर पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप उनमें से कई जहाज नष्ट कर दिए गए। लाचित को वापस नांगकेन किले में जाना पड़ा। जब इन उलटफेरों की खबर चक्रध्वज सिंह तक पहुँची, तो अहोम राजा ने लाचित को फटकार लगाई और धमकी दी कि अगर "मेरी सेना बिना लड़े ही मारी गई" और अगर कोई "स्वेच्छा से लड़ने से बाज आया" तो उसे सजा दी जाएगी। ऐसे संदेश के जवाब में, लाचित ने राजा को बताया कि नौसैनिक संसाधनों की कमी के बावजूद, उनकी सेना ने दुश्मन के अनेक सैनिकों को मार डाला और अनेक को कैद कर लिया और लूट का बहुत सारा सामान गढ़गाँव भेज दिया गया। इस प्रकार, लाचित की सदैव निष्ठावान सेवा को देखते हुए उसके आचरण के बारे में राजा का मूल्यांकन जल्दबाजी में किया गया माना जाना चाहिए। उसके श्रेय के लिए, चक्रध्वज सिंह ने लाचित के खंडन को उचित माना। (144)

मानसून समाप्त हो गया। मुग़ल छावनियों पर हिट एंड रन हमलों का उपयोग करने की लाचित की रणनीति, हालाँकि दुश्मन सैनिकों के मनोबल को कम करने में मदद कर रही थी, लेकिन यह आक्रमणकारियों को निर्णायक झटका नहीं दे सकी| आखिरकार, राजा राम सिंह की सेना उसके लिए बहुत विशाल और दुर्जेय थी! उनके नौसैनिक बेड़े को भी कोई खास क्षति नहीं हुई थी।

उसी समय, लाचित का विरोधी, उसके द्वारा खड़ी की गई रक्षात्मक संरचना की चतुराई से पराजित होकर असमिया के खिलाफ चौतरफा हमला शुरू करने से बच गया था और सुरक्षा को तोड़ने के लिए सीमित गतिविधियों में लग गया था। बारिश के बाद मुगलों ने अपनी

गतिविधियाँ फिर से शुरू कीं, लेकिन ये व्यर्थ साबित हुईं। सिंदुरीघोपा के पास उन्हें दो लड़ाइयों में हार का सामना करना पड़ा। कमांडर की सतर्कता के कारण वे पांडु के दुश्मन किले को उड़ाने में विफल रहे, जिसने टूटे हुए हिस्से की शीघ्र मरम्मत करवा ली। असमियों ने न केवल सरायघाट सेना को नष्ट करने के मुगल प्रयास को विफल कर दिया, बल्कि चार मुगल ठिकानों को भी ध्वस्त कर दिया| लाठिया के पास आधे-अधूरे किले पर कब्ज़ा कर लिया और युद्ध सामग्री जब्त की और कुछ सैनिकों को बंदी बना लिया।" (145)

नतीजा यह हुआ कि जैसे-जैसे दिन बीतते गए| यह शतरंज का लंबा खेल बनता गया, जिसमें छिटपुट संघर्ष और शत्रुता को समाप्त करने के लिए बातचीत के प्रस्ताव शामिल रहे। अहोम बुरंजिस के साथ ही कुछ हद तक मुगल इतिहास भी इन विभिन्न झड़पों के वर्णन से भरे हुए हैं, हालाँकि उनके विवरण हमेशा मेल नहीं खाते हैं।

एक अवसर पर मुगल सेना ने उत्तरी तट पर रंगमहल किले पर हमला किया, जिसकी कमान अधिकारी पाणि-दिर्हिंगिया राजखोवा बुरगोहैन फुकन ने संभाली थी। उन्हें आमतौर पर गोहैन-फुकन के नाम से जाना जाता था। उनके सैनिक अपने घोड़ों के पैरों में लंबी स्क्रीन-प्लेटें बाँधकर खुद को छिपाने की कोशिश करते थे; जब वे असमिया सैनिकों के काफी करीब पहुँच जाते थे तो वे ढालों के पीछे से निकलकर आमने-सामने की लड़ाई में शामिल हो जाते थे। प्रारंभिक चरण में, इस तरह की चाल के काम करने की सूचना मिली थी, लेकिन गोहैन-फुकन के तहत असमिया बल को उलटफेर का सामना करना पड़ा, जिसमें दो कैप्टन, घोरा संदिकई और अनंतराय के बेटे मारे गए।

गोहैन-फुकन ने अपने फालानक्स के गठन को बदलकर इस रणनीति का मुकाबला किया। प्रत्येक कॉलम की बाहरी पंक्तियों पर हाथियों को तैनात किया गया था, जिन पर स्क्रीन वाले हौदे लगे थे। हौदे में भाला चलाने वाले सैनिक, बंदूकधारी और तीरंदाज छुपे रहते थे, जबकि फाइलों के पीछे काले कपड़े पहने सामान्य सैनिक मार्च करते थे। नवगठित असमिया फालानक्स द्वारा अभेद्य दीवार प्रदान करने के कारण, दुश्मन ज्यादा आगे नहीं बढ़ सका और अंततः भारी नुकसान के साथ उसे पीछे हटना पड़ा। बताया जाता है कि सुरक्षित दूरी से अपने कमांडर के प्रयासों को देख रहे राम सिंह ने असमिया दूत भक्तदाह को प्रस्ताव दिया था कि वह व्यक्तिगत रूप से गोहैन-फुकन की एक झलक

देखना चाहेंगे। बताया जाता है कि अधिकारी का उत्तर यह था : "मेरे बजाय, मैं उन्हें अपने बीस हजार दिग्गज दिखाऊँगा जो राजा के सैनिकों को पीट-पीटकर पीस देंगे!" (146)

***

असमिया सेनाओं ने गुरिल्ला रणनीति को जारी रखते हुए कुछ खुली मुठभेड़ों को पूरक बनाया, जिसके लिए वे प्रसिद्ध थे। उसके लिए घने जंगली इलाकों और पहाड़ी चोटियों ने अवसर प्रदान किया गया, जहाँ वे खुद को छुपा सकते थे और कम-से-कम उम्मीद होने पर मुगल टुकड़ियों पर हमला कर सकते थे। इन रात्रिकालीन हमलों में कुछ भी "सज्जनतापूर्ण" नहीं था; ये क्रूर थे, सभी कार्रवाई हर "युद्ध-आचार संहिता" के विपरीत थी जिनके बारे में राजा राम सिंह जैसे पुराने स्कूल के योद्धा ने सोचा था कि वह इसका पालन कर रहा था! असमिया सैनिक रात में छिपकर निकलते थे और दुश्मन के शिविरों पर हमला करते थे और जितना हो सके, उतना नुकसान पहुँचाते थे और फिर उसी क्षण छिप जाते थे जब प्रतिद्वंद्वी को समझ आती थी और प्रतिकारक उपाय करना शुरू कर देता था। उनको यह लाभ था कि वे इलाके से बहुत परिचित थे, जिससे उन्हें अँधेरे में स्वतंत्र रूप से घूमने और रात के हमलों में शामिल होने में मदद मिलती थी और जिससे मुगल सैनिक घृणा करते थे।

***

"उसी रात, अँधेरे और नदी-धुंध का लाभ उठाते हुए, अहोम योद्धाओं का एक समूह चुपचाप दुश्मन के शिविर में घुस गया। उनके गद्देदार पैरों ने कोई शोर नहीं किया क्योंकि वे भूत की तरह निगरानी में अंतराल के माध्यम से फिसल रहे थे। वे चौकियाँ और तंबू में घुस गए जहाँ सैनिक सोते थे। चाकुओं से उनका गला रेत दिया गया और गर्म मानव रक्त की गंध तंबुओं में भर गई।

"केवल तीन तंबू, नौ घुड़सवार सैनिक-एक सांकेतिक हमला यह दिखाने के लिए कि अहोमों के लिए दुश्मन शिविरों में घुसना कितना आसान था! उनका काम पूरा हो गया, समूह शिविर से चुपचाप और बिना किसी को दिखाई दिए उसी तरह निकल गया जैसे प्रवेश किया था और अपनी नावों पर तेजी से भाग निकला।" (147)

***

"प्रधानमंत्री अतान उर्फ रुक्मा बुरगोहैन डंगोरिया ने लाठिया किले में अपने बेस से असमिया सेना के उत्तरी डिवीजन की कमान संभाली हुई थी। उन्होंने लाई, लेचई, चिली, माही, मारी, अचोर, तिमाई, बादुली और अन्य जासूसों (संभवतः चोर-बाचों) को नियुक्त करके मुगलों को परेशान करने का अभियान शुरू किया था जो रात को मुगलों के शिविर में घुस गए और वहाँ से उनके खज़ाने और धन को निकाल लिया। मुगल कमांडर शाम को भोजन करने के बाद सोते थे और भांग और धतूरा की पारंपरिक खुराक लेते थे। अपने बिस्तरों पर लेटकर वे अपने हुक्के से जुड़े लंबे पाइपों पर कश लगाते थे। जब वे सो जाते थे तो खितमतगार या परिचारक उनके मुँह से पाइप हटा देते थे| उन्हें हुक्के के चारों ओर रख देते और खुद अलग जगह पर सो जाते। हुक्कों की आवाज बंद होना छिपकर बातें सुनने वाले जासूसों के लिए संकेत था कि वे तंबू में घुस जाएँ और पैसों की थैलियाँ निकाल लें। उन्होंने नवाबों द्वारा इस्तेमाल किए गए चाँदी के हुक्कों को भी चुरा लिया। चुराए गए थैलों के साथ घोड़ों पर जाते समय असमिया जासूसों पर कभी-कभी दुश्मन की नजर पड़ जाती थी, लेकिन वे पीछा कर रहे मुगलों को चकमा देकर तेजी से अपने शिविरों में चले जाते थे।" (148)

***

ऐसा कहा जाता है कि राजा राम सिंह ने लाचित बरफुकन द्वारा अपनाई जा रही ऐसी रणनीति पर अपना तिरस्कारपूर्ण गुस्सा व्यक्त करने के लिए पत्र के साथ एक दूत भेजा था। "क्या आप जानते हैं कि हमारे कमांडर-इन-चीफ ऐसी गंदी चालों को क्या कहते हैं?" दूत ने अहोम जनरल से पूछा। "वह इन्हें "चोरों का मामला" कहता है। केवल चोर रात में शरारत करने के लिए घर में चोरी करते हैं।"

राजपूत जनरल ने अपने पत्र में बरफुकन से इन गुप्त रात्रि हमलों को समाप्त करने के लिए कहा। पत्र में लिखा था, "मुझे अब अपने भाई नवाब (अर्थात् लाचित बरफुकन) के साहस और वीरता का प्रमाण मिल गया है।" "शक्ति में हमारी बराबरी करने में असमर्थ होने के कारण वह केवल चोरों द्वारा अपनाई गई चालें अपना रहा है, जैसे गीदड़ जंगली हाथियों की मौत की साजिश रचते हैं। ऐसे मूर्खों से लड़ने में कोई सम्मान नहीं मिलता है; और यदि कोई चोरों और लुटेरों के खिलाफ अपनी पीठ दिखाता है तो यह शर्मनाक नहीं है। इसलिए मैं अब और लड़ने नहीं जा रहा हूँ।" आश्चर्यजनक रूप से यह दर्ज किया गया है कि कुछ समय के लिए

राम सिंह ने खुद को युद्ध के मैदान से हटा लिया, जिससे उनके लेफ्टिनेंटों को युद्ध जारी रखने की अनुमति मिल गई।

"आह, यह हमारी लड़ाई का तरीका है, राजा को यह बताओ," लाचित बरफुकन ने हँसते हुए उत्तर दिया। "देखो, रात को केवल शेर ही लड़ते हैं! साथ ही, आपके राजा को भी अपनी चालों की झोली में गोते लगाने से गुरेज नहीं है। उसके सैनिकों ने अमिंगाँव स्थित हमारे किले में सुरंग खोदकर घुसपैठ करने की कोशिश की! यदि हम सतर्क नहीं होते और सुरंग में पानी न भरते, तो हमें कुछ हद तक असुविधा हो सकती थी। अब तुम इसे क्या कहोगे- नायकों का कार्य ? अगर वह लड़ना चाहता है तो सीधे हमसे भिड़ें।"

लाचित ने इस मजाकिया प्रतिक्रिया के बाद राजपूत कमांडर के इस आरोप का खंडन करते हुए अपने दूतों रानी कटकी और कालिया कटकी के माध्यम से औपचारिक पत्र भेजा कि उन्होंने रात में हमले करके युद्ध की गरिमा को धूमिल किया। पत्र में लिखा था, "हम परीक्षण करना चाहते थे कि राम सिंह के पास जमीन पर लड़ने की सहनशक्ति है या नहीं।" "यह याद रखना चाहिए कि अकेले शेर ही रात में लड़ते हैं, जबकि अन्य दिन के समय लड़ते हैं, चाहे जमीन पर या पानी पर।" (149)

लेकिन राम सिंह आश्वस्त था कि युद्ध के शूरवीर नियम रात में लड़ने की अनुमति नहीं देते। उसने भारत के अन्य हिस्सों में हुई जिन लड़ाइयों में भाग लिया था, उनमें जब भी शंख या तुरही की आवाज़ दिन भर की लड़ाई ख़त्म करने का संकेत देती थी, तो दोनों लड़ाकू दल अपने हथियार गिरा देते थे और अगली सुबह युद्ध फिर शुरू किया जाता था। इस पर दोनों असमिया दूतों, दोनों ब्राह्मणों ने असम को जादू-टोना की भूमि होने की मुगल धारणाओं को बढ़ाने के स्पष्ट प्रयास में जवाब दिया : "असमी लोग रात में लड़े बिना नहीं रह सकते क्योंकि उनकी सेना में एक लाख राक्षसों या राक्षसों की सेना है।" जो सभी आदमखोर और निशाचर हैं।" राजपूत जनरल ने इस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, लेकिन दोनों दूतों ने दोहराया कि ब्राह्मणों के होठों से सच्चाई के अलावा कुछ नहीं निकलता है!

राम सिंह तब ब्राह्मण दूतों के दावे की सच्चाई के प्रति आश्वस्त दिखा और कहा : "अब मुझे समझ में आया कि रात में असमिया सेना इतनी शक्तिशाली क्यों हो जाती है। उनके शिविरों में राक्षस और नरभक्षी

हैं! लेकिन मुझे सबूत के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए और केवल तभी मैं ब्राह्मणों की बात पर विश्वास करूँगा।"

दोनों दूतों ने समूची बातचीत दोहराते हुए और उसका महत्व बताते हुए लाचित को इसकी रिपोर्ट दी। प्रधान सेनापति ने उनकी सूझ-बूझ के लिए उनकी प्रशंसा की और राजपूत जनरल को आवश्यक "प्रमाण" प्रदान करने का वादा किया। उस रात से, कंकाल नर्तकों के समूहों को "राक्षसों और नरभक्षियों" के अन्य रूप दिए गए-असमिया सैनिकों ने काले कपड़े पहने, उनके चेहरे अजीब तरह से रंगे हुए थे, प्रत्येक के एक हाथ में एक मानव पैर था और दूसरे में जली हुई मछली थी। इसके बाद की कई रातों में ये सैनिक मुगल शिविरों के चारों ओर सुरक्षित दूरी पर घूमते रहे, भयानक नृत्य करते रहे और अपने पैरों को दुश्मन सैनिकों की ओर करके खून जमा देने वाली चीखें निकालते रहे। सामान्य मुग़ल सैनिकों पर इसके भयावह प्रभाव की अच्छी तरह कल्पना की जा सकती है! राक्षस सेना को अपनी आँखों से देखने के बाद, राम सिंह को भी विश्वास हो गया कि ब्राह्मण दूतों ने वास्तव में सच कहा था! (150)

यह जानते हुए कि अगस्त और सितंबर 1669 में वह अपनी ज़मीनी सेना के साथ ज़्यादा प्रगति नहीं कर पा रहा, राजपूत जनरल ने अपने कुछ जहाज़ों को काम में लगाया। इस प्रक्रिया में उसे इस बात का पूर्वाभास हो गया कि बाद में सरायघाट में क्या होगा। कुछ मुगल जहाज, जिनमें से प्रत्येक में 16 तोपें थीं, असमिया भंडार तक पहुँचे। लाचित बरफुकन ने स्वयं अपनी नौसेना टुकड़ी का नेतृत्व किया और उन्हें चुनौती दी। परिणाम मुगलों के लिए विनाशकारी था और भारी क्षति उठाने के बाद वे पीछे हट गए। (151)

धीरे-धीरे राजपूत राजा के मन में यह वास्तविकता घर कर गई कि न तो उनके सैन्य प्रयास और न ही शांति चाहने वाले प्रयास उनके विरोधी पर कोई प्रभाव डाल रहे हैं। उन्होंने असमिया दूतों, भक्तदाह और धूली से पूछा कि वे कौन-से कमांडर थे जो उनके साथ इस तरह से खिलवाड़ कर रहे हैं। "कृपया समझाएं," उन्होंने उनसे पूछा, "मेरे जैसा क्षत्रिय सफलता क्यों नहीं पा सका? असमिया रणनीति की विशिष्ट विशेषताएं क्या हैं और उनकी अजेयता कहाँ निहित है? उनके कमांडर कौन हैं और उनके नाम क्या हैं?"

दूतों ने राजा राम सिंह को असमिया नेताओं की एक दुर्जेय

सूची सौंपी : "हे महाराजा, हम जो कहते हैं, उसे सुनो। प्रधान रूप-स्वर्ग (अतन) बुरगोहैन ने लाचित नाम के बरफुकन के साथ स्वयं मोर्चा संभाला है। फूल बरुआ के पुत्र चंपा पानीफुकन, लालुकी नामदयाँग्या फुकन, पेलन चारिंगिया फुकन, डेका फुकन, गोहैन फुकन, बारपात्रा गोहैन, बरगोहैन, सादिया-खोवा रूप संदिकाई और मिरी संदिकाई अन्य प्रमुख कमांडर हैं। जूनियर कमांडरों में सेन गोहैन, मोरन गोहैन, रंगाचिला के पुत्र लेचाई, लुथुरी दयाँगिया राजखोवा, नाम दयाँगिया राजखोवा, पानी-दिहिंगिया राजखोवा, तरूण-दिहिंगिया राजखोवा, मजीउ-अभयपुरिया राजखोवा, सरू-अभयपुरिया राजखोवा, नामदंगिया राजखोवा, गजपुरिया राजखोवा, दिखौमुखिया राजखोवा, तार-सलगुरिया राजखोवा, निओग लैथम और चाओडांग बरुआ शामिल हैं- जो इंटरमीडिएट रैंक के नवाब हैं। इनके अलावा, सभी ग्रेड और रैंक के कमांडर हैं। आपकी तो बात ही छोड़िए, दिल्ली का पादशाह भी उन्हें युद्ध में परास्त नहीं कर पाएगा।"

राम सिंह ने तब पूछा कि ये कमांडर पिछले युद्धों में अनुपस्थित क्यों थे। इस पर दूतों ने झूठ के साथ उत्तर दिया : "ये कमांडर आमतौर पर राजधानी से एक महीने की दूरी पर नामरूप में रहते हैं और उन्हें शत्रुता के फैलने की कोई भी जानकारी नहीं मिली। उन्होंने इस बार इसके बारे में सुना है और इसलिए वे आये हैं।" (152)

"राम सिंह को असमिया दूतों की रिपोर्ट की पुष्टि उनके ही दूत पंडितराय के होठों से मिली। उन्होंने बरगोहैन, बारपात्रा गोहैन और बरफुकन का वर्णन 'सुंदरता, उपलब्धि, वीरता और ज्ञान का दुर्लभ संयोजन पेश करने वाले अद्भुत सक्षम कमांडरों' के रूप में किया। "अतान बुरगोहैन के बारे में पंडितराय ने कहा, "वह उम्र में युवा है, नैन-नक्श में गोरा और सुंदर है, बुद्धि में शांत और गंभीर है, सभी मामलों में निपुण है और वह अपनी सलाह की दृढ़ता में अन्य सभी से आगे है। बुरगोहैन कट्टर राजनयिक भी हैं।' यह सुनकर राम सिंह ने कहा, 'यह वाकई आश्चर्यजनक है कि एक आदमी इस छोटी-सी उम्र में इतना बुद्धिमान और सतर्क हो सकता है। जब ऐसे मंत्री का समय आएगा तो कौन उसका सामना कर पाएगा? उस भूमि की धरोहर पर गौरव होना चाहिए जहाँ ऐसे परामर्शदाता ने जन्म लिया है।" (153)

भक्तदाह ने राम सिंह को बरफुकन के प्रमुख ज्योतिषी चुडामोनी दैवज्ञ के बारे में भी बताया, जिनकी गणना इतनी सटीक और

अचूक बताई गई थी कि असमिया सेना उनके शुभ संकेतों के अनुसार काम करने पर वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए निश्चित थी। भक्तदाह ने राम सिंह को यह भी बताया कि चुडामोनी को प्रति माह एक हजार रुपये का भुगतान किया जाता है। राजपूत जनरल ने ज्योतिषी को अपने अधीन सेवा स्वीकार करने के लिए लुभाने का प्रयास किया, वेतन के रूप में प्रति माह चार हजार रुपये की पेशकश की और भक्तदाह से कहा कि यदि वह ज्योतिषी को पक्ष बदलने के लिए प्रेरित कर सकता है, तो उसे इनाम के रूप में दस हजार रुपये का भुगतान किया जाएगा। भक्तदाह ने चुडामोनी को प्रस्ताव दिया, जिसने कहा : "कभी-कभी मुझे वहाँ जाकर मजा देखने की इच्छा होती है। मैं इतने सारे मुगल सैनिकों की हत्या के लिए जिम्मेदार हूँ कि अगर वे मुझे जिंदा पकड़ लेंगे तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा और हो सकता है कि दुश्मन के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए मैं बरफुकन को भी परेशान करूँ।"

बेशक, उन्होंने लाचित को इस प्रस्ताव के बारे में सूचित किया, लेकिन लाचित ने पैसे जुटाने के लिए इस तरह के तरीके को सख्ती से खारिज कर दिया और ज्योतिषी को इस तरह के कदम के बारे में सोचने से भी मना कर दिया। भक्तदाह ने तब राम सिंह की उपस्थिति में चुडामोनी को गुप्त रूप से लुभाने की कोशिश करने की गलती की। जब लाचित को इस बात से अवगत कराया गया, तो उन्होंने आदेश दिया कि भक्तदाह को राम सिंह की योजनाओं को बढ़ावा देने के कारण गिरफ्तार किया जाए और सजा के रूप में ब्रह्मपुत्र के पानी में फेंक दिया जाए। लेकिन भक्तदाह ने असमिया शिविर को छोड़ मुगलों की शरण में भागकर खुद को बचाया। (154)

लाचित बरफुकन की सेना में शामिल ज्योतिषियों के संबंध में अहोम इतिहास में कई अन्य उपाख्यान हैं। "एक और दिन, समुद्र चुडामोनी डोलोई और सरोबर डोलोई, दो चतुर ज्योतिषी अहोम सेना के साथ थे, वे युद्ध-नाव में ब्रह्मपुत्र पार कर रहे थे, तभी नदी के बीच में अचानक उन पर हमला किया गया। एक घायल सैनिक के शरीर से खून का थक्का निकला और सरोबर के शरीर पर जा पड़ा और वह बेहोश हो गया, जबकि उसके साथी समुद्र चुडामोनी ने मृतक सैनिकों के शरीरों से बीस ढाल उतारकर नाव के अंदर सुरक्षा की दीवार खड़ी करके स्वयं को बचाया। ज्योतिषी ने अपनी आँखों से देखा कि उस दिन नाव पर सवार सैनिकों पर क्या कहर बरपाया गया था। बरफुकन ने ज्योतिषियों को

युद्ध-नाव पर चढ़ने के लिए फटकार लगाते हुए कहा। 'मैं नहीं जानता कि इन ज्योतिषियों को युद्ध-नौकाओं में चढ़ने की अनुमति किसने दी। यदि वे मर जाते, तो हम असहाय हो जाते, क्योंकि उनकी भविष्यवाणियाँ ही हमारी प्रभावी प्रेरणा हैं। इस पर समुद्र ने उत्तर दिया, 'महाभारत के युद्ध में प्रतिस्पर्धा के रंगमंच के सभी हिस्सों में लोग मारे गए और मृत्यु के स्थानों का निशान प्राप्त नहीं किया जा सका।" (155)

यह देखते हुए कि प्रारंभिक झड़प लगभग दो वर्षों तक चली| इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि राम सिंह के असम अभियान की कहानी दिलचस्प उपाख्यानों से भरी हुई है, इनमें से कुछ निस्संदेह असत्य हैं, कुछ साधारण सैनिकों की हत्याओं और पीड़ाओं के बावजूद विनोदी प्रकृति के भी हैं। ऐसी ही एक कहानी 'कोआ मृद्धा' नाम के असमिया कैप्टन की है, 'कोआ' शब्द का अर्थ 'कौआ' होता है। नौसैनिक युद्ध की गर्मी के दौरान कोआ मृद्धा की कप्तानी वाली नाव को दुश्मन ने पकड़ लिया था। विजयी मुग़ल नाविकों ने अपना ध्यान भटकाकर अपने बंदी के अपमान पर मुहर लगाने की कोशिश की और उसे नृत्य करने के लिए कहा। कोआ मृद्धा ऐसा करने के लिए सहमत हो गए और अपनी नाव के मल्लाहों को तैयार होने के लिए अपनी आँखों से गुप्त रूप से संकेत देने के बाद, उन्होंने अपने बंधकों को अपने नृत्य की लय में संगीतमय ताली बजाने के लिए कहा। बंदी उत्साह से नाचने लगा, मुगल सैनिकों ने जोरदार तालियाँ बजाईं। जब नृत्य और तालियाँ अपने चरम पर पहुँच गईं, तो असमिया नाविक अचानक चालाकी से नाव को दुश्मन की पहुँच से दूर, नदी-तट के किनारे की ओर ले गए और बंधकों को चिल्लाते हुए कहा, "कोआ उड़ गया है!" ऐसा कहा जाता है कि जब राम सिंह ने इस घटना के बारे में सुना तो उसने कहा : "वह असमिया सरदार कितना चतुर है!" (156)

खेल के अंत की प्रस्तावना

यह याद किया जा सकता है कि औरंगजेब को पहली बार दिसंबर 1667 में पता चला कि असमिया ने गौहाटी और निचले असम को पुन: कब्जे में ले लिया है। विशाल सेना के नेतृत्व में जवाबी अभियान पर भेजे गए राजा राम सिंह ने फरवरी 1668 में दिल्ली छोड़ी, रास्ते में जागीरदार राजाओं के रूप में बढ़ती उनकी सेना में अतिरिक्त सैनिक और युद्ध सामग्री जुड़ती गई और मुग़ल फरवरी 1669 में पूर्वी सीमा चौकी रंगमती तक पहुँच गए। कामरूप में उनकी प्रारंभिक प्रगति अपेक्षाकृत तेजी से हुई क्योंकि असमिया सीमांत सैनिकों को गौहाटी के गढ़ की ओर पीछे हटने का निर्देश दिया गया था और वह अप्रैल 1669 तक पहले सुआलकुची और फिर हाजो में शिविर पर हमला करने में सफल रहे।

लेकिन तब मुग़ल अभियान लगभग रुक-सा गया था! गौहाटी और बंदरगाह शहर के आस-पास के क्षेत्र की मजबूत किलेबंदी, साथ ही लाचित बरफुकन द्वारा सैनिकों और उनके कमांडरों की शानदार तैनाती ने यह सुनिश्चित कर दिया था कि राजपूत राजा के कई प्रयासों के बावजूद विशाल मुगल सेना असमिया रक्षा में कोई महत्वपूर्ण सेंध नहीं लगा सकी। अब अगस्त 1669 था। दिल्ली में बादशाह औरंगजेब बेचैन हो रहा था। तब से लगभग डेढ़ वर्ष बीत चुका था जब राम सिंह के नेतृत्व में उनकी सेना ने असम को अपने अधीन करने के लिए अभियान शुरू

किया था। लेकिन स्पष्ट रूप से राजपूत जनरल के लिए राह उतनी आसान नहीं थी जितनी पहले मीर जुमला के लिए थी!

दूसरी ओर लाचित बरफुकन इस बात से चिंतित नहीं थे कि रंगमती से मुगलों का हमला शुरू होने के बाद पिछले छह महीनों के दौरान अपेक्षाकृत कम उपलब्धि हासिल हुई है। युद्ध-परिषद में उसने अपने वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष अपनी रणनीति का खुलासा किया था। असमियों के पास खोने के लिए कुछ भी नहीं था, क्योंकि वे अपने गढ़वाले शहर की सुरक्षा में डटे रहे, मुगलों के छिटपुट हमलों को नाकाम करते रहे| साथ ही हिट एंड रन रणनीति और अन्य सरल तरीकों से दुश्मन को परेशान करते रहे। वह खुले मैदान में मुगलों से मुकाबला करने के खतरे को अच्छी तरह से जानता था, जहाँ उसके पैदल सैनिक दुश्मन की घुड़सवार सेना की ताकत के सामने बैठी हुई बतखों की तरह होते। यदि खुले मैदान में लड़ाई होती तो घोड़े पर सवार एक मुगल सैनिक कई असमिया पैदल सैनिकों को नष्ट कर सकता था! उनकी रणनीति राजा राम सिंह को नौसैनिक युद्ध में आकर्षित करने की होनी चाहिए, जहाँ अहोम समान शर्तों पर लड़ने में सक्षम होंगे।

यह केवल समय की बात थी जब तक कि मुगल सैनिकों का मनोबल असहनीय स्तर तक नीचे नहीं पहुँच जाता, उनकी संख्या और साजो-सामान अस्थिर स्तर तक नहीं गिर जाते, और राजपूत जनरल को ब्रह्मपुत्र नदी पर आमने-सामने की लड़ाई के लिए मजबूर होना पड़ता। उनके तर्कों का प्रधानमंत्री अतान बुरगोहैन और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी समर्थन किया, जो इस बात से सहमत थे कि नौसेना की लड़ाई उनका मुख्य आधार है| इस प्रकार दुश्मन को लुभाने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए, चाहे इसमें कितना भी समय लगे।

लेकिन, फिर भी जाहिर तौर पर सभी उससे सहमत नहीं थे! लाचित के सबसे वरिष्ठ लेफ्टिनेंटों में से एक पेलन फुकन को रंगमहल किले की कमान सौंपी गई थी। गुप्त रूप से उनकी राय थी कि बारिश ने जवाबी हमले के लिए सबसे अच्छा अवसर प्रदान किया था, और केवल दुश्मन को परेशान करके लाचित अनावश्यक रूप से युद्ध को टालना और लम्बा खींचना चाह रहा था। स्वाभाविक रूप से, युद्ध-परिषद में इस अधिकारी ने लाचित के क्रोध के डर से अपने विचार अपने तक ही सीमित रखे थे और दूसरों से सहमत होने का दिखावा किया था।

एक घोड़ाकुँवर को गढ़गाँव और गौहाटी के बीच संपर्क और इधर-उधर संदेश और निर्देश पहुँचाने का काम दिया गया था। पेलन ने गुप्त रूप से उस अधिकारी से कहा कि राजा को पता होना चाहिए कि लाचित आक्रमणकारियों पर चौतरफा हमला करने से झिझक रहा है और चक्रध्वज सिंह को अपने कमांडर-इन-चीफ की रणनीति को रद्द करने के लिए अपने अधिकार का उपयोग करना चाहिए। बेशक, अपने कमांडर-इन-चीफ की पीठ पीछे पेलन के विश्वासघात का कारण हो सकता है।

यह याद किया जा सकता है कि इस अधिकारी ने गौहाटी के इटाखुली किले पर कब्ज़ा करने के पिछले अभियान के दौरान यह आशंका के साथ देखा था कि किले की कितनी अच्छी तरह से सुरक्षा की गई थी और उसने लाचित को इसके बारे में बताया था। उनकी टिप्पणी में कथित तौर पर कहा गया था, "मैं उस सैनिक का बंधुआ बन जाऊँगा जो इटाखुली किले पर हमला कर सके!" चक्रध्वज सिंह पेलन पर क्रोधित हो गए थे और उन्होंने कुछ महिलाओं के परिधान भेजे थे जिनमें मेखलास या असमिया महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले निचले वस्त्र, झाड़ू और कुल्हाड़ियाँ शामिल थीं! राजा के पत्र में अहोम सम्राट का आदेश था कि यदि पेलन ने ऐसी पराजयवादी टिप्पणियाँ कीं तो उसे मार डाला जाए और उसके सैनिकों को महिलाओं के वस्त्र पहनाए जाएँ। लाचित के हस्तक्षेप और अपने राजा को उनके आश्वासन के बाद ही राजा का गुस्सा शांत हुआ कि पेलन ने कभी भी ऐसी कोई टिप्पणी नहीं की थी और आदेश रद्द कर दिया गया। इस प्रकार यह दिखाकर कि वह असम से दुश्मन को बाहर निकालने के लिए आक्रामक कार्रवाई करने के लिए कितना उत्सुक था, राजा के दूत को दी गई गलत सूचना चक्रध्वज सिंह के पक्ष में वापस आने का पेलन का प्रयास हो सकता है!

मकसद चाहे जो भी रहा हो, घोराकुँवर ने पेलन की टिप्पणियों की विधिवत सूचना अहोम सम्राट को दी। दिल्ली में औरंगजेब की तरह, गढ़गाँव में चक्रध्वज सिंह भी निर्णायक नतीजों की कमी से परेशान थे। हालाँकि मुगलों द्वारा उनके क्षेत्र में घुसपैठ किए हुए आधा साल बीत चुका था। इसलिए, पेलन की राय पूरी तरह से उनकी अपनी अधीर मनःस्थिति से मेल खाती थी और उन्होंने आसानी से मान लिया कि लाचित और उनके साथी अधिकारी सीधे दुश्मन का सामना न करके अपने कर्तव्यों की उपेक्षा कर रहे हैं।

लाचित बरफुकन की क्षमताओं और मुगलों से लड़ने के दृढ़ संकल्प के बारे में उनका संदेह राजा राम सिंह की ओर से रणनीति में बदलाव के कारण और गहरा हो गया था, जो अब तक सम्मानजनक "युद्ध आचार संहिता" का पालन करने के सभी विचारों को त्यागते और असमिया कमांडरों के लड़ाई के चतुर तरीके को अपनाते हुए प्रतीत होते हैं। अपने इस प्रस्ताव पर सकारात्मक प्रतिक्रिया पाने में विफल रहने पर कि यदि असमिया निचले असम को वापस लेने से पहले अपने स्थान पर वापस चले गए तो वह लड़ने से परहेज करेंगे, राजपूत जनरल ने लाचित को बदनाम करने के लिए झूठे प्रचार का सहारा लिया।

उन्होंने एक तीर चलाया जिसमें लाचित को संबोधित पत्र था जिसमें लिखा था : "ओह, बरफुकन, कल आपने हमसे एक लाख रुपये का इनाम स्वीकार किया और आपने हमारे खिलाफ लड़ाई से दूर रहने के लिए लिखित समझौते पर हस्ताक्षर किए। लेकिन ऐसा लगता है कि आपने अपनी युद्ध व्यवस्था को अभी तक नहीं छोड़ा है।" क्या मैं इसका कारण जान सकता हूँ?" लेकिन, चतुराई से, राजपूत जनरल ने तीर लाचित की स्थिति पर नहीं, बल्कि मिरी संदिकाई फुकन के शिविर की ओर निर्देशित किया। मिरी ने, लाचित को सूचित किए बिना ऐसी "महत्वपूर्ण जानकारी" छिपाने पर शाही क्रोध के डर से, पत्र को अहोम राजा को भेज दिया। यह पत्र पेलन फुकन द्वारा कही गई बात की पुष्टि करता प्रतीत हुआ और चक्रध्वज सिंह का लाचित के इरादों पर संदेह गहरा गया। सौभाग्य से, अतान बुरगोहैन को इस बात का पता चल गया और उन्होंने राजा को समझाने के लिए तुरंत हस्तक्षेप किया कि यह पत्र दुश्मन द्वारा कुलीन बरफुकन पर आक्षेप लगाने का गुप्त प्रयास है, जबकि बरफुकन वास्तव में ईमानदार और सक्षम अधिकारी है जो सम्राट के प्रति पूरी तरह से वफादार है। (157)

उस समय राम सिंह ने 'सोनबर नदियाल' नामक दूत के माध्यम से बरफुकन को एक और पत्र भेजकर असम के राजा को दो शत्रु सेनाओं की उपस्थिति में द्वंद्व युद्ध लड़ने के लिए आमंत्रित करके आग में घी डाल दिया। पत्र में लिखा था, "मैं राम सिंह, मिर्जा राजा जय सिंह का पुत्र और राजा मांधाता का वंशज, असम के राजा को दो शत्रु सेनाओं की उपस्थिति में अपने साथ द्वंद्व युद्ध लड़ने के लिए आमंत्रित करता हूँ। अगर मैं हार जाता हूँ तो मैं अपनी सेना के साथ बंगाल लौट आऊँगा। लेकिन, अगर मैं जीत गया, तो मैं असमिया सेना की वापसी की माँग करूँगा।"

चक्रध्वज सिंह ने केवल यह उत्तर देकर ढीठ चुनौती को खारिज कर दिया : "राम सिंह तो मात्र नौकर है और उसके सिर पर कोई छत्र नहीं है। इसलिए मुझे ऐसे आदमी के साथ द्वंद्व लड़ना पसंद नहीं है।" (158)

अगस्त की शुरुआत तक चक्रध्वज सिंह का धैर्य जवाब दे गया था! उन्होंने अपने बरफुकन को चेतावनी भेजी कि वे दुश्मन को असम के क्षेत्र से बाहर निकालने के उद्देश्य से तुरंत उसका मुकाबला करें या अनुशासनात्मक कार्रवाई का सामना करें। एक बार फिर अपने वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अपनाए जाने वाले टाल-मटोल के तरीकों पर अपनी नाराजगी व्यक्त करने के लिए, उन्होंने मुट्ठी भर कुल्हाड़ियों के साथ दास-लड़कियों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों की खेप भेजी! निहितार्थ यह था कि अगर लाचित ने तुरंत मुगल सेना पर आक्रमण शुरू नहीं किया, तो उसे और उसके साथी अधिकारियों को महिला वस्त्र पहना दिए जाएँगे और उनके दिलों को कुल्हाड़ियों से काट दिया जाएगा!

इस "संदेश" ने लाचित को दुविधा में डाल दिया। उस समय मुगल सेना की बड़ी टुकड़ी अलाबोई पर्वत के पास डालीबारी के करीब विशाल मैदान पर डेरा जमाए हुए थी, जो ब्रह्मपुत्र नदी के तट से सेसा नदी तक फैला था। उस सटीक क्षण में उस पर हमला आत्मघाती होगा क्योंकि यह खुले मैदान में दुश्मन पर हमला करने से बचने की उसकी रणनीति का उल्लंघन होगा। फिर भी, उसी समय लाचित को अहोम राजा के प्रति निष्ठा रखनी थी और उन्हें राजा की आज्ञा का पालन करना था। उन्होंने अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को यह कहकर अपनी दुविधा व्यक्त की : "मुगलों ने अपनी सेना को अलाबोई में केंद्रित कर दिया है। अगर हम अपरिपक्व बर्र के प्रतिशोधी छत्ते में पत्थर फेंकते हैं तो हमारे लिए बच निकलना मुश्किल होगा। साथ ही मैं लेकिन महामहिम की आज्ञा का पालन करने से मना नहीं कर सकता।" (159)

विडंबना यह है कि बरफुकन की दुविधा का समाधान स्वयं राम सिंह ने किया था, जब उन्होंने अलाबोई में अपने ठिकाने से उन्हें अपमानजनक चुनौती भेजी थी कि यदि उनमें साहस है तो वे खुले मैदान में उनकी सेना पर हमला करें। यद्यपि राजपूत जनरल को उस मैदानी क्षेत्र पर मुगल श्रेष्ठता के बारे में जानकारी थी जहाँ घुड़सवार सेना काम कर सकती थी, लाचित को उसी समय पता था कि चक्रध्वज सिंह चुनौती के बारे में जानने के लिए निश्चित थे, अगर इसे अस्वीकार किया गया तो प्रतिकूल प्रतिक्रिया होगी। इसलिए, उसे डेरा डाले हुए दुश्मन के खिलाफ

सेना भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा। हालाँकि अपनी बुनियादी कमज़ोरी को छुपाने के लिए वह "कूटनीति, धोखे और गलतबयानी" में संलग्न हो गया। एक दूत के माध्यम से उन्होंने राम सिंह को सूचित किया कि वह मुगल सेना के खिलाफ बीस हजार पैदल सैनिकों की सेना भेजेंगे। लेकिन, वास्तव में उसने चालीस हज़ार भेजे! बल, जिसमें तोपखाने-पुरुष और तीरंदाज शामिल थे। उन्हें चारिंगिया पेलन फुकन, दिखौमुखिया राजखोवा, नाम-दयाँगिया राजखोवा और ओपर-दयाँगिया राजखोवा की कमान के तहत रखा गया। रणनीति यह थी कि दस हजार लोगों को सबसे आगे रखा जाए, दस हजार लोगों को खाइयों में छिपाया जाए और बीस हजार लोगों को दुश्मन से छिपाकर रखा जाए।

यह जानते हुए कि उनकी सेनाएँ नुकसान में हैं क्योंकि उन्हें एक मैदानी क्षेत्र में दुश्मन का सामना करना पड़ेगा। कहा जाता है कि लाचित ने अतिरिक्त छल का इस्तेमाल किया गया जो लगभग एक शताब्दी पहले कोच जनरल चिलाराई से लड़ाई में बहुत प्रभावी साबित हुआ था। उन्होंने तीरंदाजों और बंदूकधारियों को ब्राह्मणों की पोशाक पहनाई और आगे बढ़ने वाली असमिया सेना की पहली पंक्तियों में खड़ा कर दिया, इस अनुमान के साथ कि अतीत में कोचों की तरह, मुगल सैनिक भी ब्राह्मणों से लड़ने के लिए अनिच्छुक होंगे। लेकिन यह चाल बेकार साबित हुई और ऐसा कहा जाता है कि पीछे की ओर हाथी के ऊपर बैठा राम सिंह बरफुकन के उस प्रयास पर जोर से हँसा और अपने विरोधियों की मौलिकता की प्रशंसा की। (160)

हालाँकि, राजपूत जनरल लाचित के इस संदेश से पूरी तरह धोखा खा गया कि वह हमले के लिए 20,000 आदमी भेजेंगे। उसने निर्णय लिया कि 10,000 की सेना, बेहतर मारक क्षमता का लाभ उठाते हुए युद्ध के मैदान में असमियों को हराने के लिए पर्याप्त होगी। इसलिए उन्होंने विरोधियों का मुकाबला करने के लिए 'मीर नवाब' नामक अधिकारी की कमान के तहत केवल दस हज़ार सैनिकों को भेजा। यह पराक्रम का कार्य था, जो मुगल सेनाओं की श्रेष्ठता साबित करने के लिए बनाया गया था, वे कम लोगों के साथ अपने से दोगुनी संख्या में असमिया सेना को हरा सकते थे!

राजा राम सिंह ने पराक्रम का अतिरिक्त कार्य यह किया कि उसने 'मदनावती' नाम की एक महिला को पुरुष मुगल योद्धा की पोशाक में अपने सैनिकों के अग्रभाग में रखा। इसका मतलब इस बात को स्पष्ट

करना था कि महिला सैनिक भी असमिया को हरा सकती हैं। इसके अलावा, उसके अपने शब्दों में यह सुनिश्चित करना था कि "यदि वह हार जाती है तो हमें किसी अपमान का सामना नहीं करना पड़ेगा और यदि जीत दुश्मन के पक्ष में होती है, तो उन्हें कोई सम्मान या प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी।" (161)

5 अगस्त, 1669 को पहाड़ के दक्षिण में अलाबोई के मैदान में दोनों सेनाओं का युद्ध हुआ। मदनावती ने महान वीरता का प्रदर्शन करते हुए असमिया अग्रिम मोर्चे पर धावा बोल दिया। वह बिजली की गति से आगे बढ़ी, जिससे वह तीरंदाजों और बंदूकधारियों के लिए असंभव लक्ष्य बन गई। उसके नेतृत्व में मुगल सैनिकों ने कम-से-कम चार असमिया अग्रिम मोर्चों को भेद दिया जिससे भारी क्षति हुई। इसके बाद खाइयों में छिपे दुश्मन ने उन्हें खदेड़ दिया जो अब बड़े जोश के साथ जवाबी हमला करने के लिए निकले। मदनावती की टुकड़ी को खदेड़ दिया गया और उसे अपने घोड़े के साथ ब्रह्मपुत्र नदी में कूदना पड़ा जिसने नदी पार करके भागने और बच निकलने की कोशिश की। लेकिन लाचित ने ऐसी आकस्मिकता के लिए नदी के रेतीले तटों पर भी एक टुकड़ी तैनात कर दी थी और मदनावती एवं भाग रहे मुग़ल सैनिकों को गोली मार दी गई। (162)

"मुगल कमांडर मीर नवाब ने व्यक्तिगत रूप से असमिया सेना के खिलाफ हमले का नेतृत्व किया। चुडामोनी दैवज्ञ ने लाचित बरफुकन को परिणाम की भविष्यवाणी की थी कि युद्ध में मीर नवाब का मरना तय था। बरफुकन और उनके प्रमुख लेफ्टिनेंट स्क्रीन प्लेटों से सुरक्षित घेरे में दूर से लड़ाई देख रहे थे। उन्होंने ज्योतिषी चुडामोनी दैवज्ञ से मुठभेड़ के मुद्दे के बारे में पूछताछ की कि कौन घायल होगा, कौन मारा जाएगा और कौन सबसे भारी प्रहार करने में सक्षम होगा। जैसे-जैसे योद्धा युद्ध-मोर्चे की तरफ आगे बढ़े, चुडामोनी ने भविष्यवाणी की : 'यह वीर सेनानी है, वह दुश्मन को हराकर वापस आएगा। दूसरा आदमी आधा मारा जाएगा और तीसरा पूरी तरह से चूर-चूर हो जाएगा।' ज्योतिषी की भविष्यवाणियाँ अक्षरशः पूरी हुईं और लाचित बरफुकन ने चिल्लाकर कहा : "तुम्हारा धन्यवाद, चुडामोनी दैवज्ञ, तुमने युद्ध के संपूर्ण विज्ञान को अपने नियंत्रण में ले लिया है।" (163)

लाचित द्वारा अपनाई गई रणनीति तब काम आई जब मीर नवाब ने अभियान का व्यक्तिगत प्रभार संभाला और असमिया के

खिलाफ मजबूत सेना का नेतृत्व किया। 20,000 अतिरिक्त असमिया सैनिक अब अपने भाइयों के साथ शामिल हो गए क्योंकि उन्होंने भारी संख्या में मुगल टुकड़ी को हरा दिया था। अहोम कमांडर लुथुरी राजखोवा मीर नवाब को पकड़ने और लाचित के सामने लाने में सफल रहे। यह अहोम अधिकारी मीर जुमला के समय में मुगलों का बंदी बन गया था और दिल्ली में बंदी बना कर रखा गया था। उस समय मीर नवाब ने उनकी ओर से हस्तक्षेप किया था और उनकी रिहाई सुनिश्चित की थी। मुगल कमांडर ने अब लुथुरी से एहसान उतारने और उसे रिहा करने का अनुरोध किया। लेकिन लुथुरी को मजबूरन यह अनुरोध ठुकराना पड़ा और जवाब देना पड़ा : "आपने जो किया, वह मैं दोहरा नहीं सकता। अगर मैं आपको रिहा कर दूँ तो मेरे बेटे और बेटियाँ भी बर्बाद होने से नहीं बचेंगे। इसलिए मुझसे ऐसा अनुरोध करने से बचें।" (164)

मीर नवाब को असमिया शिविर में ले जाया गया और वहाँ रखा गया। मुगलों की हार पर सैनिकों में बहुत खुशी थी; ऐसा प्रतीत हुआ कि लाचित की खुले मैदान में लड़ने की आशंका अनुचित थी! लेकिन वास्तव में चतुर कमांडर-इन-चीफ बिलकुल सटीक था, जैसा कि बाद के घटनाक्रम से पता चला। इसके परिणामस्वरूप असमिया इतिहास में सबसे भयानक और दुखद घटनाओं में से एक हुई!

मुगलों द्वारा झेले गए अपमान, विशेषकर मदनावती की मृत्यु और मीर नवाब को बंदी बनाए जाने से राजा राम सिंह क्रोधित हो गया। उसे तुरंत एहसास हो गया कि चालाक असमिया कमांडर-इन-चीफ ने झूठे आँकड़े प्रदान करके उसे मात दे दी है। उसने अपने लेफ्टिनेंटों से कहा : "मुझे शुरू में ही सूचित किया गया था कि असमिया केवल बीस हजार सैनिकों को युद्ध में भेजेंगे और मैंने दुश्मन की संख्या अधिक होने से बचने के लिए केवल दस हजार भेजे, जो युद्ध की नैतिकता का उल्लंघन है। मेरे अन्य सैनिक कार्रवाई के लिए तैयार थे और मैं अतिरिक्त सेना के रूप में किसी भी संख्या में भेज सकता था। दो असमान ताकतों के बीच मुठभेड़ देखना पाप था।" (165)

उनके गुस्से और क्रोध ने राजपूत राजा को "युद्ध की नैतिकता" के बारे में सब-कुछ भुला दिया! उन्होंने शाही घुड़सवार सेना की बड़ी टुकड़ी को बुलाया और स्वयं नेतृत्व करते हुए असमिया पैदल सैनिकों पर धावा बोल दिया, जो अपने कैदियों के साथ विजयी होकर अपने मजबूत गढ़ में लौट रहे थे। मुग़ल घुड़सवार अपने साथ नए यंत्र या मशीनों के

साथ लंबी ढालें ले जाते थे जो उनके पूरे शरीर को भाले, गोली या तीर से छिदने से बचाती थीं। इससे पहले कि वे अपने किले तक पहुँच पाते, घुड़सवार सेना ने असमिया सैनिकों को तोड़ डाला, काटते-काटते, असहाय सैनिकों को अपने घोड़ों के खुरों के नीचे रौंद डाला। यह भयानक स्तर का नरसंहार था; असमिया सैनिकों ने बहादुरी से प्रतिरोध करने की कोशिश की, लेकिन अच्छी तरह से सशस्त्र, अनुशासित मुगल घुड़सवार सेना के सामने उनका कोई मुकाबला नहीं था। वे अस्त-व्यस्त होकर भाग गये; मुगल घुड़सवारों ने उन्हें काट डाला। केवल सूर्यास्त के समय ही नरसंहार समाप्त हुआ और घुड़सवार सेना ने पीछे हटने की आवाज सुनी। लेकिन, तब तक, असमिया योद्धाओं की दस हजार लाशें अलबोई मैदान पर बिखर चुकी थीं, जो किसी भी अभियान में उनके द्वारा उठाया गया सबसे बड़ा नुकसान था!

अब नतीजे पर खुश होने की बारी राम सिंह की थी। उन्होंने अपने मातहतों से कहा, "असमियों की उतावलापन देखो।" "वे एम्बर घुड़सवारों के साथ मैदानों पर लड़ने का साहस करते हैं!" यहाँ तक कि उन्होंने अपने असमिया समकक्ष को तीर-चालित संदेश भी भेजा और उनसे भविष्य में इस तरह की "मूर्खतापूर्ण गतिविधियों" से दूर रहने के लिए कहा। अपनी निराशा को छुपाते हुए, लाचित ने जवाबी संदेश भेजा जिसमें कहा गया था : "पड़ोसी क्षेत्रों के कई सरदार हमारे रैंकों में शामिल हो गए हैं। उनमें से कुछ ने हमसे परामर्श किए बिना विचरण की माँग की। एक टुकड़ी नष्ट हो गई है। हमारे पास अब भी कई और हैं जो कार्रवाई के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।" (166)

लाचित अपने सैनिकों की इतनी बड़ी संख्या में मृत्यु और गढ़गाँव में सुरक्षित रूप से मौजूद लोगों द्वारा युद्ध के मोर्चे पर जमीनी हकीकत को समझने में विफलता से निराश थे। उन्होंने अतान बरगोहैन को बताया, "हमारा प्रत्येक सैनिक शक्ति का स्तंभ है।" "हमने अलाबोई के मैदान में ऐसे दस हज़ार दिग्गजों को खो दिया जिससे मुझे बहुत पीड़ा हुई।" बुरगोहैन ने बरफुकन से हिम्मत न हारने के लिए कहा। उन्होंने कहा, "हमें राजा राम सिंह पर बढ़त हासिल है।" "मुगल कमांडर मजबूरी में लड़ रहा है। हम उसकी युद्ध रणनीति की प्रकृति से देख सकते हैं कि उसका दिल इस अभियान में नहीं है। दूसरी ओर, आप और मैं, राजा और देश के लिए लड़ रहे हैं, जैसे हमारे अधिकारी और सैनिक लड़ रहे हैं। हमारा जुनून हमें अंतिम जीत दिलाएगा। इस तरह के उलटफेर से हमारी

अंतिम जीत में आपका आत्मविश्वास कभी नहीं हिलना चाहिए। लंबे युद्ध में इस प्रकार की घटनाएँ होना सामान्य बात हैं। जब आप बड़ी मछली पकड़ने के लिए तालाब के पानी में हलचल मचाते हैं तो मछली पकड़ने वाले छोटे फ्राइज़ के काँटेदार छिलके चुभेंगे। आपको अपनी सफलता का आकलन बड़े कैचों की संख्या से करना चाहिए।" (167)

इसमें कोई संदेह नहीं है, अलाबोई की आपदा निचले असम में क्षेत्रों पर कब्ज़ा बनाए रखने के असमिया अभियान के लिए बड़ा झटका थी और इसे वापस हासिल करने के मुगल प्रयास को भारी बढ़ावा मिला। हालाँकि इस आपदा से कुछ सकारात्मक बातें सामने आईं। पहली बात, इससे मुगलों को कोई रणनीतिक लाभ नहीं हुआ, क्योंकि यह लंबे और अधिक समय तक चले युद्ध में अलग तरह की घटना थी। दूसरी बात, इसने दोनों कमांडरों पर क्रमशः गढ़गाँव और दिल्ली से डाले जा रहे दबाव को कम करने का काम किया।

औरंगजेब इस सफलता से इतना प्रसन्न हुआ कि इसके बारे में जानने पर, उसने राम सिंह का मनसब 4000 से बढ़ाकर 5000 कर दिया। इसी तरह, इसने अहोम राजा चक्रध्वज सिंह के मन से लाचित के प्रति उनके मन में मौजूद सभी गलतफहमियों और संदेहों को मिटा दिया जो उनके कुछ अधीनस्थों की गलतबयानी के कारण हो गए थे। उन्हें एहसास हुआ कि लाचित जो रणनीति अपना रहे थे, वो बिलकुल सही थी और अलाबोई की पराजय ने विरोधाभासी रूप से बरफुकन पर उनके विश्वास को फिर से जगाने का काम किया।

***

यद्यपि राजा राम सिंह अलबोई में विजय से बहुत प्रसन्न था, फिर भी वह इस बात से भली-भाँति परिचित था कि इससे उसकी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है और उसने अपने विरोधियों के खिलाफ कोई ठोस लाभ हासिल नहीं किया था, न ही उनकी रक्षा में थोड़ी-सी भी सेंध लगाने में सक्षम हुआ था। औरंगजेब ने निर्देश भेजा था कि उसके जनरल को सेना द्वारा कब्जाई गई भूमि से सटे क्षेत्र को नष्ट करना शुरू कर देना चाहिए और असमियों को मजबूर करने के लिए नागरिक आबादी पर अत्याचार करना चाहिए जो अभी तक मुगल सेना की बढ़त के सामने नहीं भागे। लेकिन वह बहादुर राजपूत था, राम सिंह ने इस तरह की कार्रवाई से परहेज किया। न ही अलबोई ने उन्हें असमिया

सुरक्षा पर ठोस हमला करने के लिए उत्साहित किया और इस तरह उसका अभियान कुछ झड़पों और राजनयिक आदान-प्रदान के साथ लंबा और लगभग स्थिर बना रहा।

लेकिन उन्होंने यह मान लिया था कि अलाबोई आपदा अहोम राजा को गौहाटी और निचले असम से पीछे हटने पर विचार करने के लिए और अधिक लचीला बना सकती है ताकि पहले की सीमाएँ स्थापित की जा सकें। इस प्रकार राजपूत प्रमुख ने अपने शिविर में असमिया दूतों को बुलाकर विवाद का शांतिपूर्ण समाधान प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की, यहाँ तक कि गौहाटी किलेबंदी के लिए तीन लाख रुपये का मुआवजा देने की पेशकश भी की बशर्ते बरफुकन बंदरगाह-शहर से चले जाएँ। असमिया पक्ष की ओर से भरपूर आश्वासन के बावजूद कि वे भी शांतिपूर्ण समाधान चाहते हैं, बरफुकन ने राम सिंह के प्रस्ताव पर कार्रवाई करने का ज़रा भी प्रयास नहीं किया।

अब तक राजपूत जनरल इस बात की सराहना कर रहे थे कि लाचित समझदार राजनयिक है, जो बातचीत के जरिये शांति स्थापित करने के लिए उसके किसी भी तर्क का खंडन कर सकते है। उन्होंने एक असमिया दूत, कौपतिया माधबचरण से अपने निस्संदेह प्रतिद्वंद्वी के बारे में पूछा कि वह तब कहाँ थे जब मीर जुमला ने असम पर कब्ज़ा कर लिया था और गढ़गाँव की अहोम राजधानी पर कब्ज़ा कर लिया था। निस्संदेह, जैसा कि उनके पद के कारण आवश्यक था, माधवचरण विशेषज्ञ झूठ बोलने वाले व्यक्ति थे! "पूर्वी क्षेत्र में," उसने बिना पलक झपकाए उत्तर दिया, "वहाँ नारा नामक राज्य है, जो अहोम राजा को प्रतिवर्ष घोड़ों, कपड़ों, हाथियों और धन का निर्धारित सम्मान देने के लिए संधि से बंधा हुआ था। नारा के राजा ने संधि की शर्तों की अवहेलना की और नारा के दुर्दम्य स्वामी से सम्मान उगाहने के लिए अहोम सम्राट ने लाचित फुकन को भेज दिया। अहोम जनरल ने नारा देश को तबाह कर दिया और उसके अनिच्छुक स्वामी से कर वसूला। असम में मीर जुमला के आगमन के बारे में सुनकर असमिया सेनापति ने नवाब का पीछा किया, लेकिन कालियाबार पहुँचने पर उसे यह बात पता चली कि मुग़ल जनरल को उसके पूर्वजों के साथ मिला दिया गया।"

चतुर दूत ने अपनी कहानी को और भी सुशोभित किया : "पहाड़ी क्षेत्रों के कई सरदार अभियान में हमारे इच्छुक सहयोगी बन गए हैं। उनके साथ कुल तीन लाख सैनिक हैं। वे सही और गलत के किसी भी

विचार के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं। युद्ध में उनकी भागीदारी को महामहिम ने सीधे मंजूरी दे दी है और वे जनरल के आदेशों की प्रतीक्षा किए बिना दुश्मन पर उग्र रूप से टूट पड़ते हैं। वे तेज़ी से और अचानक हमले करते हैं और उनकी गतिविधियों और कार्यों का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।" (168)

एक बार फिर राजपूत कमांडर ने माधबचरण के माध्यम से संदेश दिया कि यदि असमिया अपनी स्थिति से पीछे नहीं हटते हैं तो सीधी लड़ाई ही मुगलों के लिए खुला एकमात्र रास्ता होगा, जिसे उनकी भारी श्रेष्ठता के साथ जीतना निश्चित है। वह स्वयं ऐसी किसी लड़ाई में शामिल नहीं होना चाहते थे जिससे अनावश्यक रूप से लोगों का वध हो, इसलिए उन्होंने दिल से कामना की कि बरफुकन तुरंत गौहाटी को खाली कर दे और 1639 की संधि में सहमत सीमा पर वापस लौट जाए।

प्रधानमंत्री अतान बुरगोहैन के परामर्श से लाचित ने राजपूत जनरल को निम्नलिखित उत्तर दिया : "मैं केवल महामहिम का सेवक हूँ। राजपूत राजा के साथ मैं जो भी शर्तें रखूँगा, उन्हें हमारे संप्रभु की स्वीकृति नहीं मिल सकती है। इसलिए, राजा को ऐसी संधि की इच्छा रखनी चाहिए जिसे संबंधित सभी पक्षों द्वारा अनुमोदित किया जाए और इसका उद्देश्य निरंतर पालन से बढ़ाया जाए। यदि ऐसी संधि संपन्न हो सकती है, तो राजा की सभी क्षेत्रों में प्रशंसा की जाएगी। राजा को युद्ध में उनकी बुद्धिमत्ता और कौशल के कारण दिल्ली के सम्राट द्वारा भेजा गया है। यदि वह हमारी सेना पर निर्णायक जीत का श्रेय लिए बिना यहाँ से चले गए तो उनसे की गई उम्मीदें फिर उचित नहीं रहेंगी।" (169)

इस प्रकार, अलाबोई में असमियों को मिली पराजय के बावजूद, स्थिति फिर से पहले जैसी हो गई और राजा राम सिंह के अभियान की शतरंज की बिसात पर कोई हलचल नहीं हुई। वह बहादुर राजपूत जनरल जो भारत के अन्य क्षेत्रों में अपने कारनामों के लिए प्रसिद्ध था, असम में बेकार साबित हो रहा था। महीने बीतते गए और शुष्क मौसम होने के बावजूद जब ठोस हमला किया जा सकता था। वर्ष 1669 से 1670 आ गया और यथास्थिति को बदलने के लिए लगभग कुछ भी नहीं हुआ। असमिया सुरक्षा विभिन्न बिंदुओं पर पहले के कई हमलों के दौरान अभेद्य साबित हुई थी, इसलिए उस पर सीधा हमला करने की राम सिंह की अनिच्छा दिल्ली से मिल रही उनके अपने परिवार

की खबर से और भी बढ़ गई थी। औरंगजेब, शायद अपने निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करने में कोई प्रगति करने में पिता की असमर्थता या अनिच्छा से नाराज़ होकर अपना गुस्सा राम सिंह के बेटे पर निकाल रहा था!

राजपूत जनरल की विधवा माँ के साथ-साथ उनकी पत्नी ने भी उन्हें लिखा कि सम्राट ने हमारे बेटे कृष्ण सिंह को आदेश दिया था कि वह अखाड़े में बाघों से लड़कर उनका मनोरंजन करें| अगर राम सिंह दिल्ली में होते तो शायद वह ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर पाते। तदनुसार, सम्राट सहित दर्शकों के सामने कृष्ण सिंह को अपनी तलवार और ढाल से लैस होकर मैदान में उतरना पड़ा और रॉयल बंगाल टाइगर्स के जोड़े का सामना करना पड़ा। युवक ने काफी समय तक अपने जीवन के लिए संघर्ष किया और सौभाग्य से जंगली जानवरों को मारने में सफल रहा। राम सिंह को सम्राट की योजनाओं के बारे में चेतावनी देते हुए पत्र में पोस्टस्क्रिप्ट जोड़ी गई थी।

"सम्राट ने बाघों के साथ लड़ाकर कृष्ण सिंह की मृत्यु की साजिश रची।" पत्र में लिखा था, "ऐसा दोस्त है सम्राट! यह कभी मत सोचो कि असम की पूर्वी भूमि पर आपके आक्रमण से हमें लाभ होगा। हमें बताया गया है कि असम में सार्वभौमिक धार्मिक संगीत और गायन होता है और वह गायें, ब्राह्मण और वैष्णव वहाँ शांति और खुशी से रह रहे हैं। आप उन्हें विदेशी प्रभुत्व के अधीन लाने के परिणामों से अवगत हैं। यह भी याद रखें कि असम पर आक्रमण करने के बाद मीर जुमला लंबे समय तक नहीं जी सका। इसलिए ध्यान दें, और जैसा आप उचित समझें वैसा करें।" परिवार ने बताया कि सम्राट औरंगजेब ने यह प्रस्ताव भी दिया था कि कृष्ण सिंह इस्लाम में परिवर्तित हो जाएँ। (170)

इसलिए, बहादुर राजपूत जनरल में पूर्ण पैमाने पर युद्ध के प्रति उत्साह की बढ़ती कमी कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। वह सचमुच, शैतान और गहरे समुद्र के बीच फँस गया हूँ। यदि वह हार मान लेता और अपने सैनिकों को वहीं वापस ले जाता, जहाँ से वे आए थे, तो वह अपने परिवार के साथ-साथ खुद के लिए भी परिणामों का भली-भांति अनुमान लगा सकता था और न ही वह असमिया सुरक्षा में किसी भी संभावित कमजोर बिंदु का फायदा उठाने के लिए कोई ठोस तरीका ईजाद कर सका। इसलिए उसने बारफुकन को अपनी मूल स्थिति पर वापस जाने की माँग बार-बार दोहरानी जारी रखी, यहाँ तक कि वह अफवाहें

फैलाकर असमिया रैंकों में असंतोष पैदा करने का प्रयास करते रहे कि उनके कमांडर उन्हें पक्ष बदलने के बारे में संदेश भेज रहे हैं| साथ ही रिश्वत के रूप में पैसे और उपहार भेजकर अधिकारियों को भ्रष्ट करने का भी प्रयास कर रहे थे।

असमिया दूत माधवचरण धन और उपहार ले गए थे| उनके साथ चतुर राजनयिक के रूप में प्रतिष्ठित मुगल दूत, पंडितराय भी था जिसे ढाका के गवर्नर शाइस्ता खान ने भेजा था। कुछ साल पहले, 1664 में खान ने इस राजदूत को अहोम क्षेत्र का दौरा करने के लिए भेजा था, जिसे उन्होंने अतान बुरगोहैन को संबोधित पत्र भी दिया था। उस पत्र में लिखा था : "मैंने इस बार पंडितराय को भेजा है जो हमारे बेहद भरोसेमंद व्यक्ति हैं। आपको उसे शीघ्र ही वापस भेजना चाहिए।" आप भाग्यशाली हैं कि ऐसा धर्मनिष्ठ ब्राह्मण और पंडित आपके प्रति सद्भावना के कारण आपके यहाँ आ रहा है। इसलिए, आपको उसे संतुष्ट करना चाहिए, जिससे आपको बहुत लाभ होगा और धर्मपरायणता और धार्मिक पुण्य दोनों अर्जित होंगे।।" (171)

जाहिर है कि एक राजनयिक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा से भी अधिक, पंडितराय की संगति को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता थी कि असमिया दूत अपने लिए कुछ धन और उपहारों को हड़प न लें! माधवचरण ने असमिया कमांडरों को राम सिंह का पत्र भी दिया : "मैं यह पैसा फुकनों और राजखोवाओं के लिए भेज रहा हूँ। उन्हें गौहाटी को खाली करने में अपने प्रभाव का प्रयोग करना चाहिए। मुझे जो कुछ भी करने के लिए कहा जाएगा, मैं उसे करने के लिए तैयार हूँ।" राम सिंह उस देशभक्ति के उत्साह और राष्ट्रवादी गौरव की बहुत कम सराहना कर सकते थे जिसने अधिकारियों को अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सब-कुछ देने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने रिश्वत की पेशकश को अस्वीकार कर दिया और इसकी सूचना बरफुकन को दे दी। (172)

इस मिशन पर माधवचरण लाचित बरफुकन के लिए उपहार के रूप में कीमती रत्नों से जड़ा अनमोल हार भी ले गए| इस अनुरोध के साथ कि जब वह अगली बार युद्ध के मैदान में दिखाई दें तो इसे पहनें। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लाचित ने इस पेशकश को उस अवमानना के साथ ठुकरा दिया जिसके वह हकदार थी। पंडितराय ने बरफुकन को गौहाटी को मुगल सेना को सौंपने के लिए मनाने के लिए अपने सभी कूटनीतिक कौशल का इस्तेमाल किया और ऐसा करने में

विफल रहने पर संभावित परिणामों की रूपरेखा तैयार की। लेकिन कमांडर-इन-चीफ ने वही रुख बरकरार रखा जो उन्होंने पहले राजा राम सिंह को बताया था। "हमारे स्वर्ग-महाराजा पूर्व के स्वामी हैं और पादशाह पश्चिम के स्वामी हैं। यदि वे निर्णय लेते हैं, तो हम अपने क्षेत्र का समर्पण कर सकते हैं और आप भी बंगाल का समर्पण कर सकते हैं। यदि हम स्वयं किसी भी शर्त में प्रवेश करते हैं, तो हमारे संबंधित स्वामी उन्हें अनुमोदित करने से इंकार कर सकते हैं।" पंडितराय को माधबचरण के साथ अपने मिशन को अधूरा छोड़कर मुगल शिविर में लौटना पड़ा! (173)

अब तक राजा राम सिंह इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हो चुके थे कि उनके युद्धपोतों के दुर्जेय शस्त्रागार के सीधे हमले के अलावा कुछ भी असमियों को गौहाटी में उनकी मजबूत स्थिति से बेदखल करने और उन्हें निचले असम से बाहर निकालने में सक्षम नहीं होगा। अत्यधिक बुद्धिमान पंडितराय ने असमिया छावनी की अपनी यात्रा के दौरान, यह जानकारी प्राप्त की थी कि दुश्मन की रक्षा में एक कमजोरी थी, इटाखुली में बरफुकन के मुख्यालय और नीलाचल पहाड़ियों जिस पर कामाख्या मंदिर स्थित था, की तलहटी के बीच ब्रह्मपुत्र नदी के रेतीले तट पर प्राचीर में मामूली खुली जगह थी। इस हिस्से पर बना 'प्राचीर अंधारुबली' के नाम से जाना जाता है जो शक्तिशाली नदी से लगातार कटाव के कारण असुरक्षित था। अमराजुरी-घाट के रूप में ज्ञात अंधारुबली में नदी-घाट और दक्षिणी तट पर इटाखुली और उत्तर में अश्वक्रांता के बीच त्रिकोण की कल्पना की जा सकती है तथा नौसैनिक आक्रमण की योजना तैयार की जा सकती है। उसके जहाज़ों और नाविकों द्वारा दरार बनाने के बाद तोपखाने-पुरुषों और घोड़ों को युद्ध-नौकाओं द्वारा ले जाया जा सकता था और बड़ा हमला किया जा सकता था।

सफल हमले की संभावनाओं से उत्साहित होकर राम सिंह ने उसकी योजना बनाना शुरू कर दिया। पंडितराय की खुफिया सूचनाओं की सत्यता का पता लगाने के लिए जासूसों को भेजा, जबकि अपनी खुद की नौसैनिक ताकत का अनुमान लगाया। उन्हें एहसास हुआ कि अभियान की लंबी प्रकृति ने उनके संसाधनों को ख़त्म कर दिया है और उन्होंने ढाका और दिल्ली को संदेश भेजकर अतिरिक्त सहायता की माँग की। इन्हें आने में समय लगा और बरसात का मौसम शुरू होने के कारण, पूर्ण पैमाने पर हमले की उसे योजना को स्थगित करना पड़ा।

इस बीच, अप्रैल 1670 में, अहोम सम्राट चक्रध्वज सिंह ने अंतिम सांस ली। मीर जुमला के आक्रमण के दौरान असमिया गौरव के निचले स्तर पर पहुँच जाने के बाद उसे पुनः स्थापित करने में इस महान राजा की भूमिका उल्लेखनीय थी। "जब युद्ध अधिक गंभीर मोड़ ले रहा था, तभी अप्रैल, 1670 में असम के राजा चक्रध्वज सिंह की मृत्यु हो गई। उनके आत्म-सम्मान और देशभक्ति की जबरदस्त भावना मुख्य रूप से अपने देश को उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा और गौरव वापस दिलाने में जिम्मेदार थी। उनके व्यक्तित्व ने उनके कमांडरों और सैनिकों के दिलों में साहस और दृढ़ संकल्प का संचार किया। जब देश के सर्वश्रेष्ठ दिमाग गौहाटी में अनुपस्थित थे, तो राजा को घटिया सामग्री के साथ प्रशासन चलाना पड़ा। पुरुषों की नियमित अतिरिक्त सेना और दूर स्थित सेना के लिए साजो-सामान की गारंटी के लिए कुशल नागरिक प्रशासन का रखरखाव आवश्यक था। स्वर्गदेव चक्रध्वज सिंह ने इसे वांछित गति दी और इसने अंतिम जीत की राह बनाने का कार्य किया।" (174)

शह-मात!

"उनका (चक्रध्वज सिंह का) शासनकाल लगातार युद्धों से इतना घिरा हुआ था कि सार्वजनिक कार्यों के निष्पादन के लिए बहुत कम समय था और एकमात्र नई सड़क का निर्माण तेलियाडांगा से झांज़ीमुख तक किया गया था।

"उनके भाई माजू गोहैन उनके उत्तराधिकारी बने जो तब से सुनयत्फा के नाम से जाने जाते थे। उन्होंने हिंदू नाम 'उदयादित्य सिंह' ग्रहण किया और अपने मृत भाई की पत्नी से शादी की। "मुगलों के साथ बातचीत जारी रही। राजा राम सिंह ने प्रस्ताव दिया कि पुरानी सीमा को बनाए रखा जाना चाहिए और बरफुकन ने अपनी सहमति व्यक्त की, लेकिन जब वह अहोम राजा की पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहे थे, राम सिंह के पास अतिरिक्त सेना पहुँच गई। उन्हें जाहिर तौर पर बरफुकन की ईमानदारी पर संदेह था, इसलिए वह अपनी सेना के साथ सीतामढ़ी की ओर बढ़े और एक टुकड़ी दारंग भेज दी। इसके बाद उदयादित्य ने युद्ध को फिर शुरू करने की तैयारी की और बुरगोहैन को समधरा से सरायघाट तक 20,000 पुरुषों के साथ मार्च करने का आदेश दिया। मुगल उनसे मिलने के लिए आगे बढ़े और दोनों पक्षों में युद्ध शुरू हो गया। असमिया ज़मीन पर सफल रहे, लेकिन नौसेना को बरहिला की ओर पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा और इस प्रकार थल सेना को भी पीछे हटना पड़ा। अधिक जवानों के साथ बरफुकन के आगमन ने असमिया को हमले

का जवाब देने में सक्षम बनाया। इस बार मुगल नौसेना हार गई और असमियों को ज़मीन पर दूसरी विजय प्राप्त हुई।" (175)

जैसा कि अहोम बुरंजियों से संकेत मिलता है, यद्यपि उदयादित्य सिंह अपने बड़े भाई चक्रध्वज के समान क्षमता के नहीं थे, फिर भी वह भी मुगलों के सामने झुकने के लिए तैयार नहीं थे और उन्हें गौहाटी और निचले असम पर फिर से कब्ज़ा करने से रोकने के लिए प्रतिबद्ध थे| इसका संभावित परिणाम उनके लिए गढ़गाँव की ओर बढ़ने का रास्ता खोल देगा, जैसा कि मीर जुमला के आक्रमण के दौरान हुआ था। इसलिए, उन्होंने अपने बरफुकन से आग्रह किया कि जब तक संभव हो, गौहाटी की रक्षा करते रहें। मुगलों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए आक्रमण शुरू किया जाए, यहाँ तक कि वे नियमित रूप से उन्हें पुरुषों, युद्ध सामग्री और युद्ध-पोत उपलब्ध कराते रहे।

लेकिन, जैसे ही राम सिंह का लंबा अभियान वर्ष 1671 में प्रवेश कर गया| असमिया शिविर में भी थकान फैल गई और सैनिकों के बीच इस संभावना के बारे में बड़बड़ाहट होने लगी कि लंबे समय तक उनका अपने घरों और परिवारों में लौटना तय नहीं है। अधिक चिंता की बात यह थी कि असमिया कमांडर जो निराशावाद महसूस कर रहे थे, वह लाचित द्वारा नियमित रूप से आयोजित युद्ध-सम्मेलनों में अधिक-से-अधिक परिलक्षित होता था। असम के लिए अभियान पर निकलने से पहले सम्राट औरंगजेब द्वारा अपने राजपूत जनरल को दिए गए आदेशों की गंभीरता अब तक हर असमिया सैनिक और उसके तत्काल कमांडर को ज्ञात थी। कहा जाता है कि सम्राट ने राजा राम सिंह को चेतावनी दी थी; "यदि आप अपने मिशन को पूरा कर सकते हैं तो आपको ओमराव बनाया जाएगा और मूल्यवान उपहार दिए जाएँगे। यदि आप असफल रहे, तो आपका सिर काट लिया जाएगा। इसके अलावा, मैं आपके बच्चों और आश्रितों को आपके क्षेत्र से बहुत दूर किसी स्थान पर मार डालूँगा।" (176)

चारों ओर फ़ैल रही इस तरह की अफवाहों ने लोगों और उनके नेताओं को आश्वस्त कर दिया था कि जब तक राम सिंह जोखिम भरी लड़ाई में हार नहीं जाते, तब तक वह अपने अभियान से कभी पीछे नहीं हटेंगे, जो अब हमेशा के लिए जारी रहना तय लग रहा था! इससे असमिया खेमे में चारों ओर थकान और निराशा की भावना बढ़ गई, जो लंबे संघर्षों के मामलों में आम मनोवैज्ञानिक स्थिति है। कमांडरों ने शांति

समझौते के समर्थन में युद्ध-परिषदों में राय व्यक्त करनी शुरू कर दी, भले ही इसमें गौहाटी की हार शामिल हो।

लाचित इस सामान्य प्रवृत्ति के खिलाफ जाने की पूरी कोशिश कर रहे थे और, जैसा कि उन्होंने हमेशा करने का प्रयास किया था, व्यक्तिगत रूप से अपने किलेबंद शहर के विभिन्न बिंदुओं पर घूमे, आम सैनिकों और उनके कमांडरों से मिले तथा उन्हें भरोसा दिया। और उनके मन में विश्वास पैदा किया। फिर भी इस लंबी लड़ाई को जारी रखने में बुद्धिमत्ता पर उन्हें भी संदेह होने लगा और वे किसी तरह इसे समाप्त करने के बारे में सोचने लगे।

यद्यपि मुगल शिविर में माहौल बहुत अलग नहीं था। मुगल सैनिक भी अपनी लंबी व्यस्तताओं से उत्पन्न थकान से पीड़ित थे और अपने अभियान के अंत में मीर जुमला के सैनिकों की तरह, घर वापस जाने के लिए उत्सुक थे। अपने प्रतिद्वंद्वी लाचित की तरह राम सिंह भी इसका अंत चाहता था। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अब तक अपने अंधारुबली दाँव के लिए मानसिक रूप से तैयार हो चुका था, लेकिन फिर भी उसे शांतिपूर्ण मेल-मिलाप के लिए अंतिम प्रयास की जरूरत थी।

इसलिए, उसने अपनी माँग पर जोर देना शुरू कर दिया कि असमियों को पहले से भी अधिक आग्रहपूर्वक वापस हट जाना चाहिए। उसने एक बार फिर अपनी माँगों को दोहराते हुए पत्र के साथ तीन दूत, मीरा, रामहरि कारजी और पंडितराय भेजे। काफी उत्सुकता से, बरफुकन ने निम्नलिखित उत्तर दिया : "अल्लाह यार खान और मेरे पिता द्वारा स्थापित सौहार्दपूर्ण संबंधों ने अभी तक अपनी प्रसिद्धि की चमक नहीं खोई है। यदि राजा शांति के इच्छुक हैं, तो उन्हें पंडितराय और मीरा को वापस भेज देना चाहिए।" उन्होंने राम सिंह को कुछ उपहार भी भेजे।

राजपूत जनरल ने पंडितराय और मीरा को वापस भेजने का वादा किया और यह असमिया दूतों निम और रामचरण के माध्यम से लाचित बरफुकन को विधिवत सूचित किया गया। जाहिर है कि इस अवसर पर मुगल शिविर में असमिया दूतों का "बड़े धूमधाम और समारोह" के साथ स्वागत किया गया और "उन्हें सुनहरे कप में चंदन का लेप और चाँदी की ट्रे में सुपारी दी गई।" इससे बरफुकन ने पंडितराय के स्वागत के बारे में अपना मन बदल लिया और उसके स्वागत के लिए

इसी तरह की व्यवस्था करने का फैसला किया। अहोम सम्राट उदयादित्य को इस बात से अवगत कराया गया और उन्होंने पंडितराय का स्वागत करते समय उपयोग के लिए चाँदी और सोने के कप, ट्रे और व्यंजन के साथ ही कढ़ाई वाले कपड़े और छतरियों की व्यवस्था की। (177)

अब तक, निश्चित रूप से, राम सिंह को एहसास हो गया था कि असमिया नेताओं द्वारा किए गए इशारे सब दिखावा थे जो किसी ऐसे समझौते की दिशा में किसी भी सकारात्मक कदम को स्थगित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसके तहत उन्हें अपने सुदृढ बंदरगाह-शहर को छोड़ना पड़े! उन्होंने असमिया दूत निम और रामचरण के सामने जोरदार ढंग से अपने विचार व्यक्त किए : "दूतावास भेजने का कोई अंत नहीं है, और कुछ भी हासिल नहीं हुआ है। मैं फिर से अनुरोध करता हूँ कि बरफुकन को गौहाटी मेरे हवाले कर देनी चाहिए, और सैयद सना और सैयद फिरोज के बेटे को रिहा कर देना चाहिए। यदि मैं इससे अधिक की माँग करता हूँ, तो मेरे हाथ में यह तलवार जो परमेश्वरी या सर्वोच्च देवी की तरह है, मेरे विनाश का कारण बनेगी; और मेरी गरदन पर यह मोती की चेन, साक्षात् लक्ष्मी, मुझे हमेशा के लिए छोड़ देगी और मेरी चौदह पीढ़ियाँ नरक में चली जाएँगी। यदि मेरी बातों पर विश्वास नहीं है तो आइए लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) के तट पर माधब के मंदिर की ओर चलें, जहाँ मैं गंभीरता से शपथ लेने के लिए तैयार हूँ। यदि मेरा भाई बरफुकन इस प्रस्ताव से सहमत है तो उसे वो सब दिया जाएगा जो वह चाहेगा।" (178)

ये शब्द निम और रामचरण ने बरफुकन को बताए थे, लेकिन असमिया दूतों के साथ कोई भी मुगल दूत नहीं गया था, न ही लाचित या अहोम राजा को संबोधित कोई औपचारिक पत्र भेजा गया था| यह स्पष्ट प्रमाण था कि राजपूत जनरल अपने बंधन के अंत में थे। लाचित ने बदले में गढ़गाँव में उदयादित्य सिंह को राम सिंह की भावनाओं से अवगत कराया। उदयादित्य सिंह ने अपने बरफुकन की इस कार्रवाई को मंजूरी नहीं दी, क्योंकि राजपूत राजा ने प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया था और अपने प्रस्ताव वाले आधिकारिक राजदूत के माध्यम से पत्र नहीं भेजा था। नाराज राजा ने गौहाटी में पंडितराय के स्वागत के लिए लाचित बरफुकन को वह सामान भेजने से इनकार कर दिया जो उन्होंने पंडितराय के स्वागत के लिए व्यवस्थित किया था। (179)

अपने राजा की ओर से इस तरह की स्पष्ट अस्वीकृति, विशेष रूप से राजा और देश के लिए अपने अधिकारियों और पुरुषों द्वारा किए जा रहे बलिदानों की स्वीकृति की कमी ने लाचित को निराश कर दिया। न ही युद्ध-परिषदों के दौरान उनके वरिष्ठ लेफ्टिनेंटों के बार-बार दिए गए सुझावों से उनका मनोबल बढ़ा था कि वह मुगलों के साथ शांति संधि की शर्तों पर बातचीत करें और स्वर्गदेव उदयादित्य सिंह को इस तरह के समझौते की उपयुक्तता के बारे में बताएँ।

"लंबे समय से जारी शत्रुता के कारण अहोम साम्राज्य असंतोष से उबल रहा था और कमांडरों का मानना था कि औरंगजेब द्वारा सौंपे गए कार्य को पूरा किए बिना राम सिंह उनका देश नहीं छोड़ेगा, इसलिए बरफुकन सहित कुछ कमांडरों ने 1639 की यथास्थिति को स्वीकार करने पर विचार किया। जब बुरगोहैन और बरफुकन ने मुगलों के साथ शांति वार्ता का मामला उठाया, तो नए राजा ने भी सीमा के प्रश्न को सुलझाने की इच्छा व्यक्त की। (180)

प्रधानमंत्री अतान बुरगोहैन इस तरह की कार्रवाई का विरोध करने वाले एकमात्र व्यक्ति थे। उन्होंने कहा : "यदि आप इस स्थिति में गौहाटी को छोड़ना चाहते हैं, तो इतने लंबे समय तक लड़ने से क्या फायदा हुआ जिससे हमारे लोगों और साजो-सामान का इतना नुकसान हुआ। राम सिंह ने पुरानी सीमाओं की बहाली के लिए प्रार्थना करते हुए शपथ और वादों के साथ अपनी माँगों पर दबाव बनाया है। यदि हम सहमत भी हो जाएँ, तो भी यह ज्ञात नहीं है कि मुगल सम्राट राम सिंह के प्रस्ताव को स्वीकार करेंगे या नहीं, जो राख से बने राजमार्ग की तरह है। इस बात की भी कोई गारंटी नहीं है कि असम कमान में राम सिंह के उत्तराधिकारी अपने पूर्ववर्ती की शर्तों का सम्मान करेंगे या नहीं। फिर हम क्या करेंगे? इसके अलावा, अगर हम गौहाटी को छोड़ देंगे तो हम कहाँ जाएँगे? हमें गढ़गाँव को भी छोड़ना होगा और नामरूप में शरण लेनी होगी।" जब उदयादित्य सिंह को बुरगोहैन की सलाह से अवगत कराया गया, तो वे इससे सहमत हुए। इस तरह के समर्थन से लाचित के संदेह और झिझक दूर हो गए और महामहिम के आदेश के अनुसार, वह कार्रवाई के लिए तैयार रहे। (181)

निस्संदेह, लाचित को अपने बहादुर मुगल समकक्ष के दिल और दिमाग में धीरे-धीरे भंग हो रहे उत्साह के बारे में पता नहीं था। राम सिंह ने मानसिक रूप से स्वीकार किया कि गौहाटी की सुरक्षा में इतनी

ऊर्जा और संसाधनों का निवेश करने के बाद असमियों से गौहाटी वापस लेने की उम्मीद करना अवास्तविक था। उन्होंने भी अब असमिया लोगों की स्वतंत्रता के प्रति प्रेम और बाहरी ताकतों द्वारा अधीन होने के प्रति उनकी नापसंदगी की सराहना की, जिसने उन्हें इतनी विशाल सेना से सामना होने के बावजूद अपनी स्थिति पर डटे रहने के लिए प्रेरित किया था ! "उनसे उचित रूप से यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वे उस चीज़ को छोड़ देंगे जो उन्होंने खून और मेहनत से जीती थी। वास्तव में, असमियों से यह उम्मीद नहीं थी कि वे कामरूप की राजधानी गौहाटी को स्वेच्छा से छोड़ देंगे जो प्राकृतिक और मानवीय किलेबंदी के साथ-साथ पांडु, अगियाथुरी और सरायघाट जैसे रणनीतिक केंद्रों में शामिल थी। बहुत देर से राम सिंह को इस मौलिक सच्चाई का एहसास हुआ।

"मुगल जनरल के लिए एक और प्रतिकूल कारक उसके अपने स्वामी का रवैया था। समझौते के लिए असमियों के साथ उसके अंतहीन प्रयास और झड़पों में मुगलों के नुकसान की खबरें औरंगजेब तक पहुँचीं। उसे शाइस्ता खान और जफर खान वजीर के पत्रों से इसका एहसास हुआ कि गौहाटी किले पर कब्ज़ा करने की संभावना धीरे-धीरे कम हो रही है और अतिरिक्त सेना भेजना व्यर्थ होगा। इसलिए, 20 जुलाई, 1670 के फरमान द्वारा जनरल को आदेश दिया गया कि असकर खान और कई अन्य कप्तानों को उनकी टुकड़ियों के साथ इंपीरियल कोर्ट में वापस भेज दिया जाए|" (182)

ठीक उसी समय औरंगजेब का एक दूत और एडमिरल मुनव्वर खान का भतीजा राशिप खान गर्वित राजपूत योद्धा के लिए खुले तौर पर अपमानजनक संदेश लेकर दिल्ली से आया। संदेश में कहा गया, "मैंने राम सिंह को असम से लड़ने के लिए भेजा है, वहाँ के लोगों से दोस्ती करने के लिए नहीं।" इस पर राम सिंह ने उत्तर दिया : "मैंने लड़ने से परहेज नहीं किया है, लेकिन यह बेकार साबित हुआ है। चूँकि कोई मैदान नहीं है, भाले, ढाल और बंदूकों से लड़ना असंभव कार्य है। असमियों ने दोनों किनारों पर रक्षा की अभेद्य दीवार खड़ी कर दी है। केवल नौसैनिक युद्ध की ही संभावना है।" (183)

निस्संदेह, उसने पहले से ही इस तरह की लड़ाई की योजना तैयार कर ली थी और इस पर अमल करेगा| उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि भले ही उसे अपमानित किया गया, उसके बेटे के साथ दुर्व्यवहार किया गया और उसके परिवार को धमकी दी गई। इसके लिए

कोई मदद नहीं मिली क्योंकि राजपूत के रूप में वह औरंगजेब के समक्ष गई प्रतिज्ञा से बँधे हुए थे और उन्हें इस अभियान को समाप्त करने और असमिया को गौहाटी से बाहर निकालने का प्रयास करना था। अब कोई बातचीत या टाल-मटोल नहीं होनी थी। शतरंज का मैच अंतिम गेम खेले जाने तक खिंच गया, यद्यपि भले ही जीत कोई निश्चित परिणाम न हो!

***

कई-वर्षीय अभियान की लंबी प्रकृति ने मुगल सेना को संख्यात्मक रूप से और संसाधनों में भी कम कर दिया था। अब इस कमी की भरपाई दिल्ली से आने वाली अतिरिक्त सेना से होने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। हालाँकि, मुगल सम्राट ने अतिरिक्त सेना के लिए पहले के अनुरोध पर ध्यान दिया था और एडमिरल मुनव्वर खान कुछ और युद्धपोतों एवं तीन शाही अधिकारियों को अपने साथ लाए थे। राम सिंह ने अब अपनी कमान में सभी संसाधनों को इकट्ठा किया और करो या मरो के अंतिम कदम के रूप में उनका उपयोग किया। उनके लगभग चालीस युद्ध-पोत ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे से रवाना हुए, उनकी तोपें उनकी संख्यात्मक ताकत का अनुमान लगाने के लिए भेजी गई स्काउट-नावों को नष्ट कर रही थीं। अभियान का नेतृत्व करने के लिए राजपूत जनरल खुद अपने तोपखाने और अन्य जहाजों पर पाँच सरदारों के अधीन तीरंदाजों के साथ सुआलकुची में एक जहाज पर चढ़ गए। सेना की टुकड़ियों को उत्तर और दक्षिण दोनों तटों पर मार्च करने का भी आदेश दिया गया।

लेकिन, हमेशा की तरह, कुशल गुप्तचर प्रणाली ने असमिया नेताओं को मुगलों के इरादों के बारे में सचेत कर दिया। जैसे ही उन्हें राजपूत राजा द्वारा शुरू किए गए आक्रमण के बारे में पता चला, लाचित ने अपने कमांडरों को सामान्य आदेश भेजा कि बंदरगाह-शहर की किलेबंदी के हर हिस्से को जमीन और पानी पर सैनिकों द्वारा सुदृढ़ बनाया जाए और सभी गतिविधि सैनिकों से संचालित की जानी चाहिए। उत्तरी तट पर दरंग की ओर मुग़ल पैदल सैनिकों की बढ़त का मुकाबला करने के लिए अतान बुरगोहैन ने 20,000 सैनिकों की मजबूत सेना का नेतृत्व किया। दक्षिणी तट पर, मुगल थल सेना का असमिया सेना द्वारा सफलतापूर्वक मुकाबला किया गया। भूमि पर बाधित होने के कारण राम सिंह को पता था कि नौसैनिक-लड़ाई अब एकमात्र विकल्प है और अपने जहाजों के साथ असमिया रक्षा के एकमात्र कमजोर बिंदु,

अंधारुबली प्राचीर की दिशा में धधकती तोपों के साथ आगे बढ़े। उन्हें यह खबर सुनकर बहुत खुशी हुई कि असमिया सेना और नौसेना के कमांडर-इन-चीफ, असम के बहादुर लाचित बरफुकन अचानक गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और बिस्तर पर पड़े हैं तथा प्रतिरोध का नेतृत्व नहीं कर सकते। एक और आश्वस्त करने वाली खबर यह थी कि असमिया नौसैनिक बेड़े के एडमिरल पानी फुकन भी बीमार थे और बिस्तर पर पड़े थे।

फिर भी, गंभीर रूप से बीमार होने के बावजूद, लाचित पूरी तरह से अक्षम नहीं थे और इटाखुली किले में "तीरंदाजी भंडार" में अपनी स्थिति से, वह दुश्मन की गतिविधियों का अवलोकन कर रहे थे, निर्देश दे रहे थे और रक्षात्मक नौसैनिक रणनीतियाँ बना रहे थे। उन्होंने आदेश भेजा कि उनकी अनुपस्थिति में मिरी सैंडिकि के पुत्र नारा हज़ारिका को समग्र कमांडर बनाया जाए और हजारिका की टुकड़ी को अतिरिक्त 2000 पुरुषों द्वारा मजबूत किया जाए। आगे बढ़ रहे मुगल युद्ध-पोतों पर तुरंत हमला करने के निर्देश भी भेजे गए, जिनकी तोपें अंधारुबली में नदी भंडार के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रही थीं।

मुगल जहाज़ों और असमिया नौसैनिक बेड़े के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया। मुग़ल जहाज़ विशाल और बोझिल थे; प्रत्येक सोलह विशाल तोपों से सुसज्जित था और उसमें लगभग 60 मुगल और यूरोपीय सैनिक थे, जो नदी के बजाय ऊँचे समुद्र पर युद्ध के लिए अधिक उपयुक्त थे। साथ ही, उन्हें ब्रह्मपुत्र की प्रचंड धाराओं के विपरीत धारा की दिशा में आगे बढ़ना पड़ा, जिससे उनकी गति कम हो गई। इसके विपरीत, असमिया नावें, हिलोइचारनाओ युद्ध-पोत किस्म की थी जिन पर छोटी-छोटी तोपें लगी थीं, साथ ही बंदूकधारियों और तीरंदाजों को ले जाने के लिए बाछरी नावें बहुत छोटी थीं, जिनकी लंबाई अधिकतम 60 फीट या मुगलों के ग़ुरबों की लगभग आधी थी।

इसके अलावा, मुगल युद्धपोतों को चलाने वाले नाविक ब्रह्मपुत्र की प्रवाह प्रणाली से परिचित नहीं थे। इसके विपरीत, असमिया नाविक नदी को अपने हाथों की हथेलियों की तरह जानते थे। इस प्रकार, मुगलों की भारी नौसैनिक श्रेष्ठता के बावजूद, अहोम बेड़ा कुछ समय के लिए अंधारुबली की ओर उनकी प्रगति को रोक सका, जिससे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान के भंडार में श्रमिकों को क्षति की मरम्मत के लिए और असमिया रक्षकों को हमले से उनकी रक्षा करने के लिए अतिरिक्त

समय मिल गया। इटाकबुली में बरफुकन के बेस और नीलाचल पहाड़ियों की तलहटी में अमराजुरी-घाट के बीच यही एकमात्र असुरक्षित स्थान था।

यह याद किया जा सकता है कि राम सिंह ने भूमि पर हमले के लिए उस स्थान पर दरार के माध्यम से अपनी घुड़सवार सेना ले जाने की योजना बनाई थी और इसलिए मुगल जहाजों में घोड़ों और पुरुषों को ले जा रहा था। उस स्थान को तोड़ने में असफलता के कारण यह योजना विफल हो गई और असमिया युद्ध-नौकाओं की भारी गोलीबारी के कारण मुग़ल बेड़ा उत्तरी तट पर जुरिया की तरफ पीछे हट गया क्योंकि असमिया युद्ध नौकाएँ ऐसे हमला करती थीं, जैसे भेड़ियों के झुंड भैंस पर हमला करते हैं।

अब अश्वक्रांते के पास जमीन और पानी पर दोहरी मुठभेड़ हुई। लालुक बरगोहैन फुकन और हजारिका के नेतृत्व में असमियों ने उत्तरी तट पर आगे बढ़ रहे मुगल सैनिकों को हरा दिया। लेकिन मुग़ल बेड़ा पानी पर तेजी से जुरिया से अश्वक्रांता की ओर बढ़ रहा था। उसने तोप से हमला करने वाली असमिया युद्ध नौकाओं को बुरी तरह से तबाह कर दिया जो अमराजुरी से उनकी ओर बढ़ रही थीं। इससे असमियों को सरायघाट के उत्तर में बरहिला की ओर पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसके फलस्वरूप थल सेना भी हतोत्साहित हो गई, जिसे भी घेरे से बचने के लिए पीछे हटना पड़ा। (184)

"यह एक ऐसी नदी-लड़ाई थी, जिसे होरी ल्यूट ने पहले कभी नहीं देखा था! कामाख्या, इटाखुली और अश्वक्रांता के बीच त्रिकोण पर पूरी ब्रह्मपुत्र नादों से अव्यवस्थित हो गई थी; हर तरफ तोपों की चमक दिखाई और गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी जिससे पानी में संघर्ष कर रहे लोगों की मदद की पुकार दब गई थी। ब्रह्मपुत्र का लाल पानी मानव रक्त से और भी लाल हो गया। यद्यपि उत्तरी तट पर अतान बुरगोहैन के नेतृत्व वाले लोग बढ़त हासिल कर रहे थे। दक्षिणी तट की ओर के लोग लाचित को सिर पर न पाकर हतोत्साहित हो गए थे। जल्द ही इस हतोत्साहन के परिणाम अहोमों के खिलाफ सामने आने लगे; एक के बाद एक उनकी नावें मुगलों के हमले से पहले रास्ता छोड़ देती थीं और फिर मुड़कर भाग जाती थीं। हवा में आसन्न हार की गंध फैल गई थी। इटाखुली के नाविकों ने कालियाबार के लिए अपरिहार्य प्रस्थान के लिए बरफुकन के व्यक्तिगत प्रभावों को अपने शिल्प में स्थानांतरित करना शुरू कर

दिया। (185)

असम की स्थिति इतनी अनिश्चित हो गई थी कि पांडु में नदी-घाट की किलेबंदी की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार बरनेओग हजारिका ने अपने कमांडर-इन-चीफ के पास दूत भेजा और पूछा कि उसे क्या करना चाहिए। लाचित ने एक संदेशवाहक के माध्यम से "सभी भूमि और नौसैनिक बलों के लिए" संदेश की घोषणा करके अपने सैनिकों और नाविकों का मनोबल बढ़ाया : " मैं, लाचित बरफुकन ने केवल चार कौड़ियाँ देकर चीला पहाड़ी पर जमीन का एक टुकड़ा खरीदा है। मैं अब इस स्थान को छोड़कर नहीं जा रहा हूँ क्योंकि मेरे जीवन का कार्यकाल अभी समाप्त नहीं हुआ है; और यदि मैं कभी भी जाऊँगा, तो अपने लोगों के चले जाने के बाद ही जाऊँगा।" (186)

शब्दों के निहितार्थ सीधे थे| उनका आशय उनके सबसे कम बुद्धिमान लोगों के लिए भी स्पष्ट था-लाचित डटे रहेंगे और अपने देश की रक्षा करेंगे, भले ही इसके लिए उन्हें अपनी जान गंवानी पड़े! कमांडर-इन-चार्ज नारा हजारिका सिंदुरीघोपा किले से अश्वक्रांता की ओर दौड़े और पीछे हटने वाले सैनिकों के सामने घुटने टेकते हुए बोले : "हे मेरे देशवासियो, यदि आप सोने की इस थाली में जहर डालना चाहते हैं तो कृपया भाग जाएँ!" लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि अधीनस्थों की ऐसी अपीलों का सैनिकों और नाविकों पर कोई असर नहीं पड़ा। कई नाविकों ने लथिया पर्वत के किले से अतान बुरगोहैन का सामान और इटाखुली से लाचित बरफुकन का सामान लादने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली, जिससे प्रचलित भ्रम और बढ़ गया; अपने कमांडर-इन-चीफ के स्वयं के सामान को ब्रह्मपुत्र से लतासिल की ओर ले जाते हुए देखने से आम सैनिक और भी हतोत्साहित हो गए। स्पष्ट रूप से, आवश्यकता इस बात की थी कि नेतृत्व की कमान स्वयं लाचित द्वारा संभाली जाए और उनके लोग व्यक्तिगत रूप से उन्हें सबसे आगे देखें! (187)

विपदा आसन्न थी, एक क्षण भी बरबाद करने के लिए नहीं था! बीमार लाचित को उसके चार भुइयाँ-पोवाली अनुचर उसके बिस्तर पर इटाखुली किले के प्रवेश द्वार तक ले गए। वहाँ का नजारा तो और भी निराशाजनक था। एक-एक करके असमिया नावें आगे बढ़ रहे दुश्मन गुरबों से दूर भागने की स्पष्ट कोशिश में मुड़ रही थीं। लाचित ने अपनी नाव और छह अन्य युद्ध-पोतों को लैंडिंग घाट पर लाने का आदेश दिया। अपने आदमियों के सहयोग से, वह अपनी नाव की सीढ़ियाँ चढ़ने ही

वाला था कि उसके ज्योतिषी, अच्युतानंद डोलोई ने उसे रोक लिया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यह समय इस तरह के कदम के लिए शुभ नहीं हैं!

यदि वह कोई और होता तो लाचित उस व्यक्ति को उसी क्षण मार गिराता क्योंकि कार्रवाई करने की तत्काल आवश्यकता थी। उनकी मातृभूमि, स्वतंत्रता और आज़ादी ख़तरे में थी| असमिया लोग ऐसी अपमानजनक हार का सामना कर रहे थे, जो उन्हें अनंत काल तक गुलामी में डाल सकती थी और यहाँ यह आदरणीय व्यक्ति धर्मग्रंथों से चेतावनी दे रहा था कि कोई भी प्रयास शुरू न हो, वह सटीक क्षण असफल होना तय था! यह जरूरी था कि वह युद्ध के मैदान में आगे बढ़े और नए सिरे से हमले का संकेत दे, फिर भी वह अपने ज्योतिषी को चुनौती देने के लिए खुद को तैयार नहीं कर सका।

एक अहोम के रूप में, उन्हें बचपन से ही ज्योतिषियों की सलाह पर ध्यान देने की आदत थी, जिनका न केवल शाही दरबार में उच्च स्थान था, बल्कि समाज में भी उन्हें आदर और सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। किसी भी राजनीतिक या सैन्य अभियान में ज्योतिष के उपयोग को चित्रित करने वाले विस्तृत ग्रंथ मौजूद थे। कुलीन वर्ग के सभी प्रमुख सदस्यों, चाहे नागरिक हों या सेना, को अपने दल के साथ एक व्यक्तिगत दैवज्ञ या भविष्यवक्ता रखना पड़ता था| वास्तव में, अहोम स्वर्गदेवों ने स्वयं आदेश दिया था कि राज्य को प्रभावित करने वाली कोई भी महत्वपूर्ण कार्रवाई उनकी मंजूरी के बिना नहीं की जाएगी। राज्य के सर्वोच्च अधिकारी में से एक होने के नाते, लाचित ऐसे शाही आदेश के खिलाफ नहीं जा सकते थे, चाहे स्थिति कितनी भी विकट क्यों न हो। (188)

यद्यपि ऐसे महत्वपूर्ण क्षण में भी लाचित को अपने ज्योतिषी की बुद्धिमत्ता पर संदेह नहीं हुआ, या संदेह नहीं हुआ कि अच्युतानंद को उन्हें रोकने के लिए मुगलों द्वारा रिश्वत दी गई थी। फिर भी उनकी निराशा ने उन्हें चिल्लाने पर मजबूर कर दिया: "हे अच्युतानंद! मैं महामहिम के आदेश की प्रतीक्षा किए बिना आपका सिर काट दूँगा!" लेकिन उस आदमी ने हिलने से इनकार कर दिया। बोर्डिंग घाट की सीढ़ियों पर इंतजार करते हुए भी लाचित को हर मिनट आसन्न विपत्ति की ताजा जानकारी दी जा रही थी। एक बार फिर घोर हताशा में लाचित चिल्लाया: "मुगल लगभग अमराजुरी में हैं! हे ज्योतिषी, तुमने

अपने विनाश का मार्ग प्रशस्त किया है, मुझे अपमानित किया है और मेरी रोजी-रोटी को नष्ट कर दिया है!" (189)

लेकिन, आख़िरकार, अच्युतानंद ने घोषणा की : "मैंने अपने स्वरोदोई में पाया है कि आक्रमण करने का शुभ क्षण आ गया है। यही वह समय था जब रामचन्द्र ने रावण पर आक्रमण किया था।" बरफुकन ने समय बर्बाद नहीं किया। खारंगी के अपने विश्वसनीय नौकर नदाई की सहायता से, वह अपनी नाव पर चढ़ गया और उसके बेड़े में छह अन्य युद्ध-पोत शामिल थे जो तेजी से तोपों से गरजते मुगल जहाजों की ओर बढ़े। (190)

भागती हुई असमिया सैनिकों की नाव को देखकर लाचित ने आदेश दिया कि मेरी नाव को उनके सामने लगा दो। वह घबराए हुए लोगों पर चिल्लाया : "महामहिम ने मुझे यहाँ सेना की सर्वोच्च कमान सौंपी है और मेरे संरक्षण में भोजन के विशाल भंडार रखे हैं ताकि मैं दुश्मन से लड़ सकूँ। क्या मुझे अब लड़ाई छोड़ देनी चाहिए और जाकर अपनी पत्नियों और बच्चों के गले लग जाना चाहिए ? मेरे आदेश के बिना नदी में नाव चलाने की इन नाविकों की हिम्मत कैसे हुई?" ऐसा कहा जाता है कि इसके बाद उन्होंने अपनी तलवार की कुंद धार से चार मल्लाहों पर वार किया और अपने बेड़े को मिशन पर आगे बढ़ने का आदेश देने से पहले उन्हें पानी में फेंक दिया। लेकिन जब गिरे हुए नाविकों के हमवतन लोगों ने उन्हें संभावित पानी की कब्र से बचाया तो उन्होंने कोई हस्तक्षेप नहीं किया।

यह खबर कि कमांडर-इन-चीफ एक बार फिर अपनी सेना के शीर्ष पर है, जंगल की आग की तरह सैनिकों के बीच फैल गई, जिससे वे नए सिरे से कार्रवाई के लिए प्रेरित हुए। जिस गंभीरता और तत्परता के साथ उन्होंने कुछ अड़ियल लोगों से निपटा था, उसकी खबर भी फैल गई, कहानी मुँह से मुँह तक बदल रही थी और तेजी से भयावह रंग ले रही थी और सैनिकों के दिलों में आतंक और घबराहट पैदा कर रही थी। आतंक-प्रेरक अफवाह फैलने लगी कि सैनिकों को युद्ध क्षेत्र से भागने से रोकने के लिए बरफुकन ने ऐसे विश्वासघात के दोषी लोगों का अंधाधुंध सिर काटना शुरू कर दिया है। अपनी युद्ध-नाव के धनुष पर बैठे, हाथ में हेंगडांग लिए लाचित ने अपने सैनिकों को विद्युतीय युद्ध-घोष के साथ जगाया: "मुगलों को मुझे जिंदा पकड़ने दो और मेरे लोगों को शांति से घर जाने दो।" (191) उसने अपने बेड़े की सभी नावों को मुगल शस्त्रागार

पर हमला शुरू करने का आदेश दिया। यह देखकर, भागती हुई नावें मुड़ गईं और अपने नेता के समर्थन में युद्ध के मैदान में दौड़ गईं, किनारे पर मौजूद सैनिकों ने मुगल युद्ध-पोतों पर तैनात लोगों पर तीर और बंदूक से हमला करना शुरू कर दिया। (192)

"बरफुकन नाव पर चढ़ गया और सेना एवं नौसेना को एकजुट करके तोपखाने और छह अन्य युद्ध-पोतों के साथ जवाबी हमला शुरू करने के लिए आगे बढ़ा। अपने बीमार जनरल को संचालन करते हुए देखने से डगमगाते असमिया सेनानियों में साहस पैदा हुआ। उन्होंने अब दोनों तटों से अपना बेड़ा आगे बढ़ा दिया। रंगमहल से सरिंगिया फुकन, नियोगकाटाकी और कई हजारिकों के अधीन अतिरिक्त सेना भी आ गई। असमिया युद्धपोत मुगल बेड़े के घने हिस्से में घुस गए जो तब कामाख्या पहाड़ी के सामने नदी के उत्तरी तट पर, अमराजुरी में पानी पर तैनात था। यह गंभीर लड़ाई थी। एक ने आक्रामकता और जीत की महिमा के लिए लड़ाई लड़ी। दूसरे ने जीवन और पितृसत्ता, देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। मुद्दा एक पूर्व निष्कर्ष था। असमियों के सुनियोजित और सुव्यवस्थित हमले को मुग़ल बर्दाश्त नहीं कर सके। ब्रह्मपुत्र का समकोण त्रिभुज (इटाखुली-कामाख्या- अश्वक्रांता क्षेत्र) नावों और खुद को डूबने से बचाने के लिए जूझ रहे लोगों की जटिल उलझन बन गया।

"असमियों ने ब्रह्मपुत्र पर, नावों को अगल-बगल रखते हुए 'तात्कालिक पुल' बनाया। उन्होंने एक शानदार चाल का भी सहारा लिया। उन्होंने मुगलों के सामने डटे रहकर पीछे से आश्चर्यजनक हमला किया जो निर्णायक साबित हुआ। बरफुकन ने कुछ जहाजों पर कुछ लोगों के साथ मुगल बेड़े पर सामने से हमला करने का नाटक किया और उसे लालच देकर आगे बढ़ाया और फिर मुख्य सेना और बेड़े के साथ पीछे से उस पर वार किया। अपने पिछले हिस्से में छिपे खतरे से अनजान मुगल एडमिरल सरीफ खान अपना हुक्का (हबल-बबल) पीते हुए आगे बढ़ा, लेकिन पीछे से गोली लगने से मारा गया। अचानक हुई घटना ने पूरे मुगल बेड़े को अव्यवस्थित कर दिया और वह पीछे हट गया। घबराई हुई सेना को आदेश देने के लिए वापस नहीं बुलाया जा सका। इससे लड़ाई का अंत हो गया (मार्च 1671 के मध्य)। मुगलों को तीन शीर्ष पदासीन अमीरों के साथ भारी क्षति का सामना करना पड़ा, 4000 लोग मारे गए और घायल हुए, यह केवल हार नहीं बल्कि आपदा थी।" (193)

यह वास्तव में शतरंज के लंबे समय से चले आ रहे खेल में शह-मात की तरह था! अहोम बुरंजियों में लिखा है कि स्वयं बरफुकन ने भागती हुई मुगल सेना का पीछा सरायघाट से लगभग तीन मील नीचे पांडु तक किया, जो नौसैनिक युद्ध का प्राथमिक क्षेत्र था और उनका आगे भी पीछा करना चाहता था, लेकिन अच्युतानंद डोलोई ने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया। शायद उन्हें इस बात की चिंता थी कि लाचित कितने बीमार थे। लेकिन उनके बेड़े के अन्य जहाज़ों ने तब तक पीछा करना जारी रखा जब तक यह स्पष्ट नहीं हो गया कि मुग़ल अगर बिलकुल नहीं तो जल्द ही वापस तो नहीं लौटेंगे! (194)

नेक और बड़े दिल वाले राजपूत सेनापति, राजा राम सिंह, हार में हमेशा दयालु रहते थे और अपने विरोधियों की वीरता और कौशल की प्रशंसा करते थे। उन्होंने कथित तौर पर कहा था, "हर असमिया सैनिक नाव चलाने में, तीर चलाने में, खाई खोदने में और बंदूकें और तोपें चलाने में विशेषज्ञ है। मैंने बहुमुखी प्रतिभा के ऐसे नमूने भारत के किसी भी हिस्से में नहीं देखे हैं। जो भी असम से लड़ने आएगा, उसके गाल पर सफाईकर्मियों द्वारा झाड़ू से हमला किया जाना चाहिए!" (195)

परिणाम

परिस्थितियों की कड़ी के परिणामस्वरूप सरायघाट की लड़ाई में लाचित बरफुकन और असमियों की जीत हुई। उसके बाद अंततः पश्चिम से मुगलों के आक्रमण का अपरिवर्तनीय अंत हुआ। निर्णायक रूप से निश्चित रूप से असम के महावीर लाचित बरफुकन मीर जुमला और राम सिंह के आक्रमण के बीच अंतर करने वाले कारकों में से एक थे, अन्य दो गतिशील सम्राट चक्रध्वज सिंह और चतुर योद्धा-राजनयिक अतान बुरगोहैन थे। इस तिकड़ी ने अभूतपूर्व, अपराजेय संयोजन का गठन किया-सम्राट ने अपना पूरा समर्थन दिया| अतान और लाचित ने रणनीति तैयार की| लाचित ने वह करिश्मा कर दिखाया जो सबसे कायर सैनिकों में भी जन्मजात साहस जगा सकता था!

जबकि चक्रध्वज सिंह भाग्यशाली थे कि उन्हें मुगलों के खिलाफ अभियान का नेतृत्व करने के लिए लाचित की क्षमता का व्यक्ति मिला, वहीं लाचित भाग्यशाली थे कि उन्हें चक्रध्वज सिंह अपने राजा के रूप में मिले! यह राजा स्वाभिमान और देशभक्ति का प्रतीक था और अहोम सिंहासन पर अपने पूर्ववर्ती के कार्यों के कारण खुद पर हो रहे अपमान से चिढ़ता था। जब 1663 में घिलाधारीघाट की संधि के तहत युद्ध क्षतिपूर्ति के शेष हिस्से का भुगतान करने के लिए दबाव डाला गया और मुगल दूतों ने उनके साथ जागीरदार के रूप में व्यवहार किया, तो कहा जाता है कि उन्होंने चिल्लाकर कहा : "विदेशियों की अधीनता के

जीवन की तुलना में मृत्यु बेहतर है! " लेकिन, अपने पूर्ववर्ती की तरह आत्म-दया में डूबने से दूर, उन्होंने विदेशियों को अपने राज्य की धरती से बाहर निकालकर अपमान का बदला लेने के लिए ठोस और व्यावहारिक कदम उठाए।

उन्होंने स्वयं अभियान की तैयारियों की निगरानी की और व्यक्तिगत रूप से यह सुनिश्चित किया कि सैनिक और नौसेना कर्मी अच्छी तरह से प्रशिक्षित और सुसज्जित हों। राम सिंह की कमान वाली दुश्मन सेना से मुकाबला करने में हो रही धीमी प्रगति पर कभी-कभार नाराजगी जाहिर करने और इस प्रकार अलाबोई में दुखद पराजय के लिए अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार बनने के बावजूद उन्होंने सम्पूर्ण अभियान में पूरा समर्थन दिया| हासिल की गई जीत पर खुशी मनाई और उपलब्धि हासिल करने वालों को पुरस्कृत किया। जब गौहाटी पर पुनः कब्ज़ा करने और मुगलों को असम से बाहर भेजने का उनका उद्देश्य पूरा हो गया, तो कहा जाता है कि उन्होंने चिल्लाकर कहा : "अब मैं अपने भोजन का एक टुकड़ा आसानी और खुशी से खा सकता हूँ।"

"चक्रध्वज सिंह ने अपने देश की दुखद दुर्दशा से खुद को हतोत्साहित नहीं होने दिया। उन्होंने वर्तमान स्थिति को विदेशियों पर असम की जीत के निर्बाध कैरियर से अकेला विचलन माना। गौहाटी और कामरूप से मुगलों को निकालने के लिए इस आत्मविश्वास को जोरदार व्यावहारिक उपायों से साकार किया गया था। अपने सहयोगियों को लिखे उनके पत्र मन की ऊर्जा और जीत हासिल करने के दृढ़ संकल्प को प्रकट करते हैं... जयध्वज सिंह और चक्रध्वज सिंह दोनों के लिए मीर जुमला के आक्रमण के अपमानजनक परिणाम और अधिक जोरदार कार्रवाई, अधिक संगठन और देश के संसाधनों का न केवल मानव और सामग्री, बल्कि राष्ट्र की प्रारंभिक देशभक्ति और सुप्त क्षमता के भी अधिक व्यवस्थित प्रबंधन की प्रस्तावना थी।" (196)

राजनेता-योद्धा अतान बुरगोहैन के लिए कोई भी प्रशंसा पर्याप्त नहीं हो सकती, जिनके चातुर्य और बुद्धिमत्ता ने लाचित द्वारा दिखाए गए उत्साह और ऊर्जा की सराहना की। मुगलों के साथ युद्ध छेड़ने की तैयारी उनकी निगरानी में की जाती थी और अहोम इतिहास में उल्लेख है कि उन्होंने जवाबी हमले के लिए संसाधनों की तलाश के लिए पूरे राज्य का व्यापक दौरा किया। यदि उसे स्वयं राजा की इच्छाएं भी नासमझी लगती थीं तो यह अधिकारी उनके विरुद्ध जाने से नहीं

डरता था। यह याद किया जा सकता है कि मुगल दूतों द्वारा ठुकराए जाने के बाद चक्रध्वज सिंह ने तुरंत जवाबी हमला शुरू करने की कोशिश की थी, लेकिन बरगोहैन ने उन्हें ऐसी अपरिपक्व करवाई करने से मना कर दिया। उन्होंने तब स्वीकार किया था कि "मुगलों की उद्दाम निरंकुशता सहनशीलता की सीमा को पार कर गई है," फिर भी व्यावहारिक रूप से कहा था : "हमें सेना को पर्याप्त मात्रा में खाद्य प्रावधान और युद्ध सामग्री प्रदान करनी चाहिए और स्टॉक में पर्याप्त भंडार रखना चाहिए" ताकि हम अभियान सेना के भंडार खाली होते ही उन्हें फिर से भर सकें।" (197)

बार-बार राजा और कमांडर-इन-चीफ को उनकी महत्वपूर्ण सलाह अभियान के दौरान बहुत काम आई और अंतिम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई। उदाहरण के लिए, अलाबोई आपदा के बाद जिस तरह से उन्होंने लाचित को सांत्वना दी, वह कमांडर-इन-चीफ को जड़ता-उत्प्रेरण अवसाद की स्थिति से बाहर लाने के लिए जिम्मेदार थी। ये वही थे जिन्होंने दुश्मन शिविर में भेजे जाने वाले संचार संदेशों को तैयार किया और युद्ध-परिषद की बैठकों के दौरान रणनीति तैयार करने में सहायता की। वह केंद्रीकृत कमान संरचना और सेना के विभिन्न अंगों के बीच समन्वय में दृढ़ विश्वास रखते थे। प्रतिष्ठित सैन्य इंजीनियर होने के नाते उन्होंने गौहाटी के आस-पास रक्षात्मक संरचना को बढ़ाने और पाली प्रणाली के अनुसार कमांडरों और सैनिकों को तैनात करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन सबसे बढ़कर राजनेता होने के अलावा वह योद्धा भी थे और लाठिया पर्वत में अपने बेस से पूरे अभियान के दौरान उत्तरी तट पर सेना का बड़ी सफलता के साथ नेतृत्व किया।

कमांडर-इन-चीफ उतना ही अच्छा होता है जितना उसके अधीन कमांडर होते हैं और लाचित भाग्यशाली थे कि उनके पास बेहद वफादार और सक्षम अधीनस्थ अधिकारियों का समूह था, जिन्होंने अपने नेताओं द्वारा दिखाए गए मातृभूमि के प्रति उसी प्रेम से प्रेरित होकर कर्तव्य के आह्वान से परे साहस दिखाया। उन्होंने अपने बीच असंतोष और फूट डालने के राम सिंह के सभी प्रयासों का विरोध किया और दुश्मन द्वारा पेश किए गए किसी भी प्रस्ताव या प्रलोभन के प्रति अडिग रहे। मुग़ल शिविर में भेजे गए कटकियों या दूतों ने भी अपनी शक्ति में सब-कुछ करने की देशभक्ति की भावना से समान रूप से प्रेरित होकर

कार्य किया था। उन्होंने न केवल असमिया खेमे के रहस्यों की जमकर रक्षा की, बल्कि उन्होंने मुगल जनरल को हतोत्साहित करने के लिए अपने कमांडर-इन-चीफ के संसाधनों की अतिरंजित तस्वीर पेश करने का भी प्रयास किया। रानी कटकी और कालिया कटकी द्वारा असमिया सेनाओं के बीच "राक्षसों या असुरों" के बारे में फैलाए गए झूठ, या माधवचरण कटकी के झूठ, जिन्होंने पहाड़ों के कई सरदारों के बारे में बात की थी जो लाचित के सहयोगी बन गए थे, ने मुगल सैनिकों को हतोत्साहित करने का काम किया।

सबसे बढ़कर, मुगलों को अपनी मातृभूमि से खदेड़ने के अभियान में लड़ने वाले असमिया सैनिकों ने उस तरह का धैर्य और संकल्प दिखाया जो मीर जुमला के आक्रमण के दौरान पहले नहीं दिखाया था। राम सिंह शायद ही कल्पना कर सका कि ये सैनिक वास्तव में पाइक प्रणाली के तहत भर्ती किए गए साधारण किसान या कारीगर थे, जिन्होंने सैन्य प्रशिक्षण का संक्षिप्त कोर्स किया था, जो उनके बयान को स्पष्ट करता है : "मैंने बहुमुखी प्रतिभा के ऐसे नमूने भारत के किसी अन्य भाग में नहीं देखे हैं।" असमिया सैनिकों के अनुशासन और भ्रष्ट न होने की योग्यता ने शक्तिशाली मुगलों को सबसे अपमानजनक हार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह ध्यान दिया जा सकता है कि सबसे महत्वपूर्ण क्षण में, जब वे भागने की कगार पर थे, लाचित को अपना नेतृत्व करने के लिए आते हुए देखकर उनमें जोश भर गया था, जिससे वे एक बार फिर मुड़ने और दुश्मन को परास्त करने के लिए प्रेरित हुए!

"गौहाटी की किलेबंदी और असम की जलवायु और प्राकृतिक परिस्थितियों ने स्थानीय सेना को सुरक्षा का अभेद्य कवच प्रदान किया। लेकिन असमियों की एकजुटता और अखंडता, जीत हासिल करने के लिए उनका दृढ़ संकल्प, उनकी दूरदर्शिता, उनका संगठन और उनका अनुशासन और उनके कमांडरों का अतुलनीय नेतृत्व, अत्यधिक दुर्गम बाधा साबित हुआ जिसे न तो दिल्ली और अंबर की संपत्ति, न ही राजपूतों की रणनीति बाधित और उखाड़ फेंक सकी... यह अजेय भावना नेताओं के उदाहरण का परिणाम थी। राजा जीत हासिल करने के लिए दृढ़ था और उसके कप्तान भी उसी संकल्प से उत्साहित थे। सम्राट ने जनरल पर नियंत्रण रखा और उसे त्वरित और निर्णायक कार्रवाई के लिए प्रेरित किया; और प्रधानमंत्री जनरल से डरता था। हालाँकि उसने ऐसे समय में जनरल की तत्परता की जाँच की जब इस तरह की जाँच

करना अनिवार्य था। इन सर्वोच्च नेताओं के संबंधों में कोई कटुता या छिपा हुआ असंतोष नहीं था| उन्होंने असमिया सेना की जीत के एक ही, अविभाजित उद्देश्य के साथ काम किया और इस साझा उद्देश्य को आगे बढ़ाने में उन्होंने अपने अहंकार के सभी निशान मिटा दिए। उन्होंने अपनी भावना अधीनस्थ कमांडरों तक पहुँचाई, और अधीनस्थ कमांडरों ने अपने सैनिकों और शिविर-अनुयायियों तक पहुँचाई। संपूर्ण असमिया राष्ट्र, राजा से लेकर सबसे तुच्छ किसान तक, एक व्यक्ति की तरह व्यवहार करता था। वह देवताओं के देखने लायक दृश्य था; और असमिया लोगों के लिए यह पुनर्वास और प्रगति के भविष्य के सभी उपायों में प्रेरणा का बारहमासी स्रोत है।" (198)

***

उपर्युक्त के अलावा, सहायक कारक भी थे जिनके परिणामस्वरूप राजा राम सिंह की हार हुई और मुगलों द्वारा उत्पन्न खतरे का अंतिम, निश्चित अंत हुआ। तथ्य यह है कि राजपूत राजा अनिच्छुक कमांडर था और सम्राट औरंगजेब ने असम अभियान के लिए उसे चुनने में संदिग्ध बुद्धि का प्रदर्शन किया था| इसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। इसके अलावा, वह अभियान को सफल बनाने के लिए किसी भी तरह से प्रेरित नहीं था, सिवाय इस तथ्य के कि राजपूत के रूप में हार उसके कद को कम करने के समान होगी। न ही उसके कमांडर या उसके सैनिक उन उद्देश्यों को प्राप्त करने की आवश्यकता से प्रेरित थे जो उनके दिलों को प्रिय थे। दूसरी ओर, देशभक्ति असमियों के लिए प्रबल प्रेरक शक्ति थी, जिसने उन्हें आक्रमणकारी से बचने की शक्ति प्रदान की।

अपनी अपर्याप्तता को बढ़ाने के लिए, राजा राम सिंह ने असम पर आक्रमण करते समय मीर जुमला की तुलना में छोटी सेना की कमान संभाली। जैसा कि मुगल और अहोम इतिहास में दर्ज है, मीर जुमला के पास 12,000 घुड़सवार सेना, 30,000 पैदल सेना, शक्तिशाली तोपखाने और 300 से अधिक ग़ुरब, फ्लोटिंग बैटरी या यूरोपीय लोगों द्वारा संचालित युद्धपोतों की विशाल सेना थी| प्रत्येक में 14 तोपें और पाँच दर्जन नाविक थे। राजा राम सिंह को उपलब्ध कराई गई सेना के आकार के बारे में अलग-अलग इतिहास अलग-अलग उल्लेख करते हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह मीर जुमला की तुलना में कमतर थी| खासकर युद्धपोतों की संख्या के मामले में जो [illegible] सभी महत्वपूर्ण नदी-युद्ध में आवश्यक थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि समकालीन अहोम

इतिहास में उल्लेख है कि सम्राट ने उसे 30,000 पैदल सैनिक, 18,000 ताज़ी तुर्की घुड़सवार और 15,000 तीरंदाज दिए थे, जबकि ढाका में शाइस्ता खान ने उन संख्याओं को बढ़ाया था। फिर भी, इनके विरुद्ध असमिया सैनिकों की संख्या 1,00,000 बताई गई है जो अच्छी तरह से मजबूत स्थिति पर विराजमान थे।

लेकिन वास्तविक संख्या जो भी हो, एक बात निश्चित है कि असमिया सेना की संख्या राजा राम सिंह के अधीन सेना से कहीं अधिक थी। असमिया सेना के केंद्र में राजा चक्रध्वज सिंह की देखरेख में गढ़गाँव में प्रशिक्षित लेवी शामिल थे; तब गौहाटी और पड़ोसी सैनिकों की टुकड़ियाँ स्थायी रूप से तैनात थीं और इन दोनों इकाइयों को जागीरदार सरदारों, जयंती राजा और अन्य सहयोगियों द्वारा भेजी गई टुकड़ियों से मजबूत किया गया था। इसके अलावा असम की वयस्क आबादी की विशाल सेना भी थी जिन्हें अल्प सूचना पर संगठित किया जा सकता था और युद्ध के मैदान में भेजा जा सकता था। सर जदुनाथ सरकार का यह कथन कि अहोम एक लाख आदमी इकट्ठा कर सकते हैं, सच्चाई के बहुत करीब है। यह औरंगजेब के दरबार के 10 दिसंबर, 1669 के समाचार-पत्र द्वारा समर्थित है, जहाँ निम्नलिखित अंश आता है- "सम्राट ने गदा-वाहक निसार बेग से पूछा, जो बंगाल के सूबेदार को शाही पत्र देकर लौटा था, असम में दुश्मन की ताकत कितनी थी। उसने उत्तर दिया कि राजा (राम सिंह) ने कहा था कि उनके पैदल और घुड़सवार सैनिकों की कुल संख्या लगभग एक लाख थी, जिनमें से घुड़सवार सेना की संख्या बहुत कम थी। (199)

लाचित बरफुकन के पास उपलब्ध सैनिकों की विशाल संख्या ने उन्हें पहाड़ियों की चोटियों और ढलानों पर 13 1/2 फीट के अंतराल पर और पहाड़ियों को जोड़ने वाले मैदानी इलाकों की प्राचीरों पर नौ फीट की दूरी पर एक सशस्त्र सैनिक तैनात करने में सक्षम बनाया। ब्रह्मपुत्र नदी के दोनों किनारों पर किलेबंदी के पूरे क्षेत्र में यह व्यवस्था कायम रखी गई थी। अपनी सेना की कमी के कारण राम सिंह को बहुत सावधानी से लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि वह अंधाधुंध और लाभहीन हमलों में अपने सैनिकों को खोने का जोखिम नहीं उठा सकता था। इसके अलावा हमें बताया गया है कि उनके घाटे की भरपाई शायद ही कभी की गई। (200)

इसके अलावा, मीर जुमला की नौसेना में 300 से अधिक गुराबों की तुलना में कथित तौर पर राम सिंह के पास केवल 40 थे, जो अभियान के अंत में नौसेना बलों द्वारा प्राप्त महत्व को देखते हुए अपर्याप्त संख्या थी। जैसा कि इतिहासकार जदुनाथ सरकार ने कहा है, "मीर जुमला के आक्रमण के समय के विपरीत, पानी पर स्वामित्व अब असमियों का था और मुगल ब्रह्मपुत्र पर 40 युद्ध-पोतों के साथ कुछ नहीं कर सकते थे।" (201)

लेकिन राम सिंह के शस्त्रागार में युद्धपोतों की संख्या अलग-अलग अहोम और मुगल इतिहास में दर्शाए गए विवरणों में भिन्न है और यह संभव है कि उनकी संख्या बताई गई संख्या से अधिक हो सकती है। "कहा जाता है कि राम सिंह अपने साथ केवल चालीस युद्ध-पोत लाए थे, जबकि मीर जुमला के पास अपने अभियान की शुरुआत में ही सभी प्रकार के 323 युद्ध-पोत थे, जिनमें ज्यादातर पुर्तगाली, अंग्रेजी और डच नाविक थे। (202)

राम सिंह ने असम में अपने बेड़े को मजबूत किया होगा, क्योंकि हाजो के पड़ोस में दो प्रसिद्ध गोदी थी, एक रामदिया में और दूसरी सुआलकुची में। एक अवसर पर असम में अपने अभियान के दौरान, राम सिंह ने कई असमिया जहाजों पर कब्जा कर लिया और दुश्मन के विरुद्ध 500 नावों का बेड़ा भेजा। इस बेड़े में बड़ी तोपें थीं और उनकी नाल को "सोलह मुँह" के रूप में वर्णित किया गया था। (203)

इतिहास की एक पुस्तक में कहा गया है कि राम सिंह ने सरायघाट के नौसैनिक युद्ध में 72 युद्ध-पोतों को शामिल किया था। दूसरी पुस्तक में कहा गया है कि उस अवसर पर ब्रह्मपुत्र के पानी में नावों की इतनी भारी भीड़ थी कि जगह की कमी के कारण जहाज के लिए आगे बढ़ना मुश्किल था। उस युद्ध के दौरान असमियों ने गौहाटी में नदी के दोनों किनारों को जोड़ने वाले ब्रह्मपुत्र पर नावों का पुल बनाया था। (204)

इस अवधि में गौहाटी में असमिया नावों की संख्या ठीक-ठीक ज्ञात नहीं की जा सकती, यद्यपि हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि जितनी संख्या आवश्यक थी उतनी संख्या में जहाज थे। असम में कई नाव-सालाएं या गोदीघर थे और नाव-निर्माण उद्योग अत्यधिक विकसित था। दो खेल या गिल्ड थे जिनके सदस्य पूरी तरह से नाव-निर्माण और

नाव-चलाने, नाओसालिया खेल और नाओ-बैचा खेल में संलग्न थे। शक्तिशाली और असंख्य असमिया नौसेना का निर्माण राज्य के विशाल वन संसाधनों द्वारा संभव हुआ जो नावों के लिए उत्कृष्ट लकड़ी की आपूर्ति करते थे। (205)

यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि विशाल और बोझिल गुरबों को ब्रह्मपुत्र की तेज और शक्तिशाली धाराओं के प्रवाह के विपरीत दिशा में आगे बढ़ना पड़ा, जिससे उनकी गति धीमी हो गई। लगभग 50 मीटर का उनका विशाल आकार नदी के बजाय समुद्री आवागमन के लिए अधिक उपयुक्त था। इसकी तुलना में, असमिया हिलोइचारा और बचारी युद्ध-नावें छोटी थीं, जिनकी लंबाई केवल 20 मीटर और चौड़ाई लगभग 3 मीटर थी। वे चारों ओर से झुंड बनाकर मुगल जहाजों पर हमला कर सकती थीं, उन पर लगी तोपें भारी क्षति पहुँचाती थीं। मुगल युद्धपोतों के कमांडर, यद्यपि अन्यत्र युद्ध लड़ने में अनुभवी थे, लेकिन वे ब्रह्मपुत्र के प्रवाह पैटर्न से अपरिचित थे। इसने उन्हें असमिया मल्लाहों की तुलना में नुकसान में डाल दिया, जो नदी के प्रवाह के तरीके से परिचित थे। युद्ध के दौरान गुरबों को छोटी नावों से खींचना पड़ता था और जब सेना मार्च कर रही होती थी तब रस्सियों को लोगों द्वारा भी खींचा जाता था, जो उस कार्य में लगे सैनिकों के लिए पूरी तरह से थका देने वाला साबित होता था।

"मीर जुमला के आक्रमण के दौरान मुगलों द्वारा अनुभव की गई कठिनाइयों को चार्ल्स स्टीवर्ट ने बहुत अच्छी तरह से संक्षेप में प्रस्तुत किया है, जिन्होंने अपनी सामग्री समकालीन फ़ारसी स्रोतों से ली है। चार्ल्स स्टीवर्ट ने लिखा है, "चूँकि मीर जुमला ने अपने बेड़े को नज़रअंदाज नहीं करने का संकल्प लिया था जिस पर वह अपने भंडार और रसद के डिपो के साथ सवार हुआ था। उसने ब्रह्मपुत्र के तटों को फिर से हासिल कर लिया; और रंगमती के पास उस नदी को पार करने के बाद, बहुत श्रम और बहुत देरी की कीमत पर, उन्होंने एक सड़क बनाई जिसने उन्हें छोटे चरणों से आगे बढ़ने में सक्षम बनाया। इस मार्च के दौरान, चूँकि शाही सेना को नावों को तेज़ धाराओं के विरुद्ध खींचना था और सैनिकों को नदियों को पार करना और चट्टानों पर चढ़ना आवश्यक था| ऐसा अकसर होता था कि उनकी दिन की यात्रा एक या दो मील से अधिक नहीं होती थी| इस दौरान, यद्यपि सामने से दुश्मन ने उनका विरोध नहीं किया था, लेकिन वे अक्सर अपने पार्श्व में पेड़ों के पीछे से, या जमीन के

अनुसार जो भी प्रकृति हो, असमिया की छोटी पार्टियों द्वारा अदृश्य रहकर उन पर गोलीबारी करने से परेशान हो जाते थे।" (206) "सबसे थका देने वाले मार्च" में राम सिंह के अनुभव अपने पूर्ववर्ती से बहुत अलग नहीं हो सकते थे। (207)

असम की ओर मार्च से जुड़ी कठिनाइयों के अलावा, पैदल सैनिकों को अकसर शुष्क भूमि के बजाय नदी के किनारों पर धंसाऊ दलदली भूमि से गुजरना पड़ता था। असम की गर्म और उमस भरी जलवायु, साथ ही मध्ययुगीन क्षेत्र से जुड़ी विभिन्न महामारियाँ भी कई बार, मुगल सैनिकों पर भारी पड़ीं जो इस प्रकार के वातावरण के आदी नहीं थे, न ही वे असमियों द्वारा किए गए दिमागी खेल का सामना कर सके| ऐसी रणनीति का सामना उन दिग्गजों ने भी नहीं किया था, जिन्होंने मुगल भारत के अन्य हिस्सों में संघर्षों में भाग लिया था। इसके साथ लंबी अवधि तक बारिश के कारण कीचड़ हो गया और कभी-कभी अचानक बाढ़ आ गई| शिविरों में नमी और कीड़ों, जोंकों, सांपों आदि से लगातार चिड़चिड़ाहट होने लगी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इससे मुग़ल सैनिकों का मनोबल गिरने में देर नहीं लगी !

राजा राम सिंह के सामने आने वाली कई बाधाओं में से एक सक्षम सहायक की अनुपस्थिति थी, जिसे कमांडर-इन-चीफ द्वारा उसके कार्यों और निर्णयों की निगरानी के बिना पूरी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती थी। मीर जुमला के पास दिलिर खान दाउदज़ई जैसा निडर सहायक था| इसके विपरीत राम सिंह के पास कोई नहीं था जिसके पास वह अभियान के महत्वपूर्ण क्षणों में जा सके। यहाँ एक बार फिर राशिद खान को मुगल सेना के दूसरे कमांडर के रूप में चुनने में औरंगजेब की अदूरदर्शिता, शायद जान-बूझकर, स्पष्ट थी। राशिद खान न केवल बिलकुल अविश्वसनीय था, बल्कि ढीठ और अवज्ञाकारी भी था, जिसने अपने प्रमुख को मजबूर किया कि उसे मुख्य मुगल छावनी से बेदखल कर दिया जाए। यह देखते हुए कि राशिद खान कुछ वर्षों तक गौहाटी का फौजदार रहा था और पूर्ववर्ती दिनों से ही कुछ असमिया कमांडरों को व्यक्तिगत रूप से जानता था, राम सिंह का यह संदेह ग़लत नहीं हो सकता था कि वह दुश्मन के साथ मिलीभगत कर रहा था। इसके विपरीत, उनके प्रतिद्वंद्वी लाचित बरफुकन के पास न केवल दूसरे नंबर के कमांडर के रूप में बुद्धिमान योद्धा-राजनेता अतान बुरगोहैन थे, बल्कि उनके पास बेहद वफादार, देशभक्त और कुशल अधिकारियों का समूह भी था,

जिन्हें वह बिना किसी हिचकिचाहट के महत्वपूर्ण कर्तव्य सौंप सकते थे।

सबसे बढ़कर, सेना के शीर्ष नेताओं के गुणों में अंतर ही था जिसने दोनों अभियानों की दिशा निर्धारित की। मीर जुमला के पास स्व-निर्मित व्यक्ति, उद्यम और महत्वाकांक्षा के सभी सकारात्मक गुण थे, जिसने उन्हें छोटे साहसी व्यक्ति से ऐसे कद के व्यक्ति तक पहुँचने में सक्षम बनाया जो अंततः अपनी संपत्ति और शक्ति में मुगल राजघराने से लगभग मेल खा सकता था। दूसरी ओर, राजपूत होने और एक योद्धा के रूप में कुछ प्रसिद्धि प्राप्त करने के बावजूद, राम सिंह को प्रसिद्ध जय सिंह की छाया में लाया गया था और उन्हें उद्यमशील नेतृत्व की कोई पहल या गुणवत्ता प्रदर्शित करने का अधिक अवसर नहीं मिला। बहुत अधिक रणनीतिकार नहीं होने के कारण और दूरस्थ एवं अजीब भूमि में अभियान चलाने में पर्याप्त मार्गदर्शन की कमी, रक्षात्मक किलेबंदी का सामना करने जिसका उसने पहले कभी सामना नहीं किया था, के कारण राम सिंह अपनी गहराई से बाहर दिखाई दिया और लगभग पूर्ण असमिया रक्षा को भेदने की रणनीति तैयार करने के लिए आवश्यक कल्पना नहीं कर सका।

मीर जुमला भाग्यशाली था कि उसने ऐसे समय आक्रमण किया था, जब असमिया नेतृत्व अव्यवस्थित था, गौहाटी की रक्षा के लिए जिम्मेदार अधिकारी वास्तव में ऊपरी असम पर हमले के दौरान उसकी सहायता कर रहे थे। इसके विपरीत राजा राम सिंह को दृढ़ अहोम राजा के अधीन एकजुट, अविनाशी असमिया सेना का सामना करना पड़ा और सम्राट औरंगजेब के अपेक्षित उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सका। यह ध्यान देने की जरूरत है कि असमिया किलेबंदी पर प्रारंभिक हमला शुरू करने के बाद उसने हमले को बरकरार नहीं रखा और इसे निर्णायक निष्कर्ष तक ले जाने की कोशिश नहीं की, बल्कि ऐसी रणनीति का सहारा लिया जो कूटनीति और रिश्वतखोरी और ग़लत सूचना फैलाने के प्रयासों का मिश्रण थी जो उनके अभियान की प्रकृति को स्पष्ट करता है। राजपूत जनरल का चतुर रणनीतिकार लाचित से कोई मुकाबला नहीं था, जिसने धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से राम सिंह को उसके लिए बिछाए गए पानी के जाल की ओर खींच लिया।

"पाठक के मन में प्रश्न उठता है कि यदि 1669 में मीर जमील आया होता तो क्या होता? इसलिए, दो परस्पर विरोधी सेनाओं की तुलना उन्हें प्रेरित करने वाली भावना, उनके संबंधित संगठनों और

तरीकों के संबंध में करना आवश्यक है। मौलिक कारक यह था कि यह मुकाबला दो विरोधी सिद्धांतों या विचारधाराओं के बीच था। मुगल केवल साम्राज्यवादी विस्तार के लिए आए थे, जबकि असमिया लोगों ने जीवन और स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी, सरकार लोगों को अपने साथ ले गई। यह साम्राज्यवाद और सचेत राष्ट्रवाद के बीच संघर्ष था, जो एक तरफ वफादार राजपूत सम्मान द्वारा समर्थित था और दूसरी ओर देशभक्ति की संशोधित भावना से भरपूर था जिसे हम इसे सचेत राष्ट्रवाद कह सकते हैं। मुगल मेजबानों की विशाल सभा का सर्वेक्षण करते हुए लाचित बरफुकन अपने आँसू नहीं रोक सके और उनका एकालाप असमिया बुरंजी साहित्य में उत्कृष्ट बन गया है .... जनरल की भावना ने असम की पूरी सेना को उत्साहित कर दिया। यहाँ तक कि मीर जुमला की भी विश्व विजेता के रूप में चिरस्थायी ख्याति अर्जित करने की अपनी कुछ महत्वाकांक्षाएँ थीं। राम सिंह के पास, वफादारी और हद से हद सेवा में पदोन्नति के अलावा, उन्हें प्रेरित करने के लिए कोई आदर्शवाद नहीं था। मुगलों की स्थिति में इस बुनियादी कमजोरी ने मुगलों की अलग-अलग जीत के बावजूद युद्ध के अंतिम मुद्दे को प्रभावित किया। (208)

हालाँकि गौहाटी से सटा ब्रह्मपुत्र नदी का पूरा क्षेत्र लाचित बरफुकन के नेतृत्व वाली असमिया सेनाओं और राजा राम सिंह के अधीन मुग़ल सेना के बीच चरम युद्ध का मैदान था, प्राथमिक क्षेत्र जहाँ नौसैनिकों के युद्ध में नाटकीय मोड़ आया, वह हिस्सा सरायघाट के निकट, बंदरगाह-शहर से थोड़ा नीचे की ओर था। इस प्रकार इसे असम के इतिहास में सरायघाट की लड़ाई के रूप में दर्ज किया गया है। गौहाटी में तैनात अधिकारियों को 'सरायघाटियन' कहा जाता था और जीत में भाग लेने वाले अधिकारियों को 'सरायघाट दिग्गज' कहा जाने लगा! निस्संदेह, यह युद्ध असम के मध्यकालीन इतिहास में दर्ज़ सर्वाधिक नाटकीय संघर्ष था और इसने न केवल पूजे जाने का दर्जा प्राप्त किया है, बल्कि आज भी असम के लोगों को प्रेरित करता है।

लाचित ने इस युद्ध के बाद काफी समय तक राम सिंह के संभावित जवाबी हमले के प्रति सतर्कता बरकरार रखी। "असमी यह सोचकर कार्रवाई के लिए तैयार रहे कि राम सिंह का पीछे हटना महज छलावा हो सकता है। लड़ाई के बाद पूरी रात मुगल खाने में लगे रहे। असमिया जासूसों को संदेह था कि राम सिंह कल गौहाटी पर फिर से

हमला कर सकता है, इसलिए लाचित बरफुकन को इसकी सूचना दी गई। जनरल ने थोड़े-थोड़े अंतराल पर दूतों की तैनाती का आदेश दिया ताकि उन्हें दुश्मन की गतिविधियों के बारे में लगातार जानकारी मिलती रहे। उन्होंने प्रधानमंत्री और अन्य कमांडरों को कार्रवाई के लिए तैयार रहने का आदेश दिया। मुगलों के असली मकसद के बारे में अच्युतानंद डोलोई से परामर्श किया गया। डोलोई ने आधे मजाक में उत्तर दिया, "आज हम एक दिलचस्प दृश्य देखकर अपना मनोरंजन करेंगे।" जासूसों ने तब बरफुकन को सूचित किया: "हमले का कोई सवाल ही नहीं है। मुगलों ने अपने तंबू समेटकर नावों में रख लिये हैं। वे नदी में उतरने की तैयारी कर रहे हैं।" (209)

जबकि लाचित ने इटाखुली से निकासी की तैयारी करने और अपने निजी सामान को नावों में ले जाने के लिए अपने अनुचरों और नौकरों को दंडित किया, क्योंकि यह सोचा जा सकता है कि उन्होंने ऐसा करने का आदेश दिया था, जिससे उनकी प्रतिष्ठा पर कलंक लग रहा था| भागती मुग़ल सेना के प्रति असमिया कमांडर-इन-चीफ का रवैया अधिक सौम्य था। उन्होंने राम सिंह की सेना का पीछा कर रहे अपने लोगों को निर्देश दिया कि वे उनसे उलझें नहीं, बल्कि दूरी बनाए रखें और उन पर तोपें या तीर न चलाएँ। जब दुश्मन मानस नदी से आगे चला गया, तो पीछा करने वालों को निर्देश दिया गया कि वे तुरंत उस पूर्व असमिया चौकी पर फिर से कब्जा कर लें| उसे मजबूत करें और वहाँ निगरानी बनाए रखें।

जिस टुकड़ी को यह कार्य सौंपा गया था, उसने दुश्मन पर हमला करने और प्रावधानों और वस्तुओं को जब्त करने की अनुमति माँगी । लाचित ने स्पष्ट रूप से सैनिकों को ऐसा करने और लूट का माल विनियोग करने से मना किया। "वे नदी में बह रहे हैं," उन्होंने उनसे कहा, "अत्यधिक सशक्त और अपमानित, हालाँकि वे पूरे एक वर्ष तक लड़ते रहे। मैं भगोड़े सैनिकों को लूटकर अपने राजा और अपने मंत्रियों के उचित नाम को धूमिल नहीं करना चाहता।" जब कुछ फुकन और राजखोवा अपने अनुरोध पर अड़े रहे तो बरफुकन ने निम्नलिखित सलाह दी : "अगर हम उन पर हमला कर सकते थे, तो बहुत अच्छा था। लेकिन याद रखें कि अलबोई में राम सिंह पर आक्रामक हमला करने के बाद हमने कितने भयानक परिणाम झेले थे। आपको सबसे पहले भगोड़ी सेना की ताकत का पता लगाना होगा। परिणामों पर ध्यान दो और जैसा

चाहो वैसा करो।" इस बुद्धिमान सलाह पर अधिकारियों ने सहमति व्यक्त की और उन्होंने इस प्रस्ताव को आगे बढ़ाना बंद कर दिया। (210)

यद्यपि, बुद्धिमान लाचित यह भी अच्छी तरह से समझते थे कि निचले असम और गौहाटी के लिए खतरा अभी टला नहीं है और राजा राम सिंह, शायद ढाका या दिल्ली से अतिरिक्त सेना की मजबूती से उत्साहित होकर, रंगमती में अपने गढ़ में पीछे हटने के बाद एक और हमला कर सकता है। इस प्रकार उनके कमांडर और सैनिक अपनी सतर्कता कम नहीं कर सके और संभावित जवाबी हमले के लिए सतर्क रहे। उनका कुशल जासूसी तंत्र तब तक सक्रिय रहा जब तक असम की सीमा से महज कुछ कदम की दूरी पर राजा राम सिंह की मौजूदगी से खतरा बना रहा। राजपूत जनरल के पीछे हटने के बाद कुछ महीनों तक लाचित ने अपनी बीमारी से पूरी तरह से उबर नहीं पाने के बावजूद, गौहाटी में किलेबंदी की मरम्मत, अपनी सेनाओं की पुनः तैनाती और हथियारों, नावों, प्रावधानों आदि की पुनःपूर्ति का निरीक्षण किया। मानस और गौहाटी में सीमा चौकी के बीच असंख्य चौकियाँ पर सैनिकों की टुकड़ी भी भेजी गई।

जब अहोम राजा उदयादित्य सिंह को दुश्मन पर अपने बरफुकन की जीत की खबर मिली, तो वह बहुत खुश हुए और असम से दुश्मन सेना को बाहर निकालने में सहायक सभी कमांडरों को बहुमूल्य उपहारों से पुरस्कृत किया। नारा हजारिका को एक हज़ार रुपये का पर्स दिया गया जिन्होंने अश्वक्रांता में भाग रहे सैनिकों के सामने घुटने टेक कर उन्हें ऐसा नहीं करने को कहा था। ज्योतिषी अच्युतानंद डोलोई (जिन्हें बार-डोलोई के खिताब के साथ बरफुकन का मुख्य ज्योतिष नियुक्त किया गया था और उनके तहत ग्यारह पाती डोलोई या कनिष्ठ ज्योतिष नियुक्त किए गए थे।) को भी "समुद्र-खारी की उपाधि, गमखारू या स्पैंगल चूड़ियों की जोड़ी, सोने का पवित्र धागा" से पुरस्कृत किया गया और पत्नी के रूप में कामरूप के अलादीबारी गोसाईं की बेटी और शादी के उपहार के रूप में दासों के 120 परिवार दिए गए। ग्यारह पाती-डोलोई को बार-डोलोई के पद पर पदोन्नत किया गया। बार-डोलोई के ये बारह परिवार अहोम सम्राट के दरबार में समान प्राथमिकता और सम्मान के हकदार थे।" (211)

राजा राम सिंह ने अप्रैल 1671 के पहले सप्ताह में अपनी वापसी शुरू की थी और यह दर्ज है कि वह हाजो में रुके थे, जहाँ उन्होंने

हयग्रीव-माधव के मंदिर में प्रार्थना की थी। यह भी दर्ज है कि उन्होंने उस मंदिर के ब्राह्मण पुजारियों से कहा: "बरनबाब (बरफुकन) साधारण क्षमता का नायक नहीं है; किलेबंदी जटिल और पेचीदा है: और इसलिए मैं हमले के लिए कोई कमज़ोर रास्ता नहीं ढूँढ सका।" (212)

यद्यपि लाचित ने किसी भी आकस्मिक स्थिति के लिए अपनी सुरक्षा तैयार कर ली थी, लेकिन जैसा कि घटनाक्रम सामने आया, राजा राम सिंह को दूसरा मौका नहीं मिला क्योंकि असमिया सेनाओं के हाथों उनकी हार के बाद मुगल सम्राट औरंगजेब ने उन पर से सारा विश्वास खो दिया और उन्हें आगे सहायता नहीं दी ताकि वह असम के सदैव सतर्क रक्षकों पर हमला शुरू कर सके। यह सम्राट द्वारा भेजे गए फरमान में परिलक्षित होता है, जिसने राम सिंह को किसी भी शक्ति का प्रयोग करने में लगभग अक्षम कर दिया और उसे शक्तिशाली मुगल सेना के जनरल से महज मुखबिर में बदल दिया!

"हुसुबुलहुकुम (आदेश से)," फ़रमान में लिखा था, "जान लो, राजा राम सिंह, जो शाही कृपा की उम्मीद कर रहे है कि सम्राट के सामने रखे गए शाइस्ता खान के पत्रों और मृतक जफर खान द्वारा भेजे गए पत्रों की सामग्री से उन्हें पता चला है कि गौहाटी के किले पर कब्ज़ा करने का काम तेजी से पूरा नहीं किया जा सका। इसलिए इस काम में उनकी सेना के बराबर वहाँ अतिरिक्त सेना भेजना बेकार है... असकर खान को स्वयं उपर्युक्त सेना एकत्र करनी चाहिए और शाही दरबार में वापस आना चाहिए। उसके आने के बाद आपको निम्नलिखित को छोड़ देना चाहिए ....राव अमर सिंह, चंद्रावत, केशरी सिंह, भोजराज कच्छवा और अन्य, जिनकी टुकड़ियों को अलग से नोट किया गया है, ताकि वे भी उक्त खान के साथ शाही दरबार में जा सकें और आपको उस उत्कृष्ट प्रान्त की उतनी ही सेना लेकर अपने पद पर डटे रहना चाहिए जितनी साम्राज्य के लिए आवश्यक हो। इसके अलावा, उस प्रांत में आपको सौंपे गए सैनिकों और तोपखाने और अन्य सामग्रियों के साथ, आपको रंगमती में रहना चाहिए और सीमा से मुखबिर (खबरदार) के रूप में कार्य करना चाहिए..."

फरवरी 1676 में, अन्य फरमान के माध्यम से सम्राट ने राम सिंह को बरसात का मौसम शुरू होने से पहले रंगमती से वापस आने का निर्देश दिया और उमदत-उल-मुल्क द्वारा नामित व्यक्ति को कार्यभार सौंप दिया। पहले अबू नस्र खान और बाद में इब्न-ए-हुसैन खान ने उस मुगल चौकी का कार्यभार संभाला, जबकि राजा राम सिंह वापस दिल्ली

आ गए और जून 1676 में औरंगजेब को अपना सम्मान दिया। तथ्य यह है कि उन्हें पाँच साल से अधिक समय रंगमती में निर्वासन की स्थिति में बिताना पड़ा जिसे राजपूत योद्धा के लिए सजा का रूप माना जाता है। एक वृत्तांत के अनुसार मुगल राजधानी में लौटने के बाद राजा राम सिंह की प्राकृतिक मृत्यु हो गई, जबकि अन्य वृत्तांत के अनुसार 1687-88 के आस-पास काबुल में ड्यूटी के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। (213)

"असम का व्यापक इतिहास" बाद की घटनाओं का थोड़ा अलग विवरण देता है: "असमियों ने मुगलों की पीछे हटने वाली टुकड़ी पर आश्चर्यजनक हमले से एक और जीत हासिल की जिसमें सभी मुग़ल मारे गए। दरांग में मुगलों को भी सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। बार-बार की हार से कमजोर होकर और परिणामस्वरूप हानि और अहोम राजा को हराकर शाही कृपा हासिल करने की सारी उम्मीद खो देने के बाद, राम सिंह ने अप्रैल 1671 की शुरुआत में कामरूप छोड़ दिया और रंगमती लौट आए। सरायघाट में सामान्य हार और उसके बाद पीछे हटने की असम रिपोर्टर हाजी मीर ग़ज़र बेग ने विधिवत रिपोर्ट की। इससे सम्राट इतना क्रोधित हुआ कि उसने तुरंत राजपूत जनरल को पदावनत कर 2000 बना दिया और उसे वापस आने का आदेश दिया। तदनुसार, उसने अबू निसार खान को कार्यभार सौंप दिया और 25 जून, 1676 को सम्राट के दर्शन किए। (214)

***

सरायघाट की जीत पर पूरे अहोम साम्राज्य में जो खुशी महसूस की गई थी, वह कुछ समय बाद ही एक दुखद समाचार से कम हो गई। यह असम के महावीर लाचित बरफुकन की 59 वर्ष की अपेक्षाकृत कम उम्र में मृत्यु थी। इतिहास में उनकी मृत्यु के सही समय और स्थान के बारे में बहुत स्पष्ट जानकारी नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं, सरायघाट संघर्ष के चरम पर वह तेज बुखार की स्थिति में थे, लेकिन उनकी अदम्य भावना, मानसिक शक्ति और अपनी मातृभूमि को बचाने के दृढ़ संकल्प ने उन्हें कार्रवाई के लिए प्रेरित किया था, जिसे शायद उनका शरीर सहन नहीं कर सका। इतिहासकारों के एक वर्ग का मानना है कि गौहाटी से नाव द्वारा गढ़गाँव जाते समय उन्होंने अंतिम सांस ली।

लेकिन इतिहासकारों का अन्य वर्ग यह मानता है कि लाचित की मृत्यु सरायघाट की लड़ाई के एक साल बाद 1672 में स्वाभाविक

रूप से हुई थ और उन्हें ऊपरी असम के जोरहाट शहर से 16 किमी दूर हुलुंगपारा मौजा के नरहिलायदरी गाँव में स्वर्गदेव उदयादित्य सिंह द्वारा निर्मित समाधि में दफनाया गया था। (215) यह स्वाभाविक है कि प्राथमिक दस्तावेजी स्रोतों के अभाव के कारण, अधिकांश इतिहासकार लाचित के जन्म और मृत्यु की तारीखों का उल्लेख करने से बचते हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार सूर्य कुमार भुइयाँ ने अपनी पुस्तक "'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स'" में लिखा है, "लेकिन उन्होंने समय पर हस्तक्षेप न किया होता तो असमिया सैनिक के असफल उत्साह ने अपमानजनक हार मोल ले ली होती। लॉर्ड नेल्सन की तरह, लाचित बरफुकन की मृत्यु भी जीत की गोद में हुई और सरायघाट की लड़ाई असम का ट्राफलगर थी।"

***

लाचित के बड़े भाई लालुकसोला को नया बरफुकन नियुक्त किया गया। एक बार फिर मानस नदी अहोम क्षेत्र की पश्चिमी सीमा बन गई। नदी के किनारे 'हदीरा' नामक स्थान पर अहोम सेना चौकी और व्यापारिक केंद्र स्थापित किया गया और स्थानीय लोगों द्वारा इसे 'हदीराचौकी' कहा जाने लगा। चूँकि यह अहोम साम्राज्य की बाहरी सीमा को चिह्नित करता था, इसलिए बाहर के लोग इसे 'असमचौकी' कहने लगे और यह जल्द ही महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित हो गया। उस स्थान पर तैनात असमिया गैरीसन ने पास की पहाड़ी पर एक किला बनाया ताकि भारी बारिश के दौरान वे इसमें आश्रय ले सकें। क्षेत्र का प्रशासन करने और बाहरी दुनिया के साथ व्यापार को विनियमित करने के लिए असमचौकी में उच्च रैंकिंग अधिकारी को तैनात किया गया। रंगमती क्षेत्र के लिए स्वीकृत मुगल प्रशासनिक मुख्यालय बना रहा।

***

सरायघाट की लड़ाई ने असम पर विजय प्राप्त करने के मुगलों के एक शताब्दी से भी अधिक लंबे प्रयासों का अंत कर दिया और उनकी आकांक्षाओं को अंतिम झटका दिया। विडंबना यह है कि यह सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के दौरान हुआ था, जब मुगल शाही शक्ति अपने चरम पर थी और मुगल साम्राज्य अपने सबसे व्यापक रूप में था, यह इतिहासकारों से छिपा नहीं होगा! यह याद किया जा सकता है कि 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई के बाद, मुगल राजवंश के संस्थापक

बाबर ने दिल्ली के सिंहासन पर कब्जा कर लिया था और उसकी संतान ने उसके द्वारा स्थापित साम्राज्य का विस्तार करना शुरू कर दिया था। 1576 में बंगाल की विजय के बाद, मुगलों ने असम पर अपनी लालची नजरें गड़ा दीं। कुछ दशकों तक कोच साम्राज्य उनके और असम के अहोम शासकों के बीच बफर के रूप में खड़ा था। लेकिन जब कोच साम्राज्य, जिसमें तब निचला असम भी शामिल था, पर मुगलों ने कब्ज़ा कर लिया, तो दोनों विरोधियों के बीच सीधा संघर्ष शुरू हो गया।

अहोम बुरंजिस में दर्ज सबसे शुरुआती मुठभेड़ों में से एक अप्रैल 1532 में बंगाल के एक पाखण्डी, गैर-मुगल आक्रमणकारी तुर्बक और अहोम राजा सुहंगमुंग की सेना के बीच की लड़ाई थी, जिसमें सुहंगमुंग विजयी हुआ था। तब से मुगलों ने कई हमले किए। सबसे गंभीर हमला जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है मीर जुमला का आक्रमण था। लेकिन सरायघाट की लड़ाई ने असमियों को इतना सशक्त बना दिया कि जब तक अहोम साम्राज्य खुद आंतरिक कलह के कारण कमजोर नहीं हो गया और आक्रमणकारियों ने असम में घुसकर तबाही नहीं मचा दी, तब तक वे किसी भी अन्य संभावित हमले को रोक सकते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि सरायघाट के ठीक एक दशक बाद मुगलों ने गौहाटी पर पुनः कब्ज़ा कर लिया, लेकिन यह केवल विश्वासघाती, सत्ता के भूखे असमिया सरदार की साजिशों के कारण संभव हुआ था। सरायघाट की लड़ाई से पैदा हुई देशभक्ति कायम थी, यह इस तथ्य से साबित होता है कि असमिया सैनिक कुछ ही महीनों में आखिरी हड़पने वालों को बाहर निकालने में सक्षम रहे।

"इसने (अर्थात सरायघाट के युद्ध ने) असमिया लोगों की अदम्य वीरता और अनन्य देशभक्ति की अमर विरासत छोड़ी। यह असम के इतिहास में फिर से एक निर्णायक लड़ाई थी। न केवल मुगल आक्रमण को पीछे धकेला गया, बल्कि बलिदानों के परिणाम भी मिले, अतीत और वर्तमान को भी संरक्षित किया गया था। यह सच है कि दस साल बाद पिछले दरवाजे से उसी क्षेत्र में घुसने का गुप्त प्रयास किया गया था, लेकिन सरायघाट में उत्पन्न आत्मविश्वास और क्षेत्रीय देशभक्ति की बाढ़ इतनी मजबूत थी कि आक्रमणकारियों को सीमा से बाहर धकेला जा सके। यदि सरायघाट ने रक्षात्मक युद्ध में मुगलों को पीछे धकेल दिया, तो इटाखुली ने आक्रामक युद्ध में काम पूरा किया।" (216)

***

मुगलों के साथ अंतिम मुठभेड़ वास्तव में राम सिंह के आक्रमण से संबंधित थी। गौहाटी और निचले असम की रक्षा करने की आवश्यकता, जिस पर लाचित ने फिर से कब्जा कर लिया था, के लिए यह आवश्यक था कि सभी सर्वश्रेष्ठ और प्रतिभाशाली अधिकारियों को वहाँ भेजा जाए, चक्रध्वज सिंह और उनके बाद उदयादित्य सिंह को केवल छोटे, निम्न अधिकारियों के साथ गढ़गाँव से शासन करने के लिए छोड़ दिया जाए। चक्रध्वज सिंह की मृत्यु के बाद इन अधिकारियों ने मौजूदा स्थिति का लाभ उठाते हुए सभी शक्तियों को अपने लिए उपयुक्त बना लिया और एक क्रूर अभियान शुरू कर दिया, जिसमें न केवल उदयादित्य की हत्या हुई, बल्कि 1670 में चक्रध्वज सिंह की मृत्यु और 1681 में गदाधर सिंह के राज्यारोहण के बीच, केवल ग्यारह वर्षों के भीतर सिंहासन पर बिठाए गए लगभग छह राजकुमारों को भी मार डाला गया या अंग-भंग किया गया।

वास्तव में, गढ़गाँव में 1670 का दशक काला समय था, जो षड्यंत्रों, हत्याओं, विश्वासघातों से डरा हुआ था-अराजकता ने सरकार की सुव्यवस्थित प्रणाली को खत्म कर दिया था। क्षेत्र पर शासन कर रहे छोटे अधिकारी डरते थे कि एक बार उच्च मंत्री के गढ़गाँव लौटने पर वे अपना प्राधिकार खो देंगे; इस प्रकार उनमें से कुछ ने खुद को सशक्त बनाने के लिए राजा-निर्माता की भूमिका निभाने की कोशिश की। विशेष रूप से 'लेचाई देबेरा दखिनपतिया हजारिका' नाम का छोटा अधिकारी बहुत ही कम समय के भीतर, अपने लिए सारी शक्ति हथियाने में सफल रहा, उसने उदयादित्य सिंह की हत्या कर दी और अपने भाई को ऊपर उठाया, जिसने अहोम नाम सुकलमफा और सिंहासन पर बैठने के हिंदू नाम रामध्वज सिंह अपनाया।

यद्यपि महत्वाकांक्षी लेचाई देबेरा इस बात से असंतुष्ट हो गया कि उसे रामध्वज सिंह द्वारा उचित पुरस्कार नहीं दिया जा रहा था और उसने चालाकी से खुद को बारबरुआ के पद पर स्थापित कर लिया। इस नियुक्ति के बाद के वर्ष अहोम इतिहास के कुछ सबसे कुख्यात वर्षों मंप शामिल थे, जिनमें शैतान देबेरा ने अपनी नई हासिल शक्ति का उपयोग करके अपना विरोध करने का साहस करने वाले किसी भी व्यक्ति को मार डाला। अहोम बुरंजियों का कहना है कि एक ही रात में उसने कम-से-कम चौबीस हजारिका और महल से जुड़े सभी फुकनों का वध कर दिया!

जब स्वर्गदेव रामध्वज सिंह ने आखिरकार देबेरा के सामने खड़े होने की कोशिश की, तो बाद में नवंबर 1674 में देबेरा ने उन्हें गुप्त रूप से जहर दे दिया। इसके बाद यह मानते हुए कि ऐसा महत्वहीन व्यक्ति आसानी से नियंत्रित हो सकता है| 'सुहंग' नाम के व्यक्ति को अगला देबेरा चुना गया जो अल्पज्ञात अहोम राजकुमार था और सामागुरी में रहता था। लेकिन सुहुंग को वास्तव में 'स्वर्गदेव' नहीं कहा जा सकता था क्योंकि शान के नियमों के अनुसार किसी भी पात्र-मंत्रियों ने उनके अभिषेक के लिए सहमति नहीं दी थी और इस प्रकार कई बुरंजियों ने उनका नाम छोड़ दिया। फिर भी, सुहुंग ने देबेरा के दबंग रवैये को नापसंद करते हुए, उससे छुटकारा पाने का प्रयास किया और क्रूर बारबरुआ ने उसकी हत्या कर दी, जिसने तब गोबर गोहैन नाम के तुंगखुंगिया राजकुमार को सिंहासन पर बिठाया।

जल्द ही देबेरा की अराजक गतिविधियों की भनक लालुकसोला बरफुकन (जिन्होंने लाचित बरफुकन की मृत्यु के बाद यह पद संभाला था) और अतान बुरगोहैन को लगी जो अभी भी गौहाटी में थे| यद्यपि राम सिंह अभी भी अपने सैनिकों के साथ रंगमती में तैनात था जिससे विस्तारित अहोम क्षेत्र के लिए स्थायी खतरा पैदा हो गया| वे ऊपरी असम की ओर अपना ध्यान केंद्रित करने की स्थिति में नहीं थे। लेकिन 1675 की शुरुआत में, राम सिंह ने वापस दिल्ली जाने की तैयारी शुरू कर दी, इसलिए वरिष्ठ अहोम रईस गौहाटी छोड़ कर गढ़गाँव जा सके।

अतान बुरगोहैन और लालुकसोला बरफुकन, कुछ सबसे बहादुर अहोम कमांडरों के साथ (जिन्होंने गौहाटी में अभियान के दौरान बहुत अच्छी तरह से लड़ाई लड़ी थी) अप्रैल 1675 में बड़ी सेना के नेतृत्व में गढ़गाँव के लिए रवाना हुए। गुइमेला गोहेन-फुकन को नदी बंदरगाह शहर के प्रबंधन के लिए नियुक्त किया गया। उनका सामना करने की आशंका से डर कर देबेरा भाग गया, उसे पकड़ लिया गया| मुकदमा चलाया गया और दोषी पाया गया और उसे मार दिया गया। गोबर गोहैन पर भी मुकदमा चलाया गया और 23 मई, 1675 को उन्हें फाँसी दे दी गई| उनके "शासनकाल" की अवधि बमुश्किल एक महीने थी।

अतान बुरगोहैन ने पारंपरिक अहोम प्रशासनिक ढाँचे को एक बार फिर से स्थापित करने में कुछ समय बिताया, जो देबेरा के कार्यों से अचानक बाधित हो गया था। अन्य पात्र-मंत्रियों से परामर्श करने के

बाद, दिहिंगिया राजा स्वर्गदेव सुहंगमुंग के वंशज, 'सुजिंफा' नामक नए राजा को अहोम सिंहासन पर बिठाया गया। लेकिन, उस सिंहासन के पूर्ववर्ती कुछ कब्जेधारियों के कुकृत्यों से भयभीत होकर, सुजिंफा को हर जगह साजिश और विश्वासघात की गंध आने लगी| इससे भी बदतर, बुरगोहैन की सलाह के विरुद्ध, उसने प्रतिस्पर्धी अहोम कुलों के राजकुमारों की गुप्त रूप से हत्या करवा दी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसके अपने बेटे उसके बाद सिंहासन पर बैठें।

जब अतान ने विरोध किया, तो सुजिंफा ने निचले पदानुक्रम के कुछ चापलूस रईसों के साथ, बुरगोहैन पर हमला कर दिया, जिससे उसे गढ़गाँव से लाखाऊ भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। वहाँ उनके साथ अन्य मित्रवत सरदार भी शामिल हो गए और उन्होंने मिलकर अपने खिलाफ भेजी गई सुजिंफा की सेना को हरा दिया। राजा को तलवार से मार दिया गया। अतान ने इसके बाद पर्वतिया कबीले से राजकुमार को चुना और उसे सुदैफा का नाम लेते हुए अहोम सिंहासन पर बैठाया। लेकिन नया राजा भी बुरगोहैन की शत्रु ताकतों से प्रभावित होकर उसके खिलाफ हो गया।

इस बीच, बुरगोहैन तक खबर पहुँच गई थी कि लालुकसोला बरफुकन अपनी सेना के साथ गौहाटी लौट आया है और वह रंगमती में तैनात मुगल कमांडरों के प्रति मैत्रीपूर्ण स्वभाव प्रदर्शित कर रहा है। जाहिर तौर पर, बरफुकन बुरगोहैन की शक्ति से ईर्ष्यालु हो गया था और उस शक्ति को अपने लिए हड़पने के लिए कृतसंकल्प था। एक चौंकाने वाले घटनाक्रम में, गौहाटी से प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति ने निचले असम के नए कमांडर-इन-चीफ को साजिश रचने में सक्षम बनाया, जो गढ़गाँव में खुद को सिंहासन तक पहुँचाने की महत्वाकांक्षा रखते था। उसने बंगाल के गवर्नर सुल्तान आज़मतारा के साथ बातचीत शुरू की और गौहाटी को मुगलों को सौंपने का वादा किया| बशर्ते, दिल्ली के सम्राट अहोम सिंहासन हासिल करने के उसके प्रयास में समर्थन करें। लालुक्सोला ने मीर जुमला के दिनों में सहयोगी बदुली के माध्यम से बातचीत की, जो बंगाल में रह रहा था और उसकी अपनी भतीजी, रमानी गभरू, जो जयध्वज सिंह की बेटी थी, जिसे यह याद किया जा सकता है कि उसे शाही हरम में भेज दिया गया था और उसकी शादी सुल्तान आज़मतारा से कर दी गई थी और उसका नाम बदलकर 'रहमत बानू बेगम' रखा गया था। दुर्भाग्य से, इन घटनाक्रमों के बारे में पता होने

के बावजूद, अतान इसके बारे में कुछ नहीं कर सका, असमिया सशस्त्र बलों के बड़े हिस्से के साथ-साथ श्रेष्ठ अधिकारियों को भी, मुगलों द्वारा बंदरगाह-शहर को फिर से हासिल करने के किसी भी प्रयास को विफल करने के लिए गौहाटी में तैनात किया गया था।

26 फरवरी, 1679 को अतान बुरगोहैन को जिस बात का डर था, वह हकीकत बन गई! अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए बहुत बहादुरी से लड़ाई लड़ने वाले असम के शूरवीर लाचित बरफुकन के बड़े भाई लालुकसोला बरफुकन उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन गद्दार साबित हुए और सत्ता हासिल करने की अपनी महत्वाकांक्षा को आगे बढ़ाने के लिए, उन उपलब्धियों को नष्ट कर दिया जिनके लिए हजारों असमिया सैनिक मारे गए थे और गौहाटी एवं निकटवर्ती क्षेत्रों को मुगलों को लौटा दिया। दिल्ली में सम्राट की ओर से मंसूर खान ने एक छोटे बेड़े के साथ गौहाटी में प्रवेश किया और अहोमों द्वारा खाली किए गए शहर पर कब्जा कर लिया।

तीन दिन पहले लालुक्सोला और उसके वफादार अधिकारियों का दल, पूरी असमिया सेना और मुगल हमले से क्षेत्र की रक्षा के लिए नियुक्त बेड़े के साथ, ब्रह्मपुत्र की ओर बढ़ गया, अब उसका आक्रमण गढ़गाँव के खिलाफ निर्देशित था। अतान बुरगोहैन द्वारा किया गया प्रतिरोध कमजोर था| जल्द ही उन पर और उनके लोगों पर गद्दार ने काबू पा लिया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। सुदैफा को मार डाला गया और उसके स्थान पर लालुक द्वारा चुने गए 'सुलिकफा' नामक राजकुमार को नियुक्त किया गया। सिंहासनारूढ़ होने पर उनका पहला कार्य बुरगोहैन को फाँसी देने का आदेश था|

इस प्रकार महान राजनेता और देशभक्त, अतान बुरगोहैन का जीवन समाप्त हो गया| उन्हें डुइमुनिसिला की कैद से कालियाबार में एक स्थान पर ले जाया गया और उनका गला घोंट दिया गया! अब लालुक बरफुकन को कोई रोक नहीं सकता था, जिन्होंने उस उपाधि को त्याग दिया और खुद को राजमंत्री फुकन के रूप में नामित किया| (217)

"सुल्तान ने नवाब मंसूर खान को गौहाटी की सुपुर्दगी लेने के लिए नियुक्त किया और मार्च 1679 में लालुकसोला बरफुकन ने चार लाख रुपये के इनाम के वादे और असम के सिंहासन के लिए लालुक की उम्मीदवारी के समर्थन के आश्वासन के बदले में गौहाटी को मुगलों को

सौंप दिया। मंसूर खान को नए अधिग्रहीत क्षेत्र का फौजदार नियुक्त किया गया। इसके बाद लालुक ने गढ़गाँव तक चढ़ाई की, प्रधान मंत्री की हत्या कर दी जो उसकी प्रगति का विरोध करने आए थे और चौदह वर्ष के किशोर को सिंहासन पर बैठाया। अपने भगोड़े पति की गतिविधियों और स्वयं आभासी संप्रभु शक्ति का इस्तेमाल करने के बारे में जानकारी देने से मना करने पर गदापाणि की पत्नी राजकुमारी जयमती की हत्या कर दी। लेकिन नियति का हाथ पर्दे के पीछे गुप्त रूप से काम कर रहा था और नवंबर 1680 में असंतुष्ट घरेलू नौकर ने लालुक की हत्या कर दी। मंत्रियों में अब देशभक्ति की भावना जागृत हो गई; उन्होंने उस समय के सबसे वीर राजकुमार कोंवर गदापानी की खोज की और उसे सिंहासन पर बिठाया।" (218)

गदापाणि, अगस्त 1681 में, अहोम सिंहासन पर बैठे और सुपतफा की अहोम उपाधि और गदाधर सिंह का हिंदू नाम धारण किया। वह फौजदार मंसूर खान के अधीन गौहाटी से एक बार फिर मुगलों को बाहर करने के लिए दृढ़ थे। अगस्त, 1682 के अंत में, असमियों ने अपने कट्टर शत्रुओं के विरुद्ध अपना अंतिम अभियान शुरू किया। उनकी सेनाएँ तीन-तरफा हमले में फैल गईं-ब्रह्मपुत्र में नीचे की तरफ बंदर बरफुकन और चंपा पानी फुकन के साथ युद्ध नौकाओं का विशाल बेड़ा; सैंडिकोइ फुकन और खम्रक फुकन के नेतृत्व में एक और बेड़ा ब्रह्मपुत्र नदी की शाखा कलंग नामक नदी में, जबकि हलौउ डेका फुकन और नामदंगिया फुकन के नेतृत्व में थल सेना दक्षिणी तट की ओर आगे बढ़ी।

इससे पहले कि मंसूर खान कोई प्रतिरोध संगठित कर पाता, बंसबारी और कजली में मुगलों के कब्जे वाले किले फतह कर लिए गए। उनके द्वारा भेजा गया मुगल बेड़ा बरनाडी नदी पर असामियों के साथ भिड़ गया और उसे निर्णायक हार का सामना करना पड़ा। उन्होंने गौहाटी के इटाखुली और उमानंद किलों पर तोपें चढ़ाकर विरोध करने की कोशिश की, लेकिन यह सब व्यर्थ रहा। असमिया ताकतों को कोई रोक नहीं सका, जिन्होंने राष्ट्रवादी हुंकार के साथ अपनी निरंतर प्रगति जारी रखी। अंततः, सितंबर 1682 में, इटाखुली का कमांडर अली अकबर अपनी सेना छोड़कर भाग गया; मंसूर खान रंगमती के लिए पहले ही निकल चुका था। मुगलों को मानस नदी से आगे खदेड़ दिया गया जो एक बार फिर अहोम साम्राज्य की सबसे पश्चिमी सीमा बन गई। असंख्य युद्ध-जहाजों-सोने और चाँदी, हाथी, घोड़े, बैल और भैंस, तोपें,

बन्दूकें, तलवारें और भाले के साथ-साथ विशाल लूट पर कब्ज़ा कर लिया गया। जिस आसानी से असमिया सेना ने मुगलों को खदेड़ दिया, वह सरायघाट की लड़ाई के प्रभाव का स्पष्ट संकेत था जिसने कमांडरों को दुश्मन के खिलाफ अपनाई जाने वाली रणनीति सिखाई और उन्हें और उनके सैनिकों को राष्ट्रवाद की उसी भावना से भर दिया जिसे प्रेरित करने के लिए लाचित ने अथक परिश्रम किया था। (219)

लाचित की विरासत

अकसर किसी विशेष ऐतिहासिक घटना के दूरगामी परिणाम होते हैं और वह युग-निर्माता बन जाती है। इतिहासकार यह स्वीकार करने में एकमत हैं कि असम के बहादुर लाचित बरफुकन के नेतृत्व में सरायघाट की लड़ाई मध्ययुगीन असम के इतिहास में ऐसा निर्णायक प्रकरण था, जिसने तत्काल बाद के साथ-साथ आने वाली शताब्दियों में भी स्थायी विरासत छोड़ी।

इसके तत्काल बाद का प्रभाव निर्विवाद है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुछ नकारात्मक कारकों के कारण सरायघाट युद्ध के तुरंत बाद का दशक बुरा था जिसमें देबेरा और लालुक्सोला जैसे खलनायक पात्रों का प्रभुत्व था और बहादुर योद्धा-राजनेता अतान बुरगोहैन की नृशंस हत्या असामान्य घटना बन गई। फिर भी, अगस्त 1681 में जैसे ही राजकुमार गदापानी को अहोम सिंहासन पर बैठाया गया, उन्होंने नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया, लालुकसोला बरफुकन द्वारा विश्वासघाती रूप से दिए गए क्षेत्रों को पुनः प्राप्त कर लिया, और राज्य में शांति और व्यवस्था बहाल की। शांति और विकास के एक नए युग की शुरुआत हुई और अगली शताब्दी के दौरान अहोम साम्राज्य आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक उपलब्धियों के शिखर पर पहुँच गया। गदाधर सिंह के साथ अहोम राजवंश की बागडोर संभालने वाले तुंगखुंगिया कबीले ने 19वीं शताब्दी के दूसरे दशक में राजवंश की कमजोरी और पतन तक अपना

प्रभुत्व बनाए रखा, जब 1826 में यंदाबू की संधि के द्वारा असम अंग्रेजों के हाथों में चला गया। (220)

"गदाधर सिंह का राज्यारोहण और आभासी अंतराल के बाद मजबूत राजशाही की बहाली घरेलू और विदेशी दोनों तरह के कार्यों से असम के इतिहास में नए युग की शुरुआत थी। मजबूत शासक होने का फल शुरू से ही दिखाई देने लगा था। घर पर उन्होंने राजशाही को पुनर्जीवित किया। प्रेत शासकों और बेईमान, महत्वाकांक्षी राजा-निर्माताओं और मंत्रियों के दिन खत्म हो गए। राजा एक बार फिर सर्वोच्च और इतने मजबूत हो गए कि न केवल लोलुप कुलीनों के दिखावे पर अंकुश लगाने, बल्कि उनके एकाधिकार और प्रभाव को भी तोड़ने में सफल रहे। आंतरिक कलह और भ्रष्टाचार समाप्त हो गये। जहाँ षडयंत्रों को कुचल दिया गया, वहीं प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार किया गया... गदाधर ने राष्ट्रवादी भावना का झंडा उठाकर राज्य की सीमाओं को पश्चिम तक विस्तारित किया।" (221)

निस्संदेह, सरायघाट युद्ध द्वारा अहोम साम्राज्य में मुगल खतरे की समाप्ति के बाद जो सामाजिक-राजनीतिक स्थिरता आई, वह इसके तुरंत बाद हुए सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए जिम्मेदार थी। गदाधर सिंह ने सिंहासन के अधिकार और भूमि पर कानून के शासन को बहाल करने के लिए दृढ़ संकल्प करते हुए, ऐसे पुनर्जागरण के लिए आवश्यक राजनीतिक स्थिरता स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की। इसके अलावा, गदापाणि कई वर्षों से भगोड़ा था और पकड़े जाने से बचते हुए देश भर में घूमता रहा था; इसने उसे खराब शासन के कारण आम लोगों की बिगड़ती जीवन स्थितियों से परिचित कराया और उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए उपाय करने के लिए उनके दृढ़ संकल्प को प्रेरित किया।

साफ पानी की अनुपलब्धता और अच्छी सड़कों की कमी के कारण संचार में बाधा जैसी अपने लोगों की समस्याओं से परिचित गदाधर सिंह ने इनसे निपटने के लिए बुनियादी ढाँचा बनाने के लिए ठोस प्रयास किया। राज्य के विभिन्न स्थानों में दर्जनों बड़े पुखुरी या पानी के टैंक खोदे गए; ये ऊँची ज़मीन पर स्थित थे ताकि बाढ़ का पानी इनमें प्रवेश न कर सके और इन्हें दूषित न कर दे। भूमि संचार को बेहतर बनाने के लिए कई एलिस या सड़कों का निर्माण किया गया। राज्य और उसकी

प्रजा का एक और विस्तृत सर्वेक्षण किया गया। भूमि जोतों को मापा

गया, लेकिन इस बार निचले असम में मुगलों द्वारा शुरू की गई माप के प्रकार के साथ यह कार्य किया गया। इस उद्देश्य के लिए बंगाल से सर्वेक्षणकर्ताओं को लाया गया था।

यद्यपि, अहोम युग के दौरान असमिया राष्ट्रवाद का सबसे उल्लेखनीय दर्पण, साथ ही चक्रध्वज सिंह के समय में लाचित बरफुकन जैसे प्रतीक और उनके कारनामों द्वारा लाया गया सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थान, सुखरुंगफा के शासनकाल के दौरान देखा गया था (1696-1714)। उन्हें रुद्र सिंह के नाम से भी जाना जाता है। वे गदाधर सिंह और सती जयमती के बड़े पुत्र और निस्संदेह सबसे महान अहोम राजाओं में से एक थे।

अहोम साम्राज्य की असमिया प्रजा के लिए रुद्र सिंह युग स्वर्णिम काल था। तब वहाँ आर्थिक आत्मनिर्भरता थी, साथ ही सापेक्ष शांति भी थी। इस अहोम राजा ने समझा कि अधिक समृद्धि के साथ-साथ सांस्कृतिक उन्नति की कुंजी पड़ोसी क्षेत्रों के साथ बढ़ते संबंधों और उनके साथ व्यापार के विस्तार के माध्यम से थीं। उन्होंने असम की अर्थव्यवस्था को खोल दिया और देशी सौदागरों या व्यापारियों को अन्यत्र के व्यापारियों के साथ स्वदेशी वस्तुओं का व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके पूर्ववर्तियों ने वाणिज्यिक अलगाव की नीति का पालन किया। इसके विपरीत रुद्र सिंह ने अन्यत्र व्यापार की विदेशी वस्तुओं के निर्यात और अहोम साम्राज्य को समृद्ध करने के लिए हीरे, जवाहरात और अन्य वस्तुओं को आयात करने की क्षमता को समझा। इस प्रकार सबसे पश्चिमी अच्छी तरह से स्थित व्यापारिक चौकी जिसे हदीराचौकी या असमचौकी कहा जाता है और साथ ही गोलपाड़ा जैसे निकटवर्ती स्थान अचानक व्यापारिक गतिविधियों के केंद्र बन गए, जिससे शाही खजाने में वृद्धि हुई।

सिद्ध योग्यता वाले कारीगरों-लोहार, पीतल-कामगार, राजमिस्त्री, सुनार, औषधकार, दर्जी आदि को राज्य में लाया गया, भूमि दी गई और यहाँ अपना व्यवसाय करने की अनुमति दी गई। सोने के बर्तनों और कलाकृतियों पर रत्न जड़ने के उचित तरीके में स्थानीय जौहरियों को प्रशिक्षित करने के लिए, उत्तर-पश्चिम भारत के सुदूर प्रांत मारवाड़ से जौहरियों और सुनारों को लाया गया था। रुद्र सिंह ने भारत के अन्य हिस्सों के लोगों द्वारा पहनी जाने वाली पोशाकों की शैली में नई पोशाकें भी पेश कीं और यह नियम बनाया कि असमिया महिलाओं को रिहा-मेखला पहननी चाहिए।

यह कहा जा सकता है कि इस महान राजा के शासनकाल के दौरान असमिया समाज को बंधनों से मुक्ति मिली थी। भारत के अन्य भागों के सम्राटों की तरह विशेष रूप से मुगलों की तरह रुद्र सिंह के दरबार में विद्वान, संगीतकार और संत थे, जब भी राजा अपनी परिषद की बैठक आयोजित करता था, तो उनके लिए विशेष सीटें आरक्षित की जाती थीं। उनका उद्देश्य स्थानीय कलाओं को प्रोत्साहित करते हुए अन्य समाजों की हर अच्छी चीज़ को चुनना और उसे असमिया समाज में पेश करना था। असमिया संस्कृति को मजबूत और समृद्ध करने के लिए उन्होंने इस उद्देश्य के लिए वैष्णव भिक्षुओं द्वारा शुरू किए गए उल्लेखनीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का उपयोग करते हुए, भारत के अन्य क्षेत्रों के अपने समकक्षों के साथ स्थानीय शास्त्रीय एवं लोक नृत्य और संगीत का मिश्रण किया। साहित्यिक कृतियों का अनुवाद किया गया, स्वर्ण पांडुलिपियों के निर्माण जैसे कला-रूप चरम पर पहुँचे और शास्त्रीय विषयों पर आधारित नृत्य-नाटकों की रचना की गई। इसके अलावा, राजा ने सांस्कृतिक प्रेरणा के लिए न केवल भारत के अन्य हिस्सों से ग्रहण किया; बल्कि वह किसी अन्य की तुलना में इस क्षेत्र की विभिन्न जनजातियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में अधिक जानते थे और व्यापक असमिया संस्कृति के आधार को व्यापक बनाने के लिए उनके संगीत और नृत्य का सहारा लेते थे।

"रुद्र सिंह को अपने पिता द्वारा रखी गई ठोस नींव का लाभ मिला और उन्होंने उस पर एक अधिरचना खड़ी की... इसके अलावा उन्हें स्थिर सरकार के साथ शांतिपूर्ण प्रभुत्व विरासत में मिला। नए राजा ने अपने पिता के राजनीति कौशल को उत्कृष्ट बनाया। उन्होंने न केवल देश के सुधार के लिए अपने पिता द्वारा शुरू किए गए उपायों को आगे बढ़ाने में समय दिया, वरन इसे और भी मजबूत करने तथा इसे भारत में प्रथम श्रेणी की शक्ति में बदलने के लिए नया कार्यक्रम तैयार किया। राज्य के अंदर उन्होंने साजिशों और विद्रोहों को दबाया, शांति और व्यवस्था स्थापित की, प्रशासन में सुधार किया और सेना को फिर से तैयार किया। उन्होंने वैष्णव संप्रदायों के उत्पीड़न को रोका, मंदिरों का निर्माण किया, उनके खाते में उपयोगिता के कई सार्वजनिक कार्य थे, जैसे- तालाब, चिनाई वाले पुल और इसी तरह के अन्य कार्य। सबसे बढ़कर उन्होंने कला, साहित्य और संस्कृति को संरक्षण दिया। यहाँ तक कि उन्होंने तिब्बत के साथ व्यापारिक संबंध और बंगाल के साथ

सांस्कृतिक संपर्क स्थापित करने की भी कोशिश की...... गदाधर का शासनकाल असम में नए युग की शुरुआत थी, जिसका दोपहर का वैभव उनके बेटे रुद्र सिंह के अधीन आया। (222)

इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वर्गदेव सुखरुंगफा के शासनकाल के दौरान आर्थिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक समृद्धि इतनी अधिक थी जितनी किसी पूर्ववर्ती काल में नहीं थी। उनके शासनकाल ने असमिया राष्ट्रवाद की उदासीनता को चिह्नित किया और लाचित बरफुकन की उल्लेखनीय विरासत की गवाही दी| एक ऐसी विरासत, जो आश्चर्य की बात नहीं है कि आधुनिक काल तक भी कायम है!

***

ऐसी विरासत उस प्रेरणादायक प्रवाह का स्रोत साबित हुई जो बाद की शताब्दियों में असमिया समाज में व्याप्त हो गई। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा असम पर कब्जे के बाद पूरे स्वतंत्रता आंदोलन में सरायघाट और लाचित की भावना, विदेशी ताकत के प्रभुत्व के प्रति उनकी अनिवार्य घृणा और उससे लड़ने का संकल्प था, जो एक प्रेरक शक्ति थी और अपनी मातृभूमि को पुनः स्वतंत्र कराने के संघर्ष में सत्याग्रहियों को प्रेरित कर रही थी।

"1667 से 1671 के चार वर्ष के दौरान मुगलों के साथ संघर्ष में असमिया जिस संकट से गुजरे, वह महत्वपूर्ण संकट था और जिस तरह से वे इससे उबरने में सफल हुए, वह शानदार और शाश्वत प्रेरणादायक था... असमिया नेतृत्व में कोई कमी नहीं थी उन गुणों में जो किसी राष्ट्र की एकजुटता और स्थिरता सुनिश्चित करते हैं। ये गुण अब पहले की तुलना में अधिक आवश्यक हैं क्योंकि स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में हमारी भूमिका में भारतीयों के रूप में कई जटिल राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याएं हमारे समाधान की प्रतीक्षा कर रही हैं। लाचित बरफुकन और सरायघाट के उनके निस्वार्थ हमवतन का उदाहरण न केवल असम में मेरे देशवासियों के लिए बल्कि शेष भारत में मेरे दोस्तों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत होगा। (223)

दरअसल, आजादी के बाद की अवधि में असम कई अस्तित्वगत संकटों से गुजरा है, जिनका सामना लोगों को अपनी जुबान पर सरायघाट और लाचित के नाम से करना पड़ा है। "भाषा आंदोलन" के दौरान, या राज्य के लिए [illegible] या ब्रह्मपुत्र पर पुल बनाने की माँग हो,

असमिया राष्ट्रवादी ताकतों ने अपने दिमाग में लाचित और सरायघाट के विचार के साथ अपना संघर्ष जारी रखा है।

ऐसे माहौल में, जहाँ प्रतिकूल जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के कारण, असमियों के अस्तित्व पर ही सवाल खड़ा हो गया है| यह लाचित और उनके पराक्रम ही हैं जिन्होंने शत्रुतापूर्ण ताकतों से लड़ने वालों को कायम रखा है। असम के लोगों ने लाचित को अपने प्रेरक मार्गदर्शक के रूप में याद करते हुए विदेशियों की अवैध घुसपैठ के खिलाफ छह साल लंबे ऐतिहासिक जन आंदोलन की शुरुआत की। निस्संदेह, लाचित के पराक्रम का असम और उत्तर-पूर्व के लोगों के लिए सबसे बड़ा सबक यह है कि एकता में ताकत निहित है और विभाजित समाज दुर्बल और असुरक्षित समाज है। यह याद किया जा सकता है कि लाचित की सेना के घटकों में अनाकार असमिया समाज के हर जातीय वर्ग के साथ-साथ कुछ पहाड़ी जनजातियाँ भी शामिल थीं, जिन्होंने दुश्मन के सामने एकीकृत मोर्चा पेश किया और उन्हें हराया। यह इस वास्तविकता को उजागर करता है कि जब तक सामान्य रूप से उत्तर-पूर्व और विशेष रूप से असम को प्रभावित करने वाली मौजूदा विभाजनकारी प्रवृत्तियों को समाप्त नहीं किया जाता, तब तक विदेशी ताकतों के कारण स्वदेशी समुदायों का अस्तित्व खतरे में रहेगा।

लाचित बरफुकन के महान कार्य और सरायघाट की लड़ाई भारत को प्रेरित करने की क्षमता रखती है क्योंकि देश वैश्विक परिदृश्य में अपने सही स्थान की ओर बढ़ रहा है। आज, राष्ट्र को शत्रु पड़ोसियों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय समुदाय के अन्य क्षेत्रों से असंख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों का सामना तभी किया जा सकता है जब प्रत्येक नागरिक उस त्याग, निःस्वार्थ देशभक्ति और दृढ़ साहस का प्रदर्शन करे जिसका असम के शूरवीर लाचित बरफुकन शाश्वत अवतार थे।

***

अग्रणी इतिहासकार-जीवनी लेखक डॉ. सूर्य कुमार भुइयाँ असम के महावीर पर ध्यान केंद्रित करने वाले शुरुआती विद्वानों में से एक थे। उन्होंने लाचित के चित्रण में यह संकेत दिया है: "लाचित बरफुकन के चरित्र की सबसे उत्कृष्ट विशेषता सम्मान की उच्च समझ थी। यह अपरिभाषित गुण है, यद्यपि इसके निहितार्थ में वह सब शामिल है

जो मनुष्य के चरित्र में अच्छा और श्रेष्ठ है। इसका मतलब है इरादों और कार्यों दोनों से, निजी और सार्वजनिक आचरण की एक अलिखित संहिता के लिए दिखाया गया सम्मान, जिसके उल्लंघन से उल्लंघनकर्ता को कोई भौतिक क्षति नहीं होगी। हमारे निजी और घरेलू संबंधों में इसका अर्थ है अपने वादों को पूरा करना और उन अपेक्षाओं और आशाओं को पूरा करना जो हमने अपने आचरण, शब्दों और रवैये से दूसरों के मन में जगाई हैं। सार्वजनिक जीवन में, यह व्यक्तिगत प्राप्ति या लाभ पर विचार किए बिना किसी के कर्तव्य के प्रति पूरे दिल से समर्पण के बराबर है। सम्मानित व्यक्ति सीधा और न्यायप्रिय होता है और वह विरोध और असुविधा के बावजूद अपने सिद्धांतों पर कायम रहता है। कपटपूर्ण बातें, कुतर्क, छल-कपट और विकृतियों को उचित ठहराने के अड़ियल प्रयास सम्माननीय व्यक्ति के लिए अज्ञात हैं। उनका न्यायाधिकरण उनके देशवासियों का सामान्य ज्ञान और भावी पीढ़ी का फैसला है। मान्यताएँ और लाभ उसके कार्यों के उद्देश्यों का गठन नहीं करते हैं; पुरस्कार बहुत अधिक सांसारिक हैं, और वह अपने देश के लिए अपनी सेवाओं की शर्तों की सूची से बाहर हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को सबसे गंभीर ज़िम्मेदारियाँ सौंपी जा सकती हैं, जिन्हें वह पर्यवेक्षक की निगरानी के बिना निभाएगा, क्योंकि वह अपने दिल में सभी पर्यवेक्षकों में से सबसे महान-अपनी अंतरात्मा को संजोता है। यद्यपि वह कायरता और क्षुद्रता के आरोपों के प्रति संवेदनशील होता है, लेकिन वह इच्छुक विरोधियों और गैर-आलोचनात्मक भीड़ की निन्दा के प्रति उदासीन रहता है क्योंकि वह स्वयं के प्रति सच्चा है, और ब्रह्मांड की नैतिक व्यवस्था में अपने विश्वास में अटल है।" (224)

यद्यपि "मान्यताओं और लाभों" ने उनके कार्यों के उद्देश्यों का गठन नहीं किया होगा और उन्हें अपने द्वारा निभाई गई ऐतिहासिक भूमिका के बारे में भी जानकारी नहीं होगी, फिर भी भावी पीढ़ियों ने स्वीकार किया है कि लाचित बरफुकन उन सबसे महान असमियों में से एक थे, जिन्होंने अपनी प्यारी मातृभूमि की मिट्टी पर कदम रखे। इस वास्तविकता की मान्यता में, असम में उनकी वीरता और सरायघाट युद्ध में असमियों की जीत की याद में प्रत्येक वर्ष 24 नवंबर को लाचित दिवस मनाया जाता है।

जैसा कि पहले कहा गया है, दस्तावेजी साक्ष्य के अभाव में, लाचित बरफुकन की मृत्यु की तिथि और स्थान पर विवाद छाया हुआ

है। यद्यपि, असम में अनेक लोगों का मानना है कि उन्हें ऊपरी असम के जोरहाट शहर से 16 किमी दूर हुलुंगपारा मौजा के नरहिलायदरी गाँव में अहोम सम्राट स्वर्गदेव उदयादित्य सिंह द्वारा निर्मित समाधि में दफनाया गया था। इस स्थान पर सफेद रंग से रंगी हुई लाचित की आदमकद प्रतिमा स्थापित की गई है। मैदाम को राज्य सरकार द्वारा पर्यटक आकर्षण के रूप में बनाया गया है और एक संरचना, वास्तुकला की अहोम शैली में बनाई गई है, जो उनके पवित्र प्रतीक ड्रैगन से सुसज्जित है। इस जगह हर साल बड़ी संख्या में आगंतुक आते हैं।

असम राज्य सरकार ने 1671 में सरायघाट की लड़ाई की याद में ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी तट पर अगियाथुरी में सरायघाट युद्ध स्मारक पार्क भी स्थापित किया है। जहाँ लगी कांस्य पट्टिका आगंतुकों को उस युद्ध के विवरण से अवगत कराती है, वहीं युद्ध की मुद्रा में अहोम योद्धाओं की कांस्य और फाइबर ग्लास की मूर्तियाँ उन्हें साढ़े तीन शताब्दी पहले वहाँ हुई लड़ाई की याद दिलाती हैं।

देर से ही सही, असम के पूर्व राज्यपाल और भारतीय सेना के पूर्व उप-प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) एस. के. सिन्हा ने पहल की और 1999 में महाराष्ट्र में पुणे के पास खड़कवासला में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के प्रवेश द्वार पर शानदार सैन्य रणनीतिज्ञ लाचित बरफुकन के सम्मान में उनकी प्रतिमा स्थापित की। रक्षा अकादमी के सर्वश्रेष्ठ कैडेट को लाचित बरफुकन स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है, जबकि प्रत्येक वर्ष इस महान जनरल पर वार्षिक व्याख्यान आयोजित किया जाता है।

यद्यपि, इस महान सैन्य शख्सियत के प्रति राष्ट्र की प्रशंसा की इन भौतिक अभिव्यक्तियों से भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि असम के बहादुर लाचित बरफुकन का असमिया लोगों की सामूहिक चेतना में प्रतिष्ठित स्थान है और वह प्रत्येक असमिया के दिल में प्यार और प्रशंसा को प्रेरित करता है।

सन्दर्भ और टिप्पणियाँ

(1) 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित, से उद्धृत

(2) 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ, से उद्धृत

(3) उक्त।

(4) सुकाफा की असम यात्रा का विवरण पुरानी असम बुरंजी, देवधाई असोम बुरंजी, तुंगखुंगिया असम बुरंजी, राय साहेब गोलपचंद्र बरुअर अहोम बुरंजी, हरकांता बरुआ सदारामिनार असम बुरंजी जैसी बुरंजियो (इतिहास कालक्रम); ए हिस्ट्री ऑफ असम, सर एडवर्ड गैट; इतिहासे सुओनरा साशाता बाचर, सर्बानंद राजकुमार, इत्यादि में देखा जा सकता है।

(5) ए हिस्ट्री ऑफ असम, सर एडवर्ड गैट, से उद्धृत।

(6) उक्त।

(7) असम की विरासत के पहलू, ए हिस्ट्री ऑफ़ असम, सर एडवर्ड गैट, में उद्धृत।

(8) कोच साम्राज्य के उत्थान और पतन का विस्तृत विवरण कूचबिहार और असम, एच. ब्लॉचमैन, जैसी पुस्तकों में देखा जा सकता है।

(9) असम का इतिहास, सर एडवर्ड गैट।

(10) उक्त।

(11) मुग़ल कालक्रम 'पादीशाहनामा' का लेखक इसके बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराता है जैसा कि अहोम बुरंजियों और ए हिस्ट्री ऑफ असम, सर एडवर्ड गैट ने दिया है।

(12) उक्त।

(13) संधि की शर्तों का उल्लेख विभिन्न बुरंजियों, पादशाहनामा; ए हिस्ट्री ऑफ असम, सर एडवर्ड गैट; 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ; अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ; 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित और अहोम राजवंश के संबंध में विभिन्न इतिहास की पुस्तकों में भी है।

(14) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(15) उक्त।

(16) सभी बुरंजिस इस बात पर सहमत नहीं हैं कि सुतिनफा को कैसे हटाया गया या उसकी मृत्यु कैसे हुई। उदाहरण के लिए, कुछ लोग मानते हैं कि उन्हें जहर दिया गया था, जबकि अन्य का दावा है कि उन्होंने स्वेच्छा से सिंहासन छोड़ा था और उनकी प्राकृतिक मृत्यु हुई थी।

(17) अनेक अहोम बुरंजियों के साथ ही गैट, भुइयाँ, हितेश्वर बारबरुआ जैसे इतिहासकारों की इस राजवंश पर विभिन्न पुस्तकें, एच.के. बरपुजारी द्वारा संपादित "द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम" आदि इन घटनाक्रमों का विस्तृत विवरण देते हैं।

(18) रियाज़ु-ए-सलातिन, ए. सलाम द्वारा अंग्रेजी में अनूदित, 1904

(19) अतान बुरगोहैन और हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ।

(20) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित "द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम" से उद्धृत।

(21) उक्त।

(22) उक्त।

(23) फतियाह-ए-इब्रियाह के लेखक ने जोगीघोपा में किले का निम्नलिखित विवरण दिया है: "यह ब्रह्मपुत्र पर एक बड़ा ऊँचा किला है।

इसके पास दुश्मन ने घोड़ों को गिराने के लिए कई गड्ढे खोदे थे और छेदों में बाँस (पंजिस) के नुकीले टुकड़े फँसा दिए गए थे। छेदों के पीछे, लगभग आधे शॉट की दूरी तक, समतल जमीन पर, उन्होंने खाई बनाई थी और इस खाई के पीछे, किले के पास, तीन गज गहरी एक और खाई थी। किले के पास वाली खाई नुकीले बाँसों से भी भरी थी। इस तरह अहोम अपनी सभी स्थितियों को मजबूत करते हैं। वे अपने किले मिट्टी के बनाते हैं। किले के दक्षिण में ब्रह्मपुत्र है और पूर्व में मोनास है।"

- "अ हिस्ट्री ऑफ असम", सर एडवर्ड गैट में उल्लिखित।

(24) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित "द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम" से उद्धृत।

(25) वही। यद्यपि इस नौसैनिक युद्ध और अहोमों की हार का उल्लेख मुगल इतिहास में किया गया है, लेकिन आश्चर्य की बात है कि अहोम बुरंजियों ने इसका कोई उल्लेख नहीं किया है।

(26) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित "द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम" से उद्धृत। 'अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स' में, सूर्य कुमार भुइयाँ ने मुगलों को अंततः हराने के अपने प्रयास में इस चतुर कमांडर द्वारा अपनाई गई रणनीति के बारे में विवरण प्रदान किया है।

(27) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट।

(28) उक्त।

(29) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(30) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट।

(31) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(32) अ हिस्ट्री ऑफ असम, सर एडवर्ड गैट से उद्धृत।

(33) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(34) उक्त।

(35) अनेक अहोम बुरंजियों के साथ ही गैट, भुइयाँ, हितेश्वर बरबरुआ,

एच. के. बरपुजारी आदि जैसे इतिहासकारों द्वारा इस राजवंश पर लिखी गई विभिन्न पुस्तकें इन घटनाक्रमों का विस्तृत विवरण देती हैं।

(36) रमानी गभरू, या रहमत बानू, सूर्य कुमार भुइयाँ।

(37) 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ, से उद्धृत।

(38) 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', एच. के. बरपुजारी से उद्धृत

(39) यह तिथि कुछ अन्य इतिहासों से मेल नहीं खाती। उदाहरण के लिए, एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' इसे 31 मार्च, 1663 बताता है। जिस स्थान पर उनकी मृत्यु हुई, उसका भी अलग-अलग स्रोतों में अलग-अलग उल्लेख किया गया है।

(40) 'अ डिस्क्रिप्शन ऑफ़ असम फ्रॉम द आलमगीरनामा', मुहम्मद काज़िम, अनुवादक एच. वैनसिटार्ट।

(41) "इस लेखक के कथन की पुष्टि कर्नल डाल्टन ने की है जिन्होंने बताया कि कई टीले, जिन्हें अहोम राजाओं की कब्र माना जाता है, खोले गए और उनमें दासों और जानवरों के अवशेष, और सोने और चाँदी के बरतन, कपड़े, हथियार आदि पाए गए।" 'अ हिस्ट्री ऑफ असम' , सर एडवर्ड गैट, से उद्धृत।

(42) प्रोफेसर जदुनाथ सरकार द्वारा अनुवाद, जर्नल ऑफ़ द बिहार एंड बंगाल रिसर्च सोसाइटी, वॉल्यूम I, जैसा कि ए हिस्ट्री ऑफ़ असम, सर एडवर्ड गैट में उद्धृत किया गया है|

(43) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(44) असम के लगभग सभी बुरंजी इसका उल्लेख करते हैं।

(45) असम बुरंजी ने अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया।

(46) उक्त।

(47) जयंतिया बुरंजी, सूर्य कुमार भुइयाँ।

(48) उक्त।

(49) असम बुरंजी, अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ,

और लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(50) उक्त।

(51) उक्त।

(52) जयध्वज सिंह की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के संबंध में घटनाक्रम का विस्तार से वर्णन अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में किया गया है।

(53) गोलप चंद्र बरुआर बुरंजी

(54) असम बुरंजी, अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ और लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत।

(55) उक्त।

(56) उक्त।

(57) अतान बुरगोहैन और हिज़ टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(58) असम बुरंजी, अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, और लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत।

(59) द ब्रह्मपुत्र, अरूप कुमार दत्ता से उद्धृत

(60) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(61) उक्त।

(62) उक्त।

(63) उक्त।

(64) उक्त।

(65) उक्त।

(66) उक्त।

(67) उक्त।

(68) उक्त।

(69) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट

(70) 'द असम बुरंजी', अतन बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार

भुइयाँ और लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत।

(71) उक्त।

(72) एन अकाउंट ऑफ असम, जे.पी. वाडे।

(73) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(74) उक्त

(75) उक्त।

(76) उक्त

(77) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(78) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(79) उक्त।

(80) लाचितर कहिनी, के. बुरगोहैन।

(81) द लीजेंड ऑफ लाचित बोरफुकन, नीलोत्पल गोहैन से उद्धृत।

(82) एच. के. बरपुजारी संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(83) असम बुरंजी, जैसा कि सूर्य कुमार भुइयाँ ने उद्धृत किया है।

(84) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट।

(85) पुरानी असम बुरंजी, 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित में उद्धृत।

(86) 'द असम बुरंजी', जैसा कि सूर्य कुमार भुइयाँ द्वारा उद्धृत।

(87) उक्त।

(88) उक्त।

(89) 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित।

(90) 'अतान बुरगोहैन एंड हिज़ टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(91) उक्त।

(92) बरफुकनार जयस्तंभ, एच. सी. गोस्वामी, अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत।

(93) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट।

(94) 'द असम बुरंजी', जैसा कि सूर्य कुमार भुइयाँ ने उद्धृत किया है।

(95) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट।

(96) 'द असम बुरंजी', जैसा कि सूर्य कुमार भुइयाँ द्वारा उद्धृत।

(97) जैसा कि "द असम बुरंजी" के अप्रकाशित खंडों में निहित है, लेकिन लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, में उल्लेख किया गया है।

(98) उक्त।

(99) 'द असम बुरंजी', जैसा कि अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, में उद्धृत किया गया है।

(100) 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित।

(101) असम की सैन्य चौकियों और दुर्गों की सूची, लगभग 1681 में संकलित। उपेन्द्र चन्द्र लेखरू।

(102) अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ।

(103) 'द असम बुरंजी', जैसा कि अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, में उद्धृत किया गया है।

(104) अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ।

(105) अखबारात- ए-दरबार- ए-मौला, जदुनाथ सरकार और सूर्य कुमार भुइयाँ द्वारा उद्धृत।

(106) ये विवरण लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, में पूर्ण विवरण के साथ देखे जा सकते हैं।

(107) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट से उद्धृत। अभियान की ताकत आलमगीरनामा में नहीं बताई गई है जहाँ इस विषय पर संक्षेप

में चर्चा की गई है। ये आंकड़े बुरंजी से लिए गए हैं।

(108) अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(109) सिख रिलीजन, वॉल्यूम IV, मैक्स आर्थर मैकॉलिफ।

(110) आलमगीरनामा, ब्लोचमैन द्वारा उद्धृत।

(111) मेमोरेंडम ऑन राम सिंह, जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में पुन: प्रस्तुत किया गया है।

(112) द लीजेंड ऑफ लाचित बोरफुकन, नीलोत्पल गोहैन से उद्धृत।

(113) अनाल्स ऑफ द देल्ही बादशाहते, सूर्य कुमार भुइयाँ।

(114) पुरानी असम बुरंजी, एच. सी. गोस्वामी, जैसा कि अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(115) सिख रिलीजन, एम. ए.मैकॉलिफ़।

(116) अनाल्स ऑफ द देल्ही बादशाहते, सूर्य कुमार भुइयाँ, में उद्धृत

(117) एच. 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित,में उद्धृत।

(118) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, से उद्धृत।

(119) द अहोम बुरंजिस जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(120) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, से उद्धृत

(121) द अहोम बुरंजिस जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(122) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(123) द अहोम बुरंजिस जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(124) इस घटना का उल्लेख अहोमर दीन, हितेश्वर बरबरुआ द्वारा, में और अन्य ग्रंथों में किया गया है। एच. के. बरपुजारी ने एक फुटनोट में कहा है कि इस अवसर पर लाचित का आक्रोश, "मेरे मामा मेरे देश से

बड़े नहीं हैं," जैसा कि सूर्य कुमार भुइयाँ ने अपने लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स में उद्धृत किया है, किसी भी समकालीन साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं है। यद्यपि, भुइयाँ द्वारा इसे छापने से पहले ही यह घटना और कथन असम की लोक-कथा परंपरा में मौजूद था और बिना किसी अपवाद के असमिया लोग मानते हैं कि ये सच हैं।

(125) अहोम बुरंजिस, जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ, में उद्धृत किया गया है।

(126) उक्त।

(127) उक्त।

(128) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत

(129) उक्त।

(130) उक्त।

(131) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट, से उद्धृत।

(132) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ, में उद्धृत किया गया है।

(133) उक्त। एस.के.दत्ता द्वारा संकलित अहोम बुरंजी में, "सैयद फ़िरोज़ नबाब की कैद में मृत्यु हो गई।" कमरपुर बुरंजी के अनुसार, सैयद फ़िरोज़ का पुत्र पहाड़ खाँ कैद से भाग गया। अन्य अहोम बुरंजी के अनुसार राम सिंह ने सैयद फ़िरोज़ के बेटे की रिहाई की माँग की। लेकिन आलमगीरनामा पूरी तरह से अलग विवरण देता है और कहता है कि गौहाटी थानेदार सैयद फिरोज खान और उनके अधिकांश लोगों ने बहादुरी से खुद का बचाव किया और कर्तव्य के पथ पर अपने जीवन का बलिदान दिया। इस प्रकार इस बात पर कुछ भ्रम है कि वास्तव में गौहाटी के पूर्व फौजदार का क्या हुआ।

(134) उक्त।

(135) उक्त।

(136) उक्त।

(137) उक्त।

(138) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(139) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ।

(140) उक्त।

(141) द अहोम्स, ए रीइमेजिन्ड हिस्ट्री, अरूप कुमार दत्ता।

(142) डिस्क्रिप्टिव लिस्ट ऑफ फरमांस, मंसूर्स एंड निशांस आदि। राजस्थान राज्य अभिलेखागार, एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' में में पुनः प्रस्तुत

(143) एच.के. बापुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' में उद्धृत द अहोम बुरंजिस।

(144) उक्त।

(145) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(146) द अहोम बुरंजिस जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, में उद्धृत किया गया है।

(147) द अहोम्स, ए रीइमेजिन्ड हिस्ट्री, अरूप कुमार दत्ता।

(148) द अहोम बुरंजिस, जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है। जाहिर है मुगल कमांडर भांग के आदी थे, जिसका वर्णन मनुची ने "भांग की पत्तियों को पीसकर बनाया गया पेय" के रूप में किया है, जो पीते ही नशा कर देता है। औरंगजेब भी इस विकार को दबाना चाहता था। लेकिन, यह देखकर कि मंत्री स्वयं पीते थे और नशे में रहना पसंद करते थे, निषेध की कठोरता को धीरे-धीरे हल्का कर दिया गया था।" स्टोरिया डो मोगोर; इरविन द्वारा अनूदित। धतूरा, थॉर्नएप्पल या स्ट्रैमोनियम, का उपयोग भांग के विकल्प के रूप में किया जाता था और इससे मजबूत परिणाम मिलते हैं।

(149) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ, में उद्धृत किया गया है।

(150) उक्त।

(151) उक्त।

(152) उक्त।

(153) उक्त।

(154) उक्त।

(155) उक्त।

(156) उक्त।

(157) बनिया-ककातिर-भांगसावली, केसब कांता बरुआ

(158) अहोम बुरांजी, गोलप चंद्र बरुआ।

(159) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(160) उक्त।

(161) उक्त।

(162) उक्त।

(163) उक्त।

(164) उक्त। बेवरेज और बैनी प्रसाद द्वारा अनूदित द मस्सिर-उल-उमरा में उल्लेख किया गया है कि लुथुरी राजखोवा को मीर जुमला द्वारा अन्य असमिया कैदियों के साथ दिल्ली ले जाया गया था।

(165) उक्त।

(166) उक्त।

(167) उक्त।

(168) उक्त।

(169) उक्त।

(170) पुरानी असम बुरंजी, एच. सी. गोस्वामी। द अहोम बुरंजिस में भी, जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(171) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है। यह ध्यान दिया जा सकता है

कि पंडितराय संभवतः एक उपाधि थी, नाम नहीं, और यह राजनयिक शाइस्ता खान और राम सिंह दोनों की सेवा में था। यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि "पंडित राव" की उपाधि शिवाजी ने अपने गोपनीय मंत्री और मुख्य न्यायाधीश रघुनाथ भाई पंत बल्लाल को प्रदान की थी, जो जय सिंह के लिए मराठा शांति मिशन का नेतृत्व कर रहे थे। मराठा पीपल, किनकैड और पारसनिस।

(172) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(173) उक्त।

(174) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(175) 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', सर एडवर्ड गैट।

(176) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(177) उक्त।

(178) उक्त।

(179) उक्त।

(180) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(181) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(182) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम'

(183) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है। यद्यपि एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' में कहा गया है कि संदेश रसिप खान द्वारा नहीं बल्कि मुनव्वर खान द्वारा लाया गया था।

(184) द अहोम बुरंजिस जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में और एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' में भी उद्धृत किया गया है।

(185) द अहोम्स, ए रीइमेजिन्ड हिस्ट्री, अरूप कुमार दत्ता।

(186) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है, साथ ही एच.के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' में भी उद्धृत किया गया है।

(187) उक्त।

(188) देवधाई असम बुरंजी, सूर्य कुमार भुइयाँ द्वारा अनूदित। उदाहरण के लिए, अहोम सम्राट प्रताप सिंह (1603-1641) ने कहा था: "मैं उस व्यक्ति को नहीं छोड़ूंगा जो मेरे ज्योतिषियों और देवधाइयों के आदेशों का उल्लंघन करेगा।"

(189) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(190) संदिकिपा, भाग 1, के.एन. बारदोलोई। कुछ अन्य बुरंजिस का दावा है कि बरफुकन को चार भुइयाँ अपने बिस्तर पर ले गए थे जिसे बाद में नाव पर रखा गया था।

(191) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(192) द अहोम बुरंजिस जैसा कि 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है। इसके अलावा, एच. सी. गोस्वामी द्वारा अनूदित पुरानी असम बुरंजी और उनकी सरायघाटर युधा, उषा।

(193) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(194) सरायघाटर युधा, ऊषा, एच. सी. गोस्वामी और द अहोम बुरंजिस जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(195) द अहोम बुरंजिस, जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है

(196) उक्त।

(197) उक्त।

(198) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत

(199) अक्कबरत-ए-दरबार-ए- मौला, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, औरंगजेब, जदुनाथ सरकार में उद्धृत।

(200) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत

(201) औरंगजेब, जदुनाथ सरकार से उद्धृत।

(202) इस आंकड़े का उल्लेख औरंगजेब, जदुनाथ सरकार में मिलता है। राम सिंह के लिए 40 का आंकड़ा अहोम बुरंजी, गोलप चंद्र बरुआ पर आधारित था।

(203) असम बुरांजी, जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(204) के.एन. बारदोलोई द्वारा अनूदित पुरानी बुरंजी में संदर्भित, जैसा कि लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ में उद्धृत किया गया है।

(205) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत

(206) हिस्ट्री ऑफ बंगाल, चार्ल्स स्टीवर्ट।

(207) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ, से उद्धृत।

(208) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(209) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(210) उक्त।

(211) उक्त। इस पुस्तक में यह भी कहा गया है कि "उपर्युक्त इतिहास कालक्रम में सामने आए तथ्यों के प्रकाश में, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि चुडामोनी, जिसे समुद्र चुडामोनी के नाम से भी जाना जाता है, कोई और नहीं बल्कि अच्युतानंद डोलोई थे; और स्वर्गदेव उदयादित्य सिंह द्वारा समुद्र-खारी उपाधि प्रदान करने से पहले, अच्युतानंद को उनकी खगोलीय शिक्षा के लिए चुडामोनी और उनकी काव्य प्रतिभा के लिए कवि सरस्वती के नाम से जाना जाता था।

(212) पुरानी आसाम बुरंजी, एच. सी. गोस्वामी।

(213) मासीर-उल-उमारा, और स्टोरिया डी मोगोर, मनुची, इरविन द्वारा अनूदित आदि।

(214) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत, जिसमें उपर्युक्त निष्कर्षों के लिए विभिन्न स्रोतों का भी उल्लेख है।

(215) उदाहरण के लिए, रामेश्वर चेतिया बोरा द्वारा रचित बृहत् ताई जाति, दावा करती है कि लाचित बरफुकन की मृत्यु सरायघाट युद्ध के दौरान बीमारी से नहीं, बल्कि एक अन्य बीमारी से हुई थी और उसे हुलुंगपारा में एक मैदाम में दफनाया गया था, जिसे स्थानीय लोग उसका मानते हैं।

(216) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(217) उपर्युक्त घटनाक्रम का उल्लेख अधिकांश अहोम बुरंजियों के साथ-साथ आधुनिक इतिहासकारों के कार्यों में भी विस्तार से किया गया है।

(218) 'लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स', सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत।

(219) उपर्युक्त घटनाक्रमों का उल्लेख अधिकांश अहोम बुरंजियों के साथ-साथ आधुनिक इतिहासकारों के कार्य में भी विस्तार से किया गया है।

(220) सूर्य कुमार भुइयाँ द्वारा अनूदित तुंगखुंगिया बुरंजी सहित विभिन्न अहोम बुरंजिस इस अवधि का विवरण देते हैं।

(221) एच. के. बरपुजारी द्वारा संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' से उद्धृत।

(222) उक्त।

(223) लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स, सूर्य कुमार भुइयाँ से उद्धृत

(224) उक्त।

चुनिन्दा ग्रंथों की सूची

अंग्रेजी में

आचार्य, डॉ. एन.एन.: हिस्ट्री ऑफ मेडीवल असम (1992), ओमसंस पब्लिकेशन, टी-7 राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110027

बरपुजारी, एच.के., संपादित 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम' (वॉल्यूमI से V, 1992), प्रकाशन बोर्ड असम, बामुनिमैदाम, गुवाहाटी, 781021

बरुआ, बी.के. अ कल्चरल हिस्ट्री ऑफ असम (1969), ई-पुस्तक प्रारूप, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली।

बरुआ एस. एल. अ कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम (1985) मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, दिल्ली।

बरुआ यू. एन. अ ग्लिंप्स ऑफ असम (1928) इंदीबार बरुआ, जोरहाट, असम द्वारा प्रकाशित।

बसु एन. के. असम इन अहोम एज, 1228-1826 (1970) संस्कृत पुस्तक भंडार, 38 बिधान सरणी, कलकत्ता-6।

भुइयाँ, डॉ. सूर्य कुमार, अतान बुरगोहैन एंड हिज टाइम्स (2010), प्रकाशन बोर्ड असम, बामुनीमैदाम, गुवाहाटी, 781021.

भुइयाँ, डॉ. सूर्य कुमार, लाचित बरफुकन एंड हिज टाइम्स (1947) प्रकाशन बोर्ड असम, बामुनीमैदाम, गुवाहाटी, 781021

बटलर, जे. ट्रेवल्स एंड एडवेंचर्स इन द प्रोविंस ऑफ असम (1854) नब्बू प्रेस, नई दिल्ली द्वारा पुनर्मुद्रण

दत्ता, अजित कुमार, मनीराम दीवान एंड कंटेम्परेरी असामीज सोसायटी, (1990) अनुपोमा दत्ता, ज्योतिपुर, नियामति रोड, जोरहाट-1 द्वारा प्रकाशित

चटर्जी, सुनील कुमार द प्लेस ऑफ असम इन द हिस्ट्री एंड सिविलाइजेशन ऑफ इंडिया (1970) प्रकाशन विभाग, गुआहाटी विश्वविद्यालय, असम

गैट , सर एडवर्ड — 'अ हिस्ट्री ऑफ असम', थैकर स्पिंक एंड कंपनी, कलकत्ता, 1905

बीना लाइब्रेरी, — कॉलेज हॉस्टल रोड गुआहाटी -1, असम द्वारा पुनर्मुद्रण।

गोगोई, — पी द ताई एंड ताई किंगडम (1968) प्रकाशन विभाग, गुआहाटी विश्वविद्यालय, असम

गोहैन, यू.एन — असम अंडर द अहोम्स (1999) स्पेक्ट्रम प्रकाशन द्वारा पुनर्मुद्रण, प्रथम तल, जनक पुरी, नई दिल्ली-110058

गोहैन, — नीलूत्पल द लीजेंड ऑफ लाचित बरफुकन (2021) लॉकस्ले हॉल पब्लिशिंग, ए-22 सेक्टर 30 नोएडा 201303

हैमिल्टन एफ.बी. — एन अकाउंट ऑफ असम (1814), फैकल्टी बुक्स, गुवाहाटी, असम के सहयोग से पावरशिफ्ट द्वारा पुनर्मुद्रण

हंटर डब्ल्यू. डब्ल्यू. — अ स्टेटिस्टिकल अकाउंट ऑफ असम (1879) मूल रूप से ट्रुबनेर एंड कंपनी द्वारा प्रकाशित, ई-बुक गूगल डॉट कॉम पर उपलब्ध

मोंटगोमरी, एम — द हिस्ट्री, एंटीक्विटीज, टोपोग्राफी एंड स्टेटिस्टिक्स ऑफ ईस्टर्न इंडिया (1838) ई-बुक डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया आइटम 2015.283662 पर उपलब्ध है।

नाथ, आर.एम. द बैकग्राउंड ऑफ असामीज कल्चर (1948), शिलांग, मेघालय से लेखक द्वारा प्रकाशित।

रॉबिन्सन, डब्ल्यू. अ डिस्क्रिप्टिव अकाउंट ऑफ असम (1841), मूल प्रकाशक, ओस्टेल और लेपेज, यूके, संस्कार प्रकाशक, गुवाहाटी द्वारा पुनर्मुद्रित।

सरकार जे.एन. 'द कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ असम', वॉल्यूम III, 1994, संस्करण, एच.के. बरपुजारी, प्रकाशन बोर्ड असम।

शेक्सपियर, एल.डब्ल्यू. हिस्ट्री ऑफ अपर असम, अपर बर्मा (1914), मूल रूप से मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड, लंदन द्वारा प्रकाशित। डिजिटल संस्करण सेंट्रल आर्कियोलॉजिकल लाइब्रेरी, एसीसी नंबर 1537 पर उपलब्ध है।

श्रीवास्तव ए. एल. द सल्तनत ऑफ दिल्ली, शिव लाल अग्रवाल एंड कंपनी, 1995.

वाडे, जे.पी. एन अकाउंट ऑफ असम (1800), बेनुधर शर्मा द्वारा संपादित, आर. शर्मा द्वारा प्रकाशित, केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय में उपलब्ध।

असमिया में

बरुआ, जी सी. अहोम बुरंजी (संपादित और अनुवादित, 1930) डिजिटल संस्करण एसओएएस,

लंदन विश्वविद्यालय में उपलब्ध है।

बरबरुआ, — हितेश्वर अहोमार दिन (1981), प्रकाशन बोर्ड असम, बामुनीमैदाम, गुवाहाटी -21

बरुआ एल. — कामरूपार इतिकथा (1985), प्रकाशन बोर्ड असम, बामुनीमैदाम, गुवाहाटी-21

भुइयाँ, एस. के. — आसाम बुरंजी (1228-1826) हराकांता बरुआ सदारामिन द्वारा (संपादित, 1662) ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक अध्ययन निदेशालय, असम सरकार।

भुइयाँ, एस.के. — देवधाई असम बुरंजी (संपादित, 1932) ऐतिहासिक और पुरातात्विक अध्ययन निदेशालय, असम सरकार।

भुइयाँ, एस.के. — सत्सारी असम बुरंजी (संपादित, 1974) ऐतिहासिक और पुरातात्विक अध्ययन निदेशालय, असम सरकार।

भुइयाँ एस.के — तुंगखुंगिया असम बुरंजी (संपादित, 1933) ऐतिहासिक और पुरातात्विक अध्ययन निदेशालय, असम सरकार।

चौधरी, पी. सी. — असम बुरंजी, क़ाशीनाथ तमुली फुकन द्वारा, 1844, (संपादित, 1964) ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक अध्ययन निदेशालय, असम सरकार

गोगोई. एल, ताई संस्कृतिर रूपरेखा, श्रीभूमि प्रकाशन कंपनी, कलकत्ता, 1985,

नियोग, एच.
गोगोई एल. असमिया संस्कृति (1966) असम साहित्य सभा और बनलता, गुवाहाटी

राजकुमार, सर्बानंद इतिहासे सुओनरा सोशोता बचार (1980) बनलता, नतुन बाजार, डिब्रूगढ़।

17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में असमिया लोगों को अपने अस्तित्व के संकट का सामना करना पड़ा, मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा भेजी गई विशाल सेना विजय के लिए ब्रह्मपुत्र नदी से गुजर रही थी। लेकिन, उस महत्वपूर्ण क्षण में शूरवीर लाचित बरफुकन अपने लोगों के रक्षक के रूप में सामने आए। उन्होंने असमिया लोगों को अपने अधीन करने और अहोम साम्राज्य को अपने क्षेत्र में लाने की औरंगजेब की महत्वाकांक्षा को करारा झटका दिया। भारत में लड़ी गई कुछ लड़ाइयाँ ही उस जटिल लेकिन सफल रणनीति से मेल खा सकती हैं जो लाचित बरफुकन ने सरायघाट की लड़ाई से पहले और उसके दौरान अपनाई थी! यह वास्तव में खेद की बात है कि लाचित जैसे महान नेता को असम के बाहर ज्यादा नहीं जाना जाता है, और भारतीय इतिहासकारों ने सरायघाट की महान लड़ाई की अनदेखी की।

फिर भी लाचित बरफुकन के कारनामे और सरायघाट की लड़ाई भारत को प्रेरित करने की क्षमता रखती है क्योंकि देश वैश्विक परिदृश्य में अपने उचित स्थान की ओर बढ़ रहा है। आज राष्ट्र असंख्य चुनौतियों का मुकाबला कर रहा है, जिनका सामना तभी किया जा सकता है, जब प्रत्येक नागरिक उसी निःस्वार्थ देशभक्ति और दृढ़ साहस का प्रदर्शन करे, जिसका लाचित बरफुकन शाश्वत अवतार थे। असम के शूरवीर-लाचित बरफुकन, इस नायक की जीवन गाथा और शक्तिशाली दुश्मन से अपनी मातृभूमि की रक्षा करते समय आत्मोत्सर्ग से देश को परिचित कराने का प्रयास है।

Price : ₹ 490/-

www.publicationboardassam.com